- *स्मृति ग्रंथ प्रकाशन समिति*
  - भंवरलाल कोठारी (संयोजक)
  - चम्पालाल डागा
  - माणकचन्द रामपुरिया
  - धीरजलाल बाँठिया
  - सुमतिलाल बाँठिया

- *आर्थिक सौजन्य*

  श्रीमती तारा देवी बाँठिया धर्मपत्नी स्व. सेठ श्री चम्पालालजी बाँठिया

- *परामर्श मण्डल*
  - अन्नाराम सुदामा, एम.ए.
  - हजारीमल बाँठिया, कानपुर

- *सम्पादक*
  - उदय नागोरी, एम.ए., जैन सिद्धान्त प्रभाकर

- *सहसम्पादक*
  - डा. किरण नाहटा, एम. ए. (हिन्दी), पीएच. डी

- *लोकार्पण*

  १ मई १९९४ श्री जवाहर विद्यापीठ – स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर

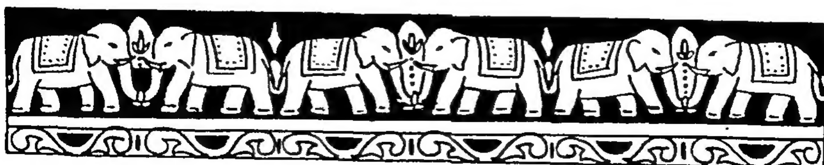
- *मूल्य*

  १०१/- (एक सौ एक रुपये मात्र)

संयोजकीय

सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया अनन्य गुरुभक्ति, संघनिष्ठा एवं समाजसेवा के प्रतीक थे। उन्होंने प्रज्ञापुंज, ज्योतिर्धर युगपुरुष, अध्यात्म परम्परा के राष्ट्रधर्मी आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा. की अन्तिम दो वर्षों में भीनासर में विराजने पर अनन्य सेवा की। आषाढ़ शुक्ला अष्टमी संवत् २००० को भीनासर में आपके ही हॉल में आचार्य श्री का स्वर्गवास हो गया। आचार्य श्री की स्मृति को अक्षुण्ण बनाने व उनकी वाणी को कालजयी बनाने हेतु भीनासर में एक संस्था स्थापित करने के उद्देश्य से आपने समाज के महानुभावों के सामने एक अपील जारी की, जिसे अपार जन समर्थन मिला और बाद में श्री जवाहर विद्यापीठ के रूप में इसने मूर्त रूप लिया। संस्था की स्थापना से इसके बहुमुखी उन्नयन तक सम्बद्ध रहकर आपने सेवा, निष्ठा व समर्पण की अलख जगाते हुए जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह प्रेरणास्पद एवं अनुकरणीय है। इस वर्ष संस्था ने अपनी स्थापना के ५० वर्ष पूर्ण करके त्रिदिवसीय स्वर्ण जयन्ती महोत्सव दिनांक २९-३० अप्रेल व १ मई १९९४ को भव्य समारोहपूर्वक मनाया। इस अवसर पर संस्था के संस्थापक सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया की स्मृति में एक ग्रन्थ संस्था द्वारा प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया जो संस्था की उस महान् विभूति के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। इसके प्रकाशन में व्यय होने वाली सम्पूर्ण राशि उनके परिवार द्वारा संस्था को भेंट करने की सहर्ष घोषणा की गई। एतदर्थ हार्दिक साधुवाद।

स्मृतिशेष श्री चम्पालालजी सा. विद्यापीठ से एकाकार हो गये थे और आजीवन इसके विकास हेतु प्रयत्नशील रहे। अद्वितीय क्षमता व बेजोड़ प्रतिभा के धनी बांठिया जी का जीवन-लक्ष्य गुरुदेव की वाणी को कालजयी बनाना रहा और इसमें उन्हें अप्रतिम सफलता मिली। जवाहर विद्यापीठ गौरवान्वित है कि जवाहर किरणावलियों के माध्यम से श्रीमद् जवाहराचार्य की वाणी लाखों पाठकों तक पहुँची है और इससे उन्हें आत्माभिमुख होने व जीवन के ऊर्ध्वारोहण का संदेश मिला है। विद्यापीठ उनके ध्येय-निष्ठ कर्तृत्व से गौरवान्वित हुई है। फलस्वरूप उनकी दीर्घकालीन समाज सेवा हेतु संस्था द्वारा स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर उन्हें 'समाज-भूषण' की पदवी से विभूषित किया गया है।



ऐसे मरुधरा के सपूत, भीनासर के भामाशाह एवं जैन समाज के अग्रणी सुश्रावक की स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति के संयोजक का दायित्व प्रदान कर संस्था ने मुझे यह अवसर प्रदान किया एतदर्थ आभारी हूं। स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति के अन्य सदस्य सर्वश्री चम्पालालजी डागा, माणकचन्दजी रामपुरिया, धीरजलालजी बांठिया व सुमतिलालजी बांठिया भी धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इसके प्रकाशन में अपनी बहुमूल्य सेवाएँ प्रदान की हैं। श्री सुमतिलालजी बांठिया (संस्था के ट्रस्टी व मंत्री तथा श्रीमान् चम्पालाल जी के आत्मज) की तो अतुलनीय भूमिका रही है जिन्होंने प्रकाश्य सामग्री, महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ, दस्तावेज व फोटो आदि संकलित/प्रस्तुत करने में पूर्ण सजगता का परिचय दिया है।

स्मृति ग्रन्थ को सुरुचि सम्पन्न, पठनीय एवं संग्रहणीय बनाने और इसके सम्पादन में श्री उदय नागोरी ने अथक परिश्रम किया है। उनकी श्रमनिष्ठा व प्रतिभा के प्रस्फुटन से उनकी समर्थ लेखनी सार्थक हुई है। बांठिया सा. के तेजस्वी व्यक्तित्व के आयामों को प्रस्तुत करने हेतु विविध आलेख तैयार करने व अन्य खण्डों के सम्पादन में आपने अहर्निश कार्य किया है। इनके अनथक श्रम के प्रति हार्दिक आभार। उल्लेखनीय है कि प्रारम्भ में स्मृति ग्रंथ के सम्पादक मण्डल में डॉ. नरेन्द्रजी भानावत भी सम्बद्ध थे परन्तु अस्वस्थता एवं असामयिक निधन के कारण वे इसे मूर्त रूप देने में सहयोग प्रदान नहीं कर सके। इस अवसर पर उनका स्मरण करना भी हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। प्रकाशन के अन्तिम चरण में डॉ. किरण चन्द जी नाहटा ने भी सम्पादन कार्य में सहयोग कर अमूल्य सेवाएं प्रदान की हैं एतदर्थ हार्दिक साधुवाद एवं आभार।

स्मृति ग्रन्थ परामर्श मण्डल के सदस्यों में सर्वश्री अन्नारामजी 'सुदामा' (गंगाशहर) एवं हजारीमलजी बांठिया (कानपुर) को धन्यवाद देना ही पर्याप्त नहीं क्योंकि उन्होंने अपने बहुमूल्य सुझाव देकर ग्रंथ-सौष्ठव हेतु जो समय दिया वह अविस्मरणीय है।

स्मृति ग्रंथ के आकर्षक मुद्रण व नयनाभिराम सज्जा के लिए सांखला प्रिन्टर्स के कर्मचारी व विशेष रूप से इसके प्रभारी श्री दीपचन्दजी सांखला को धन्यवाद देना भी मेरा कर्त्तव्य है जिन्होंने अल्प समय में पूरी तत्परता से इसे पूर्ण किया।

इसे सर्वांग बनाने में जिन पूज्य आचार्यों, विद्वान मुनियों, लेखकों, कवियों, हित-चिन्तकों एवं महानुभावों ने अपने आशीर्वचन, शुभ कामना संदेश तथा अपनी रचनाएँ/संस्मरण/श्रद्धांजलियाँ भेजकर जो सहयोग प्रदान किया है एतदर्थ उन सब के प्रति हम हृदय से आभारी हैं। संक्षेप में स्मृति ग्रंथ को मूर्त रूप देने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संलग्न सभी हितैषियों के प्रति हार्दिक आभार।

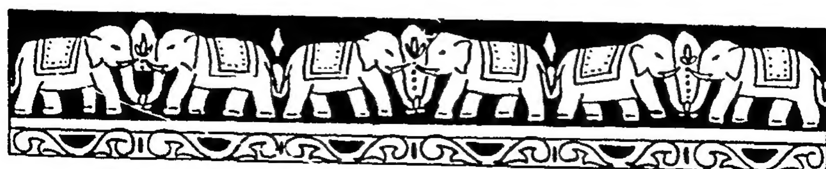
स्मृति ग्रन्थ के प्रथम खण्ड 'तेजस्वी व्यक्तित्व के आयाम' में समाविष्ट आलेखों में श्री उदयजी नागोरी ने अपने विचार उपलब्ध सामग्री के आधार पर प्रस्तुत किये हैं। इसी प्रकार द्वितीय खण्ड 'संस्मरणों के आईने में' एवं पंचम खण्ड 'संवेदना के स्वर' में सम्मिलित विचार लेखकों के स्वयं के हैं, स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति का उनसे सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

चूंकि स्मृति ग्रन्थ का मुद्रण संस्था की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर औपचारिक विमोचन होने तक अपूर्ण था अतः इसमें ग्रन्थ विमोचन एवं स्वर्ण जयन्ती समारोह से सम्बन्धित चित्र भी सम्मिलित किये गये हैं।

यह स्मृति ग्रन्थ सबके लिए प्रेरणादायक बने यही मंगल कामना है।

ओसवाल कोठारी मोहल्ला,
बीकानेर

—भंवरलाल कोठारी
संयोजक
समाजभूषण सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया
स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति



सम्पादकीय

व्यक्ति व समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। व्यक्ति यदि बूंद है तो समाज समुद्र। व्यष्टि व समष्टि की भेदमूलक दीवारों को लांघ कर ही तथा व्यक्ति अपने कार्यों से अमरत्व प्राप्त कर लेता है। सामाजिक संस्थाओं के निर्माण में भी निःस्वार्थ, सेवाभावी एवं समर्पित कार्यकर्ताओं की अहम् भूमिका रही है। इस दृष्टि से समाज सेवी, कर्मठ कार्यकर्ता एवं बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न श्रीमान् चम्पालाल जी बांठिया का जीवन आदर्श व अद्वितीय रहा है। विविध व्यवसायों से सम्बद्ध रहते हुए एवं बहुमुखी व्यस्तताओं के बावजूद आपने साहित्य-संरक्षण, शिक्षा-प्रसार, संस्कार निर्माण, समाज सेवा, जनोपयोगी कार्यों, महिला स्वावलम्बन आदि क्षेत्रों में अभूतपूर्व कार्य किया है। लक्ष्मी की उन पर कृपा रही पर विद्यानुरागी होने के कारण आपने सरस्वती की सदैव उपासना की है। 'चम्पा' सुमनवत सुरभित कर्तृत्व के धनी प्रेरणास्पद व्यक्ति के स्मृति-ग्रन्थ का सम्पादन कर स्वयं गौरवान्वित अनुभव करता हूँ।

व्यष्टि समष्टि नहीं होता परन्तु समष्टि व्यष्टि का ही संयुक्त रूप है। दोनों में एकत्व व अद्वैत भाव होने से ही नव-निर्माण की स्वर्णिम पृष्ठभूमि को आधार मिलता है। आचारांग सूत्र १-३-४ के सूत्र 'जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ; जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणई' अर्थात् जो एक को जानता है वही सबको जानता है एवं जो सबको जानता है वही एक को जानता है—को आत्मसात् कर बांठिया सा. ने जो इतिहास बनाया वह समय की शिला पर सशक्त हस्ताक्षर है। निस्संदेह इस अनासक्त कर्मयोगी ने जो कुछ किया वह कल्पनातीत ही नहीं, वर्णनातीत भी है। इस दिशा में उनका स्मृति ग्रन्थ एक विनम्र भावांजलि ही है।

स्मृति-ग्रन्थ को सात खण्डों में विभाजित किया गया है। यद्यपि श्रीमान् बांठिया सा. के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व को लिपिबद्ध करना पूर्णरूपेण सम्भव नहीं परन्तु प्रयास किया गया है कि इसमें स्मृति रूप अधिकाधिक सामग्री समाविष्ट हो सके। प्रथम खंड में शुभ कामना सन्देश संकलित हैं।

द्वितीय खंड 'तेजस्वी व्यक्तित्व के आयाम' में श्रीमान् बांठिया सा. के संक्षिप्त जीवन वृत सहित उनके विविध क्षेत्रों में किये गये योगदान सम्बन्धी आलेख हैं। गुरु

सेवा, शिक्षा प्रसार, समाज-सेवा के प्रतीक बांठिया सा. ने जनोपयोगी कार्यों में विशेष रुचि ली तो उदारतापूर्वक प्रभूत राशि दान देकर भामाशाह की स्मृति भी ताजा की है। श्री जवाहर विद्यापीठ जैसी संस्था की स्थापना कर आपने श्रीमद् जवाहराचार्य के विचारों को जन-जन तक पहुंचाया है तो उनका प्रगतिवादी व क्रांतिदर्शी स्वरूप भी स्पष्टतः उभरा है। आपने अखिल भारतवर्षीय स्तर पर कुशल नेतृत्व का भार निर्वाह किया है तो सजग प्रहरी रूप में अपना परिचय भी दिया है। सामान्य जन से लेकर बीकानेर के राजघराने और राजनैतिक नेताओं से आपकी घनिष्ठता व आत्मीयता रही है। इसी के साथ उनके कलाप्रेम व पंडितमरण का भी परिचय प्रस्तुत किया गया है। तृतीय खंड में पारिवारिक चित्र वीथी दर्शाई गई है।

चतुर्थ खंड 'संस्मरणों में झांकता व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व' में आचार्यों, मुनि-वृन्द, समाज के विशिष्ट महानुभावों, परिजनों, हितैषियों आदि के संस्मरण संकलित हैं। यद्यपि प्रथम खंड में बीज रूप में इनके जीवन की घटनाओं व कर्तृत्व का उल्लेख हो चुका है परन्तु उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों ने उनको विविध स्वरूपों व दृष्टियों से प्रस्तुत किया है। अतः घटनाओं/कार्यों की पुनरावृत्ति भले ही हो, पृथक् नजरिया प्रस्तुत करना ही मुख्य ध्येय रहा है। संस्मरण प्रेषित कर ग्रन्थ को सर्वांग व सुरुचिपूर्ण बनाने में सहयोगियों, लेखकों आदि का मैं कृतज्ञ हूं। पंचम खंड में सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक व पारिवारिक उत्सवों/समारोहों सम्बन्धी चित्रों को प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठम खंड में उनके सम्मान, अभिनन्दन, वन्दन, श्रद्धार्पण से सम्बन्धित अभिलेख संकलित हैं।

सप्तम खंड में स्मृति पुरुष बांठिया सा. के प्रति प्रस्तुत श्रद्धासुमन व संवेदना के स्वर संगृहीत हैं। सम्पादन में डॉ. किरण नाहटा के अमूल्य सहयोग हेतु मैं विशेष रूप से आभारी हूं। पूरा विश्वास है कि प्रस्तुत ग्रन्थ बांठिया सा. के जीवन, विचार, बहुमुखी व्यक्तित्व को समझने में प्रेरक व उपयोगी सिद्ध होगा। उनकी निष्ठा, कर्मठता, सेवा-समर्पण की ओर अभिमुख करने में स्मृति ग्रन्थ मार्गदर्शक सिद्ध होगा, इसी विश्वास के साथ।

सेठिया जैन ग्रन्थालय
बीकानेर

—उदय नागोरी



सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया - एक दृष्टि में

जन्म : १५ दिसम्बर १६०२ मिती मार्ग शीर्ष शुक्ला पूर्णिमा संवत् १६५६

जन्म स्थान : भीनासर, जिला-बीकानेर (राज.)



पिताजी : श्री हमीरमलजी बांठिया

माताजी : श्रीमती जवाहर बाई

भाई : श्री कानीरामजी, श्री सोहनलालजी

बहिनें : श्रीमती सिरेकंवर बाई खजान्ची, श्रीमती राजकंवर बाई मालू, श्रीमती मगन कंवर बाई सेठिया, श्रीमती सूरज कंवर बाई सेठिया

प्रथम विवाह : सन् १६१४ (संवत् १६७१)

धर्मपत्नी : श्रीमती आनन्द कंवर (स्वर्गवास संवत् २००१)

पुत्री : चाँद बाई पारख

पुत्र, पुत्रवधू : शान्तिलाल, सुशीला देवी

पौत्र, पौत्री : सुनील, नीरजा चोरड़िया

द्वितीय विवाह : सन् १६४४ (संवत् २००१)

धर्मपत्नी : श्रीमती तारा देवी

ज्येष्ठ पुत्र, पुत्रवधू : धीरजलाल, नलिनी देवी

पौत्र, पौत्री : आशीष, संगीता बदलिया, कविता सामसुखा

कनिष्ठ पुत्र, पुत्रवधू : सुमतिलाल, प्रभा देवी

पौत्र : आदर्श

पुत्रियाँ : सन्तोष खजान्ची, सबर चोरड़िया, सुधा सिरोहिया, समता बैद, सुमन भूतोड़िया, सरिता चौरारिया

शिक्षा : माध्यमिक स्तर तक

व्यवसाय

छाते का	:	मै. मौजीराम पन्नालाल, ४५ आरमेनियन स्ट्रीट, कलकत्ता
जूट का	:	मै. हमीरमल चम्पालाल, २ राजा वूडमन्ट स्ट्रीट, कलकत्ता
		मै. हमीरमल चम्पालाल एण्ड कं., २ राजा वूडमन्ट स्ट्रीट, कलकत्ता
		मै. हमीरमल चम्पालाल जूट एजेन्ट, २ राजा वूडमन्ट स्ट्रीट, कलकत्ता
		मै. राजपूताना कॉमर्शियल क. लि., २ राजा वूडमन्ट स्ट्रीट, कलकत्ता
		मै. जी एम फोगट एण्ड कं. लि., पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता
		मै. फ्री इण्डिया मर्केन्टाइल कं. (प्रा.) लि., ३ इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता
		मै. ग्रेटर राजस्थान ट्रेडिंग कं. (प्रा.) लि., २ राजा वूडमन्ट स्ट्रीट, कलकत्ता
		मै. इन्टरनेशनल ट्रेडिंग कं., नारायणगंज, ढाका
पत्थर पिसाई का	:	मै. इण्डियन मिनरल इण्डस्ट्रीज लि., २२/१ दमदम रोड, काशीपुर (प. बंगाल)
		मै. माइनिंग ट्रेडिंग कं. लि., २२/१ दमदम रोड, काशीपुर
फाईनेन्स का	:	सेठ चम्पालाल बाँठिया बैंकर्स, भीनासर (बीकानेर)
कपड़े का	:	मै. बीकानेर सिल्क भण्डार, पुराना बाजार, बीकानेर
लकड़ी का व	:	मै. बीकानेर जनरल ट्रेडर्स, कोटगेट के अन्दर, बीकानेर
सॉ मिल	:	मै. पोपुलर टिम्बर मार्ट, कोटगेट के अन्दर, बीकानेर
	:	मै. राजस्थान टिम्बर सप्लाई कं., कोटगेट के अन्दर, बीकानेर
एजेन्सी का	:	मै. अनुपम ट्रेडर्स, कोटगेट के अन्दर, बीकानेर
ठेकेदारी का	:	मै. यूनाइटेड कंट्राक्टर कार्पोरेशन, कोटगेट के अन्दर, बीकानेर
बिजली का	:	मै. जैन इलेक्ट्रिक कम्पनी, कोटगेट के अन्दर, बीकानेर
बर्फ फैक्टरी	:	मै. दी रामपुरिया आईस फैक्ट्री, लि., पावर हाउस के पास, बीकानेर
मशीनरी का	:	मै. इण्डो-यूरोपियन मशीनरी कम्पनी, चांदनी चौक, दिल्ली
पंखे की फैक्टरी	:	मै. मैचवेल इलेक्ट्रीकल्स, इण्डिया लिमिटेड, ऑफ नागर रोड, पूना
जिप्सम का	:	मै. बीकानेर जिप्सम कम्पनी, बीकानेर
सूते का	:	मै. रामजी ट्रेडर्स, ३ बैकुण्ठ सेन लेन, कलकत्ता



समाज सेवा क्षेत्र

- श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर की स्थापना एवं संचालन
- सेठ श्री हमीरमलजी बांठिया स्थानकवासी जैन पौषधशाला, भीनासर का निर्माण एवं श्री जवाहर विद्यापीठ को समर्पित
- सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया धर्मार्थ ट्रस्ट, भीनासर का निर्माण कर समाज के उपयोगार्थ समर्पित
- भीनासर में दो कुंओं का निर्माण कर मीठा पानी उपलब्ध करवाना
- सन् १९५२ में सादड़ी सम्मेलन में श्री अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस के अध्यक्ष रूप में महत्वपूर्ण भूमिका।
- सन् १९५६ में भीनासर में विराट साधु-सम्मेलन का आयोजन/प्रबन्ध-स्वागताध्यक्ष
- श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था, बीकानेर के ३७ वर्षों तक अध्यक्ष
- श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर के ३२ वर्ष तक मंत्री व कोषाध्यक्ष के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका
- श्री जैन गुरुकुल ब्यावर व जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकुला (अम्बाला) की अध्यक्षता
- विभिन्न धार्मिक सामाजिक संस्थाओं को उदारतापूर्वक प्रभूतदान।

जनोपयोगी क्षेत्र

- छात्रों के लिए श्री जवाहर हाई स्कूल, भीनासर का निर्माण एवं शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार को समर्पित
- छात्राओं के लिए सेठ हमीरमलजी बांठिया उच्च प्राथमिक बालिका विद्यालय, भीनासर का निर्माण एवं शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार को समर्पित
- श्री जवाहर विद्यापीठ के अन्तर्गत पुस्तकालय व वाचनालय की स्थापना एवं संचालन
- श्री जवाहर विद्यापीठ में महिला सिलाई-बुनाई-कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना एवं संचालन

साहित्य प्रकाशन एवं सेवा क्षेत्र

- आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा. की अनन्य सेवा
- जवाहर किरणावलियों की ३५ किरणों का प्रकाशन कर श्रीमद् जवाहराचार्य की वाणी को कालजयी बनाना।

- श्रीमद् जवाहराचार्य की जीवनी का सर्वप्रथम प्रकाशन
- शुरू की दो जवाहर किरणावलियाँ श्रीमद् जवाहराचार्य के जीवन काल में ही स्वयं द्वारा प्रकाशित

विशेष उपलब्धियाँ

- अध्यक्ष बीकानेर राज्य व्यापार उद्योग संघ
- अध्यक्ष नगर पालिका, भीनासर
- विशिष्ट समाज सेवा के लिए तत्कालीन महाराजा श्री गंगासिंहजी द्वारा पब्लिक सर्विस मैडल फर्स्ट क्लास से सम्मानित।
- बीकानेर जैन समाज की तरफ से विशिष्ट समाज सेवा के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित
- बीकानेर राज्य के विधान सभा सदस्य तथा बाल दीक्षा के विरोध में विधेयक प्रस्तुत
- महाराजाधिराज गंगासिंहजी के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव संवत् १९९४ में रजत पदक द्वारा सम्मानित
- बीकानेर न्यायालय में कई वर्षों तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट रूप में कार्य
- बहुआयामी सेवाओं का बीकानेर गोल्डन जुबली बुक व हूज-हू में रेखांकन
- महाराजा गंगासिंहजी द्वारा कैफियत तथा चांदी की छड़ी व चपड़ास का सम्मान
- महाराजा बीकानेर द्वारा पैर में सोना पहनने की इज़्ज़त प्रदान कर मान बढ़ाना
- विभिन्न संस्थाओं द्वारा अभिनन्दन पत्र, सम्मान-पत्र व श्रद्धार्पण पत्र देकर सम्मानित करना
- श्री जवाहर विद्यापीठ की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर 'समाज-भूषण' पदवी सम्मान पत्र देकर सम्मानित करना (मरणोपरान्त)
- भीनासर में कलात्मक हवेली का निर्माण, जो स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है।

  स्वर्गवास : संथारापूर्वक दिनांक १ अप्रेल सन् १९८७ मिती चैत्र शुक्ला ३ संवत् २०४४



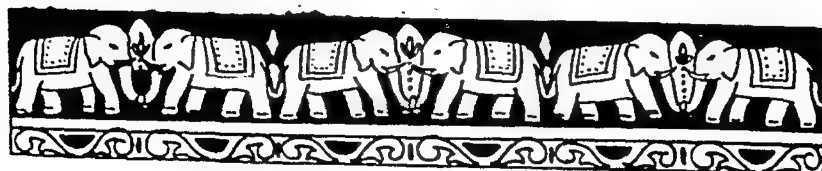
अनुक्रम

प्रथम खण्ड : शुभकामना संदेश

द्वितीय खण्ड : तेजस्वी व्यक्तित्व के आयाम

तृतीय खण्ड : चित्र वीथी—पारिवारिक

चतुर्थ खण्ड : संस्मरणों से झांकता व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व





पंचम खण्ड : चित्र वीथी—सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक व राजनैतिक

षष्ठम खण्ड : सम्मान, अभिनन्दन, वन्दन, श्रद्धार्पण

सप्तम खण्ड : श्रद्धा सुमन—संवेदना के स्वर

शुभकामना संदेश





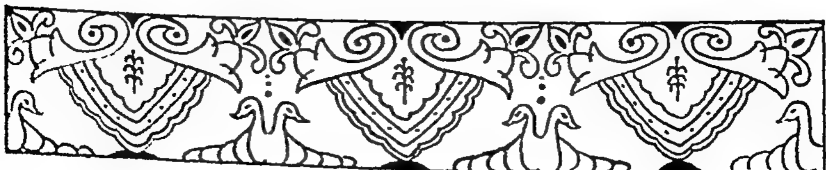
सुशीला कुमारी
राजमाता,
लालगढ़ पैलेस, बीकानेर

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप स्वर्गीय सेठ चम्पालाल जी बांठिया की सेवाओं को चिरस्थायी रखने हेतु एक स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन कर रहे हैं।

बांठिया जी का विभिन्न आयामी व्यक्तित्व सबके लिए प्रेरणा का स्रोत तथा नई पीढ़ी के लिए अनुकरणीय है। बिना किसी भेदभाव के मानवता की सेवा में रत उनका जीवन एक गौरवमय उदाहरण है।

बांठिया जी का बीकानेर राजघराने से भी बहुत आत्मीय और निकट का सम्बन्ध रहा है। बीकानेर के सेठ साहूकारों में वे गण्यमान व्यक्ति थे। मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि 'सेठ श्री चम्पालाल जी बांठिया स्मृति ग्रन्थ' न केवल उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने में सफल होगा बल्कि पाठकों के लिए मार्गदर्शक का महत्वपूर्ण कार्य करने में भी सक्षम होगा।

—सुशीला कुमारी





एन. आर. भसीन
SECRETARY TO GOVERNOR
RAJASTHAN, JAIPUR

संदेश

महामहिम राज्यपाल महोदय को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर (बीकानेर) द्वारा त्रि-दिवसीय स्वर्ण जयंती महोत्सव मनाया जा रहा है तथा स्वर्ण जयंती स्मारिका एवं संस्था के संस्थापक सेठ चम्पालाल बांठिया की स्मृति में ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यापीठ समाज सेवा के कार्यों से जुड़ी हुई है। किसी भी संस्था की स्वर्ण जयंती उसकी सफलता की दास्तान स्वयं कह देती है।

महामहिम की ओर से आपके इस शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनायें।

—एन. आर. भसीन



बलराम जाखड़
कृषि मंत्री, भारत सरकार
नई दिल्ली-११०००१

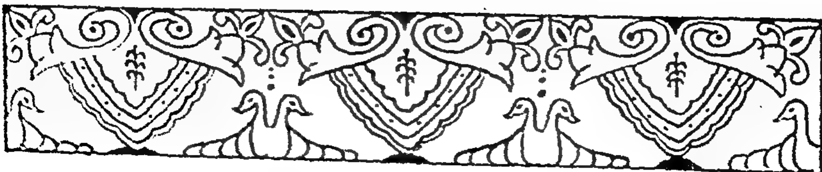
संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सेठ चम्पालाल जी बांठिया की स्मृति में एक स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री बांठिया जी ने अपने जीवन काल में जिस दूरदर्शिता, कार्यकुशलता एवं अनवरत सेवा के माध्यम से समाज को जो मार्ग दिखाया है, वह एक सराहनीय कार्य है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि स्मृति ग्रन्थ में प्रकाशित की जाने वाली सामग्री से छात्र वर्ग लाभ उठायेगा।

मैं स्मृति ग्रन्थ की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

—बलराम जाखड़





मनफूलसिंह चौधरी
सांसद, लोकसभा
२३ फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली

सेठ श्री चम्पालाल जी वांठिया प्रखर प्रतिभा, सौम्य स्वभाव व सेवा के प्रतीक थे। सामाजिक सेवा उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी, मेहमान सेवा उनकी आदत में शुमार थी। विद्या प्रेमी और धार्मिक भावना से वे ओत-प्रोत थे।

मेरा कई बार उनसे मिलने का मौका मिला। मैं दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और शुभ कामना करता हूं कि सेठ श्री चम्पालाल जी बांठिया का स्मृति ग्रन्थ एक इतिहास बने और जन जन इस ग्रन्थ को पढ़कर अपना जीवन सफल बनाये।

—मनफूलसिंह चौधरी



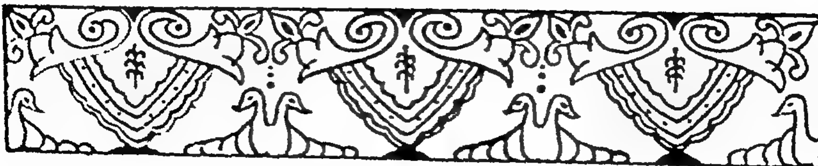
देवीसिंह भाटी
नहर एवं सिंचाई मंत्री, राजस्थान सरकार
जयपुर

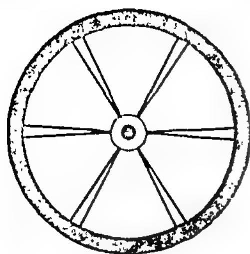
संदेश

स्वर्गीय सेठ श्री चम्पालाल जी बांठिया जैसे बहुआयामी प्रतिभा वाले एवं विभिन्न सामाजिक सेवाओं, औद्योगिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों के लिए सदैव ही अविस्मरणीय रहेंगे। इन विशेषताओं के साथ ही आपका सर्व-धर्म समभाव भी चिरस्मरणीय रहेगा। ऐसे कुशाग्र बुद्धि एवं श्रमनिष्ठ व्यक्ति की स्मृति में प्रकाशित किया जाने वाला स्मृति ग्रन्थ वास्तव में एक सुविचारित एवं स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने हेतु परमावश्यक तथा आम जनता के लिए एक आदर्श स्थापित करने में अपूर्व योगदान प्रदान करेगा।

मैं भी, मेरी ओर से इस प्रयास के लिए आप सब लोगों को बधाई देता हूँ।

—देवीसिंह भाटी





मक्खन जोशी
प्रदेश महामंत्री,
जनता दल राजस्थान बीकानेर

स्व. सेठ चंपालाल जी बांठिया लक्ष्मीपुत्र के साथ सरस्वती पूजक, उदारचित्त, सहज स्वभाव, मृदु भाषी व संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी थे।

आपने समाज में उन दिनों शिक्षा, मुख्यतः स्त्री-शिक्षा के प्रसार हेतु शिक्षण संस्थाएं बनाने में रुचि लेकर दूरदर्शिता का उदाहरण प्रस्तुत किया। केवल अक्षर ज्ञान की शिक्षा ही नहीं, बल्कि जीविकोपार्जन हेतु सिलाई बुनाई की शिक्षा के प्रसार में उन्होंने जो रुचि दर्शायी वह समाज की मुख्य आवश्यकता पूर्ति करने वाली योजना सिद्ध हो रही है।

स्वर्गीय सेठ चम्पालाल जी बांठिया एक बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे।

—मक्खन जोशी

नवलमल फिरोदिया
सन्मित्र
१३२/बी (२ ए), गणेश खींद रोड,
पूना ४११००७

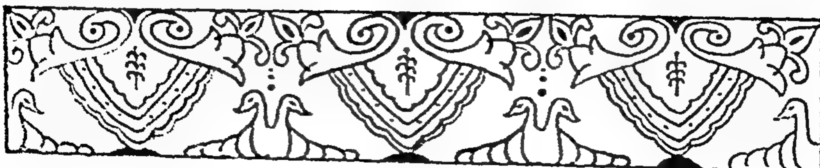
श्री चंपालाल जी साहब बांठिया के जीवनी संबंधी स्मृति ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है यह जानकर खुशी हुई।

मेरा व्यक्तिगत स्व. श्री चंपालालजी साहब से मिलने का योग नहीं आया। लेकिन मेरे पिताजी स्व. कुंदनमल जी साहब से उनका घनिष्ट परिचय था यह मुझे अवगत है।

श्री चंपालाल जी साहब सादड़ी सम्मेलन में श्री अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष चुने गये और वाद में सोजत सम्मेलन भी आप ही के मार्गदर्शन में हुआ ऐसा मुझे याद है।

जैन समाज के एक सेवाभावी कार्यकर्ता एवं पू. श्री जवाहरलालजी महाराज साहब के निस्सीम भक्त तरीके उनकी स्मृति सदैव रहे इसलिये स्मृति ग्रंथ का आयोजन उचित ही है।

—नवलमल फिरोदिया



हरख चंद नाहटा
अध्यक्ष
अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासंघ
५३७, कटरा नील, चांदनी चौक, दिल्ली

समय के इस अनन्त अनवरत प्रवाह में लोग अपने अस्तित्व की रक्षा करने में असमर्थ होते हैं, पर कुछ, चंद लोग ऐसे भी होते हैं जो समय के प्रवाह को, समय की इस धारा को रोकने में समर्थ होते हैं। जीवन-यात्रा में वे अपने पद-चिह्न छोड़ जाते हैं, जो उनके उत्तराधिकारियों के लिये पथ-प्रदर्शन करते हैं।

स्व. सेठ श्री चम्पालाल जी बांठिया ऐसे ही विरल जैन श्रावक थे, जिन्होंने समय के प्रवाह को अपने अनुरूप निरूपित किया, समाज को नई दिशा दी। वे परम्परागत रूढ़ियों एवं धार्मिक असहिष्णुता से संघर्ष करते रहे, फलस्वरूप एक के बाद एक निर्माण होता रहा।

लोग पद और वैभव प्राप्ति के पश्चात् अपने सामाजिक दायित्वों को भूल जाते हैं, पर श्री बांठिया जी, पद व वैभव प्राप्ति के बाद निर्लिप्त भाव से, और अधिक उत्साह व निष्ठा के साथ अपने सामाजिक दायित्वों को निभाते रहे। आपने एक आदर्श रखा आने वाली पीढ़ियों के सामने।

वस्तुतः श्री बांठिया जी जैन समाज के एक आलोकित प्रकाश-स्तम्भ, सामाजिक रचनाओं के प्रभावक व्यक्तित्व, लक्ष्मी के वरद पुत्र, सरस्वती की वीणा के झंकृत तार, उच्च कोटि के विचारक एवं सर्व धर्म समभाव के 'एकला' पथिक थे। ऐसे महान व्यक्तित्व की स्मृतियों को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कदम है।

ऐसे सुश्रावक स्व. सेठ श्री चम्पालाल जी बांठिया सा. को इस अवसर पर मेरा सादर नमन एवं स्मृति ग्रंथ के लिए शुभ कामनायें।

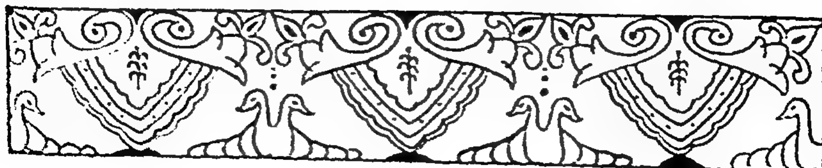
—हरख चंद नाहटा

दुलीचन्द टांक
संयुक्त मंत्री, श्री वीर बालिका शिक्षण संस्थान
जौहरी बाजार, जयपुर

आदर्श समाज सेवी, श्रावक रत्न दानवीर सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया का स्मृति ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है, यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। सेठ सा. के दर्शन का सुअवसर तो मुझे नहीं मिला पर आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में मैं बहुत सुनता रहा हूँ।

आपकी दृष्टि दूरदर्शितापूर्ण थी। शिक्षा और सेवा के क्षेत्र में आपने सदैव समर्पित भाव से कार्य किया। आप कई संस्थाओं के सूत्रधार व ट्रस्टी थे। स्थानकवासी समाज के प्रमुख होकर भी आप में धार्मिक अंध कट्टरता नहीं थी। सर्व-धर्म समभाव की आपकी दृष्टि सदैव रही। ऑनरेरी मजिस्ट्रेट एवं बीकानेर क्षेत्र में विधान सभा सदस्य के रूप में की गई आपकी सेवाएँ चिरस्मरणीय रहेंगी। साहित्य-प्रकाशन में आपकी गहरी रुचि थी। जवाहर किरणावलियों का प्रकाशन आपके मार्गदर्शन में ही हुआ। ऐसे शिक्षाप्रेमी, साहित्यानुरागी, समाजसेवी दानवीर सेठ सा. की स्मृति में प्रकाशित यह ग्रंथ युवा पीढ़ी के लिए निश्चय ही प्रेरणादायक सिद्ध होगा। मेरी ओर से सेठ सा. के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि।

—दुलीचन्द टांक



B. UGAMRAJ MOOTHA
Vice President
A. B. Sadhu Margi Jain Sangh.
MADRAS

Sriman Seth Sri Champalalji Sa Banthia was a pious man with relegious and charitable disposition. The teachings of Jain relegion had a deep impact on his soul and he dedicated his life for the service of humanity. His initiative in starting many relegious and welfare institutions bears ample testimony of his concern for the welfare of the people.

I had the privilege of meeting him before about 30 years in 1962 or so. Inspite of vast difference in our age, he made a deep impact on me by his simplicity, cheerful disposition and his matured thoughts, which I still remember. He was a man of high taste and his love for our past tradition and cultural heritage is reflected in his vast collection of antiques. He was also a shrewd businessman and maintained high ethical and moral standards in his business, which paid rich dividends.

Shri Dhiraj Babu and Sumati Babu are following the rich tradition of their father.

It comes to my knowledge that Shri Jawahar Vidyapeeth, Bhinasar is publishing the 'Smriti Granth' of their founder Memher late Sri Champalal ji Banthia. This granth will be a source of inspiration for the younger generation to follow the noble path shown by him and assumes greater significance in this jet age when our past values, rich traditions and cultural heritage are facing a challenge from the modern western influence.

With best wishes and greetings.

—B. UGAMRAJ MOOTHA

G. M. SINGHVI
OF LINCOLN'S INN, BARRISTER-AT-LAW
MANAGING DIRECTOR
WILLARD INDIA LTD.
3, Netaji Subhas Road, Calcutta

I am happy to note that a Samiti has been formed to give concrete shape to the laudable idea of publishing a Smriti Granth to commemorate the memory of Late Seth Champalalji Saheb Banthia who was a highly distinguished personality of the Oswal Samaj during the past several decades. His philanthropic disposition and liberal contributions in the fields of education and various charitable activities were remarkable. Seth Saheb was also a notable forward looking social reformer and had actively participated in local self government. He led and supported reformist movements. Late Shri Banthia was one of the eminent leaders of the Jain Community.

The work undertaken by the Samiti is truly commendable and I hope you will soon be able to bring out a memorable volume worthy of the cherished memory of Late Seth Shri Champalalji Banthia.

—G. M. SINGHVI



पुखराज छलाणी
S. Manakchand Pukraj
1, Vinayaka Mudali Street.
Sowcarpet
MADRAS

हृदय गद्गद् हो उठा कि स्व. श्री चम्पालालजी साहव बांठिया की पावन स्मृति में उनकी स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए वृहद् स्मृति-ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है।

स्व. श्रीमान् चम्पालालजी सा. जिस निःस्वार्थ भाव से जीवन पर्यन्त समाज, धर्म व सन्त-सेवा में समर्पित रहे वह अत्यन्त ही श्लाघनीय है।

धुन के धनी श्री बांठियाजी ने जन-जन की सेवा भावना से जैन जवाहर विद्यापीठ, जवाहर पुस्तकालय व वाचनालय, बालिका विद्यालय आदि संस्थानों की स्थापना कर विद्यादान द्वारा जो समाज-सेवा की वह अविस्मरणीय है।

साहित्य के क्षेत्र में जवाहर किरणावलियों का जन साधारण की भाषा में प्रकाशन करा कर जन-जन के जीवन में जो ज्ञान-ज्योति प्रदीप्त की वह जैन साहित्य को अमर देन कहलायेगी। उस महापुरुष के बारे में अधिक लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है।

उस महान समाज-सेवी महामानव को शत-शत प्रणाम।

—पुखराज छलाणी

कन्हैयालाल सेठिया
सेठिया ट्रेडिंग कं.
३, मैंगोलेन, कलकत्ता

सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन री विज्ञप्ति मिली। घणो हरख हुयो।

स्व. चम्पालालजी बांठिया असाधारण व्यक्तित्व रा धनी हा। वां री प्रतिभा बहुमुखी ही। वै निस्पृह लोकसेवक हा और समाज रै साधारण सूं साधारण व्यक्ति सूं वै जुड़्योड़ा हा। वै घणा संवेदनशील और समभावी हा।

मैं स्मृति ग्रन्थ सारू म्हारी हार्दिक शुभकामना भेजूं हूं।

—कन्हैयालाल सेठिया



शान्तिलाल धाकड़
शान्तिलाल भंवरलाल धाकड़
कंचन विहार
७/ १, न्यू पलासिया
इन्दौर ४५२००१

इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व

सरलता की प्रतिमूर्ति बांठिया सा. में जनसेवा का अदम्य उत्साह था। आत्मविश्वास एवं दृढ़ निश्चय के फलस्वरूप आपको सार्वजनिक एवं रचनात्मक कार्यों में सदैव सफलता ही मिली। यथार्थ में आपने जीवन की सार्थकता सिद्ध की एवं सेवा तथा विनम्रता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। सौम्यता एवं बहुआयामी प्रतिभा के धनी एक इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व के गुणों का स्मरण ही सच्ची स्मृति है।

स्मृति ग्रन्थ के लिए शुभकामनाएं स्वीकारें।

—शान्तिलाल धाकड़

महेन्द्र सागर प्रचंडिया
निदेशक : जैन शोध अकादमी अलीगढ़
मंगल कलश ३९४, सर्वोदय नगर
आगरा रोड, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

श्रद्धा-शब्दावलि

प्रिय भाई श्री चम्पालालजी बांठिया की स्मृति में श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर द्वारा स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है, वस्तुतः बड़ी बात है। उनके जीवन के आदर्श संस्मरण स्मरण कर उसमें संकलित किए जायेंगे। सुश्रावकों के जीवंत संस्मरण सदा सन्मार्ग का प्रवर्तन करते हैं। आज के विघटनकारी वातावरण में स्मृतिग्रंथ की सामग्री लोगों में व्यक्ति की नहीं, अपितु गुणों की वंदना करने की प्रेरणा प्रदान करेगी, ऐसी हार्दिक मंगल कामना और भावना है। वंदना के इस पवित्र प्रसंग पर उस महान आत्मा के प्रति मेरी तमाम श्रद्धा शब्दावलियां सादर समर्पित हैं।

—महेन्द्र सागर प्रचंडिया

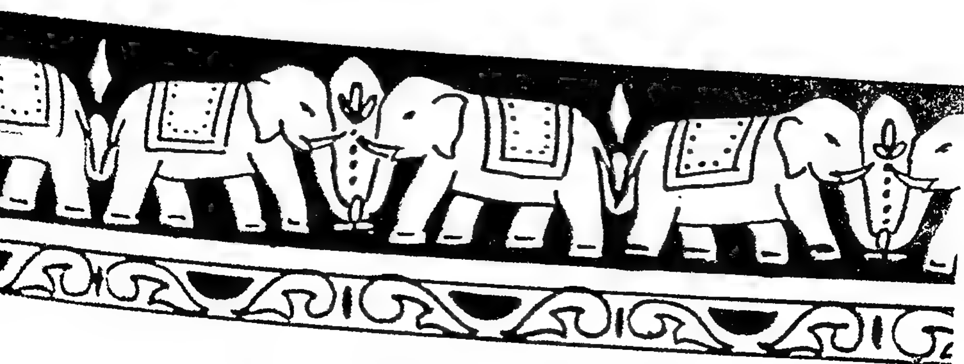


S. M. Kanthed
Director
Pithampur Conzima Pvt. Ltd.,
60, Bajaj Khana,
Dist. Ratlam (M.P.) **JAORA**

समाज शिरोमणि जैन समाज के गौरव पुंज श्रीमद् जवाहराचार्य के स्तम्भश्रावक श्रीमान सेठ स्व. चंपालालजी बांठिया द्वारा सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में किये गये कार्यों को भुलाया नहीं जा सकता। जैन जवाहर विद्यापीठ उनकी अमूल्य देन है। भीनासर के उस परिसर में प्रवेश करते ही मन पुलकित हो उठता है। श्रीमद् जवाहराचार्य के अमृत बिन्दु के रूप में जवाहर किरणावली में उनका अमूल्य योगदान, वृहत् सादड़ी सम्मेलन में कांफ्रेंस के अध्यक्ष के रूप में उनकी प्रतिभा के चमत्कारी दृश्य आज भी सजीव हैं। ऐसे वैभवशाली प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व का स्मरण होते ही मन श्रद्धा से भर जाता है। उनका विराट व्यक्तित्व शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। भारत के श्रेष्ठतम श्रावकों में उनकी गणना होती थी। हम उनके आदर्शों का अनुसरण कर सकें तो हमारा जीवन सफल होगा। स्मृति पुरुष के जीवन से जन-जन को प्रेरणा मिले।

—समीरमल कांठेड़

तेजस्वी व्यक्तित्व के आयाम



समय की शिला : सशक्त हस्ताक्षर

मरूधरा में शिक्षा, सेवा एवं संघनिष्ठता की त्रिवेणी प्रवाहित करने वाले सेवानिष्ठ सौजन्यमूर्ति, निष्काम कर्मयोगी, बुद्धि और कौशल के प्रतीक श्रीमान् चम्पालाल जी वांठिया जैन समाज के अग्रणी श्रावकों में प्रमुख एवं समादृत रहे हैं। आपका सम्पूर्ण जीवन उत्तम आदर्श, उदात्त सिद्धान्तों एवं शाश्वत मूल्यों के प्रति समर्पित रहा है। सरलता, उदारता, स्पष्टवादिता एवं समर्पण के प्रतीक रूप में वे चिरस्मरणीय हैं। समन्वयवादी प्रगतिशील, धुन के धनी, कला के पारखी, समाज के हित चिन्तक, साहित्य उपासक एवं आदर्श श्रावक के वहुआयामी व्यक्तित्व को उनमें देखा जा सकता था।

माधुर्य, कर्तव्य परायणता, कार्यकुशलता एवं प्रखर प्रतिभा से आपने व्यावसायिक सफलता के चरमशिखर स्पर्श किये तो अपनी कर्मठता, दृढ़ संकल्प शक्ति, नेतृत्व की अपरिमित मेधा एवं विलक्षणता से अखिल भारत स्तरीय सामाजिक नेता बने। प्रशासनिक दक्षता के कारण आपने अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी रहकर अतुलनीय सेवाएं प्रदान कीं तो नगरपालिका से विधान सभा तक में अपनी अमिट छाप छोड़ी। उनके व्यक्तित्व में ओज, वाणी में मृदुलता एवं कर्तृत्व में वैशिष्ट्य अपने में उदाहरण थे। श्रद्धावान, विवेकवान एवं क्रियावान सुश्रावक रूप में उनकी पृथक् पहचान थी। समता की सौरभ, क्षमा की भद्रता, दया की महक, करूणा की आर्द्रता एवं वैचारिक क्रान्ति का एक ही नाम था श्री चम्पालालजी वांठिया।

आकर्षक मध्यम कदकाठी, सुघड़ नाक-नक्श, घनी मूंछें, नेत्रों में विशेष चमक, बंद गले पर राजस्थानी पगड़ी एवं चेहरे पर गाम्भीर्य, मुस्कान व ओज की त्रिवेणी। जीवट पूर्ण, फक्कड़ स्वभाव के तेज तर्रार व्यक्ति को वेगवान गति से आते हुए देख अनेक हाथ अभिवादन के लिए उठ जाते। विनोदी, धुन के धनी, कठिन परिश्रमी, कर्तव्यनिष्ठ तथा न्याय के लिए सर्वस्व की बाजी लगा देने वाले श्री चम्पालालजी ने इतिहास के दरवाजों पर दस्तक दी है। उन्होंने कालखण्ड को स्थिर करके अपना नाम अंकित करने को विवश कर दिया है। उनका परिचय तो उनके जन कल्याणकारी कार्य हैं।

एक जीवन : पूरा इतिहास

आपके पूर्वज शुरू में बीकानेर शहर में रहते थे। कई वर्षों बाद आपके प्रपितामह श्री गौजीरामजी बीकानेर में भयंकर जलोदर रोग से ग्रसित हो गये।



मौजीरामजी का ननिहाल कोटासर में था। उस वर्ष कोटासर में खेती बहुत अच्छी हुई तो उनके मामाजी ने कहा कि कोटासर अपने खेतों में इस साल मतीरे खूब हुए हैं और मतीरा खाने व शुद्ध जलवायु से जलोदर रोग ठीक हो जावेगा तो मौजीरामजी कोटासर जाकर बस गए और कुछ वर्ष वहां रहने से उनका रोग बिल्कुल ठीक हो गया। विक्रम संवत् १६१० में वे फिर बीकानेर की तरफ आए। उन्हें बीकानेर के पास ही भीनासर का जलवायु अधिक अच्छा लगा तो एक पट्टा वहीं खरीद लिया और भीनासर में ही बस गए। उसके बाद जैसे-जैसे परिवार बढ़ता गया वैसे-वैसे और जमीनें आस-पास की खरीदते गए और मौजीरामजी और उनके भाई प्रेमराजजी का सारा परिवार भीनासर में ही बस गया। मौजीरामजी के एक ही पुत्र पन्नालालजी हुए और पन्नालालजी के तीन पुत्र सालिमचंदजी, हमीरमलजी व किशनचंदजी हुए। हमीरमलजी की शादी शिवबक्सजी कोचर की बहिन से हुई जिनसे एक पुत्र कानीरामजी व एक पुत्री सिरेकंवर बाई हुए लेकिन छोटी उम्र में ही पहली धर्मपत्नी का देहावसान हो गया तो पुर्नविवाह माणकचन्दजी धाड़ेवा देशनोक की बहिन जवाहर बाई से हुआ जिनसे दो पुत्र सर्व श्री सोहनलालजी व चम्पालालजी तथा तीन पुत्रियाँ राजबाई, मगनबाई व सूरज बाई पैदा हुए। उधर सालिमचंदजी के कोई सन्तान न होने से कानीरामजी को उन्हें गोद दे दिया।

सबसे बड़ी बहिन सिरेकंवर बाई का विवाह बीकानेर के श्री मुन्नीलालजी खजांची से हुआ इनके कोई पुत्र न होने से इन्होंने हेमराजजी को गोद लिया। उनसे छोटी बहिन राजकंवर बाई का विवाह बीकानेर के श्री डालचन्दजी मालू से हुआ उनके भी कोई पुत्र नहीं हुआ तो चोरुलालजी को गोद लिया। उनसे छोटी बहिन मगन बाई का विवाह बीकानेर के श्री लहरचन्दजी सेठिया से हुआ उनके एक पुत्र खेमचन्दजी व पुत्री चित्रलेखा बाई हुए। सबसे छोटी बहिन सूरज बाई का विवाह श्री उदयचन्दजी सेठिया से हुआ लेकिन छोटी उम्र में ही सूरज बाई एवं उदयचन्दजी दोनों का देहावसान हो गया।

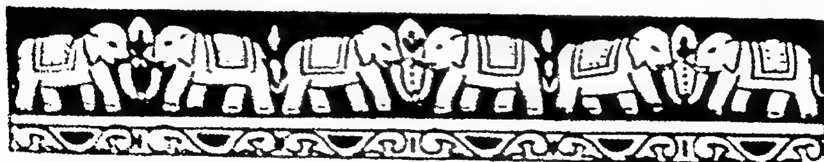
आपका जन्म १५ दिसम्बर सन् १६०२ तदनुसार मिती मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा विक्रम संवत् १६५६ को भीनासर में हुआ था। अपने पितृश्री से आपको उदारता व दान देने के संस्कार और अपनी माताजी से धार्मिक/नैतिक संस्कार विरासत में मिले। श्री हमीरमलजी एवं जवाहर बाई का यह लाडला सपूत जैन समाज का प्रिय हो गया। आपने प्रत्येक कार्य को अदम्य उत्साह दृढ़ निश्चय एवं आत्म विश्वास के साथ किया और समाज में बहुत यश कमाया। आपका परिवार भी भरा पूरा तथा सुख समृद्धि शाली है। परिवार जनों का परिचय भरा पूरा परिवार परिजन परिचय शीर्षक पृष्ठ पर मय चित्रों के साथ दिया जा रहा है।

शैशव व शिक्षा

प्रारम्भ से ही आप कुशाग्रबुद्धि व होनहार थे। इन्हें पढ़ने व खेलने-दोनों ही शौक थे। भीनासर की प्राइमरी स्कूल में प्रवेश लेकर आपने तीसरी कक्षा उत्तीर्ण की। अंग्रेजी, हिन्दी व वाणिका की पढ़ाई होती थी। तीक्ष्ण बुद्धि होने से आपको सीधे ही पांचवी कक्षा में प्रवेश मिल गया। प्रधानाध्यापक जी श्री प्रहलाद जी गोस्वामी थे तथा श्री कालका प्रसाद जी त्रिपाठी हिन्दी और श्री उदयलाल जी माली वाणिका का अध्यापन करते। आप पढ़ाई के साथ खेल में गहन रुचि रखते थे। फुटवाल आपका प्रिय खेल था। पांचवी कक्षा पूर्ण भी न हुई कि १२ वर्ष की आयु में आपका पाणिग्रहण सन् १९१४ (संवत् १९७१) में श्रीमती आनन्द कंवरी (आत्मजा श्री तोलाराम जी सेठी, बीकानेर) से हो गया। तदन्तर आपने पढ़ाई छोड़ दी व व्यापार में लग गये।

व्यवसाय क्षेत्र

सर्वप्रथम आपके प्रपितामह श्री मौजीरामजी व प्रेमराजजी कलकत्ता गये थे। उस समय वहाँ से ट्रेन का साधन नहीं था अतः अजमेर तक ऊँटों पर जाते थे और अजमेर से ट्रेन द्वारा कलकत्ता जाते थे। सर्वप्रथम उन्होंने मूँगा पट्टी में मूंगा का व्यापार शुरू किया जो दो पीढ़ियों तक चला अर्थात् पन्नालालजी ने भी वह पैतृक व्यवसाय किया उसके बाद आपके दादाजी श्री पन्नालालजी ने हजारीमलजी व मंगलचन्दजी के साथ पार्टनरशिप में छत्तों का व्यापार शुरू किया लेकिन आपस में कुछ मतभेद शुरू हुआ तो आपके पिताजी श्री हमीरमलजी जब २० वर्ष के थे तब अपना अलग फर्म मौजीराम पन्नालाल के नाम से ४३ आरमेनियन स्ट्रीट में गद्दी लेकर शुरू किया व कारखाना १०८ ओल्ड चीना बाजार में खोला तथा प्रेमराजजी के सुपुत्रों श्री हजारीमलजी व मंगलचन्दजी ने अपना अलग फर्म M/s प्रेमराज हजारीमल के नाम से खोला। M/s मौजीराम पन्नालाल में आप तीनों भाई सर्व श्री कानीरामजी, सोहनलालजी व आप पार्टनर हो गये तथा साथ में अभयराजजी कोचर, शिवबक्सजी कोचर, नारायणदासजी मल्ल को भी पार्टनरशिप में लिया। कई वर्षों तक उपरोक्त छः पार्टनर कार्य सुचारू रूप से चलाते रहे तदनन्तर संवत् १९८० में श्री कानीरामजी पार्टनरशिप से अलग हो गए और सालमचन्द कानीराम के नाम से चलानी का काम शुरू किया और संवत् १९८८ में आप स्वयं भी अलग हो गए और संवत् १९८९ में २ नं राजा वूडमंट स्ट्रीट में गद्दी लेकर M/s हमीरमल चम्पालाल के नाम से जूट का व्यापार शुरू किया। इसमें श्री चम्पालालजी बैद पुत्र श्री पन्नालालजी बैद भीनासर को पार्टनर लिया। प्रारम्भ में सारा रुपया आपने लगाया व व्यवसाय कार्य श्री चम्पालालजी बैद देखते थे। व्यवसाय



की प्रतिष्ठा बाजार में काफी जम गई तो मर्केन्टाइल बैंक से लिमिट करवा ली और व्यवसाय क्षेत्र काफी फैला लिया और आपकी साख के आधार पर मर्केन्टाइल बैंक ने क्लीन लिमिट कर दी। पैसे की पूरी छूट आपने उपलब्ध करवा दी और व्यवसाय में पारंगत पार्टनर श्री चम्पालालजी वैद मिल गए तो व्यापार ने जबरदस्त प्रगति की और पाकिस्तान में ब्रांच खोलने की मंशा जाहिर की तो मर्केन्टाइल बैंक के अंग्रेज अफसरों ने कहा हम आपकी फर्म के लिए अपनी बैंक की ब्रांच पाकिस्तान में खोल सकते हैं और खोली। हालांकि खोलने के बाद और भी व्यवसाय बैंक को मिला ही लेकिन शुरू में एक फर्म के लिए बैंक की ब्रांच खोल देना अपने आप में अनुपम उदाहरण है और इसका कारण था कि उस समय आपकी फर्म से करोड़ों का व्यापार होता था। फर्म का कार्य पाकिस्तान में नारायणगंज, चटगांव, ढाका, आशुगंज आदि स्थानों में तथा बिहार के मुरलीगंज, बनमंखी आदि में था। आप स्वयं तो वर्ष में एक दो बार ही हिसाब किताब आदि देखने जाते थे बाकी सारा कार्य श्री चम्पालालजी वैद ही देखते थे और आपको उन पर पूर्ण विश्वास था। जब तक वे जीवित रहे काम दिन दूना रात चौगुना प्रगति करता रहा। गद्दी में पैर रखने की जगह नहीं रहती थी और गांव के जो भी लोग कलकत्ता गये सबको अपने यहाँ काम पर रखा। यह गांव के प्रति विशेष लगाव का परिचायक था। श्री चम्पालालजी वैद के स्वर्गवास के पश्चात् नये फर्म और खोले गए जिनके नाम थे M/s हमीरमल चम्पालाल एण्ड कम्पनी तथा हमीरमल चम्पालाल जूट एजेन्ट जिसमें श्री छगनलालजी व सोहनलालजी वैद को पार्टनर लिया गया तथा आपके दोनों छोटे पुत्रों सर्वश्री धीरजलाल व सुमतिलाल को भी इसमें पार्टनर लिया गया।

इसी फर्म के अन्तर्गत राजपूताना कमर्शियल कं., जी. एम. फोगट एन्ड कं., फ्री इन्डिया मर्केन्टाइल कं., ग्रेटर राजस्थान ट्रेडिंग कं., इन्डियन मिनरल इन्डस्ट्रीज व माईनिंग ट्रेडिंग कं. थी। बीकानेर में बीकानेर सिल्क भंडार नाम से पुराने बाजार में आपने वस्त्र व्यवसाय भी किया। यह कार्य श्री जवाहरमल सेवग संभालते थे। साथ ही कोटगेट के अन्दर श्री प्रहलाद जी व्यास व श्री जवाहरमलजी सुथार के साथ बीकानेर जनरल ट्रेडर्स के नाम से लकड़ी का व्यापार कार्य प्रारम्भ किया। तदनन्तर चिराई की मशीनें, वैड शॉ व ट्राली बैठाई गई और सन् १९६० से फर्म का नाम राजस्थान टिम्बर सप्लाई कम्पनी कर दिया गया। अन्य पार्टनर के निवृत हो जाने पर अब आपके छोटे पुत्र श्री सुमतिलाल यह कार्य देखते हैं। दिल्ली में आपने श्री आनन्द राज जी सुराणा के साथ इण्डो यूरोपा मशीनरी कं. में भी काम किया तथा बाद में मैचवेल इलेक्ट्रिक्लस के नाम से पंखे का काम शुरू किया जिसमें आपके प्रमुख सहयोगी भागीदार दिल्ली के श्री मोहनलाल जी कठोतिया

े। यह यूनिट छोटी थी सो पूना में बड़ा कारखाना खोला जो एक लिमिटेड कं. थी जिसमें आप दोनों के अलावा रणजीतसिंहजी बैगानी, भंवरलालजी दूगड़ व सैंसकरणजी कोठारी के शेयर थे। मैनेजिंग डाइरेक्टर श्री मोहनलालजी कठोतिया थे तदनन्तर उन्होंने सम्पतमलजी कठोतिया को एसीसटैन्ट लिया जो बाद में मैनेजिंग डाइरेक्टर हो गए। अन्त में अधिकांश शेयर कमलनयन जी व रामकृष्ण जी बजाज द्वारा क्रय कर लेने से प्रबन्ध बजाज ग्रुप के हाथ में चला गया। बाद में कम्पनी को बजाज इलेक्ट्रीकल्स में मिला दिया गया और बदले में आपको बजाज इलेक्ट्रीकल्स के शेयर प्राप्त हुए जो आज भी मौजूद हैं। बीकानेर जिप्सम कं. में आप मैनेजिंग डायरेक्टर थे परन्तु कम्पनी में चूना समाप्त हो जाने से कार्य बन्द हो गया। इसके अतिरिक्त आपने बीकानेर में रामपुरिया आईस फैक्ट्री के शेयर क्रय कर उसमें कार्य किया और यूनाईटेड कंट्राक्टर्स कोर्पोरेशन के नाम से मोहम्मद हनीफ के साथ ठेकेदारी भी की। धीरे-धीरे आप व्यावसायिक कार्यों से निवृत होते गये और सामाजिक/धार्मिक क्षेत्रों में लग गये। आपकी व्यापारिक प्रगति से प्रभावित होकर आपको बीकानेर ट्रेड एण्ड इण्डस्ट्रीज एसोसियेशन का अध्यक्ष चुना गया तथा एसोसियेशन की ओर से बीकानेर लेजिस्लेटिव एसेम्बली के सदस्य रूप में प्रतिनिधित्व किया। चार वर्ष तक आप एम. एल. ए. रहे।

एक सुवासित चम्पा पुष्प की भांति आपने उद्योग-व्यवसाय, समाज सेवा, साहित्य प्रसार, ज्ञान-प्रसार आदि क्षेत्रों में अपनी अमिट छाप छोड़ी। एक कर्मयोगी की भांति विचार व कर्म का समन्वय किया तथा ५० वर्षों तक समाज के रंगमंच पर अग्र पंक्ति में एवं चतुर्विध संघ के जागरूक प्रहरी बने रहे। सेवा ही उनका व्रत व धर्म रहा। उच्च पदों पर रहते हुए भी स्वयं को साधारण सदस्य ही माना। अहं से कोसों दूर थे पर स्वाभिमान के लिए सदैव सजग रहे। भगवान महावीर के सन्देश 'समयं गोयम मा पमायए' (समय मात्र भी प्रमाद न कर) के अनुसार अप्रमत्त रहे। लक्ष्मी के इस वरद पुत्र ने सरस्वती की सदा पूजा की तथा साधारण जन से आचार्य देव तक की अनन्य सेवा की।

धन्य है भीनासर, जहां बांठिया जी ने जन्म लिया। धन्य है वे गलियां, जहां उनकी किलकारियां गूंजी। गौरवान्वित है समाज इन पर एवं इनके कार्यों पर।

बांठिया सा. ने बाधाओं को कभी हावी नहीं होने दिया। वे अपने कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर रहे व निर्णयों पर अटल। उन्हें हार-जीत, हानि-लाभ की चिन्ता नहीं रहती-बस अपने पथ पर अडिग रहते। सदैव मितभाषी व मिताहारी बने रहे। भोजन करते तो संयमित, नियमित व एक समय पर। कभी अधिक नहीं खाया; भूख से कुछ कम खाकर ऊनोदरी तप का सहज लाभ लेते।



हवेली में एक व्यवस्था थी आपकी। चाबियां, कपड़े, अन्य आवश्यक सामग्री आदि रखने के लिए खूंटी, आले, आलमारी सब नियत थे। इसमें लापरवाही उन्हें अप्रिय लगती और इसीलिए आपके हाथ की रखी चीज अंधेरे में भी निकाल सकते थे। आप सच्चे धार्मिक व आस्तिक थे परन्तु न गलत परम्परा व रूढ़ियों को अपनाया और न आडम्बर को प्रश्रय दिया। लीक से हटकर चलना उनका स्वभाव था क्योंकि वे शायर व सिंह की श्रेणी में आने वाले सपूत थे। जैसा कि कहा गया है —

लीक लीक गाड़ी चले, लीकहि चले कपूत।
लीक छोड़ तीनों चले, शायर सिंह सपूत।।

समय के शिलाखंड पर सशक्त हस्ताक्षर थे बांठिया सा. और अदम्य साहस के धनी भी। समय की पाबन्दी उनकी विशेषता थी। किसी से मिलना हो, किसी बैठक में उपस्थित होना हो, किसी समारोह की अध्यक्षता करनी हो अथवा कोई उनसे मिलने आ रहा हो, आप ठीक नियत समय पर पहुंच जाते। अनेक धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, सार्वजनिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहकर आपने जो कार्य किया, समय उन्हें भुला नहीं सकता।

धर्मनिष्ठ सुश्रावक

बांठिया सा का जीवन धर्म के लिए समर्पित था। आप सदैव धार्मिक कार्यों में अग्रणी रहते। धर्म को आपने सूक्ष्म दृष्टि से देखा परखा था। उनकी दृष्टि में धर्म केवल क्रिया ही नहीं है; यह सुनने पढ़ने या बोलने का नहीं, जीने का तत्त्व है। 'धारयते इति धर्म' के अनुसार जिसे जीवन में धारण किया जाय वही धर्म है और ऐसा धर्म ही जीवन को सही दिशा प्रदान करने वाला जीवन्त धर्म है। भोजन करते समय अन्य कार्य में व्यस्त होने या अध्ययनरत होने पर भी कोई अपनी समस्या लेकर आ जाता तो आगन्तुक को सम्मान देना व समाधान करना भी धर्म समझते थे। रोगी सुश्रूषा या किसी को अर्थ सहयोग प्रदान करना भी धर्म का अंग ही मानते। वैसे तो आप स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय के अनुयायी थे और आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के अनन्य भक्त थे फिर भी आपकी दृष्टि सम्प्रदायातीत थी। त्रिवेणी संघ में किसी भी सम्प्रदाय के बड़े आचार्य उपाध्याय या गुणी साधु साध्वी का पदार्पण होता तो आप दर्शन व प्रवचन श्रवण से लाभान्वित अवश्य होते। उपाध्याय अमरमुनि के दर्शनार्थ कई बार वीरायतन भी पधारे, तो सुशील मुनि जी के दर्शनार्थ दिल्ली भी पधारे। पारस मुनिजी के दर्शनार्थ वाड़मेर पधारे तो वहाँ विराजित खतरगच्छ सम्प्रदाय के आचार्य कांतिसागरजी के दर्शनार्थ भी पधारे। तेरापंथ धर्म संघ के आचार्य श्री तुलसी गंगाशहर पधारे तब वहाँ भी

दर्शनार्थ पधारे एवं प्रवचन का लाभ लिया। आपके अनुरोध पर आचार्य श्री तुलसी घर पर गोचरी हेतु भी पधारे। सभी धर्म संघों के आचार्यों से आपके अच्छे ताल्लुकात थे और आप सबका आदर करते थे। आपकी भावना यही रहती थी कि अच्छाई कहीं भी हो उसे ग्रहण करनी चाहिए तथा बुराई कही भी हो उसका त्याग करना चाहिए।

आपको देशाटन का भी बहुत शौक था जहाँ भी जाते जैन मन्दिर या तीर्थस्थल की भी जानकारी करते। आपने शिखरजी, गिरनार, रणकपुर, आबू, जैसलमेर की तीर्थ यात्राएँ की तो राजगिरी, पावापुरी, चम्पापुरी, भागलपुर, केसरियानाथजी, उदयपुर आदि जगहों पर भी परिवार सहित पधारे। इनके अतिरिक्त दक्षिण अंचल में गोमटेश्वर, कुलपाक, तिरुपति बालाजी आदि भी पधारे। तीर्थस्थलों के अतिरिक्त देश के चारों महानगरों दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास की कई-कई बार यात्रा की। इसके अलावा देश के प्रायः सभी बड़े शहरों को देखने का सौभाग्य मिला तथा गर्मियों में पहाड़ी स्थानों में काश्मीर, कुलू, मनाली, शिमला, मसूरी व दक्षिण में महाबलेश्वर व ऊटी आदि जगहों पर भी पधारे। पूरा देश भ्रमण करके सभी तरह के अनुभव किए तथा अपना ज्ञान लोगों में भी बाँटा लेकिन जहाँ भी गए आपने धार्मिक नियम कही नहीं छोड़े। रोज नवकार मंत्र जाप करना है तो चाहे दुनिया के किसी कोने में हों सवेरे उठते ही सबसे पहले नवकार मंत्र का जाप किए बिना पानी भी नहीं पीते ऐसे धर्मनिष्ठ कर्मनिष्ठ सुश्रावक थे सेठ साहब। □



गुरु सेवा के प्रतीक

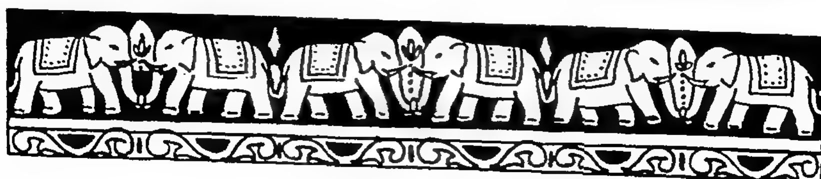
सामाजिक कार्यों के साथ धार्मिक कार्यों में भी आपकी शुरू से ही विशेष रुचि रही है तथा धार्मिक कार्यों में भी हमेशा अग्रणी में रहे। इसीलिए आपको श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस के बारहवें सादड़ी अधिवेशन का अध्यक्ष भी चुना गया। वैसे धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि आपकी आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के सान्निध्य में आने से हुई। पहले संवत् १९८४ में आचार्य श्री का चातुर्मास भीनासर में हुआ उस समय में चौमासे का सारा बंदोबस्त बांठिया परिवार ही करता था लेकिन उस चातुर्मास में आपके बड़े भ्राता श्री कानीरामजी व बहादुरमलजी आदि विशेष भाग लेते थे लेकिन अन्तिम समय में जब संवत् १९९८ में आचार्य श्री भीनासर पधारे उस समय आपके बड़े भ्राता श्री कानीरामजी बीमार हो गए तथा बहादुरमलजी को भी लकवा हो गया अतः आपने अपनी जिम्मेदारी समझी और महाराज के आना जाना शुरू किया लेकिन सिर्फ सुबह शाम जाते थे दोपहर में ताश खेलने की आदत थी। प्रतिदिन आपके साथी सर्वश्री मेघराजजी दूगड़, पीरदानजी कोचर, हरखचन्दजी मीमाणी आदि आते और रोज ही ३-४ घंटे ताश का दौर चलता था। इधर आचार्य श्री को भी मालूम हुआ वे तो मानव जौहरी थे उन्होंने सोचा यह आदमी अपना समय ताश में नष्ट नहीं करके समाज सेवा में लगावे तो समाज का बहुत भला हो सकता है। व्याख्यान में आप नियमित रूप से जाते ही थे और व्याख्यान के बाद दर्शन करने भी जाते थे एक दिन आचार्यश्री ने पूछा कि दोपहर में आप क्या करते हैं।

सेठ सा. तो स्पष्ट वक्ता थे बिना लाग लपेट के बोले कि—गुरुदेव! दोपहर में खाना खाकर ताश खेलने बैठता हूं और शाम तक यही क्रम चलता है।

आचार्य श्री ने कहा कि 'हम आपके गांव में रहें और आप दिन भर ताश खेलें क्या यह अच्छा लगता है?'

सेठ सा. ने कहा कि 'अच्छा तो नहीं लगता है पर आदत पड़ गई है' लेकिन मन में उनके प्रति अगाढ़ श्रद्धा थी अतः बोले 'अब आप जैसा हुक्म करें कर लूंगा'

आचार्य श्री ने कहा 'आज से ही ताश खेलना छोड़ दो' तत्काल उसी क्षण दृढ़ निश्चय कर बोले महाराज आप तो मुझे आज से ही सौगन्ध दिला दीजिये मैं जीवन पर्यन्त ताश नहीं खेलूँगा। इस प्रकार उसी क्षण सौगन्ध लेकर जिन्दगी में कभी ताश के



हाथ नहीं लगाया और उसी दिन से जीवन में परिवर्तन हुआ और पूर्ण भावेन समाज सेवा में समर्पित हो गए। गुरु के आदेश से जीवन परिवर्तन का यह अप्रतिम उदाहरण कहीं नहीं मिलेगा।

जब ताश छोड़ दी तो दिन भर घर में मन नहीं लगता तो दिन में चार पांच वार महाराज की सेवा में पधारते तथा आचार्यश्री के प्रति श्रद्धा और प्रगाढ़ होती गई तथा आपके अग्रज कानीरामजी व बहादुरमलजी के बीमार होने जाने के कारण दर्शनार्थियों के लिए आवास, भोजन, चिकित्सा आदि व्यवस्थाओं में दत्तचित्त होकर लग गए इधर आचार्य श्री अस्वस्थता के कारण भीनासर ही स्थिरावास घोषित हुआ और निकटवर्ती ही नहीं सुदूर स्थानों से भी दर्शनार्थी उमड़ पड़े। आप रोजाना व्यक्तिशः व्याख्यान में जाकर ज्ञात करते कि बाहर से कौन कौन आए हैं तथा तत्सम्बन्धी व्यवस्था में जुट जाते। प्रतिदिन १०-२० भाई वहिनों का घर पर ही भोजन बनता और आप 'अतिथि देवो भव' की मान्यता का पूर्णतः निर्वाह करते। मनुहार पूर्वक आत्मीयता से पास बैठकर सबको जिमाते थे और किसी प्रकार की असुविधा होने पर उन्हें हवेली में सूचना कराने हेतु भी कहते थे। संघनिष्ठता, स्वधर्मी सेवा एवं जनसेवा की प्रतिमूर्ति बनकर आपने एक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया। समर्पित भाव से सेवा करते हुए आचार्यश्री से नैकट्य क्रमशः बढ़ता गया।

आचार्य श्री को मधुमेह की बीमारी थी। करीब एक वर्ष बाद आचार्य श्री के कंधे में बहुत जबरदस्त अदीठ फोड़ा हो गया जिसे कार्बंकल कहते हैं। आचार्य श्री को अपार वेदना थी लेकिन फोड़े को ठीक करवाने के लिए बहुत बड़े आप्रेशन की आवश्यकता थी जिसमें जान का भी खतरा था। इसी दौरान समाज की बैठक में आचार्यश्री को संथारे का प्रत्याख्यान कराने का प्रस्ताव आया।

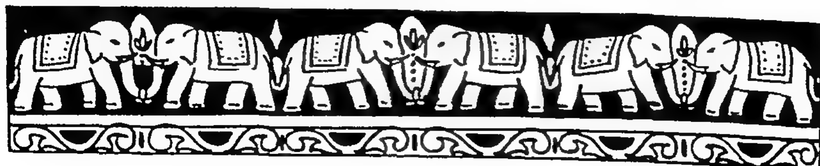
'सेठ सा ने पूछा' यह आप अपने मन से कह रहे हैं या आचार्यश्री से पूछ कर कह रहे हैं।

पूछा तो नहीं है समाज के प्रतिनिधियों ने कहा। अन्ततः मीटिंग में तय हुआ कि एक चार सदस्यीय समिति बनाई जावे जो आचार्य श्री का इस सम्बन्ध में मन्तव्य ज्ञात करें। इस प्रकार सेठ सा सहित सर्वश्री भैरूदानजी सेठिया, सतीदासजी तातेड़ व सुमेरमलजी वैद को चुना गया और इन्होंने आचार्य श्री से बात की तो उन्होंने फरमाया 'मेरा शरीर तो संघ का है और संघ जैसा उचित समझें करे'। अब संघ भी असमंजस में पड़ गया लेकिन आपने कहा जब आचार्यश्री ने फरमा दिया है तब हर सम्भव इलाज समाज को करवाना चाहिए और समाज के कहने पर इस इलाज की सम्पूर्ण जिम्मेदारी उन्होंने अपने ऊपर ले ली।

तदन्तर सेठ सा ने बीकानेर के प्रसिद्ध विलायती डाक्टर ऐलन को बुलाकर दिखाया उन्होंने कहा कि आप्रेशन तो वे कर देंगे लेकिन मधुमेह के कारण घाव भरने की कठिनाई है तो डॉ. अविनाश सतीजा ने कहा घाव भरने की जिम्मेदारी मेरी है तो आप्रेशन की तैयारी शुरू हुई। हॉल में ही आप्रेशन हुआ। आप्रेशन के समय पास के साधुओं में सिरेमलजी महाराज सा और श्रावकों में सिर्फ आप थे। आप्रेशन वहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। सारा सड़ा हुआ भाग डाक्टर ने निकाल दिया और एक दड़ी जितना छेद हो गया। अब डॉ. अविनाश ने इसके लिए एक स्पेशल मल्हम बनाया और उससे रोज मरहम पट्टी करके १५ दिन में घाव भर दिया और ऊपर चमड़ी आ गई और आचार्य श्री फिर से एकदम स्वस्थ हो गए। इलाज का समस्त खर्चा भी आपने स्वयं ने ही वहन किया। निःसंदेह इस सफलता का श्रेय सेठ सा के अथक प्रयासों को ही जाता है। आपकी अनन्य भक्ति व श्रद्धा से गुरुदेव अत्यन्त प्रभावित हुए तथा समाज में भी बांठिया सा प्रशंसित व लोकप्रिय हो गए।

इसके एक वर्ष वाद आचार्य श्री का पुनः गर्दन पर इसी तरह का भयंकर कार्वंकल फोड़ा हुआ पुनः डाक्टर ऐलन को बुलाया गया उन्होंने जांच कर बताया कि इस जगह आप्रेशन सम्भव नहीं है। डॉक्टर के उत्तर दे देने पर अब अन्तिम समय में भी श्री सिरेमलजी म.सा. की हिम्मत नहीं हो रही थी कि आचार्यश्री को संथारे का प्रत्याख्यान करा दे तो आचार्य श्री ने स्वयं ही संथारे का प्रत्याख्यान कर लिया। और आषाढ़ सुदी ८ संवत् २००० को शाम को आचार्यश्री का संथारा सीज गया। शाम को समय कम था अतः निर्णय लिया गया कि सवेरे ही महाप्रयाण यात्रा निकाली जावे। चलावे के लिए चन्दा हुआ कुल २००००/- चांदी के सिक्के एकत्र हुए जिसमें २०००/- तो घी व चन्दन की लकड़ी में लगे बाकी १८०००/- की उनके पीछे उछाल की गई। चांदी की वैकुण्ठी आचार्य श्री की तबियत खराब होने पर पूर्व में ही सेठ सा ने बनवाकर रख दी थी, में महाप्रयाण यात्रा निकाली गई जिसमें हजारों श्रद्धालुजन सम्मिलित हुए। श्मशान भूमि पहुंचकर आप इतने भाव विह्वल हो गये कि वैकुण्ठी सहित ही दाह संस्कार घृत व चन्दन से कर दिया गया बाद में दूसरी रजत वैकुण्ठी बनाकर जवाहर विद्यापीठ को अर्पित की और उनकी स्मृति में इस स्थल पर एक विश्राम गृह भी बनवाया गया।

आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के व्याख्यान बहुत ही उच्च कोटि के समयानूकूल सुन्दर व सरल भाषा के होते थे जिससे कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था अतः उनके क्रांतिकारी विचार जो व्याख्यानों के माध्यम से प्रस्फुटित होते थे



पंडित नोट करते थे। उन्हीं व्याख्यानों को पंडित शोभाचन्द्रजी भारिल्ल से सम्पादन करवाकर सेठ सा ने जवाहर किरणावली के माध्यम से प्रगट किए। शुरू की दो किरणावली महाराज सा के जीवन काल में ही सेठ सा ने निजी खर्चे से प्रकाशित करवा दी थी बाद में तीसरी व चौथी किरणावली श्री बहादुरमलजी बांठिया की तरफ से तथा पांचवी फिर आपने अपनी तरफ से प्रकाशित करवाई। बाद में जन साधारण का सहयोग लेकर ३५ किरणावलियां प्रकाशित करवाई। यह इतना सुरुचिपूर्ण व मौलिक साहित्य है तथा आज भी नया लगता है तथा निरन्तर इसकी मांग बनी हुई है लोग बार-बार इसे पढ़ना चाहते हैं। इसके प्रकाशन का प्रमुख श्रेय सेठ सा को ही है। इसके अलावा आचार्यश्री जवाहरलालजी म.सा. की जीवनी भी आपके प्रयत्न से ही प्रकाशित हुई। उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाने के लिए भीनासर में उनकी स्मृति में श्री जवाहर विद्यापीठ की स्थापना की जो एक तरह से उनका जीवन्त स्मारक है।

इस प्रकार जब-जब आचार्य श्री जवाहर का नाम लिया जायेगा तब-तब सेठ सा का नाम लिया जायेगा। वे अपने गुरु के साथ अमर हो गये और गुरु सेवा के प्रतीक के रूप में देदीप्यमान हैं। □

श्री जवाहर विद्यापीठ के प्रमुख संस्थापक

भीनासर में श्रीमद् जवाहराचार्य के स्मारक रूप में श्री जवाहर विद्यापीठ को स्थापित करने का श्रेय मुख्यतः बांठिया सा. को है। गुरुदेव के प्रवास काल में आपने उनकी अनन्य सेवा की और उनके अस्वस्थ होने पर चिकित्सा हेतु हर सम्भव व्यवस्था की। आपके अथक प्रयासों, विचक्षण सूझ-बूझ एवं कर्मठता से ही इस परिकल्पना को मूर्त रूप मिल सका। आषाढ़ शुक्ला अष्टमी सं. २००० को आचार्य श्री का स्वर्गारोहण होते ही आपने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाने व उनकी वाणी को कालजयी बनाने के लिए एक संस्था की स्थापना करनी है। स्मारक के लिए धन एकत्रित करने के उद्देश्य से त्रिवेणी संघ (भीनासर, गंगाशहर व बीकानेर) की एक मीटिंग बुलाकर अपील जारी की जिसमें व्यापक जन समर्थन मिला। श्रीमान् भैरोंदानजी सेठिया ने इस योजना को समयोचित व आवश्यक बताया। फिर क्या था, दोनों ने ११-११ हजार रुपये की राशि घोषित की और तदनन्तर समाज के श्रीमन्तों से अपील कर अर्थ संग्रह किया और लक्ष्मीचन्दजी, मूलचन्दजी लूणिया ने इस उद्देश्य के लिए अपनी १६०० गज जमीन अर्पण की।

दिनांक २६/४/४४ को श्री जवाहर विद्यापीठ की स्थापना करने हेतु साधारण सभा में निर्णय होने पर बांठिया सा. का स्वप्न साकार होने लगा। भूखण्ड की प्राप्ति व स्मारक फंड में प्राप्त राशि से निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया। यहां पुस्तकालय भवन व छात्रावास का निर्माण हो गया तथा प्रकाशन कार्य को भी गति मिली। आज गौरवान्वित है भीनासर कि इसे 'दादा गुरु का धाम' बनने का अवसर मिला और ज्योर्तिधर आचार्य की वाणी जन जन तक पहुंच सकी।

श्री जवाहर विद्यापीठ में एक छात्रावास चालू किया गया, जो सन् १६५४ तक चला। यहां विद्याध्ययन कर अनेक छात्रों ने साहित्य, शिक्षा, शोध, समाज-सेवा, व्यवसाय आदि क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित किये व आज भी संस्था के नाम को चारों दिशाओं में फैला रहे हैं। आप स्वयं विद्यापीठ के रहने वाले छात्रों के रहने, खाने-पीने आदि की व्यवस्था का जायजा लेते थे। शुरू में कई वर्ष तक अपने गेस्ट हाऊस में ही छात्रावास चलाया। बाद में विद्यापीठ में भवन बन जाने पर छात्रावास उसमें स्थानान्तरित कर दिया गया। इसमें भूपराज जैन, मिट्ठालाल मुर्डिया और मेवाड़ के छात्र थे जो पढ़ाई में प्रायः अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होते उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने का श्रेय चंपालालजी बांठिया को ही है।



उधर श्री जवाहर विद्यापीठ के पीछे जहां वर्तमान में उपरोक्त स्कूल चल रही है वह जमीन बाबा सालमनाथ जी की थी, वे वहां कुआं खुदवा रहे थे लेकिन काफी गहराई तक खोदने के बाद भी उसमें पानी नहीं निकला तो अन्ततः बाबा सालमनाथ जी महाराज ने अपनी ३६२० गज जमीन जिसकी लागत उस समय २५,०००) थी बिना कीमत मुफ्त जन हित सेवा के लिए सेठजी को सुपुर्द कर दी। सेठजी ने लड़कियों का स्कूल जो पांचवीं कक्षा तक अभी तक आपके हॉल व कमरों में चल रहा था उसे क्रमोन्नत करने की आवश्यकता महसूस की। वहां पर जगह की कमी थी अतः आपने यहां बाबा सालमनाथजी की जमीन के पास की ५८२१ गज जगह सर्व जन हितार्थ और खरीद कर ली और यहां स्कूल के लिए सुन्दर भवन का निर्माण करवाया। अपनी देखरेख में सारा कार्य सम्पन्न करवाकर स्कूल को उच्च प्राथमिक विद्यालय तक क्रमोन्नत कर इस नये भवन में स्थानान्तरित कर दिया और बाद में चैत्र सुदी १ संवत् २०१५ को स्कूल को राजस्थान सरकार को अर्पण कर दिया। अपने स्वर्गीय पूज्य पिताजी सेठ हमीरमलजी बांठिया की पुण्य स्मृति में इसे दान कर रजिस्ट्री करवा दिया तब से शाला राजस्थान सरकार शिक्षा विभाग द्वारा सुचारू रूप से चलाई जा रही है। दान देने के बाद भी जब कभी भवन में कोई टूट फूट मरम्मत आई स्कूल प्रधानाध्यापिका द्वारा सम्पर्क करने पर आपने इसकी मरम्मत आदि भी करवाई। वर्तमान में प्रधानाध्यापिका सुबोध बाला गुप्ता के कुशल निर्देशन में शाला में करीब ४०० छात्राएं अध्ययनरत हैं तथा शाला निरन्तर प्रगति पथ की ओर अग्रसर है। गंगाशहर भीनासर व किसमीदेसर की छात्राओं को ज्ञानालोक प्रदान कर सेठजी ने एक कीर्तिमानीय कार्य किया है।

इस वर्ष विद्यालय की स्थापना के ६२ वर्ष पूर्ण होने पर संस्था की हीरक जयन्ती दिनांक १-२ व ३ अप्रेल १९९४ को भव्य समारोह पूर्वक मनाई गई एवं दिनांक ३ अप्रेल १९९४ को आयोजित मुख्य समारोह के मुख्य अतिथि श्री देवीसिंह जी भाटी, नहर एवं सिंचाई मंत्री ने आगामी सत्र से स्कूल को माध्यमिक स्तर तक क्रमोन्नत करने की भी घोषणा की ताकि गांव की बालिकाएं मैट्रिक तक की शिक्षा यहीं प्राप्त कर सकें और सेठजी का यह सपना भी जल्द ही साकार रूप ले लेगा।

दिनांक १ मार्च सन् १९४४ को विद्यालय का विधिवत् उद्घाटन महाराजा सार्दुलसिंहजी के कर कमलों से हुआ। इस भव्य उदघाटन समारोह में आपने महाराजा साव को जो स्वागताभिनन्दन भेंट किया वह परिशिष्ट 'क' में प्रकाशित किया गया है।

परिशिष्ट 'क'

।।श्री वीतरागाय नमः।।

श्रीमान् परममाननीय राठौड़ वंश चूड़ामणि, प्रजावत्सल, धर्मनिष्ठ
बीकाणनाथ, महाराजाधिराज, नरेन्द्रशिरोमणि, लेफ्टिनेन्ट कर्नल
हिज हाईनेस महाराजा श्री १०८ श्री सार्दुलसिंह जी बहादुर,
सी. वी. ओ. जय जंगलधर बादशाह का सेठ हमीरमल बांठिया
विद्यालय भवन के उद्घाटन के लिए महती कृपा कर
पधारने पर सादर सविनय सम्पादित

❊ स्वागताभिनन्दन ❊

श्री अन्नदाता जी घणी घणी खमा!

पृथ्वीनाथ!

आज हमारे परम पुण्य और सौभाग्य का उदय है कि आज हमारे कृपालु बीकाणनाथ इस छोटे से भीनासर जैसे कस्बे में भी पधार कर सेठ हमीरमल बांठिया बालिका विद्यालय के इस साधारण भवन का अपने कर कमलों से उद्घाटन कर रहे हैं। इस अवसर पर श्रीमान् का आनन्दमय स्वागत करते समय भीनासर निवासी एवं यह बांठिया वंश अपने आपको कृतकृत्य समझता है।

प्रजाप्रिय राजराजेश्वर!

यह श्रीमान् की प्रत्येक प्रजाजन, प्रत्येक धर्म और प्रत्येक शिक्षा आदि बीकानेर राज्य की उन्नति में सहयोग देने वाली प्रवृति को प्रोत्साहित करने वाली नीति का ही फल है कि हम आज यहां पर श्रीमान् के शुभ दर्शन से अपने जीवन को कृतार्थ कर रहे हैं।

अन्नदाता!

यह बालिका विद्यालय मेरे पूज्य पिता हमीरमलजी बांठिया की स्मृति में संवत् १९८८ से स्थापित है। यह भीनासर जैसे छोटे स्थान में जितनी कन्या शिक्षा की प्रवृति है उसकी पूर्ति कर रहा है। इसके भवन का उद्घाटन श्रीमानों के कर कमलों से हो रहा है। इसलिए इसका भविष्य परम उज्ज्वल है और भगवान् की कृपा से आगे भी यहां की जरूरतों को पूरी करता रहे यही मेरी हार्दिक भावना है।

महामान्य नृपप्रवर!

बीकानेर में एक नवजीवन को संचारित करने की और प्रत्येक धर्म एवं सम्प्रदाय से व्यावहारिक सहानुभूति रखने की श्रीमान् की यह नीति समस्त राज्य के लिए अनेक



मंगलमय भावनाओं से परिपूर्ण है। भीनासर में इस शुभागमन के अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी सम्प्रदाय के श्री साधुओं के यहां आज पधार कर जो इस सम्प्रदाय को कृतार्थ कर रहे हैं इसके लिए यह समाज श्रीमान् का चिरऋणी रहेगा।

हे आदर्श नरेश!

अन्त में मेरी प्रभु से यही विनीत प्रार्थना है कि श्रीमान् की प्रजाजनों पर यह कृपा अक्षुण्ण बनी रहे और श्रीमान् समस्त सुखी परिवार समेत सदा हम सबको अपने आनन्दमय शासन से सुखी और समुन्नत करते रहें।

विनीत,

भीनासर श्रीमानों का परमराजभक्त प्रजाजन

ता. १ मार्च सन् १९४४ ई. चम्पालाल बांठिया

२. जवाहर हाई स्कूल का निर्माण

भीनासर के बच्चों को भयंकर सर्दी व चिलचिलाती धूप में गंगाशहर के चौपड़ा स्कूल में पढ़ने जाते देखकर आपके हृदय में भावना जागृत हुई कि अपने गांव में भी हाई स्कूल हो, जहां बच्चे ज्ञान प्राप्त कर गांव का नाम रोशन कर सके।

अपने अन्तर की भावना को मूर्त रूप देने का अवसर दस्तक दे रहा था अतः अपने प्रतिष्ठान मै. हमीरमल चम्पालाल के पार्टनर श्री चम्पालाल जी बैद से विचार-विमर्श कर प्रतिष्ठान की ओर से ही स्कूल-भवन का निर्माण करा दिया।

यह समय सन् १९४७ का था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देशी रियासतों के विलय से राजस्थान का निर्माण हो चुका था। बीकानेर में श्री भगवन्तसिंह जी मेहता कमिश्नर नियुक्त हुए थे। उनसे आपके घनिष्ठ सम्बन्ध थे। एक दिन बातचीत के दौरान आपने भीनासर में हाईस्कूल बनवाने की इच्छा प्रकट की तो मेहता सा. ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए तत्काल ही आवश्यकतानुसार जमीन निःशुल्क घेर लेने के लिए कह दिया। आपको जमीन फ्री लेना स्वीकार्य नहीं था अतः दो पैसा गज की दर से ५०,००० गज जमीन क्रय कर पट्टा बनवाया और फिर निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया। लगभग एक वर्ष में शाला भवन निर्मित हुआ और अब इसे चालू करने के प्रयास करने थे।

इधर संयोग ऐसा बना कि विधानसभा चुनाव में श्री कुम्भाराम आर्य आपसे नाराज हो गये और एक वर्ष तक हाई स्कूल का कार्य प्रारम्भ न हो सका। वस्तुतः नाराजगी के मूल में बांठिया सा. की स्पष्टवादिता थी। श्री आर्य की श्री जसवन्तसिंह जी

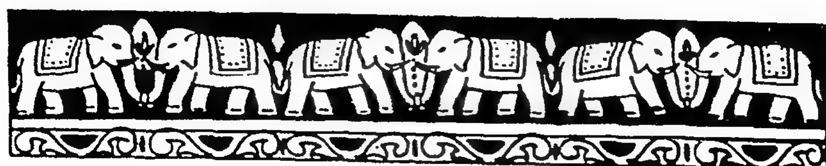
से टक्कर थी, जिनका बांठिया सा. से निजी सम्बन्ध था। जब श्री आर्य आपसे वोट मांगने आये तो सहजता से आपने कह दिया कि आपका वोट इनके प्रतिपक्षी को जायेगा। श्री आर्य ने इसकी गांठ बांध ली और कुछ न कुछ बाधा आती रही। अन्ततः बांठिया सा. स्वयं जयपुर पधारे व मंत्रियों से मिले।

सेठ सा. को काफी दौड़-धूप करनी पड़ी। फिर आपको कहा गया कि फर्नीचर की व्यवस्था कोई करे तो स्कूल चालू किया जा सकता है। आपने सहर्ष स्वीकार कर अपनी ओर से २०,०००) फर्नीचर हेतु प्रदान किये। तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री नाथूराम मिर्धा द्वारा उद्घाटन से सन् १९५३ में लोकार्पित संस्था अनवरत कार्यरत है। सेठ सा. ने इसे सरकार को ही सुपुर्द कर दिया और शिक्षा का आलोक फैलता जा रहा है इसके माध्यम से।

कुछ वर्षों के पश्चात् भवन में मरम्मत अपेक्षित थी परन्तु भवन आपके ही नाम से होने से मरम्मत नहीं कराई गई। प्रधानाध्यापक श्री वी. डी. आचार्य द्वारा वस्तु स्थिति से अवगत होने पर आपने भवन भी सरकार के नाम स्थानान्तरण की कार्यवाही की। श्री आचार्य के प्रयासों से इसमें सफलता मिली और तदनन्तर शाला भवन की मरम्मत बराबर होती है। यह बांठिया सा. की गुरू श्रद्धा का पावन तीर्थ है। उल्लेखनीय है कि आपने अपना, अपने प्रतिष्ठान या परिजनों का नाम न देकर श्रीमद् जवाहराचार्य के नाम पर इसको जवाहर हाई स्कूल नाम दिया।

यहां उल्लेख करना अप्रासंगिक नहीं कि पूर्व में निर्मित प्राथमिक शाला भवन में भी आपके परिवार की अहम् भूमिका रही है। प्रारम्भ में तीन कमरे श्रीमान् हमीरमल जी, कानीराम जी व बहादुरमलजी बांठिया ने निर्मित करवाये थे। तत्पश्चात् स्थान की कमी अनुभव होने पर दो कमरे श्री नारायणदासजी मल्ल व सोहनलालजी ने बनवाये। बच्चों को खेलकूद की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु सरकार से जमीन की मांग करने पर दोनों शालाओं के मध्य ५०,००० गज जमीन सरकार ने खुली छोड़ दी है। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि है और पांच सौ से अधिक छात्रों के लिए उपयोगी खेल मैदान है।

□



समाज सेवा के आयाम व कीर्तिमान

बांठिया सा. ने समाज के उत्थान व संचालन में जो योगदान दिया वह बहुआयामी है। पृथक् से प्रस्तुत अग्र विवरण से स्पष्ट है उनकी लगन व निष्ठा।

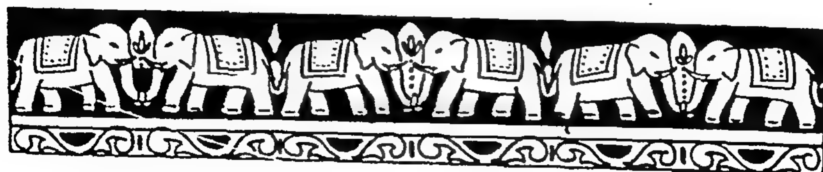
सेठ श्री हमीरमलजी बांठिया स्थानकवासी जैन पौषध शाला का निर्माण

वर्षों से आपको साधु सन्तों के प्रवचन स्थल की कमी अनुभव हो रही थी। आपके पितृ श्री हमीरमलजी व भाई श्री कानीरामजी ने १८ हजार गज जमीन क्रय की हुई थी। आधी आपके हिस्से में आई थी व आधी कानीरामजी ने सोहनलालजी को बेच दी थी। दोनों भाईयों ने योजना बनाकर एक बड़ा हॉल बीच में, जिसमें ८००-१००० व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था है, निर्मित कराया। साथ ही दोनों तरफ चार कमरे व दो बरंडों का निर्माण भी करवाया। एक तरफ सोहनलालजी के चार कमरों में आयुर्वेदिक औषधालय प्रारम्भ किया जो वर्षों तक चला। दूसरी ओर आपके चार कमरों में बालिका विद्यालय चलता था, जिसे शाला के नये भवन में स्थानान्तरित करने पर वे कमरे साधु सन्तों के ठहरने के काम आने लगे। उसे भी धर्मार्थ ट्रस्ट बना दिया गया। इसकी रजिस्ट्री सन् १९८३ में सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया धर्मार्थ ट्रस्ट के नाम से कराई गई। इसमें आगे के ४ कमरों के अतिरिक्त पीछे एक बड़ा कमरा व खुली जमीन थी उसे भी ट्रस्ट को प्रदान कर दी गई। बड़े हॉल को भी आपने जवाहर विद्यापीठ को दान दे दिया। इस हॉल में प्रवचन आदि होते हैं, सांवत्सरिक प्रतिक्रमण किया जाता है तथा सामाजिक कार्य भी सम्पन्न होते हैं। पीछे आपकी निजी खुली जमीन में कुआं व उद्यान बनवाया हुआ है। वगीचे में सब्जियां व फुलवारी आदि लगाई जाती थी, जिससे वातावरण सुरम्य था। शुद्ध हवा पानी मिलने से स्थान साधु-सन्तों के लिए साताकारी सिद्ध हुआ। श्रीमद् जवाहराचार्य का अन्तिम दो वर्ष का समय यहीं व्यतीत हुआ। संवत् २००० में आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. इसी हॉल में देवलोक हो गये। तथा यह पुण्य भूमि दादा गुरु का धाम वन गई तदनन्तर आचार्य प्रवर, युवाचार्य श्री जी व सन्त मुनिराज यहां निरन्तर विराजते रहे हैं।

उपरोक्त जमीन वीकानेर के राठीजी से खरीदी थी और इसे राठी की कोटड़ी कहते थे। आप व आपके वड़े भाई सोहनलालजी इसके मालिक हुए तो आपके बड़े भाई सोहनलालजी ने आपको प्रस्ताव रखा कि सेठ हमीरमलजी जो धरमादे फंड का रुपया दोनों भाईयों को दे गए है उसमें से आधा आधा रुपया लगाकर इस जमीन के अग्रभाग

के एक तरफ स्कूल बीच में एक हजार आदमी सामायिक प्रतिक्रमण कर सके ऐसा हॉल वनाया जा सकता है तथा दूसरी तरफ धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय बनाया जा सकता है और आपको यह प्रस्ताव पसन्द आया और अपनी सहमति जाहिर की तो सोहनलालजी ने मेघजी चलवा से इस हॉल का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया। संवत् १९९६ में हॉल का निर्माण कार्य पूरा हो जाने पर दोनों भाईयों ने अपने पूज्य पिताजी की पुण्य स्मृति में हॉल पर मार्बल का साइन बोर्ड 'सेठ हमीरमलजी बांठिया स्थानकवासी जैन पौषधशाला' लगवाया जो आज भी मौजूद है और संवत् १९९६ से ही इस हॉल मय खुली जमीन व पोर्च का उपयोग समाज के लोगों के धार्मिक अध्ययन, अध्यापन संत मुनिराजों के प्रवचन एवं धार्मिक क्रियाओं के लिए किया जाता रहा है इस प्रकार पिछले ५५ वर्षों से यह हॉल धार्मिक कार्यों के लिए समाज के उपयोग में आ रहा है। हॉल निर्माण के समय दोनों भाईयों में कितना प्रेम था व कितनी शुद्ध भावना थी यह श्रीमान् सोहनलालजी द्वारा आपको लिखे गये पत्रों से स्पष्ट झलकती है। उनके पत्रों में से एक की प्रति आगे परिशिष्ट 'अ' में मूल रूप में प्रकाशित की जा रही है ताकि लोग इनसे कुछ शिक्षा ले सकें। चूंकि मूल पत्र मोडिया भाषा में हैं जो जनसाधारण समझ नहीं पाता है अतः यहां उसका रूपान्तरण देवनागरी लिपि में प्रकाशित किया जा रहा है।

सिध श्री कलकत्ता चिरु चम्पालाल बांठिया सूं सोहनलाल रा आशीष बंचीजो। चिठ्ठी तुम्हारी आई सारा समाचार बांच्या अठै सारा राजी खुशी है। तुम घणा खुशी रहीजो तुमारे सरीर को जाबता राखीजो सारी बात सरीरो लारे छै। हमारे शरीर अब एक रकम ठीक ही छै आंख में दवाई डॉक्टर घालण ने आवे छै। दिन ३-४ फिर घालेगा छाय तो कट गई छै थोड़ी आँख में लाली छै तथा नाम मातर छाय भी छै सो कट जावेगा। कोई फिकर करीजो मताना हमा आसोज सुदी में एकला रवाने हुय कर आवांगा निगह रैसी। और तुमा मोटर बाबत लिख्यो सो घर की ही मोटर छै जरूरत हुवेगा जद कढाय लेवांगा। और चंदे बाबत लिख्यो सो जाण्या स्कूल लड़की री गोल्डन जुबली रो नाम दराय कर जचै नहीं। स्कूल करणे री आमना छै तो सेठ घणाई रुपिया टाल गया छै अपौने खाणे री गरज तो छै नहीं सेठा रे परताप दोनूं तरफ आनन्द छैः तुमा लिखो जिकी जागा लेयकर सेठा रे नाम सूं कराय सको छो रुपिया आधा आधा लगाय दैसों तुम्हारे जचे तो राठी री कोटड़ी अपौ दोनों री छै बहुत चोखो मकान एक तरफ स्कूल रैय सकै छै एक तरफ दूसरा मकान १ हजार आदमी री पुरखता रैय सकै जिसो हुय सकै छै तिके में सामायिक प्रतिक्रमण श्रावक करे इसो बंदोबस्त हुय सकै छै। बखत पर साधुजी और पूज महाराज उतरे तो भी अटकना लागे नहीं। रुपिया १५ हजार मकान में लगायो



आलीशान मकान कमरो हुय सके छै। सेठो रा रुपिया भी मोकला छै कुछ अटकी लागे नहीं तथा जागा अपणी तरफ सूं फेर भी देय दी जावे तो अटके नहीं अपोरे कुछ भी कमी छै नहीं। बाकी रुपिया सेठो रा वचे तिके में स्कूल रो खरचो हमेशा वास्ते चला सको छो। औषधालय री जचै तो एक औषधालय वी देशी दवायों री हुय सकै छै। १५० रुपये महीने में औषधालय चल सकै छे तथा ७५/- ८०/- में स्कूल चल सकै छै। सेठो रा रुपिया अबार तो मोकला छे ईण उपर ब्याज इतरो नहीं हुवेगा तो अवार तो बरसा चलेगा ईतरेने परमात्मा अपोरो दिन चोखा राखेगा तो अपने किसो १ दिन मरणो छै नहीं। धरमध्यान अपो अपौरी तरफ सूं भी टाल कर ब्याज री आमदनी इतरी हुवे इसो बंदोबस्त कर देवांगा तो कंई आंट छै। लारे किसो धन आपोरे सागे चालसी तथा धरम सूं किसो धन घटे छै सोच लीजो। हमारे तो इस तरह जचै छै तुम्हारे जचै तो तुमा भी आवो छो १ मकान चोखो मजे रो वणाय कर सेठो रे नाम सूं दोनूं काम हर वखत सेठो रे नाम सू चाले इसो बंदोबस्त कर देणे में लाभ ई है सोच लीजो। राज सूँ स्कूल रो खरचो वास्ते अपोने कोई मदद लेणे री हमारे तो जचै नहीं फिर तुमारे जचै जिसी लिख दीजो।

चम्पालालजी को अपने बड़े भाई का प्रस्ताव पसन्द आया और उन्होंने इसके लिए अपनी स्वीकृति लिखकर भेज दी तो सोहनलालजी ने वापिस जो पत्र चम्पालालजी को लिखा उसके अंश निम्न प्रकार हैं।

कमठाणे री बात मेघजी ने सारी वात समझाय दीवी छै आगे आगे ठेठ तांई कमरा गज १०० ने तथा आगीने रो बरंडो गज पांच ने तथा पिछाड़ी रो छपरो ईतरा करणे वास्ते कैयो छै। १ तरफ कमरा ईसकूल वास्ते रैय जासी फिर बीच में पिरोल हुय कर बठीने जो बहुत बड़ा होल हुवेगा तिके में करीब १-१$\frac{1}{2}$ हजार आदमी तक बी बैठे जिसो तथा आगे आगे ठेठ तक चेहरो बी चोखो हुय जासी तथा ऊंचाई कमरा री गज ७ सूं बेसी हुवेगा नहीं ईतरो काम में बी रुपिया १५ हजार सूँ ऊपर लागता दीसै छै कारण कि अगाड़ी सूँ गज १०० सूं ऊपर छै १ तरफ थोड़ो लारे पड़े छै तिकी जमीन बी राज सूं लेणी पड़सी। ईतरो काम में हमारी आमना छै तिके सूं ज्यादा रुपिया लाग जावेगा पण अबे ईतरे काम सूँ बेसी तो कराय सकाँगा नहीं इण काम में जमीन समेत रुपिया ३० हजार पड़ जासी आधा हमारा लाग जासी आधा तुमारा लाग जासी। सेठो रे धरमादा फण्ड रा रुपिया जितरा नी छै ईतरा बचत रैय जासी जिण सूं लड़की को ईस्कूल तथा अस्पताल चालू रैय जासी। मकान उपर नाम १ पथर को सैन बोर्ड में ईण मुजब खोदाय कर देय दीनो जावेगा। यह कोटड़ी की जमीन तथा मकान बनवा कर सोहनलाल

चम्पालाल की तरफ से धरमादे फंड में दे दिया गया तथा संस्था ओसधालय तथा स्कूल जो चालू है वह हमीरमलजी धरमादे फंड की तरफ से है। रुपिया तुमारा हमारा में जमा है तिके तक तो आधा तुमारे तरफ से लग जावेगा आधा हमां दे देवांगा और कठेई जमा होवेगा जद आपसूं और कठेईसूं उपज जावेगा। पण मकान तो सरु कर देणो चाइजे मेघजी केवे छै कि जुमलो बाद करायो थोड़ो कमती में होय जासी पण तुमारे जचे तो अबार सरु कर देवां जचे तो थोड़ा ठहर जावां। □



आलीशान मकान कमरो हुय सके छै। सेठो रा रुपिया भी मोकला छै कुछ अटकी लागे नहीं तथा जागा अपणी तरफ सूं फेर भी देय दी जावे तो अटके नहीं अपोरे कुछ भी कमी छै नहीं। वाकी रुपिया सेठो रा बचे तिके में स्कूल रो खरचो हमेशा वास्ते चला सको छो। औषधालय री जचै तो एक औषधालय बी देशी दवायों री हुय सकै छै। १५० रुपये महीने में औषधालय चल सकै छे तथा ७५/- ८०/- में स्कूल चल सकै छै। सेठो रा रुपिया अवार तो मोकला छे ईण उपर ब्याज इतरो नहीं हुवेगा तो अबार तो वरसा चलेगा ईतरेने परमात्मा अपोरो दिन चोखा राखेगा तो अपने किसो १ दिन मरणो छै नहीं। धरमध्यान अपौ अपौरी तरफ सूं भी टाल कर ब्याज री आमदनी इतरी हुवे इसो वंदोबस्त कर देवांगा तो कंई आंट छै। लारे किसो धन आपोरे सागे चालसी तथा धरम सूं किसो धन घटे छै सोच लीजो। हमारे तो इस तरह जचै छै तुम्हारे जचै तो तुमा भी आवो छो १ मकान चोखो मजे रो बणाय कर सेठो रे नाम सूं दोनूं काम हर बखत सेठो रे नाम सू चाले इसो बंदोबस्त कर देणे में लाभ ई है सोच लीजो। राज सूँ स्कूल रो खरचो वास्ते अपोने कोई मदद लेणे री हमारे तो जचै नहीं फिर तुमारे जचै जिसी लिख दीजो।

चम्पालालजी को अपने बड़े भाई का प्रस्ताव पसन्द आया और उन्होंने इसके लिए अपनी स्वीकृति लिखकर भेज दी तो सोहनलालजी ने वापिस जो पत्र चम्पालालजी को लिखा उसके अंश निम्न प्रकार हैं।

कमठाणे री वात मेघजी ने सारी वात समझाय दीवी छै आगे आगे ठेठ तांई कमरा गज १०० ने तथा आगीने रो वरंडो गज पांच ने तथा पिछाड़ी रो छपरो ईतरा करणे वास्ते कैयो छै। १ तरफ कमरा ईसकूल वास्ते रैय जासी फिर वीच में पिरोल हुय कर वठीने जो वहुत वड़ा होल हुवेगा तिके में करीब १-१$\frac{1}{2}$ हजार आदमी तक बी बैठे जिसो तथा आगे आगे ठेठ तक चेहरो वी चोखो हुय जासी तथा ऊंचाई कमरा री गज ७ सूं वेसी हुवेगा नहीं ईतरो काम में वी रुपिया १५ हजार सूँ ऊपर लागता दीसै छै कारण कि अगाड़ी सूँ गज १०० सूं ऊपर छै १ तरफ थोड़ो लारे पड़े छै तिकी जमीन वी राज सूं लेणी पड़सी। ईतरो काम में हमारी आमना छै तिके सूं ज्यादा रुपिया लाग जावेगा पण अबे ईतरे काम सूँ वेसी तो कराय सकाँगा नहीं इण काम में जमीन समेत रुपिया ३० हजार पड़ जासी आधा हमारा लाग जासी आधा तुमारा लाग जासी। सेठो रे धरमादा फण्ड रा रुपिया जितरा नी छै ईतरा वचत रैय जासी जिण सूं लड़की को ईस्कूल तथा अस्पताल वालू रैय जासी। मकान उपर नाम १ पथर को सैन वोर्ड में ईण मुजव खोदाय कर देय दीनो जावेगा। यह कोटड़ी की जमीन तथा मकान वनवा कर सोहनलाल

चम्पालाल की तरफ से धरमादे फंड में दे दिया गया तथा संस्था ओसधालय तथा स्कूल जो चालू है वह हमीरमलजी धरमादे फंड की तरफ से है। रुपिया तुमारा हमारा में जमा है तिके तक तो आधा तुमारे तरफ से लग जावेगा आधा हमां दे देवांगा और कठेई जमा होवेगा जद आपसूं और कठेईसूं उपज जावेगा। पण मकान तो सरु कर देणो चाइजे मेघजी केवे छै कि जुमलो बाद करायो थोड़ो कमती में होय जासी पण तुमारे जचे तो अबार सरु कर देवां जचे तो थोड़ा ठहर जावां। □



परिशिष्ट 'अ'

मूल पत्र निम्न प्रकार है :

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

SAMPATLALL BANTHIA.
BANKERS, JUTE MERCHANT.
—AND—
COMMISSION AGENT.

35, ARMENIAN STREET.

Calcutta, ...193

Tele Add. "KOTILAYAM."

सिद्धश्री [illegible] शुभस्थाने श्रीसर्वोपमा विराजमान [illegible] जोग लिखी श्री कलकत्ता बन्दर से सम्पतलाल बांठिया का जैजिनेन्द्र बञ्चना। अठे उठे श्री गुरुदेवजी महाराज सहाय छै। उपरञ्च कागद आपका आया [illegible]

[illegible]

[illegible]

जनसेवा के मसीहा

आनन्द सागर कुआं व बाग कुआं

आपकी प्रथम पत्नी श्रीमती आनन्दकंवरी का असामयिक निधन हो जाने पर उनकी स्मृति में एक कुआं निर्मित कराने की भावना प्रकट करने पर सरकार द्वारा आपके हॉल व उद्यान के पीछे ७८४० गज भूमि निःशुल्क उपलब्ध कराई गई। उन दिनों जलदाय विभाग का कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ था और गांव में पेयजल की कठिनाई थी। आपने उस जमीन में कुआं खुदवाया, जहां से भीनासर व गंगाशहर निवासियों को निःशुल्क पानी की सप्लाई की जाती।

आगे बगीचे वाली भूमि में आपने कूप निर्मित कराया, जहां से भी पानी की सप्लाई फ्री की जाती थी। इन कुओं का पानी बहुत मीठा था अतः सभी इनका पानी ले जाना पसन्द करते थे। प्रातः एवं सायंकाल हजारों लोग घड़ों द्वारा पानी ले जाते थे। सभी सेठ सा. के कार्य की प्रशंसा करते न अघाते।

कालान्तर में वाटर वर्क्स की टंकी बन जाने पर घरों में पाइप लाइन चली गई और अब इन कुओं से पानी की टंकियां भरवाई जाती है। आपके घर आज भी अपने कुएं का पानी ही व्यवहृत होता है। कुएं से हवेली तक बिछी पाइप लाइन से पानी सप्लाई होता है। आनन्द सागर और बाग के कुएं का मीठा पानी आज भी हवेली तक आता है।

बीकानेर से भी कई लोग आपके कुंओं का मीठा पानी मंगाते थे। मरुधरा में मीठा पानी अमृत के समान लेता है और आपने अपने निजी खर्च से लाखों रुपये व्यय करके दो कुएं खुदवाए और पूरे गांव को यह अमृत प्रदान किया यह अपने आप में अत्यन्त महत्व की बात है। इसके अलावा दोनों कुओं के आगे खेलियाँ भी बनाई हुई है जिससे गर्मी में पशु-पक्षी भी अपनी प्यास बुझाते हैं। मीठे पानी से बाग में हरित वातावरण रहता था और रोज शाम को आप हवेली से पैदल घूमने आते थे जिससे जिन्दगी भर शरीर भी स्वस्थ एवं छरहरा बना रहा। □



प्रगतिवादी एवं क्रान्तदर्शी विचारक

बाल दीक्षा के विरोध में विधेयक

निष्काम सेवाभाव, अप्रमत्त कार्य-कौशल तथा समर्पित व्यक्तित्व के धनी बांठिया सा. प्रगतिवादी विचारक थे। रूढ़ परम्पराओं, अंध विश्वासों एवं कुंठित मान्यताओं के विरूद्ध युगीन विचार तथा क्रान्तदर्शी चिन्तन के कारण आप अत्यन्त लोकप्रिय हुए। छोटे-छोटे अबोध बच्चों को मुनि-जीवन के लिए दीक्षित करने की जो प्रवृत्ति उन दिनों चल रही थी उसे आपने बच्चों को मानवोचित अधिकारों से वंचित करना माना। बाल-दीक्षा की इस कुप्रथा के आप विरोधी थे; आंख मूंद कर रहना उन्हें अप्रिय था। इस प्रवृत्ति को आप बन्द करना चाहते थे। सन् १६४२ में चूरू में २८ नावालिग भाई वहिनों की तेरापंथ धर्म संघ में दीक्षा हुई, जिसका दिनांक २६-१०-४२ को श्री सोहनलाल जी दूगड़ ने विरोध किया। उन्होंने एक पत्र 'महाराजा बीकानेर से अपील' प्रकाशित कराया और सदा के लिए इस कुरीति को बन्द करने की अपील की। वांठिया जी उन दिनों एम. एल. ए. थे। आपने सन् १६४३ में राजसभा बीकानेर में बाल दीक्षा प्रतिवन्धक विल प्रस्तुत कर क्रान्तिकारी कदम उठाया।

साधु जीवन के लिए जिस त्याग, तपस्या और संयम की आवश्यकता है, वालक उन्हें समझ भी नहीं सकता। इसीलिए वालिग होने से पूर्व बच्चों को दीक्षित करना उन पर अत्याचार है। साधु संस्था तथा समाज में स्वस्थ परम्परा के निर्वाह हेतु ऐसे अयोग्य व्यक्तियों को साधु बनाने की प्रवृति पर कानून का अंकुश लगाना आपने आवश्यक माना। बालक राष्ट्र की सबसे बड़ी सम्पत्ति है और वे हमारे समाज के भावी कर्णधार हैं। उनके जीवन को उन्नत बनाना परम आवश्यक मानकर उनके हितों की रक्षा करना आपने राज्य का प्रधान कर्त्तव्य माना। इस सामाजिक कुरीति का उन्मूलन करने हेतु आपने कानून बनाने का जो प्रस्ताव किया वह स्तुत्य व अनुकरणीय है।

इस सम्वन्ध में बांठिया सा. ने एक पुस्तक बाल दीक्षा विवेचन प्रकाशित कराई (मार्च १६४४) और वाल दीक्षा के विरोध में काफी प्रचार किया। इसके लेखक थे पं. श्री इन्द्रचन्द्र शास्त्री, एम.ए., शास्त्राचार्य, वेदान्त वारिधि, न्यायतीर्थ। लेखक ने विविध धर्मों के परिप्रेक्ष्य में दीक्षार्थी की योग्यता का वर्णन किया। जैन-ग्रन्थों के अनेक उद्धरणों एवं जैनागमों के सन्दर्भों से सिद्ध किया कि बालदीक्षा का कोई औचित्य नहीं है। अपने वाल दीक्षा प्रतिवन्धक विल में आपने प्रावधान कराया कि १८ वर्ष से कम उम्र के नावालिग लड़के व लड़की को दीक्षा नहीं दी जाय। उन्हें दीक्षित करने उनका दीक्षा में सहायता करने या ऐसा प्रयत्न करने वाले को दण्डित भी किया जार्य।



पुस्तक में बालदीक्षा के विधि विधान पर चर्चा कर कानूनी पक्ष पर भी विस्तार से प्रकाश डाला गया। देश भर में इसकी प्रतिक्रिया हुई और इसके पक्ष-विपक्ष में एक आन्दोलन सा छिड़ गया। हिन्दी व अंग्रेजी समाचार-पत्रों में छाये रहे सेठ सा. व प्रस्तावित बिल। देश के शीर्षस्थ नेताओं, विचारकों, बेरिस्टरों, न्यायाधीशों, पदाधिकारियों आदि ने इस बिल का समर्थन किया। इनके पत्रांश बांठिया सा. ने Some Opinions नामक पुस्तक में प्रकाशित कराये और जन-जन तक अपनी बात पहुंचाई।

बाल दीक्षा विवेचन में बांठिया सा. ने स्पष्ट किया कि प्रस्तावित बिल का ध्येय किसी समाज विशेष की धार्मिक भावनाओं में हस्तक्षेप करना नहीं था और न ही दीक्षाओं की पवित्रता कम करना ही। इसका ध्येय तो नाबालिग बच्चों के हितों की रक्षा करना ही था। इस बिल की नेशनल कॉल (१५ जून १६४४), हिन्दुस्तान टाइम्स (१७ जून १६४४), वीर अर्जुन (१७ जून व १३ अगस्त १६४४), दैनिक विश्वामित्र (२४ अगस्त १६४४) में खुल कर चर्चा हुई। अन्त में जब बिल पर बहस का समय आया तो तेरापंथ के अनेक लोगों ने महाराजा श्री गंगासिंह जी से मिलकर धार्मिक हस्तक्षेप न करने की अपील की। महाराजा के आश्वासन के फलस्वरूप यह बिल पास न हो सका।

यहां उपरोक्त पुस्तक Some Opinions से कतिपय सम्मतियां व सहमतियों के अंश प्रस्तुत करना अप्रासंगिक नहीं है।

- श्रीयुत् चम्पालाल जी बांठिया, भीनासर के बाल-दीक्षा-प्रतिबन्धक बिल का बंगाल प्रान्तीय हिन्दू महासभा जबर्दस्त समर्थन करती है। यह प्रथा समाज के लिए बहुत हानिकारक है। आशा है, श्रीमान् बीकानेर नरेश इस बिल को पास करेंगे।

दि. २२-१०-४३

श्यामा प्रसाद मुकर्जी
सभापति-बं. प्रा. हिन्दू महासभा

- अखिल भारतीय महिला कान्फ्रेंस, छोटी उम्र के बालक और बालिकाओं को साधु एवं साध्वी के रूप में दीक्षित करने की प्रथा का विरोध करती है और प्रस्तावित बिल का पूर्ण समर्थन करती है।

दि. २४-१०-४३

(श्रीमती) विजय लक्ष्मी पंडित
सभा नेत्री-अखिल भारतीय महिला कान्फ्रेंस
भूतपूर्व स्थानिक स्वराज्य मंत्रिणी
यू. पी. गवर्नमेंट



○ सेठ चंपालाल जी बांठिया ने बीकानेर राज्य नी धारा सभा मां वाल दीक्षा प्रतिवन्धक खरड़ो रज्यु कर्यो छे, ते साथे हुं संपूर्ण सहमत छुं। आवा धारा नी आवश्यकता विषे बे मत होई सके नहीं।

बाल दीक्षा धर्म समाज हिते के मानस शास्त्र नी दृष्टिए अनिष्ट छे। धर्म अने समाज नुं आ महान कलंक छे। तेने अटकाववुं धर्म छे। तेने निभाववा मां अधर्म छे।

चीमनलाल चकुभाई शाह

(भूतपूर्व सालिसिटर-गवर्नमेंट आफ वम्वई) १५-२-४४

○ बाल-दीक्षा को रोकने के लिए जो विल पेश करने का विचार किया है, वह युग-प्रवाह के अनुकूल और समाज के लिए अत्यन्त हितकारी है। समझदार लोगों से मेरा अनुरोध है कि वे साम्प्रदायिक पक्षपात से रहित होकर विवेक से काम लें और इस बिल का जोरदार समर्थन करके इसे पास कराने में सहायता करें।

रामगोपाल जी. मोहता

अध्यक्ष, मारवाड़ी कान्फ्रेंस, वीकानेर

○ बिल का उद्देश्य मानव हित से परिपूर्ण है। मैंने बड़ौदा के प्रधानमंत्री काल में सरकार से ऐसा कानून बनाने का अनुरोध किया था जिससे नावालिगों का संसार त्याग रोका जा सके। यदि आप बड़ौदा के कानून का सहारा चाहते हैं तो न्याय-विभाग को लिखकर बिल की प्रति मंगवा लीजिए।

बिल में जो कार्य दण्डनीय बताए गए हैं उनमें दीक्षा देने के प्रयत्न तथा सहायता को सम्मिलित कर आपने समझदारी की है।

इस कानून के बनने में मैं आपकी सफलता चाहता हूं।

सर मनुभाई मेहता

Kt. C.I.G., M.A., LL.B.

(भूतपूर्व प्रधानमंत्री बड़ौदा तथा बीकानेर)

○ जब धर्मगुरू और समाज के अगुए स्वयं बालदीक्षा का आत्यन्तिक नियमन नहीं करते तब यह काम सुराज्य के तन्त्र को ही अपने हाथ में लेना चाहिए। धर्म के विकार दूर करना यह भी राजधर्म है। इसलिए बीकानेर जैसे प्रगतिशील राज्य के लिये बड़ौदा राज की तरह उचित है कि वह श्रीयुत् चम्पालाल जी बांठिया के प्रस्तुत बिल को कानून का रूप अवश्य दें और इस तरह धार्मिक तथा सामाजिक सुधार के लिए दूसरे



राज्यों के वास्ते एक विचारभूत उदाहरण पेश करें।

१३-२-४४

पं. सुखलाल
भूतपूर्व जैनदर्शनाध्यापक
हिन्दू विश्व विद्यालय, बनारस

- वीकानेर राज्य में बाल दीक्षा प्रतिबन्धक कानून के जारी करने के लिये श्रीयुत् चम्पालाल जी बांठिया ने जो बिल तैयार किया है उसके लिये हमारी सम्पूर्ण सहमति है। वड़ौदा जैसे प्रगतिशील राज्य ने तो बहुत वर्षों पूर्व ऐसा कानून बनाकर अपने राज्य में होने वाली ऐसी अनुचित बालदीक्षा का प्रतिबन्ध करने का बहुत ही प्रशंसनीय कार्य किया है।

  वर्तमान काल की सामाजिक और राष्ट्रीय परिस्थिति में नाबालिग बालक/वालिकाओं को दीक्षित करने की प्रवृति बहुत ही निन्दनीय और हानिकारक है। धर्म और समाज दोनों के हित की दृष्टि से ऐसी बाल-दीक्षाओं का प्रतिबन्ध होना आवश्यक है।

(आचार्य) जिनविजय मुनि
अध्यक्ष
राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन
डाइरेक्टर-भारतीय विद्या भवन

- In view of the present circumstances the conversion of minor boys and girls into asceticism is utterly improper.

पंजाब केसरी जैनाचार्य पूज्य श्री काशीरामजी महाराज, वादिमान मर्दन
महास्थविर गणि श्री उदयचन्दजी महाराज एवं पं. मुनि श्री शुक्लचन्द्रजी महाराज

- Doubtless, the conversion of minors is harmful. Prevention of such a system is necessary. Legislation in this regard, is extremely necessary for the good of the society.

न्याय विशारद, न्यायतीर्थ मुनिश्री न्याय विजयजी महाराज

- Every possible effort to uproot this vile custom is laudable.

साधु शान्तिनाथ, अमलनेर



- It is a very good attempt and I agree with its principles. I hope that you will succeed in your efforts.

The Rt. Hon'ble Mr. M.R. Jayakar,
P.C., M.A., L.L.D., D.C.L., Bombay

- I am also against the exercise of any kind of influence on a minor boy or girl which would commit him or her irrevocably to abnormal mode of life.

Dr. G.S. Arundale M.A., L.L.B., D. litt.,
F.R.S., Adyar, Madras

- I cannot agree that anybody could have any right in reducing minor boys to the ascetic profession, nor would the Sastras support any such queer custom.

Mr. Surendranath Das Gupta
C.I.E., I.E.S., M.A., PH.D. litt., Kalighat, Calcutta.

- I entirely agree in the purpose of this Bill and in the objects and reasons.

Dr. Bhagwandas M.A.,D. litt., Benares

- There is a great deal of force in what you say in favour of the proposed Bill. I hope, it may pass successfully through the Bikaner Legislature and be placed on the Statute Book.

Dr. Sachhidanand Sinha D. litt., Bar-at-law,
Vice Chancellor, Patna University.

- I sympathise with the object of the Bill. We cannot expect austere renunciation of tender aged boys and girls.

Shri Sampoornanandji Ex-Minister for Education U.P.
Government, Principal, Kashi Vidyapitha.

- I fully approve of the principles underlying the Bill. It is in every respect improper to have minor boys and girls converted into Sadhus and Sadhvis at an age when they

do not know the significance and greatness of this stage of life.

Shri Shriprakashji M.A., Bar-at-law,
M.L.A., Benares.

- This endeavour on your part is praiseworthy and deserving of every sympathy.

Swami Sahajanand Saraswati,
President, All India Kisan Sabha.

- It is in the interest of the country that such conversion should be prevented.

The Hon'ble Pandit Hirday Nath Kunzru,
Servants of India Society, Allahabad (by his Secretary).

- I have gone through your bill and generally agree with the object underlying it.

The Hon'ble P.N. Sapru M.L.C., Allahabad

- I am entirely opposed to the idea of minors being initiated to a career of Asceticism.

Amar Nath Jha M.A. Vice Chancellor,
Allahabad University, Allahabad.

- I think this is a more in the right direction.

Pt. Iqbal Narain Gurtu, Pro Vice Chancellor,
Benares Hindu University.

- I highly appreciate the need and the utility of a Bill for the prevention of minors initiation into asceticism. If the proposed bill is passed and becomes a law in the Bikaner State it will indeed go a great way towards eradicating one of the great social evils of our times.

महामहोपाध्याय राय बहादुर डॉ. गौरी शंकर एच. ओझा डी. लिट् रोहेडा
(सिरोही)



- I am entirely in favour of the Bill which I have no doubt, if passed will be beneficial to society.

मृणालकान्त वोस, सम्पादक अमृत वाजार पत्रिका
कलकत्ता

- The Bill will be highly benificial to the country, I wish you success.

राजा वलदेवदास विड़ला, विड़ला हाउस, वनारस

- I am glad that you have taken up this question.

सेठ घनश्यामदास विड़ला, कलकत्ता

- There is a great deal of force and cogency in what you have written and the social problem which you are seeking to solve is of first rate importance.

जमनादास मेहता
एम.ए., एल.एल., वी., वारएट-लॉ

- I heartily approve of this Bill. It is proper that there should be a legislative measure for the prevention of such underserved tendencies.

हनुमानदास पोद्दार सम्पादक 'कल्याण', गोरखपुर

- I am not only in full sympathy with the object of your Bill but entertain the hope that the example set by Bikaner will be followed all over India.

सर कैलाश नारायण हक्सर
Kt. C.I.E., L.L.D., Mashiri Khus-Bahadur,
(Ex-Prime Minister, Bikaner State)

- A minor's conversion into Sadhu is most undersirable from every point of view and I heartily support the Bill and hope it will be passed.

सर सिरेमल बाफना Kt. C.I.E.,
Ex-Prime Minister Indore and Bikaner, Prime Minister,
Alwar State.

- I agree that appropriate legislation is needed for the prevention of this evil.

सर मिर्जा इस्माईल
K.C.I.E., Kt. C.I.E.,
Prime Minister, Jaipur State.

- The object of your Bill is indeed laudable and deserve the sympathy and support of every right thinking man.

सर विजय, महाराज कुमार- विजयनगरम्

- The Bill seems to be a beneficient measure for the prevention of a great social evil; which ought certainly to be countered by legislation.

सर ब्रिजेन्द्र लाल मितर
K.C.S.I., Advocate General of India, New Delhi.

- Every right thinking person must feel in sympathy with the objects of the Bill.

  I wish for every success in your endeavours.

Sir William Roberts
C.I.E., M.L.A., Lahore

- I cannot but be in sympathy with its objects.

Sir F.E. James O.B.E., M.L.A., (Central)
New Delhi

- I shall be very glad to see this Bill become a law.

Raj Kumar Raghunath Singhji, Dewan and President, Council of Administration, Sitamau State.

- I entirely agree with the principles and policy underlying the Bill in question and I wholeheartedly support the enactment of the Bill as a law in the State early.

Rao Raja Dr. Shyam Behari Mishra M.A., D. Litt.,
Rai Bahadur, Retired Magistrate and Collector, Chief Adviser to H. H. the Maharaja of Orchha: President Legislative Assembly, Orchha State.



● I trust you will succeed in getting it through the State Assembly and thereby protect the interest of minors.

Rao Bahadur Dadasaheb Appasaheb Prime Minister,
Kolhapur State.

● The Bill is a legislative measure for a very healthy social reform which was long overdue. Your efforts, therefore, in this direction are really praiseworthy for which I congratulate you.

Dewan Saheb, Idar State, Himmatnagar

● The spirit which animated you to take up the Bill is, indeed, laudable and praiseworthy.

Rao Bahadur Ichhashankar K. Pandya B.A., L.L.B.,
Chief Minister, Sirohi State.

● I am in thorough agreement with the purpose of the Bill for the prevention of conversion of minors. At any rate, conversion of those under 18 is certainly unthinkable and must be prohibited by law.

Dewan Bahadur Hiralal L. Kaji M.A., B.Sc., F.R.C.S.,
F.S.S., P.R.S., I.E.S. J.P.

● I have read your draft Bill and write to give it my heartiest support.

सर सी.वी. रमन
Kt. F.R.S., M.A., Hon. Ph. D., Hon. D. Sc., Hon. LL. D.,
Banglore

1 I entirely approve of the new Bill.

Mr. K. M. Munshi,
Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay.



कुशल नेतृत्व

श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस के बारहवें सादड़ी अधिवेशन की अध्यक्षता

बांठिया सा. समाज के लोकप्रिय नेता थे। उनकी अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ कान्फ्रेंस का बारहवां अधिवेशन (४ से ६ मई १९५२- सादड़ी-मारवाड़) अत्यन्त महत्वपूर्ण व सफल सिद्ध हुआ। इसी अवसर पर आयोजित वृहत् साधु-सम्मेलन से यह अधिवेशन ऐतिहासिक बन गया। लगभग ३५ हजार की जनमेदिनी एकत्रित हुई थी। सादड़ी एक तीर्थस्थली सा प्रतीत हो रहा था। विविध प्रान्तों की रंग-बिरंगी वेशभूषा अनेकता में एकता का बोध करा रही थी।

अधिवेशन का उद्घाटन राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री टीकारामजी पालीवाल ने किया एवं स्वागताध्यक्ष थे सादड़ी निवासी श्री दानमलजी बरलोटा। अधिवेशन में पारित १५ प्रस्तावों में निम्नांकित मुख्य थे—

(क) जैनदर्शन को सरकारी पाठ्यक्रम में स्थान दिलाया जाय।

(ख) महावीर जयन्ती का सार्वजनिक अवकाश घोषित कराना।

(ग) स्वधर्मी सहायता फंड को अनुदान।

(घ) गोवध और जीव हिंसा रोकने के लिए सरकार से अनुरोध।

(ड़) वृहत् साधु सम्मेलन द्वारा 'श्री स्थानकवासी जैन श्रमण संघ' की स्थापना हेतु लिये गए निर्णय के प्रति पूर्ण श्रद्धा व आदर ज्ञापित करना। एक स्थायी समिति का गठन।

इस अवसर पर महिला परिषद् और युवक परिषद् सम्मेलन भी आयोजित किये गए थे।

यह अधिवेशन अत्यन्त महत्वपूर्ण व ऐतिहासिक था। सैंकड़ों सन्त मुनिराज इस अवसर पर एकत्रित हुए। साधु सम्मेलन के इतिहास में यह सम्मेलन एक मील का पत्थर सिद्ध हुआ, जिसमें संघ ऐक्यता का नया आयाम प्रकट हुआ। सर्व सम्प्रदायों के सन्त मुनिराजों ने अपनी पदवी छोड़कर एक नेतृत्व को स्वीकारा। यह अतिशयोक्ति नहीं कि सबको एक मंच पर लाने में बांठिया सा. ने उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह किया।



आपने अपने अभिभाषण में राष्ट्रीय भावना, जैन एकता, धार्मिक शिक्षण, नारी जागृति, वर्ण व्यवस्था, जैन साहित्य प्रकाशन, वाल-दीक्षा, जैन गणना, पर्दाप्रथा आदि बिन्दुओं पर प्रकाश डाला और आह्वान किया कि समय की धारा को पहचान कर अपने कदम आगे बढ़ायें जायें। आज से पचास वर्ष पूर्व इस प्रकार प्रगतिशील विचार प्रस्तुत करना वास्तव में अनुकरणीय है। (अभिभाषण अविकल रूप से परिशिष्ट में द्रष्टव्य)

इस अवसर पर सम्पन्न हुए महिला सम्मेलन की प्रमुख थी श्रीमती तारा देवी बांठिया। आपने अपने अभिभाषण में नारी जाति की समानता, शिशु शिक्षा, पर्दाप्रथा आदि विषयों पर अपने क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किये। (अभिभाषण अग्रांकित)

बारहवें अधिवेशन-सादड़ी (मारवाड़) के प्रमुख सेठ श्री चंपालालजी सा. वांठिया का अभिभाषण

माननीय प्रधानमंत्री महोदय, स्वागताध्यक्षजी, प्रतिनिधि वहिनों व भाइयों तथा अन्य उपस्थित माताओं एवं वंधुओं !

मेरा परम सद्भाग्य है कि आप लोगों ने मुझ जैसे साधारण व्यक्ति को इस उच्च आसन पर आसीन किया है। जब मैं अपनी योग्यता और इस आसन की महत्ता और जिम्मेवारी पर विचार करता हूं; तब मैं अपने में शर्मिन्दगी का अनुभव करता हूं। मुझमें न ज्ञान बल है न अनुभव शक्ति और न वयवृद्धता। समाज में अनेक महान् व्यक्तियों के होते हुए भी मेरी नियुक्ति करना मैं उचित नहीं मानता। मैं वड़ा हैरान हूं कि मेरी नियुक्ति का विचार ही क्यों उठा ? संभव है स्वर्गीय जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलालजी म. की, उनके साहित्य की, तथा उनकी यादगार में स्थापित श्री जवाहर विद्यापीठ की सेवाओं के कारण या मेरी असाम्प्रदायिक मनोवृत्ति के कारण यह विचार उठा हो। आप लोगों का मेरे प्रति अटूट प्रेम के कारण नियुक्ति की स्वीकृति लेने के लिए आये हुए शिष्ट मण्डल के सदस्यों का आग्रह मैं टाल न सका। दुर्भाग्य से मेरा स्वास्थ्य यात्रा के अनुकूल नहीं है। मैं अपने बिजनेस सेंटर कलकत्ता भी कई वर्षों तक नहीं जा पाता। किन्तु बड़ों द्वारा प्रदान किये हुए सम्मान को लौटा देना भी एक प्रकार की धृष्टता है। यही मान कर मैं अपने मन का सन्तोष करता हूं। चूंकि आप लोगों ने मुझे इस आसन पर बिठाया है अपनी सारी शक्तियां मुझमें सन्निहित करके इस नैया को पार पहुंचायेंगे ही।

स्था. जैन महासभा का यह बारहवां अधिवेशन सादड़ी में हो रहा है। एक दृष्टि से सादड़ी स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। यहां अरावली पहाड़ियों की शुद्ध वायु बह रही है। यह विभिन्न संस्कृतियों का केन्द्र स्थान है। इसके एक तरफ मारवाड़ है, एक तरफ



मेवाड़-मालवा और एक तरफ गुजरात है। राजस्थान और गुजरात में जैनों की संख्या अधिक प्रमाण में हैं, यह सर्व विदित बात है। तथा सादड़ी के स्थानकवासी भाई भी बड़े हिम्मत वाले और अपनी बात पर दृढ़ रहने वाले हैं। बीस हजार श्वे. मूर्तिपूजक घरों के बीच में ये ढाई सौ घर वाले अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए बड़ी हिम्मत से डटे हुए हैं। पिछले पच्चीस तीस वर्षों में साम्प्रदायिक मनोमालिन्य के कारण इन भाइयों को बहुत कष्ट सहन करने पड़े हैं, यह बात आप से छिपी हुई नहीं हैं। यद्यपि मैं धर्म व सम्प्रदाय के नाम से होने वाले झगड़ों को कतई पसन्द नहीं करता तथापि बहुसंख्यक समुदाय द्वारा अल्पसंख्यक समुदाय पर की गई ज्यादतियां सुन कर चित्त में क्षोभ पैदा होता है और सादड़ी के भाइयों ने हिम्मत पूर्वक जो कुछ सहन किया या कर रहे हैं उसकी प्रशंसा किये विना नहीं रहा जाता। यह समय धर्म और जाति के नाम से परस्पर कलह वृद्धि करने का नहीं हैं। यह एकता का जमाना है। मैं सादड़ी के स्थानकवासी भाइयों को अन्याय सहन करने की राय न देता हुआ भी उनके मन में जो कुछ दुराग्रह या मनोमालिन्य का कारण हो उसे हटा कर अपने श्वेताम्बर मूर्तिपूजक भाइयों से मिल कर रहने की प्रार्थना करता हूं।

वन्धुओं! यह अधिवेशन साधारण अधिवेशन नहीं है। इस अवसर पर भारत के भिन्न-भिन्न कोनों से पदविहार करके अनेक संत महात्मा यहां पधारे हुए हैं। इन महात्माओं की करनी कितनी कठोर है! पैदल विहार, आहार पानी ग्रहण करने के कठोर नियम, उम्र पर्यन्त अस्नान और नंगे पांव चलना। एक गांव से दूसरे गांव चल कर आये हों, गर्मी के कारण पैरों में छाले पड़े हुए हों, भूख और प्यास से चित्त व्याकुल होता हो, तव भी भ्रमर वृत्ति से घर-घर में घूम कर शुद्ध आहार पानी की गवेषणा करना, एक गांव में आहार पानी न मिलने पर समभाव से दूसरे गांव जाना और पुनः गवेषणा करना। शरीर पसीने से तर वतर हो तब भी कभी स्नान न करना। अपने अन्तर्यामी के दर्शन के लिए कितनी कठोर साधना है यह! मुनिवरों! आप धन्य हैं। लोक कल्याण और स्व कल्याण के लिए अहर्निश यत्न करने वाले साधकों! आपका जीवन सार्थक है। संसार की वासना में फंसे हुए हम लोगों के लिए एक मात्र आप ही आधारभूत हैं। आप ही हमारी आध्यात्मिक नौका के खिवैया हैं। हम स्थानकवासी जैनों को सिवा संत मुनिराजों के अन्य कोई आधार नहीं है। आप श्रमण हैं और हम श्रमणोपासक हैं। मुनिराज और हम आध्यात्मिक बन्धन से बन्धे हुए हैं। गुजरात, काठियावाड़ और कच्छ के मुनिमहाराज इस सम्मेलन में नहीं पधारे हैं। यह दुःख की बात है। अच्छा होता वे भी पधारते और अपने विचारों का आदान-प्रदान करते। हमें पूर्ण विश्वास रखना चाहिए कि



वे इस संगठन से कभी अलग नहीं रह सकते। इस सम्मेलन में जो कुछ निर्णय किया गया है उसे वे अवश्य स्वीकार करेंगे। प्रगतिशील प्रदेश के मुनिराज कभी पीछे नहीं रह सकते, ऐसा हमारा विश्वास है।

हमारे अनेक भाई अपनी ना समझी से यह प्रश्न उठाया करते हैं कि इन अधिवेशनों और सम्मेलनों से क्या लाभ है। आने जाने में लाखों रुपये बर्बाद होते हैं और सार कुछ नहीं निकलता। मेरे बन्धुओं को रुपये खर्च होने की बड़ी चिन्ता होती है। मनोविनोद के लिए यात्राएं करने में पानी की तरह रुपये बहाने में इनको किसी प्रकार का ख्याल नहीं आता। अपने ऐश और आराम के लिए हजारों का पानी करते हुए भी संकोच नहीं होता। किन्तु जहां अपने स्वधर्मी बन्धुओं से मिलने का, उनसे वार्तालाप करने का तथा दूसरे के विचारों का आदान-प्रदान करने का सुन्दर अवसर प्राप्त होता हो वहां खर्च की बात को आगे लाकर अपनी प्रतिक्रियावादिता को छिपाने की कोशिश करते हैं। ऐसे सम्मेलनों से समाज में जाग्रति आती है और जीवन को बल मिलता है। और यह सम्मेलन तो विशेष महत्त्व रखता है। इससे हमारी समाज का नव निर्माण होने वाला है। यहां हमारे गुरुदेव मुनिजन इतिहास का नया अध्याय लिख रहे हैं।

हमारी महासभा (कांफ्रेंस) के सम्बन्ध में दो शब्द कह दूं। सन् १९०६ से १९४६ तक इसके ग्यारह अधिवेशन हो चुके हैं। बम्बई में होने वाले सप्तम अधिवेशन के सभापति का स्थान हमारे श्रद्धेय दानवीर, वयोवृद्ध सदा सरस्वती की उपासना में लीन रहने वाले श्री भैरोंदानजी सा. सेठिया ने सुशोभित किया था। उस अधिवेशन में अनेक नवीन प्रवृत्तियों का जन्म हुआ। इसके बाद अजमेर का अधिवेशन बड़ा महत्वपूर्ण रहा। पिछले कई वर्षों से जब से श्री कुन्दनमलजी सा. फिरोदिया का नेतृत्व और विचारकता का इस महासभा को लाभ प्राप्त हुआ है तब से यह एक जीवित संस्था बन गई है। समाज की नाड़ी परीक्षा करने में और ठीक ठीक निदान करने में श्री फिरोदियाजी की पैनी वुद्धि ने बहुत समुचित कार्य किया है। ऐसे महान् व्यक्ति का मार्ग प्रदर्शन समाज के लिए वड़े गौरव की वस्तु है। राजकीय सेवाओं से अब आप मुक्त हो चुके हैं अतः हमें आशा रखनी चाहिए कि आप की सेवाएं हमारे समाज को सदा मिलती रहेंगी।

महासभा के द्वारा समय-समय पर अनेक समाजोपयोगी कार्य हुए हैं और हो रहे हैं। जैन ट्रेनिंग कॉलेज के द्वारा संस्कृत मागधी भाषा और जैन तत्त्व ज्ञान के विद्वान तैयार किये गये। छात्रवृत्ति के द्वारा स्त्री शिक्षा का प्रचार किया गया। पूना बोर्डिंग के द्वारा छात्रों को उच्च शिक्षण प्राप्त करने में सहायता प्रदान की जा रही है। विस्थापित



भाइयों की सहायतार्थ एक बड़ा फण्ड किया जाकर उनकी मदद की गई। असहाय विधवाओं को आर्थिक सहायता और छात्रों को स्कोलरशिप दी जाती रही है। साहित्यिक क्षेत्र में अर्धमागधी कोष और आचारांग आदि सूत्रों का हिन्दी अनुवाद तथा पाठ्य पुस्तकों का प्रकाशन हमारे सामने है। 'जैन प्रकाश' का नियमित प्रकाशन और उसके द्वारा समाज संगठन का कार्य सुविदित है।

सवसे महान् और आवश्यक कार्य हमारी महासभा ने हाथ में लिया है; वह है 'संघ ऐक्य योजना' इस योजना को मूर्त रूप देने के लिए वर्षों से प्रयत्न चालू है। अजमेर अधिवेशन में इस योजना ने कुछ कुछ मूर्त रूप धारण किया था। इस विषय में पूज्य श्री सोहनलालजी म., आचार्य श्री जवाहरलालजी म. तथा पं. श्री रतनचन्द्रजी शतादधानीजी म. ने बहुत प्रयत्न किया था। किन्तु तब काल पका न था। इन बीस वर्षों में परिस्थितियों ने बड़ा पलटा खाया। राज्य बदल गये। भारत आजाद हो गया। हमारे मुनिराजों के विचारों में भी देश काल के अनुसार परिवर्तन हुआ और अब इस योजना को पूर्ण तथा मूर्त रूप देने का अवसर आ गया है। आठ दिनों में मुनि सम्मेलन में जो कुछ निर्णय हुआ है वह आपके सामने आने वाला है।

यहां जो अनेक सम्प्रदायों के मुनिराज एकत्रित हुए हैं, वह कोई सरल कार्य नहीं है। इन मुनि शार्दूलों को एक जगह लाने में बड़े प्रयत्न करने पड़े हैं। इसके लिए कान्फ्रेंस की तरफ से कई शिष्ट मण्डल गये, बड़ा लम्बा पत्र-व्यवहार चला, अनेक प्रकार की शंकाओं का समाधान किया गया है। तथा इन सब प्रयत्नों के बावजूद श्री धीरजलाल भाई तुरखिया का अथक परिश्रम और लगनशीलता मुख्य है। ये रात दिन इधर से उधर घूमते रहे हैं। आशा और निराशा के झूले में झूलते रहे हैं। किन्तु जैसा इनका नाम है वैसा ही इनमें धीरज का गुण है। अपने इरादों में डटे रहे हैं और सफल हुए हैं। श्री धीरज भाई से बौद्धिक भूलें हो सकती हैं किन्तु इनकी नियत में किसी प्रकार का अविश्वास करना उनके प्रति अन्याय करना है। मैं समाज की ओर से इस महान् कार्य के सम्पादन के लिए श्री धीरजभाई को साधुवाद प्रदान करता हूं। साधु सम्मेलन के इतिहास में श्री दुर्लभजी भाई तथा धीरजभाई के नाम स्वर्णाक्षरों में लिखे रहेंगे।

मित्रों! मेरी ओर ध्यान खींचिये और विचार कीजिए कि हम साधु सम्मेलन से क्या आशा रखते हैं। साधु सम्मेलन में जो कुछ निर्णय हुआ है वह तो हो चुका है और आपके सामने भी शीघ्र आने वाला है। किन्तु हम क्या चाहते हैं और आज का युवक मानस क्या चाहता है तथा यह बड़ा जन समुदाय क्या आशा लेकर आया है; यह सोचिए। जहां तक मैं लोगों के विचारों और भावनाओं को समझ पाया हूं, एक बहुत



बड़ा बहुमत एक आचार्य के नेतृत्व में सकल संघ का आ जाना पसंद करता है। यह बात मुझ से छिपी नहीं है कि कुछ थोड़े साधु और श्रावक एक आचार्य के झण्डे के नीचे आने की विचार धारा के विरोधी भी हैं। हम आशा रखें कि उनकी विचार धारा में परिवर्तन हो गया है या अव हो जायेगा।

समय की मांग है, युवकों की आकांक्षा है कि सोलह सौ साधु साध्वी तथा सात आठ लाख श्रावक श्राविकाएं एक नेतृत्व में आ जायें। एक अनुशासन में रह कर अपने संयम और नियम का पालन करें। वर्तमान आचार्य अपनी पदवी त्याग करके एक आचार्य नियुक्त करें। सब मुनिजनों का आहार पानी और वन्दन व्यवहार खुला हो जाय। सारे भारत में योजना पूर्वक चातुर्मासों की नियुक्ति हो और सव तक पहुंचा जाय। अपने छोटे दायरे को छोड़ कर विस्तृत दायरे में प्रवेश किया जाय तथा संयम और आचार विचार में उन्नति की जाय।

श्रावकों का भी एक संगठन होना चाहिये। अव से 'यह मेरी सम्प्रदाय और यह तेरी सम्प्रदाय' जैसी छोटी वातों का उच्चारण न किया जाय। सव साम्प्रदायिक मंडलों और संस्थाओं को दफना दिया जाय तथा इनकी जो भी स्थावर जंगम सम्पत्ति हो वह एक संयुक्त ट्रस्ट मंडल या महासभा के सुपुर्द कर दी जाय।

इससे कम में हमें संतोष नहीं हो सकता। आशा तो यही है कि हम सव की भावना पूर्ण होगी। किन्तु यदि कुछ कमी रह जायगी तो हमें आगे प्रयत्न जारी रखना होगा। तब तक हमारा प्रयत्न जारी रहेगा जब तक कि हम अपने लक्ष्य तक न पहुंच जायें।

अब इस बात पर थोड़ा विचार करें कि इस समय संसार दो क्षेत्रों में विभक्त है। एक में साम्राज्यवादी शक्तियां और दूसरे में साम्यवादी शक्तियां हैं। दोनों शक्तियां एक दूसरे को अपनी और खींचने के लिए बल खा रही हैं। इसके लिए परमाणु बम और उद्‌जन बमों का आविष्कार किया गया है। क्या हमारे पास कोई ऐसी शक्ति है जो इस द्वन्द्व को मिटाने में कारण हो सके? अवश्य, हमारे पास एक अचूक अस्त्र है जो भगवान महावीर से हमें विरासत में मिला हुआ है और जिसका प्रयोग करके महात्मा गांधीजी ने भारत को आजाद बनाया है। अहिंसा रूपी अस्त्र का प्रयोग करके संसार में लगी हुई आग का शमन किया जा सकता है। हमारे धर्म का 'अहिंसा परमो धर्मः' मूलभूत सिद्धान्त है। भगवान महावीर ने अपने युग में मुख्य चार बातों पर ध्यान दिया था—(१) बाह्य क्रिया काण्डों की निःसारता बताकर अहिंसा की प्राण प्रतिष्ठा की। (२) नारी जाति को समानाधिकार प्रदान किया (३) जन्मना वर्ण व्यवस्था के बजाय कर्म से



वर्ण व्यवस्था बताकर उच्च नीच की भावना मिटाई। (४) पण्डिताऊ संस्कृत भाषा के स्थान पर लोक भाषा अर्द्धमागधी का आदर किया।

ढाई हजार वर्ष पूर्व आरंभ किया गया भगवान् महावीर का कार्य गांधी युग में हमारी राष्ट्रीय सरकार ने नया विधान बनाकर पूरा किया है। अहिंसा के इर्दगिर्द हमारी सरकार की सारी नीति चलती है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी इसी नीति से कार्य हो रहा है। स्त्री जाति और शूद्रों के लिए नये विधान में सुन्दर कानून बनाये गये हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी को राज्य भाषा करार देकर लोक भाषा का आदर किया गया है। यह सब जैन धर्म की ही प्रभावना है। जैन के उसूलों का ही प्रचार है। किन्तु मानव की यह कमजोरी है कि वह अपने द्वारा किये में ही आनन्दित होता है और इसी कारण से इन बातों का महत्व हम नहीं समझ पाये हैं। समाज से मेरी प्रार्थना है कि वह इन ऊपर उल्लिखित चारों महत्वपूर्ण कार्यों के प्रति पूर्ण ध्यान दे। इससे हम अपने धर्म की प्रभावना के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण के कार्यों में भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। हमारे मुनिजनों से भी मैं खास तोर से प्रार्थना करता हूं कि वे अपने उपदेश की शैली में समयानुकूल परिवर्तन करें। नारी को नरक की खान बताने के बजाय नारी जाति के उत्थान का उपाय बतावें। भारतीय लोक मानस में ठसी हुई छूआछूत की बीमारी को दूर करने वाली विचार धारा का प्रचार करें। राष्ट्र भाषा हिन्दी से खजाने में वृद्धि करें और उसका प्रचार करें तथा अहिंसा धर्म का उपदेश देकर मानव समाज में रही हुई राग द्वेष और अपने पराये की विषम भावना को दूर करें।

वड़ी नम्रतापूर्वक संत जनों की सेवा में तथा समाज के भाइयों की सेवा में मैं यह वात रखना चाहता हूं कि यह जमाना जन सम्पर्क से कट कर रहने का नहीं है। हम जैन लोग जन साधारण से अपने को अलग अनुभव करें, उनसे दूर रहें तथा उनमें अपनत्व का अनुभव न करें, यह महज हमारी भूल है। मुझे यह बात सुनते हुए बड़ा दुःख होता है जब संत मुनिराज भी यह कहते हैं कि 'अमुक गांव में हमारे इतने घर है।' उस गांव में किसान आदि के अनेक घर होते हुए और उनसे आहार पानी ग्रहण करते हुए भी उनको अपना न मानना और उनके जीवन सुधार की जिम्मेवारी से अपने को वरी समझना संकुचित मानस का ही कार्य है। जैन साधु किसी जाति विशेष का गुरु नहीं है। वह मानव मात्र का गुरु है। संकुचित मनोवृत्ति का त्याग करके राष्ट्र निर्माण के कार्यों के प्रति भी हमें ध्यान रखना चाहिये। भारत का नैतिक स्तर ऊंचा उठाने के लिये किये जाने वाले राष्ट्रीय प्रयत्नों में हमारा योगदान मुख्य होना चाहिये। अहिंसा का नाम



लेना ही काफी नहीं है, उसे जीवन में उतार कर उसका रस जन साधारण तक पहुंचाने में ही जैन धर्म की महत्ता है।

आधुनिक यंत्र युग में महात्मा गांधीजी और विनोब भावे ने पैदल विहार करके पाद विहार की उपयोगिता संसार के समक्ष ला दी है। हमारे मुनिजन अनादिकाल से पद विहार ही करते है। यदि वे कोई योजना लेकर घूमें तो उनका विहार देश की नजरों में तैरने लगे। लक्ष्यहीन विहार कुछ परिणाम नहीं ला सकता।

सत्य और अहिंसा पर अधिष्ठित, वर्ग विहीन और शोषण रहित समाज बनाना हमारा उद्देश्य है। ऐसा समाज जिसमें हर एक के विकास के लिए पूर्ण अवकाश हो। आज हमारे देश में जो आर्थिक विषमता है उसे बदल कर इस उद्देश्य की ओर किस तरह बढ़ सकते हैं। यह आज हमारे सामने मुख्य प्रश्न है। केवल संसार को छोड़ देने मात्र के उपदेश से अब कार्य नहीं चल सकता। इस संसार को सुधारने का मार्ग बताना होगा। राग द्वेष और स्वार्थ के कारण संसार नरक बन सकता है और इनके ह्रास से स्वर्ग। नैतिक जीवन सुधार का उपदेश आवश्यक है। हम जैनों पर किसी को यह आक्षेप करने का अवसर न आना चाहिये कि वे अनैतिक तरीकों से अर्थोपार्जन करते हैं। जन साधारण का यह स्वभाव है कि वह किसी धर्म के अनुयायियों के आचरण देख कर इस धर्म को भला बुरा समझ लिया करता है। हम लोग अपने आचरणों से जैन सिद्धान्तों की विशुद्धता दुनियां के समक्ष प्रकट करें, यह वांछनीय है। सर्वोदय की योजना में जैनों का मुख्य हिस्सा होना चाहिये। यही तो जैन धर्म की प्रभावना है। हम लोग ऊनोदरी (कम खाना) तप का पालन करके खाद्य समस्या सुलझाने में सहायक हो सकते हैं। हमारे मुनिराज अपने उपदेश की धारा से डकैतियां बन्द करवाने में मदद्गार हो सकते हैं। जो काम शक्ति या कानून से नहीं हो सकता वह प्रेमपूर्ण उपदेश से हो सकता है। दारू निषेध जैसी प्रवृत्तियों में भाग लेकर राष्ट्र धर्म का पालन किया जा सकता है। कहने का सारांश यह है कि हमें अपना दृष्टिकोण विशाल बनाना चाहिए। यही जैन धर्म की सच्ची सेवा और प्रभावना है।

जैन साहित्य में बहुमूल्य ग्रन्थ भरे पड़े हैं। उनका उच्च स्तरीय प्रकाशन होना जरूरी है। कांफ्रेंस ने आगम प्रकाशन का कार्य हाथ में ले रखा है। उस पर भी गहराई से विचार करना चाहिये। जबकि साहित्यिक क्षेत्र में इतनी प्रगति हो चुकी है, हमारे प्रकाशन निम्नस्तर पर हों, कैसे सहन किया जा सकता है? भारत के उच्च विद्वानों के पढ़ने योग्य सामग्री प्रकाशित होनी चाहिये। जैन धर्म पर समय समय जो आक्षेप आदि होते हैं उनमें हमारी अपनी कमजोरी भी छिपी हुई है। हमने अपने विचारों को विद्वानों



तक यथातथ्य रूप पहुंचाने के लिए विशेष यत्न नहीं किया है। राष्ट्र भाषा का भण्डार जैन प्रकाशनों से भरना है और यह कार्य विद्वानों का इस ओर ध्यान आकर्षित करने से हो सकता है इसके लिए 'मंगला प्रसाद पारितोषक' की तरह पारितोषिक रख कर कार्य में उत्तेजना और प्रेरणा दी जा सकती है। एक ऐसे ग्रंथ की भी बहुत लंबे समय से महती आवश्यकता महसूस की जाती रही है जिसमें जैन धर्म का समग्र रूप आ जाता हो। बंबई अधिवेशन में भी इसकी चर्चा चली थी। किन्तु छब्बीस वर्षों में इस दिशा में कोई प्रयत्न नहीं हुआ है।

धर्म शिक्षा की तरफ भी हमें ध्यान देना है। भारत के विधानानुसार सरकार धर्म कार्यों में साधक बाधक न होगी। सेक्यूलर स्टेट्स का अर्थ यही है कि सरकार हमारे आध्यात्मिक जीवन की जिम्मेवारी नहीं लेती है। वह केवल हमारी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने की जिम्मेवारी लेती है। ऐसी अवस्था में हम पर अपने धर्म सिद्धान्तों के प्रचार की जिम्मेवारी आ जाती ही है। चन्द जैन छात्रों को जैन धर्म का सैद्धान्तिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक बोध कराना हमारा फर्ज हो जाता है। छोटे बच्चों में जैन धर्म का संस्कार जाग्रत करने के लिए कांफ्रेंस ने पाठ्य पुस्तकें तैयार की हैं, वे उपयुक्त हैं। किन्तु इस बात का बड़ा खेद है कि इस वक्त हमारी समाज में एक भी ऐसी संस्था नहीं है जहां छात्रों को जैन आगम, दर्शन, कर्मग्रन्थ, अर्द्ध मागधी भाषा आदि का ऊंचे दर्जे का ज्ञान कराया जाता हो। हां, बनारस में पारस नाथ विद्याश्रम (बोर्डिंग) अवश्य है किन्तु पूर्व भूमिका निर्माण करने वाली संस्था न होने से वहां का लाभ भी बहुत अल्प मात्रा में लिया जा रहा है। मैं ऐसी संस्था की महती आवश्यकता महसूस करता हूं। भारत के मध्यस्थल में ऐसी संस्था होनी चाहिये। इस संस्था का लाभ मुनिमहाराज भी ग्रहण करें। त्याग और तप की शोभा ज्ञान के साथ है।

आज मुनिराजों में अंगुलियों पर गिनने जितने भी उच्च विद्वान् नहीं हैं। संतों में मेरी प्रार्थना है कि योग्य साधु और साध्वियों को ऐसी संस्था में अवश्य पढ़ाना चाहिये। किसी बुजुर्ग संत की निगरानी में रख कर अध्ययन का कार्य चलाना चाहिये।

गृहस्थों में भी जैन धर्म के विद्वान होने चाहिए। किन्तु यह तभी हो सकता है जब समाज विद्वानों का आदर करना सीखे। समाज में धन की प्रतिष्ठा है। यदि विद्वान् अपेक्षित है तो सरस्वती का आदर करना अनिवार्य है। इसके बिना आगमिक अध्ययन को प्रेरणा नहीं मिल सकती। मैं आशा करता हूं कि एक उच्च संस्था के निर्माण-कार्य पर ध्यान दिया जायगा। जिसे सिद्धान्तशाला या अन्य नाम से पुकारा जा सकता है। जब तक साहित्य रसिक व्यक्ति न होंगे, साहित्य प्रकाशन का भी क्या उपयोग है? भगवान्



महावीर का जो ज्ञान हमें आगमों के रूप में प्राप्त है उसे सुरक्षित रखने का-जीवित रूप में सुरक्षित रखने का एक मात्र उपाय अध्ययन के द्वारा परम्परा जारी रखना ही है। पंचांगी—मूल आगम, टीका, भाष्य, चूर्णी और अवचूरी के ज्ञान की परम्परा लुप्त होती आ रही है। क्या हम ज्ञान परम्परा की रक्षा करने की जिम्मेवारी से दूर हट सकते हैं? कदापि नहीं! आशा है इस वात पर अधिवेशन में विचार किया जायगा।

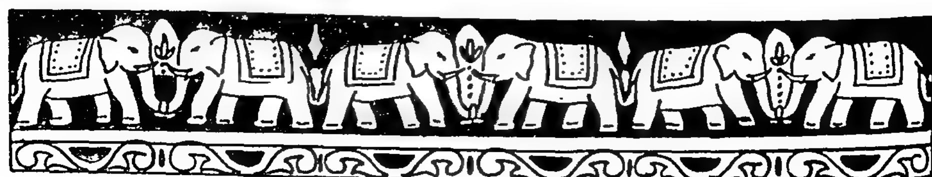
यह वात हमारे ध्यान से ओझल नहीं है कि ऐसी संस्था विना पैसे के नहीं चलाई जा सकती। पैसे का प्रश्न वड़ा विकट है। मेरी नम्र सम्मति है कि इसके लिए कोई ठोस उपाय जारी करना चाहिये। पारसी कौम में गोद न लेने का रिवाज हैं और इससे उनको सामाजिक उन्नति के कार्यों के लिये प्रखर सम्पत्ति मिल जाती है। हमारी समाज में भी यह रिवाज जारी किया जाना चाहिये। इसके लिये एक प्रस्ताव पास किया जाय और प्रचार करके लोक मानस तय्यार किया जाय। यदि यह वस्तु वन जाय तो पैसे का प्रश्न हल हो जाता है।

व्यावहारिक शिक्षा के लिये सरकारी साधनों का उपयोग करना चाहिये। छात्रों के संस्कार सुधार और साम्प्रदायिक क्रियाकाण्ड सीखाने के लिए वोर्डिंग पद्धति को सुसंस्कारित वनाने से कार्य चल सकता है। हमारी अपनी सरकार होने से अव स्कूली और कॉलेजी शिक्षा में आमूल परिवर्तन होने की संभावना है। अतः अलग खर्च करना वृथा है।

अब दो चार बातों की तरफ आपका ध्यान खींच कर मैं अपना वक्तव्य समाप्त करना चाहता हूं।

जाति-पांति का झगड़ा जैनधर्म की मूल प्रकृति से सम्बन्ध नहीं रखता। यह ब्राह्मण संस्कृति से ग्रहण किया हुआ दोष है। जो जैन धर्म को मानते हैं, उनकी एक जाति होनी चाहिये। किन्तु पिछले दिनों ब्यावर में हुए धड़ों ने कितना उग्र रूप धारण कर लिया था। यह एक दुःखद काण्ड घटित हो गया था। मुनिराजों के प्रयत्न से यह समस्या शीघ्र सुलझ गई, यह सद्भाग्य की बात है। इस प्रकार के काण्ड अब दुबारा न होने पायें ऐसी हमें आशा रखनी चाहिये। यह वस्तु समय की गति से मेल नहीं खाती। जैनों की चतुर कौम ऐसे छोटे काण्डों को महत्व प्रदान करे, यह अशोभनीय बात है।

आप लोगों को यह विदित है कि मैं व्यक्तिरूप से बाल दीक्षा का विरोधी हूं। वीकानेर स्टेट में तद्विषयक बिल भी मैंने पेश किया था। मद्रास अधिवेशन में भी बालदीक्षा विरोधी प्रस्ताव मैंने भेजा था। किन्तु कारणवश मैं स्वयं अधिवेशन में



उपस्थित होकर उसे पेश न कर सका। वह प्रस्ताव जिस रूप में पास हुआ है, उससे मुझे संतोष है। उसका अमल पूर्ण रूप से होना चाहिए। पिछले साधु सम्मेलन में दीक्षार्थी की वय सोलह वर्ष की उचित मानी गई थी। किन्तु बीस वर्षों में जमाना पलट गया है। अव अठारह वर्ष से कम उम्र के लड़के लड़कियों को दीक्षा न दी जानी चाहिए। उम्र के साथ-साथ योग्यता पर भी ध्यान देना चाहिए।

घाटकोपर में श्राविकाश्रम की स्थापना का कार्य महासभा ने हाथ में ले रखा है। किसी कार्य में अधिक विलम्ब करने से लोगों की मनोवृत्ति में अन्तर आ जाता है और भविष्य के लिए उसका प्रभाव अच्छा नहीं होता। अतः इस आश्रम की स्थापना करके शीघ्र ही अमलीरूप दिया जाना चाहिए।

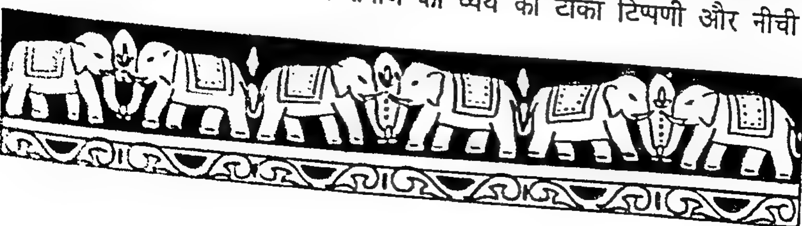
महासभा के कार्य को सुव्यवस्थित चलाने के लिए प्रान्तिक शाखाओं में जीवन संचार करना भी वहुत आवश्यक कार्य है।

मुनिराजों द्वारा निर्णीत विधान (समाचारी) का पालन करवाने में सहायता प्रदान करने के लिये एक स्टेण्डिंग कमेटी का निर्माण भी करना है तथा आचार्य श्री के अनुशासन का पालन जिस तरह हो सके उसका उपाय भी सोचना है। आचार्यश्री के पीछे संघ वल होना चाहिये। इसके लिए श्रावकों का संगठन भी नये रूप से होना चाहिये।

जैन गणना का कार्य भी वहुत महत्वपूर्ण है। यदि महासभा इस काम को हाथ में ले तो वड़ा उपयोगी कदम होगा। यदि अभी इस महान् कार्य को न उठाया जा सके तो कम से कम प्रत्येक ग्राम या शहर में जैनों की कितनी संख्या है यह नोंध ली जाय और वड़े-वड़े गांवों, कस्बों और शहरों का नक्शा तैयार करवाया जाय। ताकि योजनापूर्वक विहार का कार्यक्रम बनाये जाने में सुविधा हो।

हमारी सव सम्प्रदायें तो एक होने जा रही हैं किन्तु अब हमें अपना लक्ष्य जैनों के सव फिरकों में एकता साधने का बनाना चाहिये। जैन जाति तभी जीवित रह सकती है जब दिगम्बर, श्वेताम्वर, स्थानकवासी और तेरापंथी सब एक सूत्र में बन्धकर भगवान् महावीर के अहिंसा सिद्धान्त का प्रचार करें और स्वयं अमल में लावें। छोटे-मोटे भेदों को भुलाये विना अन्य गति नहीं है।

अंत में एक वात और निवेदन कर दूं। हमारी समाज में अनेक कुरिवाज हैं। उनमें पर्दा प्रथा भी एक है। मैं इस प्रथा को अच्छा नहीं मानता। फिर भी हमारे घर में अमली रूप देने में संकोच होता है। समाज की व्यर्थ की टीका टिप्पणी और नीची



निगाह से देखने की वृत्ति पर्दा प्रथा निवारण में बाधक कारण है। इसके लिए लोक मानस तैयार करना है। क्या कभी ऐसा अवसर आ सकता है जब हमारी मां बहिनें सामूहिक रूप से इस कुप्रथा को दफना देंगी? फिजूलखर्चियां भी बहुत बढ़ गई है। सुकृत के कार्य में चंदा देते हुए हमारे भाई अनेक बहानेबाजियां करने लगते हैं। किन्तु विवाह शादियों के वक्त कितने उदार बन जाते हैं। शादियों के आडम्बर और कार्य भी कितने बढ़ गये हैं। यह समय छिपाकर खाने का है न कि लक्ष्मी प्रदर्शन का। इस विषय में हमें अपने पूर्वजों की शैली पर पुनः पहुंचना चाहिये।

—सौजन्य जैन प्रकाश २६-५-१६५२

महिला सम्मेलन की प्रमुख श्रीमती ताराबहिन बांठिया द्वारा दिया गया अभिभाषण

माताओं तथा बहनों!

अच्छा होता महिला सम्मेलन का अध्यक्ष पद किसी वयोवृद्ध अनुभवी या कार्यकुशल बहिन को दिया जाता हम लोग उसके पथ प्रदर्शन का लाभ उठाते और आगे बढ़ते। फिर भी आप सबने मुझे जो उत्तरदायित्व दिया है उसका अर्थ मैं यह मानती हूं कि आप सभी का अनुभव कार्यशक्ति और विश्वास मेरे साथ हैं। मेरे लिये है यही सबसे बड़ा बल है।

आज का जमाना क्रांति का हैं इस समय संसार में क्रांतिकारी परिवर्तन हो रहे, हैं। पुराने बंधन तथा रूढ़िया टूट रही हैं। प्राचीन व्यवस्थायें छिन्न-भिन्न हो रही हैं संसार तीव्र गति से दौड़ रहा है। यह नहीं कहा जा सकता कि जो कुछ हो रहा है वह सब शुभ परिणाम को लिये हुये हैं। इस सरपट दौड़ से उत्थान भी हो सकता है और पतन भी। हमें ऐसा प्रयत्न करना है जिससे इस परिवर्तन का परिणाम मंगलमय तथा कल्याणकारी हो। मैं चाहती हूं कि हम सभी समय के साथ चलें किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम पुरुषों का अनुकरण करें। पुरुष और स्त्री दोनों ही समाज के मूल तत्त्व हैं अपने-अपने कार्यक्षेत्र में दोनों पर ही उत्तरदायित्व रहता है। इसका अर्थ आप यह न समझे कि स्त्रियां आगे न बढ़ें और अपने क्षेत्र को चक्की चूल्हा तथा सन्तान पालन तक ही सीमित रखें। आवश्यकता इस बात की है कि स्त्रियां अपने कार्य के महत्व को पहचाने। मैं तो यह कहना चाहती हूं, कि समाज को धुरी स्त्री समाज है पुरुषों का कार्य सिर्फ बाहर का है। गृह व्यवस्था तथा समाज का असली सूत्र तो स्त्रियों के हाथ में हैं। मैं यह नहीं चाहती कि वे अपने गौरवपूर्ण पद को छोड़ कर पुरुषों की अन्धी नकल करें। उन्हें अपने ही सम्मानपूर्ण पद के लिये योग्य बनना चाहिए।



माता का पद समाज का सबसे ऊंचा पद है। तीर्थंकरों और चक्रवर्तियों की मातायें भी तो हम ही हैं फिर बतलाइये कि इससे ऊंचा पद और कौनसा हो सकता है। हममें इस पद की योग्यता रखना बड़ा ही जरूरी है। हमें चाहिए कि हम अपनी संतान को सुसंस्कृत सुशिक्षित तथा समाज के कर्णधार बनावें जो कि आगे जाकर हमारे नाम को उज्ज्वल करें लेकिन हमारी बहनों में शिशु पालन की जो अज्ञानता फैली हुई है उसे देखकर बड़ा दुःख होता है। मैं तो कहूं कि जिन्हें शिशु पालन का पूरा पूरा ज्ञान नहीं है उन बहनों को संतान पैदा करने का भी कोई हक नहीं है। जिन बहनों को संतान होवे उन्हें यह सीखना आवश्यक हो जाता है कि वे किस प्रकार अपने बच्चों में अच्छे संस्कार डालें और किस प्रकार की उन्हें शिक्षा देवें ताकि वे अच्छे नागरिक बन कर अपना तथा अपने पूर्वजों का नाम उज्ज्वल करें।

हमारे प्रत्येक सम्मेलन में परदा उठाने का प्रश्न उठता है मैं भी यह मानती हूं कि यह प्रथा उठानी चाहिए। समझ में नहीं आता कि हमने कौन ऐसा बड़ा पाप किया है कि जिससे हमें अपना मुख छिपा कर रहना पड़ता है। फिर भी हमें चाहिए कि हमें एक ऐसा कदम उठाना है कि जिससे हम समाज के साथ चल सकें। गाड़ी छोड़ कर आने वाला एंजिन उपयोगी सिद्ध नहीं होता इसलिये आज हमें ऐसा प्रस्ताव पास करना है कि जो अमल में लाया जा सके। मेरा सुझाव है कि कम से कम स्त्रियों का आपसी परदे का आज ही एक साथ अन्त कर दें। सभी बहनें यह निश्चय कर उठें कि वे आपस में परदा नहीं करेंगी। मैं यह मानती हूं कि गुजरात तथा पंजाब में तो यह समस्या नहीं है परन्तु मारवाड़ी समाज में तथा राजस्थान की महिलाओं को आज यह निश्चय कर लेना चाहिए कि हम आज से आपसी परदा न करेंगी। इससे मैं यह मानूंगी कि मैंने एक कदम आगे बढ़ाया। स्त्री शिक्षा के लिये भी हमें आवश्यक प्रयत्न करना चाहिए। इसका महत्व सर्वविदित है इससे हमें अपने को और अपनी लड़कियों को शिक्षित करना जरूरी है।

आज इस सादड़ी गांव में सैंकड़ों की संख्या में हमारे पूज्य मुनिराज तथा साध्वीजी एकत्रित हुई हैं और उन्होंने अपने साम्प्रदायिक मतभेद तथा अपनी पदवी को छोड़कर संघ ऐक्य की योजना को सफल बनाया है। दूसरी ओर हमारी कांफ्रेंस समाज के उत्थान के लिये उपयोगी निश्चय कर रही है उन सब को व्यवहार में लाना तथा समाज की एकता को कायम रखना एवं उसे आगे बढ़ाना। इसमें हमारा भी उतना ही कर्तव्य है जितना पुरुषों का। मैं आप सबसे अनुरोध करती हूं कि हमें अपनी कांफ्रेंस को पूरा सहयोग देना चाहिए।



हमारी समस्यायें अनेक हैं उनकी चर्चा के लिये काफी समय की आवश्यकता है। मैं तो आपसे यही अनुरोध करती हूं कि हम जो कुछ भी निश्चय करें उसे व्यवहार में लाकर बतायें। बातें ऊंची-ऊंची करना तथा काम के समय भाग जाना हमारे देश का रोग है, हमें यथाशक्ति इससे वचना चाहिए।

अन्त में मैं आप सभी को धन्यवाद देती हूं कि आपने मेरे भी विचारों को शांतिपूर्वक सुना। आशा है कि इस सम्मेलन में आप हमारे सामाजिक उत्थान के लिये योग्य निर्णय करेंगी और इसी दृष्टि से करेंगी कि वह निर्णय व्यवहार में लाया जायेगा।

—सौजन्य जैन प्रकाश ५-६-१९५२





कान्फ्रेंस अधिवेशन एवं वृहत् साधु सम्मेलन—भीनासर

'भीनासर के भामाशाह' बांठिया जी के सद् प्रयासों का सुफल ही था कि अ. [illegible]. श्वे. स्था. जैन कान्फ्रेंस का तेरहवां अधिवेशन-स्वर्ण जयन्ती अधिवेशन ४ से ६ [illegible]प्रेल सन् १९५६ को भीनासर में सम्पन्न हुआ। साथ ही २६ मार्च से ६ अप्रेल तक [illegible]हीं द्वितीय वृहत् साधु सम्मेलन भी आयोजित हुआ। देश के कोने-कोने से समागत [illegible]५-४० हजार श्रद्धालुजनों का सम्मेलन कान्फ्रेंस व भीनासर के इतिहास में चिर [illegible]स्मरणीय वन गया।

अधिवेशन की अध्यक्षता श्री विनयचन्द्र भाई दुर्लभ जी भाई जौहरी ने की तथा स्वागताध्यक्ष थे श्री जयचंदलाल जी रामपुरिया। अधिवेशन की सफलता के लिए महामहिम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, उप राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन् और प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने भी शुभ सन्देश प्रेषित किये थे। अधिवेशन का उद्घाटन गृहमंत्री माननीय पं. गोविन्द वल्लभ पंत ने किया। इस अवसर पर श्रीयुत् मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री-राजस्थान), श्री जयनारायण व्यास (पूर्व-मुख्यमंत्री), श्री वलवंत राय मेहता-एम. पी., श्रीमती रूक्मिणी अरूंडेल आदि नेता भी पधारे। श्री गोविन्द वल्लभ पन्त को श्वे. स्था. जैन समाज की ओर से अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

अधिवेशन में पारित प्रस्तावों में उल्लेखनीय हैं : १. महावीर जयन्ती के सार्वजनिक अवकाश हेतु सरकार से आग्रह। २. वीर सेवा संघ की स्थापना हेतु योजना। ३. श्रमण संघ द्वारा गठित संवत्सरी तिथि-निर्णायक समिति को सहयोग देने के लिए एक उपसमिति का गठन। ४. व्यापार विकास हेतु हिंसक प्रवृत्तियों पर खेद। ५. जैन धर्म के विश्वव्यापी सिद्धान्तों का प्रचार। ६. ध्वनि वर्द्धक यंत्र (लाऊड स्पीकर) के प्रयोग सम्वन्धी श्रमण संघ के प्रस्ताव पर अमल। ७. दिल्ली में कान्फ्रेंस भवन क्रय की स्वीकृति। ८. भगवान महावीर के निर्वाण स्थान पावापुरी को अभय भूमि घोषित कराना। ९. जिनागम प्रकाशन समिति की नियुक्ति। १०. पंचशील के सिद्धान्तों के प्रचार हेतु पूर्ण सहयोग।

ध्वनि-विस्तारक यंत्र के प्रयोग पर प्रायश्चित के प्रस्ताव पर काफी बहस छिड़ गई। कतिपय मुनियों ने इसका विरोध किया परन्तु मुनि श्री मिश्रीलाल जी, मुनि श्री अमृतलाल जी तथा मुनि श्री सुशीलकुमार जी के प्रयासों से झगड़ा शान्त हो गया व प्रस्ताव पारित हो गया।



अपने उद्घाटन भाषण में भारत सरकार के गृहमंत्री पंडित गोविन्द वल्लभ पंत ने जैन धर्म के अहिंसा, एकता और सहिष्णुता के मूलभूत सिद्धान्तों का अनुसरण करने की अपील की। आपने आगे कहा, 'आज हम बड़े क्रांतिकारी युग में रह रहे हैं। सम्पूर्ण विश्व ही हमारा परिवार बन गया है। इस दृष्टि से जैन धर्म द्वारा प्रतिपादित विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्तों की उपादेयता स्वयं सिद्ध है, जिन्हें अपना कर जीवन में नव आलोक प्राप्त किया जा सकता है।'

पंडित पंत ने कहा कि भौतिक साधनों से हुई समृद्धि और सुख सुविधाओं के बावजूद भी आज लोग वास्तव में सुखी नहीं हैं। सर्वत्र सन्देह और भय का वातावरण है और इस स्थिति का अन्त केवल धार्मिक सिद्धान्तों के आचरण से ही सम्भव है। सभी धर्मों का मूल सिद्धांत एकता है फिर भी यह विडम्बना है कि धर्म के नाम पर मानव मानव में ऊंच-नीच की कृत्रिम दीवारें निर्मित कर दी गई हैं। इस बनावटी भेदभाव को समाप्त करना आवश्यक है। जैन धर्मानुयायी देश की एकता हेतु कार्य करें तो यह देश की सबसे बड़ी सेवा होगी।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री विनयचंद भाई दुर्लभ जी जौहरी ने कहा, 'यदि जैन-संस्कृति, साहित्य और तत्वज्ञान का जगद्व्यापी प्रचार करना चाहते हैं तो—एक बनो, अखंड बनो और एकाग्र बनो—हमारा जीवन सूत्र बनाना चाहिए। हमारी अखंड एकता द्वारा अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह का सविशेष प्रचार करके जैनत्व का प्रकाश विश्व में फैला सकेंगे।'

आपने जोर देकर कहा कि आज के युग में वही समाज, वही धर्म जीवित रह सकता है, जिसमें संघठन है क्योंकि संघ शक्ति ही वास्तविक शक्ति है। आपने श्रमण-संघ को एक, अखंड और अद्वितीय बनाने हेतु कतिपय सुझाव दिये तो श्रावक संघों को भी संगठित होकर कार्य करने की अपील की।

स्वागताध्यक्ष श्री जयचन्दलाल जी रामपुरिया ने जैन समाज को संगठित होकर कार्य करने की आवश्यकता बताई। आपने साधु समाज को आध्यात्मिक जीवन का सजग प्रहरी माना जो आत्म-संयम, अध्यात्म व उच्चादर्श के प्रति जागरूक हैं। सह स्वागत मंत्री श्री प्रतापमल जी बांठिया ने नैतिक उत्थान के लिए प्रारम्भ से ही धार्मिक शिक्षा पर ध्यान देने का सुझाव दिया और बताया कि राष्ट्र और धर्म में कोई मतभेद नहीं रहना चाहिए।

वृहत् साधु-सम्मेलन उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी महाराज सा. के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ था। इसमें प्रधानमंत्री श्री आनन्द ऋषि जी म. सा., पंजाब केसरी श्री



प्रेमचन्दजी महाराज, मरूधर केसरी श्री मिश्रीलाल जी महाराज, श्री प्यारचंदजी महाराज, श्री हस्तीमल जी महाराज, कविसम्राट श्री अमरचन्द जी महाराज, श्री सुशील कुमार जी महाराज, श्री मदनलाल जी महाराज सहित करीब दो सौ सन्त मुनिराज पधारे।

जैन कांफ्रेंस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव हेतु गठित स्वागत समिति के स्वागत मंत्री निर्वाचित किए गए थे श्रीमान् चम्पालाल जी सा. बांठिया। एक विशाल पंडाल (लगभग ५० हजार व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था) का निर्माण किया गया था। अहर्निश परिश्रम कर बांठिया सा. ने सम्मेलन को सफल बनाया। स्वर्णाक्षरों में अंकन योग्य बन गया यह अधिवेशन।

जैन युवक सम्मेलन

अ. भा. श्वे. स्था. जैन कान्फ्रेंस के अधिवेशन के अवसर पर ही भीनासर में श्वे. स्था. जैन युवक सम्मेलन श्री जवाहरलाल जी मूणोत की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसका उद्घाटन दानवीर सेठ श्री सोहनलाल जी दूगड़ ने किया। मध्यभारत के राजस्व मंत्री श्री सौभाग्यमल जी जैन, दिल्ली विधान सभा के सदस्य श्री आनन्दराज जी सुराणा आदि विशिष्ट महानुभाव भी इसमें उपस्थित हुए। अनेक वक्ताओं ने समाज सुधार के बारे में अपने विचार प्रकट किये। श्री मूणोत ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में युवा पीढ़ी को धार्मिक शिक्षा देने की आवश्यकता बताई। आपने नवयुवकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे धर्म के प्रति विश्वास व श्रद्धा रखते हुए श्रमण व श्रावक संघों के प्रति निष्ठा पूर्वक कार्य करें।

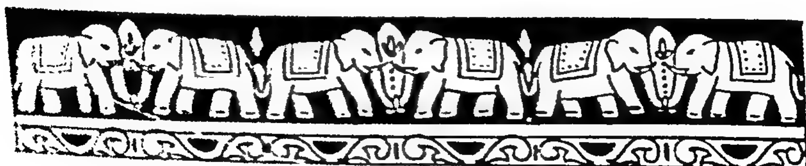
जैन महिला परिषद्

जैन कान्फ्रेन्स के अधिवेशन के दौरान ही अ.भा. श्वे. स्था. जैन महिला परिषद् का सम्मेलन श्रीमती पारसरानी जैन (भुसावल) की अध्यक्षता में हुआ। उद्घाटन किया श्रीमती सोहनलाल जी दूगड़ ने। स्वागताध्यक्ष श्रीमती तारादेवी बांठिया के स्वागत भाषण के पश्चात् महारानी सुदर्शना महिला कॉलेज की प्राचार्या श्रीमती स्वर्णलता अग्रवाल ने महिलाओं की शिक्षा पर जोर दिया। उल्लेखनीय है कि अखिल भारतीय महिला परिषद् की स्थापना करने का प्रस्ताव भी स्वीकृत हुआ। महिला परिषद् के महिलाओं में आपसी पर्दा नहीं रखने, मृत्यु के अवसर पर चिल्लाकर न रोने तथा दहेज प्रथा बन्द करने के प्रस्ताव प्रशंसनीय हैं।* □

---

* दैनिक हिन्दुस्तान, नई दिल्ली ८-४-५६, ६-४-५६

दैनिक राष्ट्रदूत, जयपुर १२-४-५६, दैनिक लोकवाणी, जयपुर ६-४-५६



उदारता की प्रतिमूर्ति

बांठिया सा. के हृदय में करुणा व सहयोग की भावना रची-पची थी। इनकी हवेली पर आकर जिसने अपना दुखड़ा सुनाया उसका हल अवश्य निकला। ग्रामवासी, परिचित जन अथवा सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं के पदाधिकारी/-कार्यकर्ता प्रायः मिलने आते और उन्हें परामर्श, समानुभूति या आर्थिक सहयोग अवश्य मिलता। आपको उदारता अपने पितृश्री से विरासत में मिली थी। उन्होंने अपने जीवन में लाखों रुपयों का गुप्त और प्रकट दान दिया था। बांठिया सा. ने भी उसी आदर्श का निर्वाह किया। आपने अनेक बार बड़ी-बड़ी राशियां दान की हैं। एक प्रसंग पर एक मुश्त ७५ हजार रु. का दान देकर आपने स्तुत्य कीर्तिमान स्थापित किया।

सामाजिक संस्थाओं के उन्नयन हेतु आपकी सदैव रुचि रही है। इन्हें कार्यक्रम बनाने व गतिशील रखने हेतु अनेक अवसरों पर आपने अर्थ सहयोग प्रदान कर एक आदर्श प्रस्तुत किया जिनमें से कुछ प्रमुख निम्न प्रकार हैं।

२१०००/- श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस के बारहवें सादड़ी अधिवेशन की अध्यक्षता के अवसर पर

११०००/- श्री जैन गुरुकुल ब्यावर में समारोह की अध्यक्षता के अवसर पर

५०००/- जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकुला (अम्बाला) की अध्यक्षता के अवसर पर

२५००/- भोपालगढ़ गुरुकुल के समारोह की अध्यक्षता के अवसर पर

११११११/- श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर की स्थापना के लिए संवत् २००० में

४१०१/- श्री जवाहर विद्यापीठ के उद्घाटन के अवसर पर

५२५०/- श्री जवाहर विद्यापीठ के विद्यार्थियों के भोजन हेतु संवत् २००३ से २०१२ तक ५२५/- प्रति वर्ष।

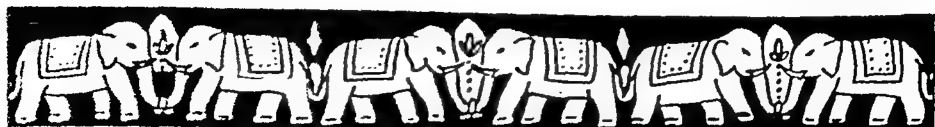
२२२२/- श्री जैन पाठशाला सभा (एक क्वार्टर निर्माणार्थ)

५००१/- स्थानकवासी जैन सभा, कलकत्ता

१०००/- सार्दूल संस्कृत कालेज, बीकानेर

५०००/- भीनासर साधु सम्मेलन के चंदे में

१०००/- गृह उद्योग शिक्षण शाला, भीनासर



१००१/- उदयपुर में गणेशीलालजी म.सा. के आप्रेशन के समय हॉस्पिटल में

६०००/- सरदार शहर जवाहिर प्रन्यास

आपके स्वर्गवास के पश्चात् भी आपकी धर्मपत्नी श्रीमती तारा देवी बांठिया ने आपकी उदार परम्परा को जारी रखते हुए निम्नलिखित संस्थाओं को मुक्त हस्त से दान दिया—

१५०००/- श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर को सेठ श्री चम्पालाल जी बाँठिया स्मृति व्याख्यानमाला फंड में

११०००/- साधुमार्गी जैन संघ गंगाशहर, भीनासर में आचार्य नानेश के होली चातुर्मास के अवसर पर

५१११/- श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था, बीकानेर की हीरक जयन्ती के अवसर पर

५००१/- दलोदा समता भवन के निर्माणार्थ

४०००/- गंगाशहर में गरीब भाईयों के क्वार्टर निर्माणार्थ

१२०००/- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति को स्वधर्मी सहायता हेतु

३१००/- सेठ हमीरमलजी बांठिया राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय की हीरक जयन्ती के अवसर पर

१,०१,०००/- श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर। □



महाराजा सार्दूलसिंहजी फंड : प्रभूतदान

दिनांक १ मार्च १९४४ को बांठिया बालिका विद्यालय का उद्घाटन करने हेतु बीकानेर के तत्कालीन नरेश श्रीमान् सार्दूलसिंहजी को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर सेठ सा. ने उनको २५ हजार रु. नगदी नजर किये। इसी क्रम में आपने एक लाख रुपये चम्पालालजी वैद व ७००० रु. सोहनलालजी बांठिया से नजराना भेंट कराया। यह १,३२,००० रु. की राशि सार्दूल वेलफेयर फंड में जमा करादी गई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इस राशि के बारे में निर्णय हेतु एक कमेटी गठित की गई जिसके सचिव कलेक्टर, जसवन्तसिंहजी M.L.A. अध्यक्ष मनोनीत किये गये। तीन सदस्य राजाजी की ओर से व तीन जनता से लिये गये। एक सदस्य आप भी थे।

श्री जसवन्त सिंहजी के तात्कालीन संसद ने प्रश्न उठाया कि सार्दुल वेलफेयर फण्ड में बीकानेर दरबार को जो नजराना बीकानेर की जनता द्वारा पेश किया गया है यह बीकानेर का रुपया है अतः बीकानेर में ही खर्च होना चाहिये। कमेटी द्वारा बाद में निर्णय लिया गया कि जिसने जितना नजराना किया उसका आधा भाग उसे वापस लौटा दिया जाय। किन्तु आपश्री कि विशिष्ट सेवाओं को देखते हुए कमेटी ने आपको ७५% राशि वापस लौटाने का निर्णय लिया। इस प्रस्ताव के अन्तर्गत आपको १,३२०००/- का ७५% से ९९००० /- का चैक दिया गया। आप इसे धर्मार्थ कार्य में व्यय करना चाहते थे परन्तु बैदजी कुआं व वाटर वर्क्स बनवाना चाहते थे। अतः उनको व श्री सोहनलालजी को उनकी राशि दे दी गई और आपने अपनी राशि १८,७५० रु. (२५,००० रु. का ७५ %) बांठिया बालिका विद्यालय-भवन में व्यय की।

यहां उल्लेखनीय है कि दरबार के सम्मान में जवाहर विद्यापीठ प्रांगण में समारोह किया गया था वह भी अपने में अनुपम था। उनके प्रवेश हेतु एक रजत द्वार लगाया गया, जो बीकानेर के श्री भंवरलालजी रामपुरिया के यहां से लाया गया था। प्रांगण खचाखच भरा हुआ था और सभी तन्मय होकर दरबार का उद्बोधन सुन रहे थे। ☐

सजग प्रहरी

आदर्श एवं सजग प्रहरी के रूप में भी बांठिया सा. का व्यक्तित्व बेजोड़ था। उच्च पदासीन अधिकारी ही यदि भ्रष्ट हो तो उससे क्या अपेक्षा की जा सकती है। ऐसे ही एक जज थे डी. एम. नानावती, जिन्हें अपने पद से ही हाथ न धोना पड़ा वरन् देश निकाले का दण्ड तक भुगतना पड़ा। सेठ सा. का बीकानेर राज्य की हाई कोर्ट में एक मुकदमा श्री शिववख्सजी कोचर से चल रहा था। आपको ज्ञात हुआ कि जज घूसखोर है और दूसरी पार्टी से पैसा लेकर उनके विरुद्ध निर्णय करेगा तो आपने एक योजना बनाकर उसे सबक सिखाना चाहा। आपने तत्कालीन पुलिस अधीक्षक श्री जवाहरलालजी व आई.जी.पी. हार्डिंग से भेंट कर सारी स्थिति से अवगत कराया। इधर हार्डिंग ने महाराजा गंगासिंहजी से बात की तो उन्हें विश्वास नहीं हुआ। महाराजा सा. को ५००० के नोट दिखाकर नम्बर नोट करा दिये।

निश्चित समय पर श्री शेसकरणजी के मार्फत राशि जज को दी गई। इतने में सीटी बजते ही गुप्तचर अधिकारियों ने आकर महाराजा सा. के विश्वासपात्र अधिकारियों श्री जीवराजजी आदि की उपस्थिति में जज को रंगे हाथों पकड़ लिया।

सेठ सा. की भी पेशी हुई। महाराजा गंगासिंहजी ने पूछा कि आपको पता है कि रिश्वत लेना व देना दोनों अपराध हैं तो आपने रिश्वत क्यों दी? सेठ सा. ने निर्भयता से बयान दिया कि उन्हें ज्ञात है कि रिश्वत देना जुर्म है पर महाराजा सा. से बताकर ही ऐसा किया है। यही नहीं, आपने याद दिलाया कि हार्डिंग सा. के साथ आकर नोट महाराजा सा. को दिखा दिये थे व नम्बर भी नोट करा दिये थे।

जस्टिस नानावती ने एक बार तो साफ नकार दिया कि उन्होंने रिश्वत ली है और यह राशि इनके द्वारा किये गये रूई के सौदे में नफे की है परन्तु महाराजा सा. के सम्मुख स्थिति स्पष्ट थी। आखिर आपने जज को गलत बयानी, झूठ बोलने व रिश्वत लेने के जुर्म में देश निकाला दे दिया। उन्हें आदेश दिया गया कि सात दिन में बीकानेर राज्य की सीमा छोड़कर चले जाओ।

इस प्रकार आपने जज को पाठ पढ़ाया और एक उदाहरण प्रस्तुत किया अपनी निर्भयता का तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध अपने जेहाद का। □

अद्वितीय कला प्रेमी

बांठिया सा. की कलात्मक अभिरुचि अद्वितीय थी। कला के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु आप सदैव तत्पर रहते थे। उनकी हवेली 'बांठिया भवन' स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। देश-विदेश के कला प्रेमी हवेली एवं उसमें संग्रहीत कलात्मक सामग्री का अवलोकन कर अवाक् ही नहीं रह जाते वरन् आत्म-विभोर हो जाते हैं। कारीगर एवं मजदूर लगभग चार दशक तक अनवरत कार्यरत रहे और उनकी परिकल्पना को मूर्त रूप दिया। उनकी सूझ-बूझ, कुशाग्र बुद्धि एवं उच्च कोटि की परख परिलक्षित है हवेली के निर्माण एवं स्तरीय कलाकृतियों में।

कला का अनूठा संगम है हवेली। प्रवेश द्वार से अनुमान लगाया जा सकता है हवेली की भव्यता का। कलात्मक काष्ठ द्वार अनावृत होते ही इटालियन मार्बल की टाइलों से निर्मित फर्श हमें सहसा आकर्षित कर लेता है। विविध वर्णी संगमरमर का संयोजन इस प्रकार किया गया है कि हम कल्पनालोक में खो जाते हैं। दीवारों पर लगे बड़ौदा ग्रीन मार्बल में खुदाई कर अन्य प्रकार के मार्बल की भराई कर जो डिजाइनें बनाई गई हैं अपने में अद्वितीय है। 'बड़ौदा ग्रीन' के ये इजारे वस्तुतः दर्शनीय हैं। मार्बल में खुदाई का कार्य तो आबू के देलवाड़ा मंदिर, रणकपुर के मंदिर व अन्य भी बहुत से मंदिर व हवेलियों में मिल जायेगा लेकिन मार्बल में इस तरह की भराई का काम बहुत ही दुर्लभ है। आपकी पिरोल में बांयीं ओर इजारे हैं लेकिन किसी में भी एक बाल भर भी फर्क नहीं जब कि उस समय सब कार्य हाथ से ही होता था बड़ौदा ग्रीन के बड़े पत्थर को काट काट कर उसमें दूसरे इटालियन व बेल्जियम के मार्बल को कलात्मक ढंग से काटकर भरे गये हैं तथा अपनी बैठक के आगे दोनों तरफ़ के इजारे बेल्जियम के काले मार्बल में जो मार्बल के गुलदस्ते बनाये हैं इस एक एक इजारे को बनाने में कारीगरों को ३-३ महीने लगे और इनकी कलात्मकता वस्तुतः अद्धितीय है। बर्माटीक वुड की एकल छतों में फूल पत्तियों की सूक्ष्म खुदाई की गई है तथा स्थान-स्थान पर टंगी दीवाल-घड़ियां अतीत को वर्तमान से जोड़ देती है। औत्सुक्य जागृत होता है कमरों में संजोयी कला से साक्षात् होने का।

आपके विशिष्ट अतिथि कक्ष को देखने पर लगता है कहीं म्यूजियम में पहुंच गए हैं। क्या नहीं है यहां पर! इटालियन मार्बल, अखरोट-काष्ठ, रजत, हाथी दांत, प्रोसलिन, चन्दन-काष्ठ, बेल्जियम कट ग्लास की मूर्तियां व सजावटी सामग्री। आलमारियों की बेल बूटेदार फ्रेम एवं द्वार, हाथीदांत की शतरंज व बुद्ध सिकन्दर आदि

की लम्बाकर मूर्तियां, प्रोसलिन की 'थ्री-मिस्टर्स', एम्ब्रोइडरी चित्र, गलीचे, फर्नीचर आदि साक्षी हैं वांठिया सा. की कला-दृष्टि के। कितना समय लगा होगा, कितनी धनराशि व्यय हुई होगी, कल्पनातीत है।

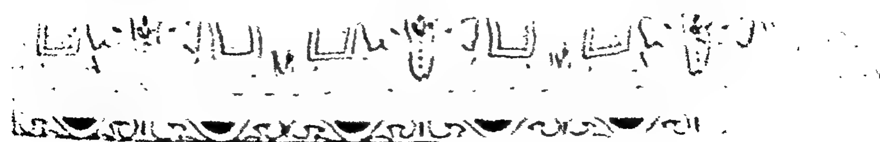
विशिष्ट अतिथि कक्ष अपने में विशेषता लिये हुए है। दीवार के ऊपरी सिरे पर राष्ट्रीय नेताओं एवं बीकानेर नरेशों के चित्रों में हम गोखले, नेहरू, पटेल, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, इन्दिरा गांधी के साथ बीकाजी से लेकर डॉ. करणीसिंहजी को एक साथ देख सकते हैं। मध्य में अवस्थित टेबल पर फूल फव्वारा भी दर्शक को मोह लेता है।

हर चौक में, हर कमरे में विविध प्रकार की कुल ४० घड़ियां लगी हुई हैं। दरवाजों में चारों ओर सुनहरी कलम का काम, चूना व कलर की आला-गीला आर्ट आज भी जीवन्त है। सेठ सा. को पार्टियों का शौक था। अब तक कितने सेठ-साहूकारों, सरकारी अधिकारियों, नरेशों, मंत्रियों. सांसदों, विधायकों ने यहां सेठ सा. के साथ भोजन, अल्पाहार, स्वरुचि भोज का आनन्द लिया-गणना कठिन है।

हवेली के चेहरे पर लाल पत्थर की महीन खुदाई का काम देखकर लोग दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं। ऊपर हवेली के शयनकक्ष जिनकी छतें करीब २० फुट ऊंची है तथा इनमें कलात्मक चित्रकारी छतों व दिवारों पर की हुई है कितना समय व श्रम लगा होगा इस बारीक चित्रकारी को करने में कल्पानातीत है। लगता है कि किसी राजमहल में आ गए हों, वैसे इन दोनों शयनकक्षों को घर में भी महल कहकर ही पुकारा जाता है।

सभी कमरों के इजारो में विदेशी जापानी टाइले लगी हुई हैं जो आज दुर्लभ हैं और इनकी चमक आज भी उसी तरह बरकरार है। दरवाजों में भी कहीं खुदाई का व कहीं हाथीदांत की भराई का काम किया हुआ है।

२०-२५ वर्षों तक चेजे का कार्य करने वाले कारीगर, मजदूर व लकड़ी का कार्य करने वाले सुथार व मार्बल का कार्य करने वाले कारीगर अपनी कला उत्कीर्ण करते रहे। आपने कभी-उनको जाकर नहीं पूछा कार्य कब सम्पूर्ण होगा। आपकी तो एक ही शर्त थी काम बढ़िया से बढ़िया होना चाहिए चाहे समय व श्रम कितना ही लगे। कार्य सम्पूर्ण होने पर उसकी तारीफ सुनकर भैरूदानजी कोठारी जो मार्बल के कार्य में विशेष जानकार थे उन्होंने हवेली के काम देखकर मुक्त कंठ से उसकी सराहना की तो आपने कहा कि मेरी वर्षों की मेहनत व पैसा सब वसूल हो गया। अगर काम में कुछ कमी रहती तो उसे वापिस तुड़वाने में भी आप कोई संकोच नहीं करते थे। हवेली की गिरोल का फर्श दो बार तुड़वा दिया जो पसन्द आया उसे ही रखा ऐसे अद्वितीय कला प्रेमी थे सेठ साहब। □



पड़ाव-दर-पड़ाव

जीवन एक यात्रा थी आपके लिए। ऐसी यात्रा जिसमें अनेक मोड़ व पड़ाव आये। प्रारम्भ से ही समाज सेवा में आपका रूझान था। अपनी कार्य-कुशलता, दूरदर्शिता एवं समर्पित भावना ने आपको अनेक क्षेत्रों में आशातीत सफलता प्रदान की। उद्योग व्यापार में नये कीर्तिमान स्थापित किये तो नगर पालिका के अध्यक्ष रूप में जन-प्रतिनिधि भी बने। यही नहीं आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी नियुक्त किया गया। वर्षों तक आपने सेवा प्रदान की।

बीकानेर राज्य में सर्वप्रथम जन साधारण को न्याय दिलाने के लिए सन् १८८५ में स्माल कॉज कोर्ट की स्थापना की गई थी। इसी क्रम में ऑनरेरी मजिस्ट्रेटों के न्यायालयों की स्थापना का निर्णय लिया गया था। श्रीमान् बांठिया सा. को भी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनाया गया था।

जैन जवाहर विद्यापीठ की स्थापना के पश्चात् आपने इसका सफलतापूर्वक संचालन किया। इसके मंत्री व कोषाध्यक्ष रहकर इसके विकास हेतु आपने अथक परिश्रम किया। साथ ही नगर की अन्य सामाजिक, धार्मिक, जन कल्याणकारी संस्थाओं से सम्बद्ध रहकर आपने अपनी प्रतिभा से सबको लाभान्वित किया। मुरली मनोहर गौशाला के अध्यक्ष रूप में आपने इसके विकास हेतु अथक प्रयास किये व इसे आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान की। इसी प्रकार श्री साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था, बीकानेर के ३७ वर्षों तक अध्यक्ष रहे व संस्था का चहुंमुखी विकास किया। कौन जानता था कि बांठिया सा. अपनी प्रतिभा के बल पर बीकानेर राज्य की विधान सभा के सदस्य बन जायेंगे।

समाज के प्रति आपके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता आपने तो अपना सारा जीवन ही समाज की सेवा में लगा दिया। समाज के लिए समर्पित ऐसे महापुरुष विरले ही होते हैं। आपने तन मन और धन से पूर्णतः समर्पित होकर अपनी सेवाएँ प्रदान की। अतः समाज की विभिन्न संस्थाओं ने समय समय पर आपकी विशिष्ट सेवाओं के लिए अभिनन्दन पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। आपकी जीवन यात्रा के पड़ाव जन साधारण को प्रेरणा देने वाले एवं राह दिखाने वाले हैं। □



भरा-पूरा परिवार : परिजन परिचय

बांठिया सा. का एक भरा-पूरा संस्कारी परिवार है। १२ वर्ष की अल्पायु में आपका पाणिग्रहण सन् १६१४ (संवत् १६७१) में श्रीमती आनन्द कंवरी आत्मजा श्री तोलारामजी सेठी, बीकानेर से हो गया था। शादी के छ वर्षों बाद संवत् १६७७ में आपके एक पुत्री चांदकुंवर का जन्म हुआ तथा वर्षों बाद (श्री शांति विजयजी म. सा. के आशीर्वाद से) संवत् १६६५ में आत्मज श्री शान्तिलाल का जन्म हुआ। बच्चे ने छह बसन्त ही देखे थे कि मां आनन्द कंवरी का सं. २००१ में देहावसान हो गया। चिकित्सा की कोई कमी न रही परन्तु पानीझरा जान लेवा बन गया।

सं. २००१ में ही आपकी शादी इन्दौर के श्री जेठमलजी कोठारी की सुपुत्री श्रीमती तारा कुमारी के साथ हो गई। इनका 'पगफेरा' ऐसा था कि इनके आने के अनन्तर सुख समृद्धि की वृद्धि हुई। इनके दो पुत्र व छः पुत्रियां हुई। पुत्रों के नाम श्री धीरजलाल व सुमतिलाल हैं। पुत्रियों के नाम हैं क्रमशः सन्तोष, सबर, सुधा, समता, सुमन व सरिता। सभी बच्चों के सम्बन्ध प्रतिष्ठित व सम्पन्न परिवारों में हुए।

सबसे बड़ी पुत्री चांदकुंवर का विवाह बीकानेर के श्री भंवरलालजी पारख के साथ हुआ, जिनका लिलुवा में एस.बी. मिनरल इन्डस्ट्रीज के नाम से ग्राइन्डिंग मशीनें लगी हुई थी। कुछ वर्ष पूर्व ब्रेन हेमरेज हो जाने से उनका असामयिक व आकस्मिक निधन हो गया। इनके कोई सन्तान न होने से अपने देवर सम्पतलालजी के पुत्र निर्मल कुमार को गोद लिया।

श्री शान्तिलाल का पाणिग्रहण संस्कार मद्रास के प्रख्यात सुश्रावक श्री इन्द्रचन्दजी गेलड़ा की सुपुत्री सुशीला देवी के साथ हुआ। शादी के कुछ वर्ष पश्चात् कलकत्ता में यूनाइटेड इंजीनियर्स कार्पोरेशन नाम से रेडीमेड जीन्स का कार्य करते हैं। इन्हें अलग होने पर कलकत्ता में ७२ केनिंग स्ट्रीट तथा भीनासर में गेस्ट हाउस वाला मकान दिया गया। इनके एक पुत्री नीरजा एवं एक पुत्र सुनील है।

श्री धीरजलाल की शादी अहमदाबाद के श्री लालचन्दजी मेहता की पुत्री नलिनी देवी से हुई। इनके दो पुत्रियां-संगीता, कविता एवं एक पुत्र-आशीष है। ये पूर्व में बीकानेर में पैतृक व्यवसाय-राजस्थान टिम्बर सप्लाई कं., यूनाइटेड कांट्रेक्टर कार्पोरेशन, रामपुरिया आईस फैक्ट्री संभालते थे। एक फर्म अनुपम ट्रेडर्स नाम से खोली थी, जिसकी ब्रांच जयपुर में भी थी। इसमें फोरमाइका रंग पेन्ट का काम था। कालान्तर में



राजस्थान टिम्बर के अतिरिक्त अन्य प्रतिष्ठान बन्द कर दिये गये। अव श्री धीरजलाल कलकत्ते में अपना अच्छा व्यवसाय करते हैं। सामाजिक कार्यों में भी रुचि रखते हैं। वर्तमान में भीनासर नागरिक परिषद के सक्रिय सदस्य एवं उपमंत्री हैं।

पुत्री सन्तोष का विवाह बीकानेर के श्री माणकचन्दजी खजान्ची के पुत्र श्री धनपतसिंह जी से हुआ है। इनके बीकानेर में जवाहरात का व्यापार है तथा सूरत में हीरे का व्यवसाय है एवं बीकानेर में खजांची मार्केट के एक हिस्से का स्वामित्व है। इनके दो पुत्र तरुण सिंह व अरुणसिंह तथा एक पुत्री शशि है।

पुत्री सबर की शादी मद्रास की ख्यातनामा फर्म मै. अगरचन्द मानमल के सेठ मोहनमलजी चोरड़िया के पुत्र सम्पतमलजी चोरड़िया से हुई, जो फाइनेन्स का कार्य करते हैं। इनके फार्मास्युटिकल फैक्ट्री व बैंगलोर में होलसेल डिस्ट्रीब्यूटर्स का कार्य है। इनके दो पुत्र पन्नालाल व गम्भीर तथा एक पुत्री चन्द्रकला है।

पुत्री सुधा का विवाह बीकानेर के श्री मोहनलालजी सिरोहिया के पुत्र सुरेश कुमारजी के साथ हुआ है, जो कलकत्ता में सुधा टैक्सटाइल्स नाम से होलसेल सूती साड़ी का व्यवसाय करते हैं। इनके दो पुत्र मनीष व महीप हैं।

कनिष्ठ पुत्र श्री सुमतिलाल ने बी.कॉम तक अध्ययन किया है और इनकी शादी बीकानेर के साहित्यकार-श्रेष्ठीवर्य श्री माणकचन्दजी रामपुरिया की पुत्री प्रभादेवी के साथ हुई है। इनके एक इकलौता पुत्र-आदर्श है। इन्होंने कलकत्ता में बांठिया टैक्सटाईल्स नाम से होलसेल व्यापार किया परन्तु पांच वर्षों बाद वापस बीकानेर आकर टिम्बर का काम संभाला। इसमें चिराई की मशीनें भी लगी हुई हैं और प्रामाणिकता तथा व्यवहार कुशलता के कारण बीकानेर में इनकी प्रतिष्ठा है। श्री सुमतिलाल भी अपने पितृश्री के पद चिह्नों पर चल कर सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहकर अनुकरणीय सेवा कार्य कर रहे हैं। आप बीकानेर जिले की शॉ मिल ऑनर्स एसोसियेशन के अध्यक्ष व बीकानेर टिम्बर मर्चेन्ट एसोसियेशन के उपाध्यक्ष भी हैं। श्री जवाहर विद्यापीठ के आप मंत्री एवं ट्रस्टी हैं।

पुत्री समता की शादी चूरू के मै. पन्नालाल सागरमल के श्री मानसिंहजी बैद के सुपुत्र श्री तेजसिंहजी बैद से हुई है। इनका कार्य क्षेत्र बम्बई है, जहां मानसिंह जगतसिंह नाम से थोक व्यापार है। इसके अतिरिक्त उमरगांव में इनके केबल की फैक्ट्री भी है। इनके तीन पुत्रियाँ रैनी, हिमानी व चन्दना तथा एक पुत्र श्रेयांस है।



पुत्री सुमन का विवाह लाडनूं के श्री बहादुरसिंहजी भूतोड़िया के सुपुत्र श्री सुरेन्द्र कुमारजी से हुआ। इनका व्यवसाय बंगाल के वर्धमान जिले में है। इन्होंने एफ.सी. आई. को गोदाम किराये दे रखा है तथा कलकत्ता हाईकोर्ट में वकालत का कार्य भी करते हैं। इनके एक पुत्र मयंक व एक पुत्री स्नेहा है।

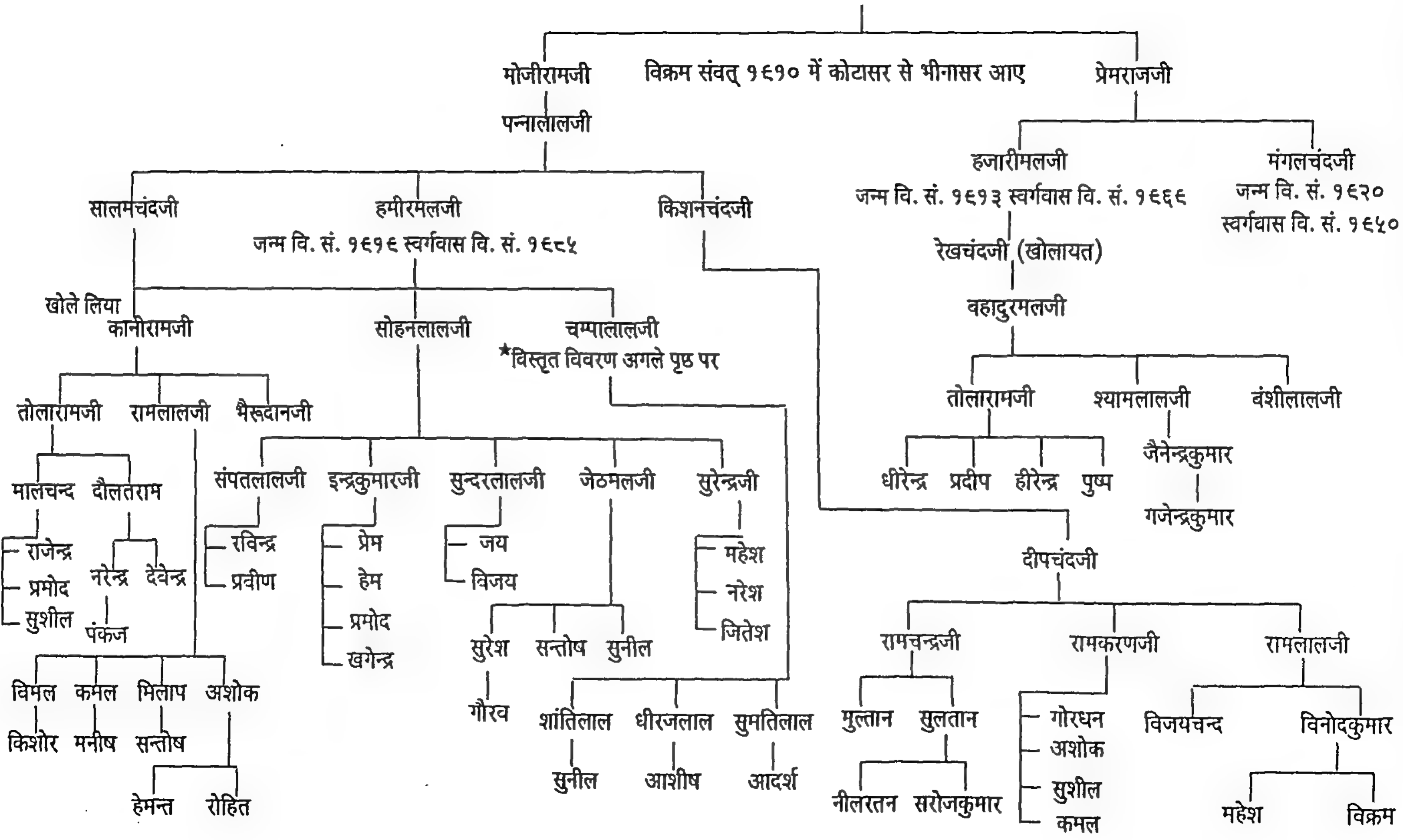
सबसे छोटी पुत्री सरिता ने उच्च शिक्षा (बी.ए.) प्राप्त की। इनकी बहिनें मैट्रिक व हायर सैकेन्ड्री तक ही अध्ययन कर पाई थी। इनका विवाह मद्रास की प्रसिद्ध फर्म जीतमल जयचन्दलाल के श्री सम्पतराय जी चोरड़िया के सुपुत्र श्री सुरेश कुमारजी के साथ हुआ। इनके मद्रास, में जाली की फैक्टरी व लोहे का व्यवसाय है। इनके एक पुत्र चिराग व एक पुत्री पूजा है।

बांठिया सा. ने दूरदर्शितापूर्वक कार्य कर पारिवारिक सदस्यों को आत्मनिर्भर बनाया व अपने अनुभव उन्हें प्रदान किये। उनके पुत्रों, पुत्रियों, पौत्र, दौहित्रादि का भरा-पूरा संस्कारी व सुसम्पन्न परिवार अब श्रीमती तारादेवी की छत्र-छाया में है। आप स्वयं प्रगतिशील व जागरूक महिला हैं तथा समाज की सेवा में संलग्न हैं। शुरू से ही महिलाओं के उत्थान के लिए प्रयत्नशील रही हैं। महिलाओं में पर्दा प्रथा की घोर विरोधी रही हैं। आपने मैट्रिक तक की शिक्षा इन्दौर में ग्रहण की थी जिस समय आपकी शादी होकर भीनासर आई तो गांव में शायद और कोई महिला मैट्रिक पास नहीं थी। आप शुरू से महिला सम्मेलनों में भाग लेती थी। भीनासर में सन् १६५६ में आयोजित साधु सम्मेलन में महती भूमिका अदा की और महिलाओं की बड़ी-बड़ी सभाओं को सम्बोधित करती थी एवं महिलाओं में नव जागरण व स्फूर्ति पैदा की है। आज भी आप अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की उपाध्यक्षा एवं गंगाशहर, भीनासर की महिला समिति की अध्यक्षा हैं एवं जनसेवा के कार्य करने में हमेशा तत्पर रहती हैं। आपकी विशिष्ट समाज सेवा के लिए श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन महिला समिति ने उदयरामसर के रजत जयन्ती वर्ष अधिवेशन में दिनांक २८/६/६२ को आपको अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित भी किया। □



वंशावली

परिशिष्ट 'क'


मगनीरामजी बाँठिया
मोजीरामजी
विक्रम संवत् १६१० में कोटासर से भीनासर आए
प्रेमराजजी
पन्नालालजी
हजारीमलजी
जन्म वि. सं. १६१३ स्वर्गवास वि. सं. १६६६
मंगलचंदजी
जन्म वि. सं. १६२०
स्वर्गवास वि. सं. १६५०
सालमचंदजी
हमीरमलजी
जन्म वि. सं. १६१६ स्वर्गवास वि. सं. १६८५
किशनचंदजी
रेखचंदजी (खोलायत)
खोले लिया
कानीरामजी
सोहनलालजी
चम्पालालजी
*विस्तृत विवरण अगले पृष्ठ पर
वहादुरमलजी
तोलारामजी
रामलालजी
भैरूदानजी
तोलारामजी
श्यामलालजी
वंशीलालजी
मालचन्द
दौलतराम
संपतलालजी
इन्द्रकुमारजी
सुन्दरलालजी
जेठमलजी
सुरेन्द्रजी
धीरेन्द्र
प्रदीप
हीरेन्द्र
पुष्प
जैनेन्द्रकुमार
गजेन्द्रकुमार
राजेन्द्र
प्रमोद
सुशील
नरेन्द्र
देवेन्द्र
पंकज
रविन्द्र
प्रवीण
प्रेम
हेम
प्रमोद
खगेन्द्र
जय
विजय
महेश
नरेश
जितेश
दीपचंदजी
सुरेश
सन्तोष
सुनील
गौरव
रामचन्द्रजी
रामकरणजी
रामलालजी
विमल
कमल
मिलाप
अशोक
किशोर
मनीष
सन्तोष
हेमन्त
रोहित
शांतिलाल
धीरजलाल
सुमतिलाल
सुनील
आशीष
आदर्श
मुल्तान
सुलतान
नीलरतन
सरोजकुमार
गोरधन
अशोक
सुशील
कमल
विजयचन्द
विनोदकुमार
महेश
विक्रम

परिशिष्ट 'ख'

सेठ श्री चम्पालालजी बाँठिया का परिवार

जन्म— [illegible] पूर्णिमा संवत् १९५९ तदनुसार दिनांक १५ दिसम्बर सन् १९०२ | स्वर्गवास—चैत्र शुक्ला तृतीया संवत् २०४४ तदनुसार दिनांक १ अप्रैल सन् १९८७

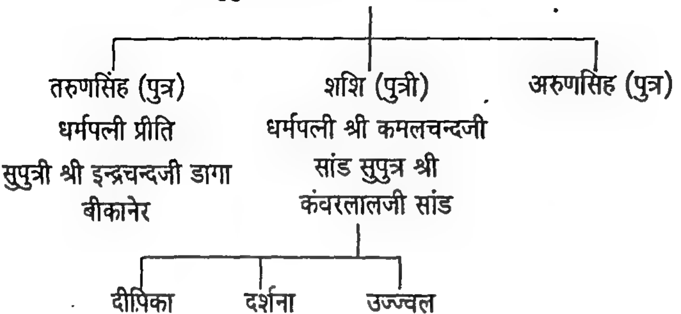
- [illegible] बाँठिया (धर्मपत्नी)
  सुपुत्री श्री [illegible] बीकानेर
  - [illegible] पारख (पुत्री)
    धर्मपत्नी [illegible] पारख
    बीकानेर
    - [illegible] पारख ([illegible])
      धर्मपत्नी [illegible]
      सुपुत्री श्री [illegible] बाँठिया
      बीकानेर
      - [illegible] (पुत्र)
      - [illegible] (पुत्री)
  - [illegible] बाँठिया (पुत्र)
    धर्मपत्नी सुशीला देवी
    सुपुत्री [illegible] मद्रास
    - नीरजा (पुत्री)
      W/o [illegible] चोरडिया
      S/o श्री [illegible] चोरडिया
      - पुत्र
      - पुत्री
    - सुनील (पुत्र)
      धर्मपत्नी सरिता
      सुपुत्री विजयकुमारजी
      कुम्भट मद्रास
      - पुत्र

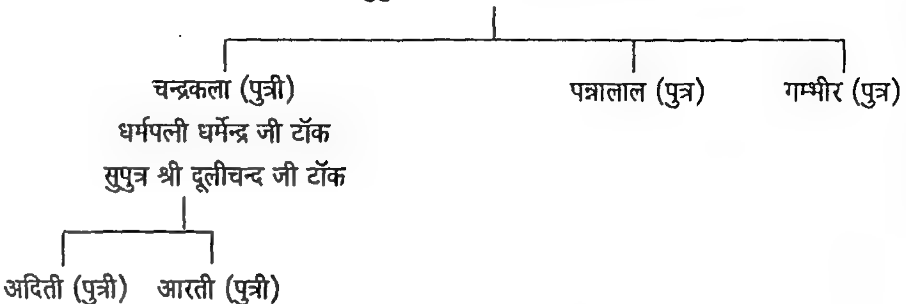
- ताराकुमारी बाँठिया (धर्मपत्नी)
  सुपुत्री श्री जेठमलजी कोठारी इन्दौर
  - धीरजलाल (पुत्र)
  - सन्तोष (पुत्री)
  - सवर (पुत्री)
  - सुधा (पुत्री)
  - सुमतिलाल (पुत्र)
  - समता (पुत्री)
  - सुमन (पुत्री)
  - सरिता (पुत्री)

सभी पुत्रियों की वंशावली नीचे अलग से दी गई है।

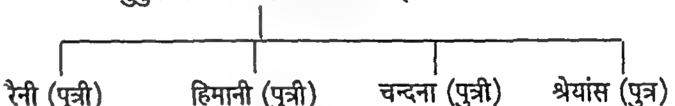
- धीरजलाल (पुत्र)
  धर्मपत्नी नलिनी देवी
  सुपुत्री श्री शीलालचन्दजी मेहता
  अहमदाबाद
  - संगीता (पुत्री)
    W/o संजयकुमारजी नवलिया
    S/o श्री अजयचन्दजी
    नवलिया कलकत्ता
    - सोनाली
  - कविता (पुत्री)
  - आशीष (पुत्र)

- सुमतिलाल (पुत्र)
  धर्मपत्नी प्रभादेवी
  सुपुत्री श्री माणकचन्द जी रामपुरिया बीकानेर
  - आदर्श (पुत्र)

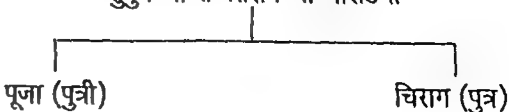

①
सन्तोष (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री धनपतसिंहजी खजान्ची
सुपुत्र श्री माणकचन्दजी खजान्ची
तरुणसिंह (पुत्र)
धर्मपत्नी प्रीति
सुपुत्री श्री इन्द्रचन्दजी डागा
बीकानेर
शशि (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री कमलचन्दजी
सांड सुपुत्र श्री
कंवरलालजी सांड
अरुणसिंह (पुत्र)
दीपिका
दर्शना
उज्ज्वल


②
सवरदेवी (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री सम्पतमलजी चोरडिया मद्रास
सुपुत्र श्री मोहनमलसा चोरडिया
चन्द्रकला (पुत्री)
धर्मपत्नी धर्मेन्द्र जी टॉक
सुपुत्र श्री दूलीचन्द जी टॉक
पन्नालाल (पुत्र)
गम्भीर (पुत्र)
अदिती (पुत्री)
आरती (पुत्री)


③
सुधादेवी (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री सुरेशकुमारजी सिरोहिया
सुपुत्र श्री मोहनलालजी सिरोहिया
मनीष (पुत्र)
महीप (पुत्र)


④
समता (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री तेजसिंहजी वैद
सुपुत्र श्री मानसिंह वैद जी बम्बई
रैनी (पुत्री)
हिमानी (पुत्री)
चन्दना (पुत्री)
श्रेयांस (पुत्र)


⑤
सुमन (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्रकुमार जी भूतोडिया
सुपुत्र श्री बहादुरसिंह जी भूतोडिया वर्दवान
मयंक (पुत्र)
स्नेहा (पुत्री)


⑥
सरिता (पुत्री)
धर्मपत्नी श्री सुरेशकुमार जी चोरडिया
सुपुत्र श्री सम्पतराय जी चोरडिया
पूजा (पुत्री)
चिराग (पुत्र)

संथारा : देहातीत भावना का साक्षात्

जीवन-मरण का चक्कर अनादिकाल से इस जीवात्मा के साथ लगा है। यह अविच्छिन्न परम्परा हमारे जीवन में तब तक रहती है जब तक हम सम्पूर्ण कर्मों का क्षय न करलें। संसारी जीव प्रायः जन्म के समय हर्ष और उल्लास मनाते हैं परन्तु मृत्यु के समय दुःख और वेदना प्रकट करते हैं। यह बाल मरण कहा गया है।

जैनागमों में मृत्यु को भी महोत्सव रूप में माना गया है। तदनुसार मरण-आत्मा का अलंकरण है। मृत्यु जीवन का अन्त नहीं है अपितु परिवेश-परिवर्तन है। अतः अन्तिम समय विचारों का परिष्करण करने हेतु संलेखना (संथारा) पूर्वक-मरण का वरण किया जाता है। इसे पंडित मरण की संज्ञा दी गई है। बांठिया सा. ने भी संथारा पूर्वक अपनी पार्थिव देह त्यागी। साधक का यह मृत्युंजयी रूप है और इसे आध्यात्मिक दृष्टि से देहातीत भावना का अलौकिक प्रतीक माना गया है।

दिनांक १ अप्रेल १९८७ तदनुसार चैत्र शुक्ला ३ सं. २०४४ को आपने सबसे विदा ली परन्तु यश रूप में आप अमर हैं। हजारों की जनमेदनी ने महाप्रयाण यात्रा में सम्मिलित होकर उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित की। सेठजी जब संसार में आए तो सारे भीनासर में आनन्द की लहर छा गई। जग खुशी से हंसा तथा आप रोये तथा आज उनका स्वर्गवास होने पर भी उनके चेहरे पर एक अद्भुत तेज था और लगता था वे हँस रहे हैं तथा सारा जग रो रहा है। रजत वैकुण्ठी में सवार उनकी महाप्रयाण यात्रा भीनासर के प्रमुख मार्गों से उनकी जय जयकार करती निकली तो देखने वालों की आंखों से आंसू बरबस झलक उठे क्योंकि उनके गांव का मसीहा चला गया। आगे आगे पुरुष थे और सबमें रजत वैकुण्ठी के कन्धा देने की जैसे होड़ सी लगी थी और पीछे-पीछे स्त्रियां भी गुलाबी रंग के वस्त्रों में श्मशान भूमि के बाहर तक चली और बाहर विश्राम स्थल पर अंतिम प्रणाम कर लौट आई। पूरी यात्रा के दौरान जन समूह नारे लगा रहा था जब तक सूरज चांद रहेगा सेठजी का नाम रहेगा। जैन समाज के ही नहीं, भीनासर एवं निकटवर्ती स्थानों के सैकड़ों व्यक्ति समाचार सुनकर जैसे अवाक् रह गये। पूरा भीनासर गांव शोकमग्न हो गया। लोगों ने अपनी स्वेच्छा से अपने व्यवसाय दूसरे दिन दाह क्रिया होने तक बन्द रखे यहां तक कि चाय-पान की दुकानें भी बन्द रहीं। बीकानेर में भी आपके व्यवसाय स्थल के पास की दाऊजी रोड की प्रायः दुकानें बंद रहीं यह लोगों की उनके प्रति असीम श्रद्धा का प्रतीक थी। बीकानेर के महाराजा डॉ. करणीसिंह सहित देश-विदेश से सैकड़ों गणमान्य विशिष्ट व्यक्तियों के संवेदना संदेश



प्राप्त होने लगे। जिनमें कुछ प्रमुख संवेदना के स्वर खंड में प्रकाशित किये जा रहे हैं। गरीबों का मसीहा, दुःख-दर्द का साथी, सबका अपना, भीनासर का भामाशाह जाने कहां चला गया। सहसा विश्वास नहीं होता कि उन जैसा हर क्षण जिन्दा दिल इन्सान चिर निद्राधीन कैसे हो गया! वे तो मित्रों, परिजनों एवं जन-जन के हृदय में स्मृति रूप में सदैव स्पंदित होते रहेंगे। सचमुच उन्होंने जीवन को सार्थक कर दिया।

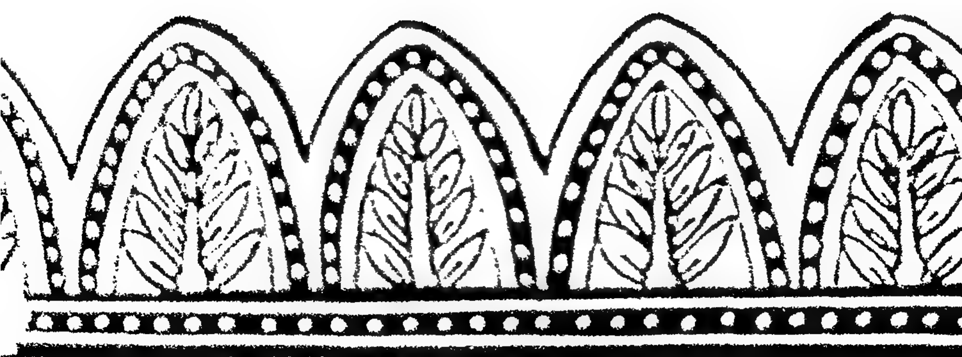
एक व्यक्ति न होकर वे इतिहास निर्माता हैं। उनकी सेवा सुरभि जन-जन के लिए थी। उनकी संस्थापित संस्थाएं वस्तुतः उनके जीवन्त स्मारक हैं जो हमें युगों तक एक कीर्ति स्तम्भ की भांति आलोकित करती रहेंगी। विशाल दृष्टि, वैचारिक उदारता, राष्ट्रीय भावना व समाज सेवा में रचे-पचे बांठियाजी टॉर्च बिअरर (Torch Bearer) थे, जो अपने सम्प्रदायातीत अवदान, अदम्य कार्यशीलता व समर्पित सेवा भाव के लिए पीढ़ियों तक जाने व माने जाते रहेंगे। □

—सेठिया जैन ग्रन्थालय
बीकानेर

उदय नागोरी
एम.ए. (दर्शन), जै.सि. प्रभाकर

चित्र वीथी

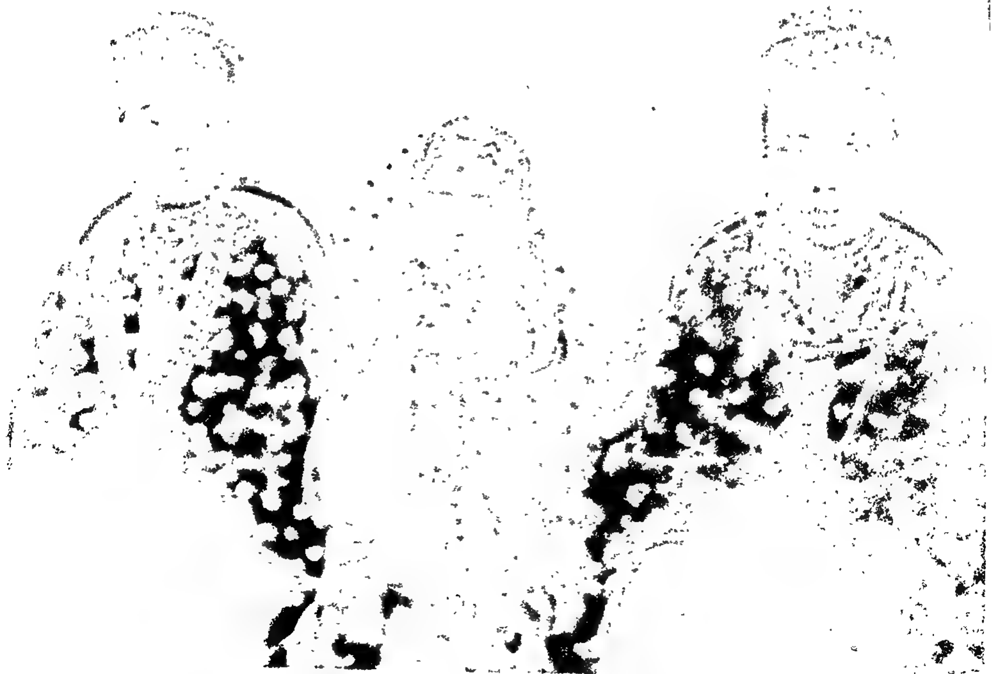
पारिवारिक

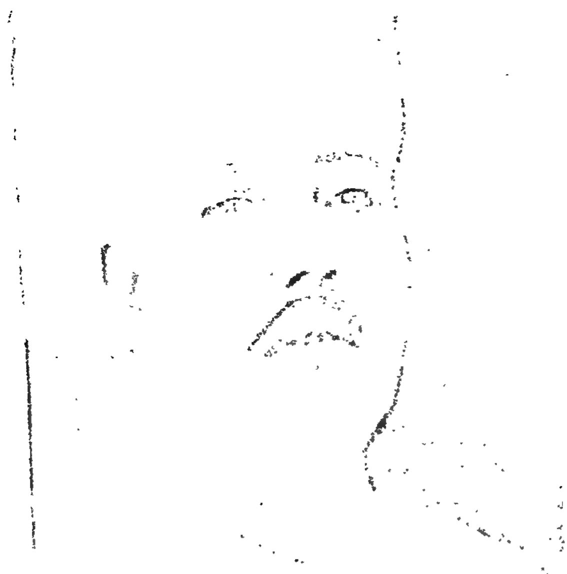




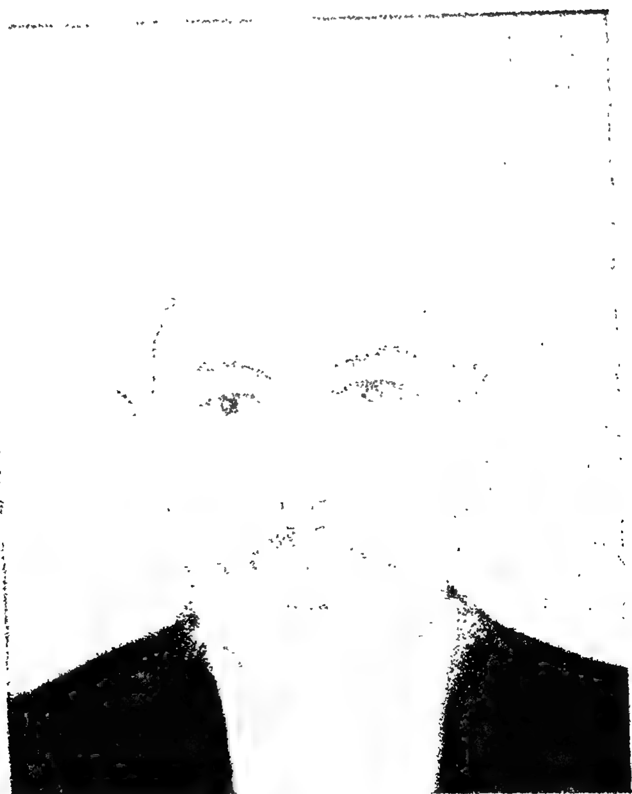
(बचपन की स्मृतियां)

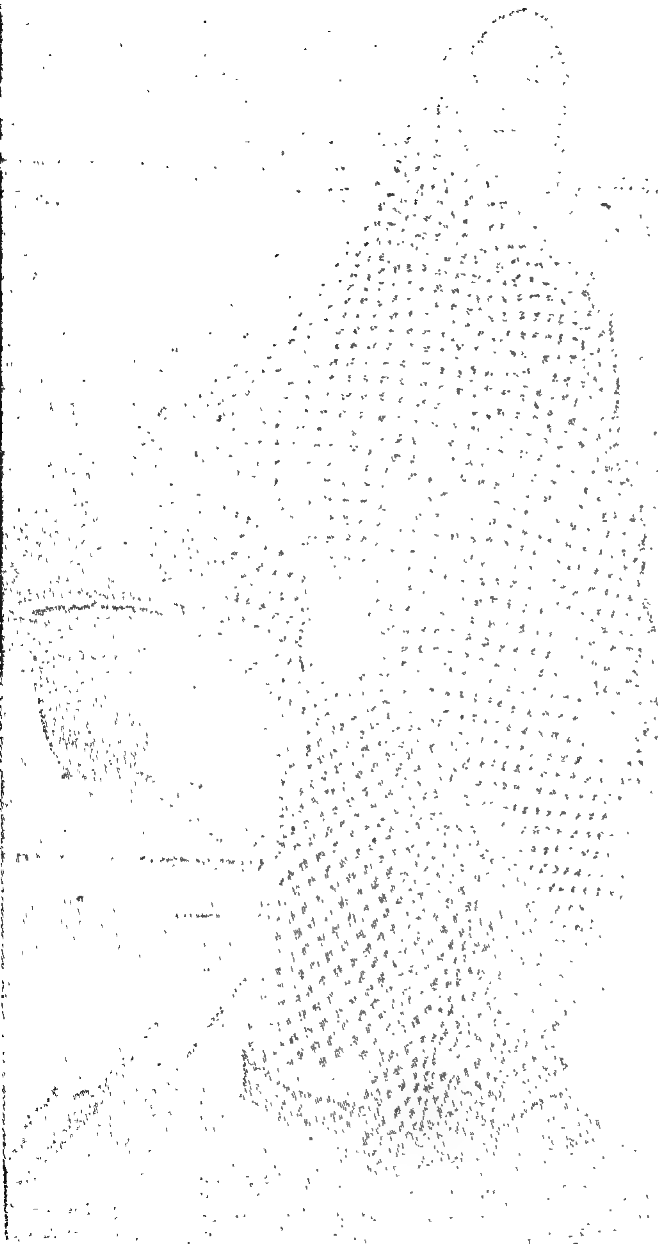
अग्रज सोहनलालजी व अनुजा राजकुमारी मालू के साथ





बड़े भाई श्री कानीरामजी

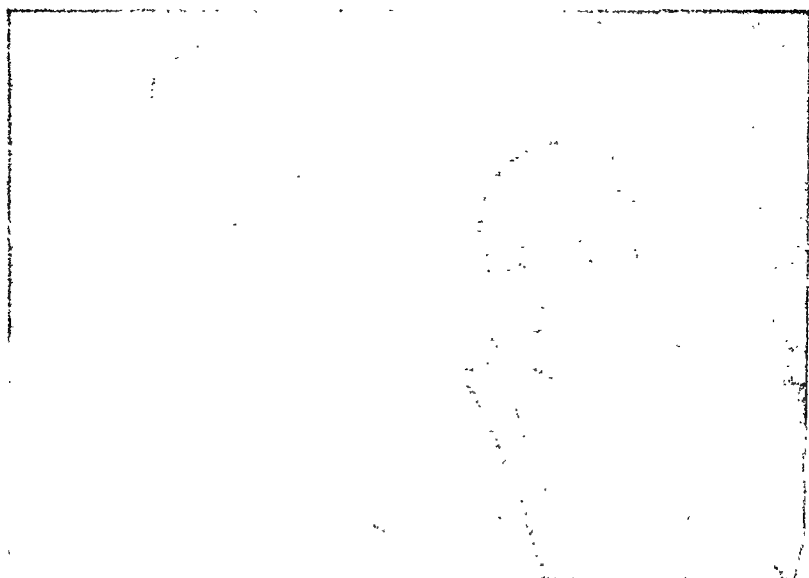




दिवंगत धर्मपत्नी श्रीमती आनन्दकंवर



ज्येष्ठ पुत्री चांदकुमारी पारख एवं जंवाई श्री भंवरलालजी पारख, बीकानेर



42 वर्ष की आयु में धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी के साथ



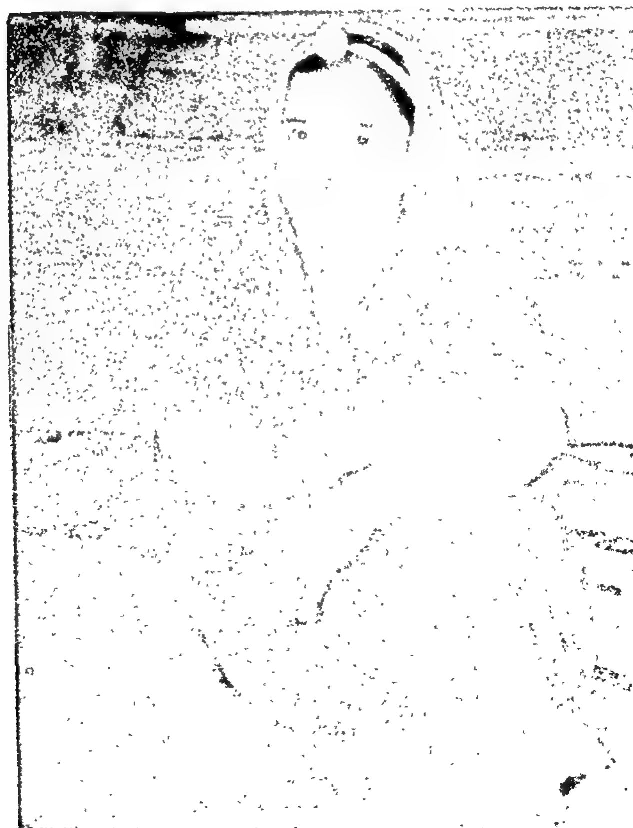
दीपावली पूजन के अवसर पर (60 वर्ष की आयु में)



सबसे छोटी पुत्री शान्ता के विवाह के अवसर पर (80 वर्ष की आयु में)

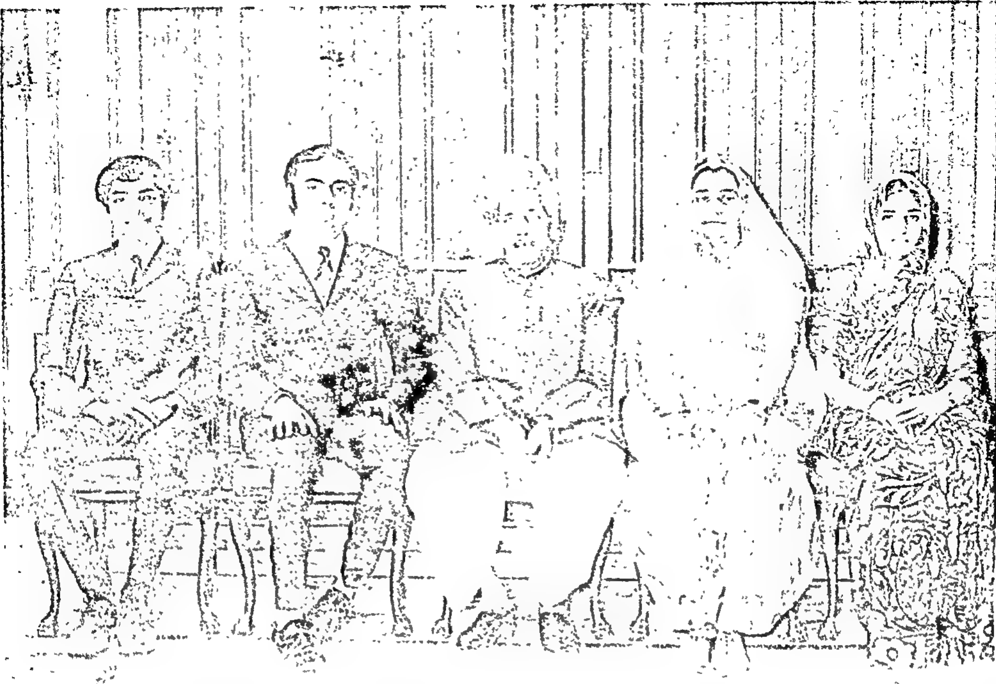


अपनी बैठक में सहज सौम्य मुद्रा में



सेठानीजी श्रीमती तारादेवी बांठिया





परिवार के साथ (बायें से—सुमतिलाल (पुत्र), धीरजलाल (पुत्र), सेठजी, सेठानीजी एवं पुत्रवधू नलिनी देवी)





तृतीय पुत्री सुधा व कंवरसा सुरेशकुमारजी सिरोहिया का फोटो विलम्ब से मिलने के कारण यहाँ दिया जा रहा है।



तीन पीढ़ियों के साथ



छोटे पौत्र आदर्श के साथ—प्रसन्नमुद्रा में



वड़े पौत्र आशीष के साथ—दिवाह समारोह में

[illegible]



[illegible]

परिवार के सदस्यों के आग्रह पर आयोजित 85वीं वर्षगांठ का दृश्य



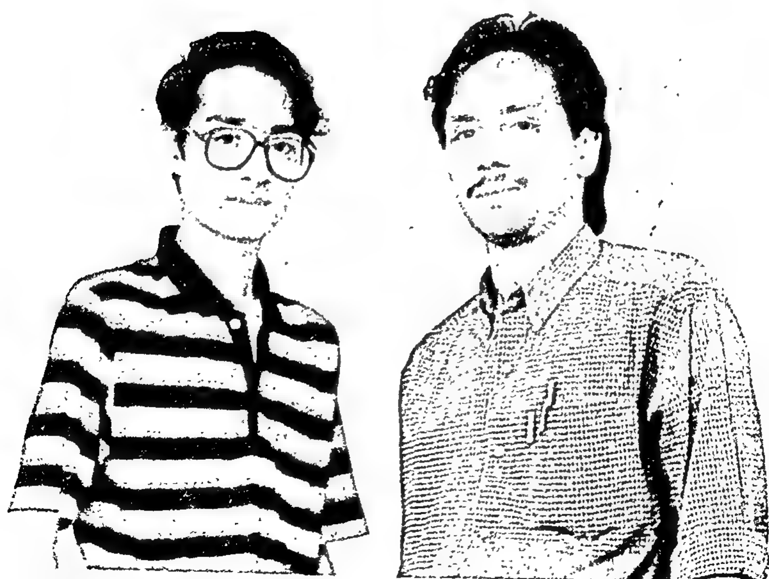
85वीं वर्षगांठ पर मित्रों व सम्बन्धियों के साथ
वायें से—देवचन्दजी सेठिया, माणकचन्दजी रामपुरिया व रामलालजी बांठिया

दाहिने से—पौत्री ?गीता, पौत्र आलोक, पुत्रवधू नलिनी देवी (आत्मजा श्रीमान् ?लालचन्दजी गोधा, अहमदाबाद), पुत्र ?शीतलप्रसाद, बड़ी पौत्री ?सरोज, पौत्री जंवाई संजयकुमार जी गदिया एवं पड़पौत्री स्वीटी





द्वितीय पुत्री सबर, कंवरसा सम्पतमलजी चोरड़िया (आत्मज पद्मश्री मोहनमल सा. चोरड़िया, मद्रास) के साथ बैठे हुए तथा पीछे हैं—दौहित्र गम्भीर, दौहित्री चन्द्रकला, दौहित्री जंवाई धर्मेन्द्रजी टाक (आत्मज श्रीमान् दुलीचन्दजी टाक, जयपुर) तथा ज्येष्ठ दौहित्र पन्नालाल



तृतीय पुत्री सुधा एवं कंवरसा सुरेशकुमार जी सिरोहिया (आत्मज श्रीमान् मोहनलालजी सिरोहिया) का फोटो अनुपलब्ध होने से दौहित्र मनीष व महीप सिरोहिया

[illegible] पुत्र [illegible], पौत्र आदर्श एवं [illegible] ([illegible])



[illegible]

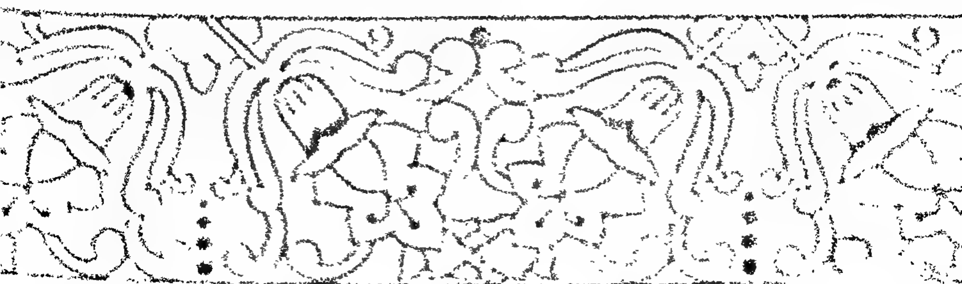


पंचम पुत्री सुमन, कंवरसा सुरेन्द्रकुमार जी भूतोड़िया (आत्मज श्रीमान् बहादुरसिंहजी भूतोड़िया, बर्दवान), दौहित्र मयंक एवं दौहित्री स्नेहा के साथ



षष्टम् पुत्री सरिता, कँवरसा सुरेशकुमार जी चोरड़िया (आत्मज श्रीमान् सम्पतरायजी चोरड़िया, मद्रास) दौहित्र चिराग एवं दौहित्री पूजा के साथ

संस्मरणों से झांकता व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व



स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया है तो अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा। श्री बांठियाजी अपनी सानी के बेजोड़ व्यक्ति थे।

गंगाशहर-भीनासर दो गांवों का एक संघ, दो गांवों को एकत्व में पिरोने वाला धर्म स्थान (बांठिया पौषध शाला) जवाहर विद्यापीठ, बांठियां जी की विचक्षणता एवं दूरदर्शिता का ज्वलन्त उदाहरण है। वे जोड़ने की अद्‌भुत कला में दक्ष थे। उन्होंने संघ अभ्युदय में जो योगदान दिया है वह अविस्मरणीय होने के साथ जन-जीवन में प्रकाश स्तम्भ का कार्य करने वाला है। □

प्रगतिशील चिन्तन के पक्षधर

— उपाध्याय अमरमुनि —

समग्र विश्व के प्राणियों में मनुष्य का जीवन-तत्त्व महान एवं महत्तर है। यह जीवन-तत्त्व केवल नासिका द्वारा प्राणवायु के गमनागमन के आधार पर ही स्थित नहीं है। उसका मूलाधार एक और है, जो विशिष्ट पुण्यशाली आत्माओं को ही प्राप्त होता है।

श्री चंपालालजी बांठिया का जीवन उक्त दृष्टि से ही एक महत्तर जीवन रहा है। उनका भौतिक जीवन तो जैसा कि प्रायः धनिक-वर्ग में होता है, वह तो था ही। मैं उस जीवन-तत्त्व की बात कर रहा हूं, जो उनका जीवन व्यष्टि की सीमा से आगे बढ़कर विशाल सामाजिक समष्टि की ओर प्रवाहित रहा है। सामाजिक क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कार्य उनके युगानुरूप उदात्त व्यक्तित्व को सूचित करते हैं।

श्री चम्पालालजी प्रगतिशील चिन्तन के पक्षधर थे। उनका चिन्तन रूढ़िवाद से मुक्त, यथार्थ सत्य से युक्त, युक्ति-युक्त एवं तर्कसंगत ही नहीं, जीवन्त भी बना रहा। प्रायः ऐसा होता है कि वृद्धावस्था की ओर ढलती आयु में शरीर की शिथिलता के साथ चिन्तन भी शिथिल होता जाता है। किन्तु श्री बांठियाजी का चिन्तन अधिकाधिक प्राणवान् एवं प्रगतिशील ही होता रहा।

मुझे प्रसन्नता है, उनके कर्त्तव्यशील व्यक्तित्व की स्मृति रूप यह प्रकाशन वर्तमान एवं भावी प्रजा के लिए प्रेरणाप्रद एवं स्फूर्तिदायक प्रमाणित होगा।

—वीरायतन राजगिर (बिहार)
पिन ८०३११६



आशिर्वचनम्

आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी म.सा.

[illegible]

स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया है तो अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा। श्री बांठियाजी अपनी सानी के बेजोड़ व्यक्ति थे।

गंगाशहर-भीनासर दो गांवों का एक संघ, दो गांवों को एकत्व में पिरोने वाला धर्म स्थान (बांठिया पौषध शाला) जवाहर विद्यापीठ, बांठियां जी की विचक्षणता एवं दूरदर्शिता का ज्वलन्त उदाहरण है। वे जोड़ने की अद्‌भुत कला में दक्ष थे। उन्होंने संघ अभ्युदय में जो योगदान दिया है वह अविस्मरणीय होने के साथ जन-जीवन में प्रकाश स्तम्भ का कार्य करने वाला है। □

प्रगतिशील चिन्तन के पक्षधर

— उपाध्याय अमरमुनि —

समग्र विश्व के प्राणियों में मनुष्य का जीवन-तत्त्व महान एवं महत्तर है। यह जीवन-तत्त्व केवल नासिका द्वारा प्राणवायु के गमनागमन के आधार पर ही स्थित नहीं है। उसका मूलाधार एक और है, जो विशिष्ट पुण्यशाली आत्माओं को ही प्राप्त होता है।

श्री चंपालालजी बांठिया का जीवन उक्त दृष्टि से ही एक महत्तर जीवन रहा है। उनका भौतिक जीवन तो जैसा कि प्रायः धनिक-वर्ग में होता है, वह तो था ही। मैं उस जीवन-तत्त्व की बात कर रहा हूं, जो उनका जीवन व्यष्टि की सीमा से आगे बढ़कर विशाल सामाजिक समष्टि की ओर प्रवाहित रहा है। सामाजिक क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कार्य उनके युगानुरूप उदात्त व्यक्तित्व को सूचित करते हैं।

श्री चम्पालालजी प्रगतिशील चिन्तन के पक्षधर थे। उनका चिन्तन रूढ़िवाद से मुक्त, यथार्थ सत्य से युक्त, युक्ति-युक्त एवं तर्कसंगत ही नहीं, जीवन्त भी बना रहा। प्रायः ऐसा होता है कि वृद्धावस्था की ओर ढलती आयु में शरीर की शिथिलता के साथ चिन्तन भी शिथिल होता जाता है। किन्तु श्री बांठियाजी का चिन्तन अधिकाधिक प्राणवान् एवं प्रगतिशील ही होता रहा।

मुझे प्रसन्नता है, उनके कर्त्तव्यशील व्यक्तित्व की स्मृति रूप यह प्रकाशन वर्तमान एवं भावी प्रजा के लिए प्रेरणाप्रद एवं स्फूर्तिदायक प्रमाणित होगा।

—वीरायतन राजगिर (बिहार)
पिन ८०३११६



आशिर्वचनम्

— आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी म.सा. —

भगवान महावीर ने दो प्रकार के विभाग धर्म के कहे हैं। अणगार धर्म और आगार धर्म। अणगार धर्म श्रमण के लिए है और आगार धर्म श्रावक के लिए है।

गृहस्थावस्था में रहते हुए भी व्यक्ति धर्माचरण कर सकता है। अपनी आत्मा को समुन्नत बना सकता है। पाप की दीवार को ढ़हा सकता है।

श्रावक शब्द तीन अक्षरों से निष्पन्न हुआ है। श्र यानी श्रद्धावान। व अर्थात् विवेकवान। क अर्थात् क्रियावान।

ये तीनों गुण जिसमें सम्मिलित रूप से पाये जाए वही सच्चा श्रावक है।

सुश्रावक श्री चम्पालालजी बांठिया में ये तीनों गुण समाहित थे। उनको नजदीक से देखने का मौका भी मुझे प्राप्त हुआ था।

वे एक पारखी थे। रत्नों की सही परीक्षा करने में निष्णात थे। रत्न का मतलब यहां व्यक्ति से है।

श्रद्धा उनके भीतर लबालब भरी थी। शास्त्र के छोटे-छोटे थोकड़ों का प्रकाशन श्रुत श्रद्धा का परिचायक है। 'सुविसद्धा' का सूत्र उनके जीवन में खून के प्रत्येक कतरे में संचारित था।

विवेक का तो कहना ही क्या ? कम बोलना उनका खास गुण था। श्रमण संघ के निर्माण में विशेष योगदान सेठजी का रहा था।

क्रिया के वे धनी थे। संयमित आचार और विचार की भूमिका में हमेशा संतुलित रहते थे।

सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया की स्मृति में स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है, यह एक स्तुत्य एवं प्रशंसनीय कदम है। आशा है विद्वत्जन और पाठक लाभान्वित होंगे। इसी आशा के साथ।

विशेष—आचार्यश्री का दिनांक २८ मार्च ९२ को सायं स्वर्गवास हो गया था। उसी दिन प्रेषित यह आशीर्वाद संभवतः उनकी अन्तिम वचनिका है। इसे प्राप्त कर हम गौरवान्वित हैं। —सम्पादक



जीवन्त और प्रेरक व्यक्तित्व

— आचार्य चन्दना —

श्रीयुत चम्पालालजी बांठिया अपने नाम के अनुरूप 'चम्पा' के समान सुरभित थे एवं साथ ही 'लाल' के समान ज्योतिर्मय भी। उनको जो ठीक लगता था, उसे सहज स्वीकार करने एवं कहने में उन्हें कोई संकोच नहीं होता था। उनका उदात्त मन मंगलमय चिन्तन से सुरभित था और उनके द्वारा मुखरित होने वाला सत्य धूमिल न होकर ज्योतिर्मय था। रूढ़िवाद के नाम पर असत्य के समक्ष उनका मन मस्तिष्क कभी झुका नहीं। बीकानेर, रतनगढ़ तथा निकटवर्ती अपरिचित प्रदेश में विचरण एवं चातुर्मास करते हुए हम दूर प्रदेश की, अनजान साध्वियों की उन्होंने और उनकी धर्मनिष्ठ धर्मपत्नी श्रीमती तारावाई ने निष्ठा के साथ जो सेवा की है, वह आज भी स्मृतिपटल पर ज्यों की त्यों अंकित है। सत्कर्म और सत्कर्म के कर्ता क्षणभंगुर काल के प्रवाह में कभी क्षणभंगुर नहीं होते। वे विचारशील जगत में युगानुयुग जीवन्त रहते हैं।

उपर्युक्त शब्दों में जो कुछ कहा गया है, उसका मूल भावार्थ यह है कि श्री बांठियाजी युग-युगान्तर तक जीवन्त रहेंगे और उनके महान् समाजनिष्ठ कर्त्तव्यों द्वारा जन-जन को सत्कर्म की दिव्य प्रेरणा मिलती रहेगी।

यह स्मृति प्रकाशन इसी दिशा में समय-समय पर अपना दिव्य प्रकाश विकीर्ण करता रहेगा और अपने परिवार, समाज एवं राष्ट्र को समयोचित कर्त्तव्य-बोध हेतु दिशा-सूचन करता रहेगा। □

(संकलित) महासती सुमति कुंवर

वीरायतन, राजगिर (विहार)



समन्वय की अनूठी मिसाल

— मुनि श्री कन्हैयालाल जी —

मानव-जीवन के निर्माण में विचार एवं आचार का महत्व प्रत्यक्ष से है। विचार-शुद्धि आचार-शुद्धि का मूल है। हमारे विचारों में यदि पवित्रता रहेगी—विचारों में विशुद्धि होगी तो उसका प्रभाव आचार पर जरूर पड़ेगा। विचार यदि बीज है तो आचार उसका फल। जीवन में विचारों की उज्ज्वलता अति आवश्यक है, अगर विचारों में अपवित्रता होगी तो आचार पवित्र नहीं रह सकता। विचार और आचार, ज्ञान और व्यवहार जैसा होगा, उसी के अनुरूप जीवन बन जायेगा।

अकेला ज्ञान अथवा अकेली क्रिया से कुछ भी होने का नहीं। जीवन-रथ एकांगी अग्रसर नहीं हो सकता। ज्ञान तथा क्रिया पृथक्-पृथक् वस्तुएं हैं। दोनों का सामंजस्य जीवन-विकास हेतु अत्यन्त आवश्यक है। रथ के दोनों पहिए तभी सरपट दौड़ेंगे, जब उनमें एकरूपता तथा संतुलन होगा। एक पहिया छोटा—दूसरा पहिया बड़ा तो प्रगति ऊबड़-खाबड़ रहेगी और रथ सुचारु रूपेण अग्रणी नहीं हो सकेगा। वही रथ जिसके दोनों पहियों में समकक्षता होगी, निरन्तर सक्रिय-सफल होगा।

स्वर्गीय श्री चम्पालालजी बांठिया (भीनासर) स्थानकवासी समाज के एक विशिष्ट एवं प्रमुख श्रावक माने जाते थे। सारे बीकानेर चौखले में वे प्रतिष्ठित नागरिकों की कोटि में थे। बांठिया जी आचार और विचार के धनी थे।

वि.सं. २०१५ में अणुव्रत-अनुशास्ता के विद्वान शिष्य मुनि श्री नगराजजी का चातुर्मास गंगाशहर था। मुनिश्री के अपूर्व प्रयास से वहाँ पर अनेकों सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित हुए। स्थानकवासी समाज के सन्तों के चातुर्मास प्रायः बांठियाजी के हॉल में (भीनासर) होते थे। लेकिन इस वर्ष हॉल में किसी का भी चातुर्मास नहीं था। मुनि श्री का चातुर्मास सफलतापूर्वक सम्पन्न हो ही रहा था।

अचानक एक कार्यक्रम की आयोजना हुई जिसे कल्पनातीत कह सकते हैं। मैं (मुनि कन्हैया) एक दिन बांठियाजी के घर पर भिक्षा हेतु गया। वार्तालाप के प्रसंग में मैंने कहा —चातुर्मास सम्पन्न होने वाला है, क्षमा-याचना दिवस का सामूहिक कार्यक्रम होना चाहिए। जिससे अन्य समाज पर अच्छा प्रभाव पड़े।



बांठियाजी सहर्ष बोले—मुनिश्री! यह कार्यक्रम मेरे हॉल में होना चाहिए। सामूहिक आयोजना से समन्वय का वातावरण बनेगा। सामूहिक क्षमा-याचना से मानसिक-तनाव में कमी आयेगी।

परस्पर चिन्तन चला। मनन हुआ। समाज-भूषण श्री छोगमलजी चौपड़ा ने मुनि श्री गणेशमलजी को निवेदन की भाषा में कहा—मुनिश्री! बांठियाजी की भावना बहुत ही सुन्दर है। ऐसी प्रशस्त भावना का आदर होना चाहिए। कार्यक्रम बांठियाजी के हॉल में अवश्य ही रखें। तेरापंथ धर्म-संघ के साधु-साध्वियों का प्रवचन इस हॉल में कभी नहीं हुआ।

आखिर मुनि श्री गणेशमलजी (गंगाशहर) के सान्निध्य में बांठियाजी के भव्य हॉल में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ। दोनों ही सम्प्रदाय के लोगों से हॉल खचाखच भरा था। तेरापंथ धर्म-संघ की ओर से समाज-भूषण श्रीमान् छोगमलजी चौपड़ा ने अपने विचार रखते हुए साधार्मिक भाई-बहिनों से क्षमा-याचना की।

स्थानकवासी सम्प्रदाय की ओर चम्पालालजी बांठिया ने सामूहिक क्षमा-याचना करते हुए मुनिश्री के प्रति आभार प्रदर्शित किया। मुनिश्री के समन्वय पर प्रवचन का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इस कार्यक्रम की सर्वत्र बहुत ही अच्छी प्रतिक्रिया हुई।□



गुरुभक्त श्री चम्पालालजी बांठिया

— (तपस्वीरत्न श्री मगनमुनिजी म.सा., अहमदनगर) —

श्रीयुत् चम्पालालजी बांठिया स्थानकवासी जैन-समाज के एक लब्धप्रतिष्ठ एवं विचक्षण श्रावक थे। धनाढ्य होने के साथ-साथ वे सामाजिक कार्यों में भी भाग लेते थे। वि. संवत् १९९८ में ज्योतिर्धर महामहिम जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज आपकी विनती को मानकर भीनासर में बांठिया हॉल में विराजे थे। उस समय मैं तथा पं. श्री मल्लजी महाराज आदि संत उनकी सेवा में थे। पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज रुग्णावस्था के कारण भीनासर ही विराज रहे थे। उस समय मैंने देखा है कि आप आचार्य श्री की सेवा में कितनी लगन से, कितने अहोभाव से तत्पर रहते थे। आचार्यश्री की सेवा आपका एक नियम बन गया था। समय-समय पर सुप्रसिद्ध डॉक्टरों, वैद्यों आदि को लाकर वे आचार्यश्री के शारीरिक स्वास्थ्य की जांच करवाते रहते थे और उन्हें उत्तम से उत्तम दवा देने और श्रेष्ठ चिकित्सा करने को खासतौर से निर्देश करते रहते थे। कभी-कभी आचार्यश्री की बीमारी की वृद्धि होने का संदेश उन्हें रात्रि को किसी भी समय मिलता तो वे फौरन उपस्थित होते थे और यथायोग्य नैसर्गिक उपचार आदि कराते थे। अपने विनम्र, कोमल और विचक्षण स्वभाव से वे हम सभी संतों से बार-बार आग्रहपूर्वक सेवा के लिए तथा आचार्य श्री के स्वास्थ्य के विषय में पूछा करते थे। कहना होगा कि वे आचार्यश्री को जिस भावना से विनती करके भीनासर अपने यहाँ लाए थे, उसी उत्कृष्ट भावना से उन्होंने अन्त तक उनकी सेवा की।

आषाढ़ सुदी ८ को पूज्य आचार्यश्री (स्वर्गवास के दिन) लगभग १२ बजे अचानक बेहोश हो गए थे। यद्यपि संथारे की भावना तो उन्होने पहले से ही व्यक्त की थी, परन्तु हम सब संतों तथा बांठियाजी आदि श्रावकों ने उनसे प्रार्थना की—'गुरुदेव! अभी संथारे का समय नहीं आया है। यथावसर संथारा कराने की हमारी भावना है।' आज जब उनके संथारे का अवसर आया तो वे होश में नहीं रहे। मैंने इस समस्या को बहुत गंभीरता से लिया और अपनी समस्या बांठियाजी के सामने रखी। उन्होंने तुरन्त स्थानीय बड़े डॉक्टर से मिलकर होश में लाने की दवा दिलाई। परिणामस्वरूप वे शीघ्र ही होश में आए। उस समय तत्कालीन युवाचार्य पूज्यश्री गणेशीलालजी महाराज पं. श्री मल्लजी महाराज तथा मैंने पूज्यश्री से संथारे के लिये पूछा तो उन्होंने सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी। साथ ही श्री बांठियाजी आदि गंगाशहर-भीनासर के अग्रगण्य श्रावकों से



बांठियाजी सहर्ष बोले—मुनिश्री! यह कार्यक्रम मेरे हॉल में होना चाहिए। सामूहिक आयोजना से समन्वय का वातावरण वनेगा। सामूहिक क्षमा-याचना से मानसिक-तनाव में कमी आयेगी।

परस्पर चिन्तन चला। मनन हुआ। समाज-भूषण श्री छोगमलजी चौपड़ा ने मुनि श्री गणेशमलजी को निवेदन की भाषा में कहा—मुनिश्री! वांठियाजी की भावना बहुत ही सुन्दर है। ऐसी प्रशस्त भावना का आदर होना चाहिए। कार्यक्रम बांठियाजी के हॉल में अवश्य ही रखें। तेरापंथ धर्म-संघ के साधु-साध्वियों का प्रवचन इस हॉल में कभी नहीं हुआ।

आखिर मुनि श्री गणेशमलजी (गंगाशहर) के सान्निध्य में बांठियाजी के भव्य हॉल में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ। दोनों ही सम्प्रदाय के लोगों से हॉल खचाखच भरा था। तेरापंथ धर्म-संघ की ओर से समाज-भूषण श्रीमान् छोगमलजी चौपड़ा ने अपने विचार रखते हुए साधार्मिक भाई-बहिनों से क्षमा-याचना की।

स्थानकवासी सम्प्रदाय की ओर चम्पालालजी बांठिया ने सामूहिक क्षमा-याचना करते हुए मुनिश्री के प्रति आभार प्रदर्शित किया। मुनिश्री के समन्वय पर प्रवचन का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। इस कार्यक्रम की सर्वत्र बहुत ही अच्छी प्रतिक्रिया हुई।□



गुरुभक्त श्री चम्पालालजी बांठिया

— (तपस्वीरत्न श्री मगनमुनिजी म.सा., अहमदनगर) —

श्रीयुत् चम्पालालजी बांठिया स्थानकवासी जैन-समाज के एक लब्धप्रतिष्ठ एवं विचक्षण श्रावक थे। धनाढ्य होने के साथ-साथ वे सामाजिक कार्यों में भी भाग लेते थे। वि. संवत् १९९८ में ज्योतिर्धर महामहिम जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज आपकी विनती को मानकर भीनासर में बांठिया हॉल में विराजे थे। उस समय मैं तथा पं. श्री मल्लजी महाराज आदि संत उनकी सेवा में थे। पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज रुग्णावस्था के कारण भीनासर ही विराज रहे थे। उस समय मैंने देखा है कि आप आचार्य श्री की सेवा में कितनी लगन से, कितने अहोभाव से तत्पर रहते थे। आचार्यश्री की सेवा आपका एक नियम बन गया था। समय-समय पर सुप्रसिद्ध डॉक्टरों, वैद्यों आदि को लाकर वे आचार्यश्री के शारीरिक स्वास्थ्य की जांच करवाते रहते थे और उन्हें उत्तम से उत्तम दवा देने और श्रेष्ठ चिकित्सा करने को खासतौर से निर्देश करते रहते थे। कभी-कभी आचार्यश्री की बीमारी की वृद्धि होने का संदेश उन्हें रात्रि को किसी भी समय मिलता तो वे फौरन उपस्थित होते थे और यथायोग्य नैसर्गिक उपचार आदि कराते थे। अपने विनम्र, कोमल और विचक्षण स्वभाव से वे हम सभी संतों से बार-बार आग्रहपूर्वक सेवा के लिए तथा आचार्य श्री के स्वास्थ्य के विषय में पूछा करते थे। कहना होगा कि वे आचार्यश्री को जिस भावना से विनती करके भीनासर अपने यहाँ लाए थे, उसी उत्कृष्ट भावना से उन्होंने अन्त तक उनकी सेवा की।

आषाढ़ सुदी ८ को पूज्य आचार्यश्री (स्वर्गवास के दिन) लगभग १२ बजे अचानक बेहोश हो गए थे। यद्यपि संथारे की भावना तो उन्होने पहले से ही व्यक्त की थी, परन्तु हम सब संतों तथा बांठियाजी आदि श्रावकों ने उनसे प्रार्थना की—'गुरुदेव! अभी संथारे का समय नहीं आया है। यथावसर संथारा कराने की हमारी भावना है।' आज जब उनके संथारे का अवसर आया तो वे होश में नहीं रहे। मैंने इस समस्या को बहुत गंभीरता से लिया और अपनी समस्या बांठियाजी के सामने रखी। उन्होंने तुरन्त स्थानीय बड़े डॉक्टर से मिलकर होश में लाने की दवा दिलाई। परिणामस्वरूप वे शीघ्र ही होश में आए। उस समय तत्कालीन युवाचार्य पूज्यश्री गणेशीलालजी महाराज पं. श्री मल्लजी महाराज तथा मैंने पूज्यश्री से संथारे के लिये पूछा तो उन्होंने सहर्ष अपनी स्वीकृति दे दी। साथ ही श्री बांठियाजी आदि गंगाशहर-भीनासर के अग्रगण्य श्रावकों से



पूछा तो उन्होंने भी अपनी स्वीकृति दे दी। अतः पूज्यश्री को संथारा दिलाया गया। लगभग ५ बजे उनका संथारा सीझ गया। यह सब बांठियाजी के प्रयत्न का फल था। पूज्यश्री देवलोक पधार गए। दिवंगत पूज्यश्री के अन्तिम संस्कार का तथा समारोह का समस्त कार्यभार भी बांठियाजी ने अपने पर ले लिया था। उन्होंने बहुत ही उत्साहपूर्वक अपनी ओर से चांदी की वैकुंठी बनवाई थी। उसी में पूज्यश्री के पार्थिव शरीर को विराजमान करवाकर उनकी श्मशानयात्रा निकाली गई थी। पूज्यश्री को अन्तिम विदाई देते समय बांठियाजी की आँखों में अश्रुबिन्दु छलक रहे थे। उनका हृदय भर आया था।

हमें स्मरण है कि पूज्यश्री की स्मृति में उन्होंने जवाहर विद्यापीठ संस्था स्थापित की तथा उनके प्रभावशाली प्रवचनों को जवाहर किरणावली के रूप में प्रकाशित करवाने का उपक्रम किया। इसके लिए उन्होंने जवाहर साहित्य समिति स्थापित की। इस प्रकार श्री चंपालालजी बांठिया ने अपनी गुरुभक्ति का पूर्ण परिचय दिया। □

प्रेषक
वसंतलाल पूनमचंद भंडारी
२५८५, नवा कापड़ बाजार
महात्मा गांधी रोड़,
अहमदनगर-४१४००१ (महाराष्ट्र)



बेजोड़ वर्चस्व के धनी

स्थविर प्रमुख श्री शान्तिलालजी म. सा. के दिनांक १४-४-६४ के भीनासर के प्रवचन से साभार

बंधुओं! हमारा साधुमार्गी जैन संघ एक गौरवशाली संघ रहा है। उस में भी 'दादा गुरु का धाम' कहलाने वाली इस गंगाशहर-भीनासर की पुण्यधरा ने धर्म-प्रभावना में काफी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आपके ही क्षेत्र में ऐसे-ऐसे प्रभावशाली एवं आदर्श श्रावक हुए हैं, जिनका संघ के संगठन में बहुत बड़ा हाथ रहा है।

ऐसे ही एक श्रावक थे कानीरामजी बांठिया। हमने तो उनको नहीं देखा, मगर चंपालालजी बांठिया को हमने देखा है। वे भी अपने ढंग के बड़े दबंग-बड़े ही मक्कम श्रावक थे। उनकी रूह-रूह में आचार्य श्री जवाहराचार्यजी के प्रति श्रद्धा समाई हुई थी। मैं आपसे पूछ लूँ कि यह सारा जवाहर संस्थान किस व्यक्तित्व की देन है? यह जवाहर साहित्य का प्रकाशन! जवाहर-किरणावलियों का इस रूप में निकलना! आज तो पूज्य ज्योतिर्धर जवाहराचार्यजी के साहित्य का काफी प्रचार-प्रसार हो रहा है, किन्तु उसकी नींव किसने रखी? आप सभी उस धर्मनिष्ठ व्यक्तित्व से परिचित हैं।

कल हम उस कमरे में गए, जहाँ जवाहर किरणावलियाँ रखी हुई हैं। यह सब काम किसका है? चम्पालालजी बांठिया के सतत परिश्रम-लगन का यह फल है।

बन्धुओं! रचनात्मक कार्यों में जो आगे आता है, उसी का नाम होता है। आज सब सोचते हैं कि हम काम तो कुछ करें नहीं, और नाम हो जाये। अरे! नाम की कामना मत रखो, काम करो तो नाम खुद-ब-खुद हो जायेगा! चंपालालजी बांठिया बड़े जीवट के साथ संघ और सम्प्रदाय की उन्नति में जुटे। अपने समय में वे धर्म के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। इसीलिए उस समय में इस संघ की इतनी जाहोजलाली हुई। ऐसे-ऐसे धर्म-निष्ठ और श्रद्धा सम्पन्न दबंग श्रावकों से ही संघ में निखार आता है।

अपने समय में चम्पालालजी बांठिया पूज्य जवाहराचार्य के प्रति पूर्ण समर्पित थे। उन्होंने बड़े जीवट के साथ संघ की सेवा की। संघ की उन्नति में सर्वतोभावेन योगदान दिया। आज जगह-जगह जवाहर-किरणावलियों का नाम निरूपित होता है। मैं दिल्ली गया वहाँ कान्फ्रेंस जैन भवन में लेडी हार्डिंग रोड पर मैं ठहरा। वहाँ कार्यालय में अनेक गणमान्य श्रावकों के साथ चम्पालालजी बांठिया का भी फोटो लगा है। वे एक बेजोड़ वर्चस्व रखते थे, उनके व्यक्तित्व की एक अलग ही प्रभावात्मकता थी। आज ऐसे दबंग और जीवट वाले श्रावकों की बहुत आवश्यकता है। ☐

प्रस्तोता—कमलचन्द लूणिया, बीकानेर



सोने में सुगन्ध—बांठियाजी

स्थविर प्रमुख श्री प्रेमचन्दजी म.सा. के दिनांक १४-४-९४ को प्रासंगिक वक्तव्य से साभार

स्वर्गीय, सेवा समर्पित श्रद्धेय श्री बख्तावरमलजी म.सा. (बाबाजी म.सा.) एवं उत्कृष्ट आचार परिपालक, आत्मार्थी, निर्ग्रन्थ श्रमण परम श्रद्धेय श्री करणीदानजी म.सा. की चरण सन्निधि में श्रेष्ठीवर्य श्री चम्पालालजी बांठिया का निकटतम सम्पर्क, सत् समागम के रूप में होता रहा। यद्यपि बांठियाजी की अनन्य भक्ति वैयक्तिक रूप में आचार्यश्री जवाहर से संबद्ध रही है तथापि उनकी यह श्रद्धा अनन्यता के बावजूद भी अन्ध श्रद्धा नहीं थी। बांठियाजी के विचारों में विवेक समन्वित सतर्कता और सजगता सदैव परिलक्षित होती रही।

स्थानांग सूत्र में श्रावक को भाई, मित्र और पताका की उपमा से उपमित किया गया है। बांठियाजी स्व. श्रीमद् जवाहर के साथ तीनों रूपों में जुड़े रहे। उस युग के साधुओं में जहाँ स्व. श्रीमद् जवाहराचार्य परम प्रभावक, युग प्रधान आचार्यों की शृंखला में एक महत्त्वपूर्ण प्रतिभा और व्यक्तित्व के रूप में उभर रहे थे, वहाँ यदि आचार्य श्री जवाहर के व्यक्तित्व को सोना कहा जाये तो बांठियाजी को उसमें सुगन्ध पैदा करने वाला माना जाना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा। संघ के सुन्दर सृजन के लिए श्रावक और साधु के बीच सापेक्षता के सम्बन्ध को नकारा नहीं जा सकता तथा आत्म समाधि के सन्दर्भ में निरपेक्षता की अनिवार्यता को भी नहीं नकारा जा सकता। सापेक्षता से सृजन होता है और निरपेक्षता में विसर्जन या ऊर्ध्वारोहण होता है। श्रीमज्जवाहराचार्यजी के व्यक्तित्व की उपलब्धि से बांठियाजी की दूरदर्शिता ने जवाहर साहित्य की संरचना-संग्रह-रूप जो सृजन किया है, वह संस्कार-क्रान्ति के अभियान में एक अनुपम कीर्तिमान के रूप में प्रतिष्ठित है; जिसमें साहित्य मनोरंजकता के साथ ही आचरण की ललक छिपी हुई है और इससे ठीक विपरीत श्रीमज्जवाहराचार्य प्रचार-प्रसार एवं प्रतिष्ठा के धरातल से ऊपर उठकर निरपेक्ष निस्पृहता के आदर्श रहे हैं। इन दोनों गुरु शिष्यों का सम्बन्ध 'सोने में सुगन्ध' की कहावत को चरितार्थ कर रहा है।

विज्ञ पुरुषों ने शिष्य के विविध प्रकारों का उल्लेख करते हुए मुख्य रूप से तीन प्रकार के शिष्य कहे हैं—पहला शिष्य गुरु प्रदत्त ज्ञान को यथावत् रखता है, दूसरा बढ़ाता है और तीसरा नष्ट कर देता है। इनमें दूसरे नम्बर का शिष्य योग्य और प्रभावी



माना जाता है। श्री बांठियाजी ने अपने गुरु के ज्ञान की वसीयत को चौगुना कर चतुर्मुखी दिशाओं में प्रचारित-प्रसारित करने का श्रेय हस्तगत कर आगम के पताका विशेषण को सार्थक किया है। एक विजेता राज्याध्यक्ष की ध्वजा-पताका चारों दिशाओं में घूमकर उसकी यश-दुन्दुभि बजाती है, उसी प्रकार श्रीमज्जवाहराचार्य की यश-दुन्दुभि से श्रीयुत् बांठियाजी ने लोकाकाश की रिक्तता को दूर करके उसे समृद्धि से सजाया।

लोक में प्रचलित है—गुरु भोर-भोर-शिष्य ठौर-ठौर अर्थात् गुरु तो प्रातः स्मरणीय होता है, जबकि शिष्य अपनी गुरु भक्ति और शासन-प्रभावना के कृत्यों द्वारा क्षण-क्षण याद किया जाता है। इसी रूप में स्व. श्रीमज्जवाहराचार्यजी की यश पताकाओं को अपने सराहनीय सुकृत्यों द्वारा सम्पूर्ण लोकाकाश में फहराकार श्रीयुत् बांठियाजी ने सोने में सुगन्ध भर कर श्री संघ को जवाहर साहित्य की अमूल्य निधि दी है। इस अविस्मरणीय सेवा हेतु संघ उनका चिर ऋणी रहेगा। □

प्रस्तोता—कमलचन्द लूणिया, बीकानेर



जवाहराचार्य के साथ बांठियाजी का नाम अमर रहेगा

— शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनि म.सा. —

ठाणांग सूत्र में श्रावकों की चार कोटियां बताई हैं।

चतारि समणोवासगा पण्णता, तंजहा—

(१) अम्मापिउ समाणा

(२) भाउ समाणा

(३) मित समाणा

(४) सवत्ति समाणा

अर्थात् श्रमणोपासक श्रावक चार प्रकार के होते हैं। यथा (१) माता-पिता के समान (२) भ्राता के समान (३) मित्र के समान (४) सौत के समान।

प्रकारान्तर से चार प्रकार के अन्य श्रावक फिर बताए हैं—

(१) अद्दाग समाणे

(२) पडाग समाणे

(३) खाणु समाणे

(४) खरकंट समाणे

अर्थात् (१) आदर्श कांच के समान

(२) पताका के समान

(३) कील के समान

(४) तीक्ष्ण कांटे के समान

उपरोक्त आठ प्रकार के भेदों में श्रावक श्रेष्ठ श्री चम्पालालजी बांठिया ने माता, पिता, मित्र एवं आदर्श श्रावक की भूमिका अत्यन्त कुशलता के साथ निभाई।

युग द्रष्टा ज्योतिर्धर पूज्य श्रीमद् जवाहराचार्य ने जैन जगत में व्याप्त बद्धमूल भ्रान्त धारणाओं के निरसन हेतु एक व्यापक आन्दोलन चलाया। उस आन्दोलन को व्यवस्थित गति देने एवं जवाहराचार्य के क्रांतिकारी विचारों को जन-जन तक पहुँचाने में श्री बांठियाजी ने भागीरथी का कार्य किया।



श्री बांठियाजी जवाहराचार्य की भावनानुसार कार्य करने वाले थे, इसीलिए सही माने में वे शास्त्र की 'इंगियागारे सम्पन्ने' की उक्ति को चरितार्थ करने वाले सच्चे शिष्य थे।

जवाहराचार्य क्रान्तिदर्शी पुरुष थे। ऐसे क्रान्तिकारी आचार्य इतिहास में कभी-कभी युगों-युगों के बाद होते हैं। उस अमर व्यक्तित्व के साथ जुड़कर श्री बांठियाजी ने भी अपना नाम अमर कर दिया। राम के साथ जैसे हनुमान का नाम है वैसे ही जवाहर के साथ चम्पालालजी का नाम रहेगा।

जवाहराचार्य को बांठियाजी जैसे भक्त रत्न मिले और श्री बांठियाजी को जवाहराचार्य जैसे गुरु मिले यह दोनों के लिए परस्पर गौरव की बात थी।

गुरुभक्ति का जो अखण्ड दीप श्री बांठियाजी ने प्रज्वलित किया उसे प्रज्वलित बनाए रखने एवं उस दीप में तेल भरने का कार्य उनकी धर्मपत्नी श्राविकारत्न श्रीमती ताराबाई एवं उनके पुत्र रत्नों का है। आशा है वे इसे अत्यन्त निष्ठा के साथ पूरा करेंगे।□

(भावाभिव्यक्ति संकलित)—श्री नेमचन्द जैन

अग्रसेन भवन, श्री गंगानगर (राज.)



बहुमुखी प्रतिमा के धनी

—स्वामी विष्णुशरणानन्द सरस्वती —

बीकानेर के श्रेष्ठी समाज में प्रातःस्मरणीय श्री चम्पालाल बांठिया का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा की दृष्टि से बीकानेर किसी समय एक पिछड़ा हुआ राज्य माना जाता था। जिसमें रतनगढ़ और चूरू जिले भी सम्मिलित थे। परन्तु वहाँ के कुशाग्रबुद्धि निवासियों ने यह सिद्ध कर दिखाया कि धनोपार्जन विद्या का तथाकथित शिक्षा से विशेष सम्वन्ध नहीं। बीकानेर की मरुभूमि में क्षमताओं का अभाव देख कर वहां के क्षमतावान, कर्मठ तथा श्रमशील लोग कलकत्ता, बम्बई, मद्रास और मध्यप्रदेश आदि देश के सम्पन्न भागों में जाकर उद्योग-व्यापार द्वारा अपनी समृद्धि को बढ़ाने में संलग्न हो गये। कालान्तर में भूतपूर्व महाराजा श्री गंगासिंह जी के प्रयासों से राज्य में शिक्षा का प्रचार एवं उच्च शिक्षा भी पूर्णतया विकसित होने लगी। फलस्वरूप वर्तमान में बीकानेर में कला, विज्ञान एवं तकनीकी सभी प्रकार की उच्च शिक्षण संस्थाएं प्रचुरता से उपलब्ध हैं।

श्री चम्पालाल वांठिया उपर्वर्णित व्यापारी वर्ग में अग्रणी थे। उन्होंने सामान्य व्यवहारिक शिक्षा के आधार पर ही कलकत्ता जाकर अपनी उद्योग-व्यापार संबंधी क्षमताओं को विकसित करके कार्य कुशलता और धनोपार्जन कला का चमत्कार दिखाया। धनोपार्जन द्वारा समुन्नत भौतिक समृद्धियों के साथ आपका शिक्षा प्रेम, कला प्रेम तथा समाज सेवा की भावनाएं भी प्रकाश में आती गई। फलस्वरूप आपने अपने निवास स्थान भीनासर में उच्च कोटि स्थापत्य का नमूना प्रदर्शित करने वाली हवेली 'वांठिया भवन' का निर्माण किया जो निर्माता की कुशाग्र बुद्धि, सूझबूझ एवं कलात्मक अभिरुचि की द्योतक है। आज भी दूर-दूर से बीकानेर आने वाले कला प्रेमी अतिथिगण उनकी हवेली के स्थापत्य से प्रभावित हुए भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।

स्वयं को उच्च शिक्षा प्राप्ति का अवसर न मिलने पर भी श्री बांठियाजी ने नये युग में शिक्षा की महत्ता को हृदयंगम करते हुए अपनी सन्तान को पूर्णरूपेण शिक्षित बना कर व्यापार तथा सामाजिक धन्धों में लगाया एवं समाज सेवा हेतु भीनासर में छात्र छात्राओं के लिए अलग-अलग शालाएं तथा पुस्तकालय-वाचनालय स्थापित किये। जैन जवाहर विद्यापीठ की स्थापना उनकी सार्वजनिक सेवाओं का सुन्दर परिचायक है—जिसके तत्वावधान में उनकी विदुषी, समाज सेवा सहयोगिनी धर्मपत्नी श्रीमती ताराकुमारी बांठिया ने महिला सिलाई बुनाई केन्द्र भी स्थापित कर दिया है।



श्रमपूर्वक उपार्जित धन का सदुपयोग करते हुए श्री बांठियाजी ने न केवल निजी परिवार को शिक्षा -संस्कृति से सुसम्पन्न बनाया तथा शिक्षण संस्थाओं की स्थापना द्वारा भीनासर में समाज के लिए शिक्षण सुविधाएँ उपस्थित कीं, बल्कि धार्मिक कृत्यों में भी प्रचुरता से व्यय करके धार्मिक ट्रस्ट की स्थापना एवं समय-समय पर साधु सम्मेलन आदि आयोजित करके अपनी धार्मिक अभिरुचि का परिचय देते हुए नगरवासियों में धार्मिक कृत्यों के प्रति भावना जागृत की। परिणामतः बांठियाजी द्वारा लगाए हुए समाज सेवा रूपी पौधे भावी पीढ़ियों द्वारा सिंचित होते हुए स्थायी वृक्षों का रूप धारण कर सकेंगे।

वस्तुतः व्यक्तिगत रूप से बांठियाजी के परिवार से मेरा सम्पर्क उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ताराकुमारी बांठिया के माध्यम से हुआ था। सामान्य शिक्षिता होते हुए भी उनके हृदय में स्त्री शिक्षा प्रेम और समाज सेवा के भाव प्रारम्भ से ही प्रकाशित होते रहे हैं। लगभग १९५० से वह मेरे साथ महिला जागृति परिषद के संचालन में सक्रिय सहयोग देती रही हैं। दीर्घ काल तक आप बीकानेर की उपर्युक्त प्रमुख प्रौढ़ महिला शिक्षण संस्था की कोषाध्यक्षा और अध्यक्षा रही। विशेष महिला सम्मेलनों में श्रीमती बांठिया सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु ओजस्वी स्वर में उद्‌बोधन करती थी कि 'पर्दा स्त्रियों के व्यक्तित्व को दबाने वाला अभिशाप है। अतः पर्दा छोड़ने का संकल्प लेकर आगे आओ।' गत कई वर्षों तक आपने महिला मण्डल का अध्यक्ष पद भी सुशोभित किया। उनकी सक्रिय सेवाएं नई पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी रहेंगी।

अतएव यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि सेठ साहब बांठियाजी द्वारा सम्पन्न सामाजिक एवं धार्मिक कृत्यों में उनकी सहयोगिनी आदर्श भारतीय पत्नी का महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दू शास्त्रों में सत्य ही पत्नी को अर्धाङ्गिनी नाम से विहित किया गया है।

सौम्य एवं शान्त प्रकृति श्रीमती बांठिया ने भारतीय संस्कृति के अनुरूप जीवन भर गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए कई वर्षों तक सेठ सा. की रुग्णावस्था में भी सेवारत रह कर पतिव्रत धर्म का सुन्दर आदर्श उपस्थित किया और अब उनसे वियुक्त होकर आध्यात्मिक साधना में संलग्न हुई मानव जन्म के परम लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि बीकानेर मरुधरा के उज्ज्वल रत्न स्व. सेठ श्री चम्पालाल बांठिया का स्मृति ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। इस पुण्य अवसर पर विदेश में रहते हुए भी स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति ने मेरा स्मरण करके ये 'श्रद्धा सुमन' अर्पण करने का सुअवसर प्रदान किया तद्‌निमित्त आभार व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना



है कि श्री बांठियाजी की अमर आत्मा को उच्चाति उच्च लोकों की प्राप्ति हो। आशा है उनकी सुसंस्कृत सन्तानें उनके पद चिह्नों का अनुसरण करते हुए पारिवारिक समृद्धियों को बढ़ाने के साथ-साथ सामाजिक एवं धार्मिक कृत्यों में भी अभिरुचि विकसित करती रहेंगी।

हरि ॐ तत्सत् □

5103 North Oaks Blvd
North Brunswick, NEW JERSEY 08902
(U.S.A)

सरलता व सेवा की प्रतिमूर्ति

— श्री मानव मुनि —

आप आचार्य श्री नानेश के अनन्य श्रद्धालु निष्ठावान सरल स्वभावी एवं चारित्रवान श्रावक थे। आतिथ्य सत्कार करने में उन्हें अत्यन्त हर्ष व आनंद होता था। शुभ कार्यों में सहायता देने में भी प्रफुल्लित होते थे।

मिलने का/चर्चा करने का अवसर मिलता वो कहा करते जीवन में जितनी सेवा एवं धर्म आराधना व गुरु भक्ति हो सके करना चाहिये तभी जीवन सार्थक होगा। हाथ बांध आया है 'खाली हाथ जाने वाला है' धर्म ही साथ जायेगा तो उसमें कंजूसी क्यों की जाये।

मनुष्य को आपस में प्रेम बांटना चाहिये प्रेम से राग-द्वेष भी मिट जाता है धन का उपयोग शुभ कार्यों में करना चाहिये जीवन का सच्चा आनंद उसी में है।

हम भेद को मिटाना चाहते हैं, हम समता चाहते हैं, मैत्री चाहते हैं समता याने बराबरी का नाता।

स्व. सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया के परिवार के सदस्यों में वो गुण ग्रहण करने की शक्ति आये व उनकी भावना को पूर्ण करने में सफलता प्राप्त हो। यह मंगल भावना करता हूँ। □

—वि-सर्जन आश्रम नवलखा
इन्दौर- ४५२००१



कर्मठता एवं उदारता के आदर्श

— श्री गजेन्द्र सूर्या —

कोई भी राष्ट्र आदर्श राष्ट्र का दर्जा तब तक प्राप्त नहीं कर सकता है, जब तक कि वहां के निवासी शिक्षा, सेवा, समर्पणा के चरित्र से समाज को अपनी शक्ति प्रदान न करें।

किसी भी राष्ट्र का सिर तभी ऊँचा उठता है जब जन सेवा में समर्पित रहने वाला नेतृत्व अपनी क्षमता से समाज के अन्तिम छोर पर खड़े व्यक्तियों के लिए कल्याणकारी योजनाएँ पहुँचाने की व्यग्रता मन में रखें।

मनुष्य मात्र को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि जिस धरती पर हमने जन्म लिया है, जिसकी मिट्टी में खेलकर बड़े हुए हैं, जिसकी समीर में अब तक सांस लेकर जी रहे हैं, उस पावन पवित्र मातृभूमि के उपकार को भूल जाना विश्वासघात है।

मृत्यु तो अवश्यंभावी है—एक न एक दिन अवश्य आएगी, फिर क्यों न हम प्राणों का उत्सर्ग उस माटी से करें जिसने जन्म दिया, प्राण दिया।

मेरे प्राण इस देश की अमानत है। उस अमानत को उसे सौंपना ही मेरा कर्त्तव्य है।

उपरोक्त सुन्दर शिक्षा को युग पुरुष युग दृष्ट क्रांतिकारी जाज्वल्यमान नक्षत्र ज्योर्तिधर स्व. श्रीमद् जवाहराचार्य से सीखकर अपने जीवन में उसे आत्मसात् कर अन्तिम श्वांस तक निर्वाह करने वाले पुरुष थे—असाधारण व्यक्तित्व के धनी, कर्मठ, उदारमना, प्रखर प्रतिभावान, सेवा एवं शक्ति के संगम श्रीमान चम्पालालजी साहिब बांठिया।

श्रीमान बांठिया साहेब ने जन सेवा में अहर्निश समर्पित रहकर श्रम, सेवा, त्याग का जो अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है वह सादर अविस्मरणीय बना रहेगा।

उन्होंने इस देश की शानदार विरासत एवं परम्परा को रखकर नगर के बहुमुखी एवं बहुक्षेत्रीय प्रगति में अपूर्व योगदान प्रदान करके नागरिक कर्त्तव्य बोध का जो कीर्तिमान कायम किया है उससे हमारी पावन राष्ट्रीय संस्कृति उज्वल बनी है।

आज के इस युग में जब लोकोपकारी संस्थाएं धन, श्रम, सेवा आदि सभी अभाव के दौर से गुजर रही हों ऐसे समय में पदलिप्सा से कोसों दूर रहने वाले सदैव



सरस्वती की पूजा में अहर्निश समर्पित लक्ष्मी के इस वरद पुत्र का आदर्श समाज, राष्ट्र एवं विभिन्न सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा उज्ज्वल आईना है जो प्रत्येक प्रवुद्ध जन के लिए अनुकरणीय एवं शिक्षाप्रद है।

श्रीमान बांठिया साहिब के अद्‌भुत व्यक्तित्व को पढ़कर ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने जीवन की समग्र ऊर्जा और शक्ति को उन कार्य क्षेत्रों एवं योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में लगाया, जिनके सिंचन करने से वह वीज कल्प वृक्ष के रूप में पूर्ण आकार ग्रहण करने वाला बन सकें।

श्रीमान बांठिया साहिब ने भीनासर में जवाहर विद्यापीठ एवं श्रीमद् ज्योर्तिधर जवाहराचार्य के क्रांतिकारी साहित्य को, जो सामाजिक, राष्ट्रीय एवं धार्मिक क्रांति का सूत्रपात करने वाला था, जवाहर किरणावलियों के रूप में प्रकाशित कर सम्पूर्ण जैन समाज सहित इस देश की संस्कृति पर जो उपकार का कार्य कर ऐतिहासिक योगदान प्रदान किया है और जिसे उनके सुपुत्र श्री सुमतिलालजी बांठिया सहित समाज के अनेक गणमान्य पुरुषों (जिसमें प्रमुख रूप में टी.टी. इण्डस्ट्रीज के प्रबन्ध संचालक श्रीमान रिखबचन्दजी जैन आदि हैं।) ने जिसे गतिशील किया है। वह श्रीमान चम्पालालजी साहिब बांठिया के त्याग, सेवा एवं श्रम का ही प्रतिफल है।

अपनी अद्‌भुत सूझबूझ एवं कल्पना से आपने संस्था का जैसा परिवेश रचा था आज वह संस्था उसी सांचे के अनुरूप पूर्ण आकार को ग्रहण कर रही है।

उन्होंने अपनी प्रखर प्रतिभा से न केवल साहित्य प्रकाशन एवं सेवा क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया वरन् जनोपयोगी क्षेत्र एवं समाज सेवा क्षेत्र में भी अद्वितीय कार्य करके समाज के मुख को उज्ज्वल किया है।

बांठिया साहिब की औद्योगिक, शैक्षणिक, पारमार्थिक, चिकित्सकीय व्यवस्थाओं के विकास के अतिरिक्त विभिन्न लोकोपकारी संस्थाओं में सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्षेत्रों में धन, श्रम, सेवा से कार्य करके बेबस, बेसहारा लोगों के लिए पैरों पर खड़ा करने वाली अनेक स्वावलम्बी योजनाओं का जो सफल क्रियान्वयन किया है वह उनकी देश एवं समाज के प्रति समर्पित प्रतिबद्धता का ध्योतन कराने वाली हैं। आपने समाज, नगर, राष्ट्र को जो कुछ प्रदान किया है, हम उस विरासत के धनी हैं, अतः हमें मर्यादा एवं मूल्यों के आईने में अपने आदर्श को नियोजित कर ऐसे समाज के स्वरूप को बनाए रखने में अपना यथोचित योगदान प्रदान करके उसे निष्क्रिय होने से बचाए रखना चाहिए। आपकी स्मृति को तभी अक्षुण्ण एवं सुरक्षित रख सकते हैं। जब हम उनके बताये हुए सभी कार्यो को पूर्ण शक्ति से करने का संकल्प करें।



बांठिया साहिब ने जो भी कार्य हाथ में लिया उसे पूर्ण शक्ति से पूरा किया। हमारा कर्त्तव्य है कि हम भी अपने विवेक एवं बुद्धि से प्रत्येक कार्य के सफल क्रियान्वयन में तत्पर एवं प्रतिबद्ध बनें।

बिरले व्यक्ति ही ऐसे होते हैं जो अपनी ऐसी छाप छोड़ जाते हैं जो समाज और राष्ट्र के लिए गौरव की बात बन जाती है। श्रीमान बांठियाजी का व्यक्तित्व आडम्बर विहीन, निरभिमानी था। वे अद्भुत जिजीविषा और शौर्य के धनी थे, हम उनके अद्भुत व्यक्तित्व, प्रशस्त ललाट एवं अपूर्व बलिष्ठता को अपनी धरोहर समझते हैं।

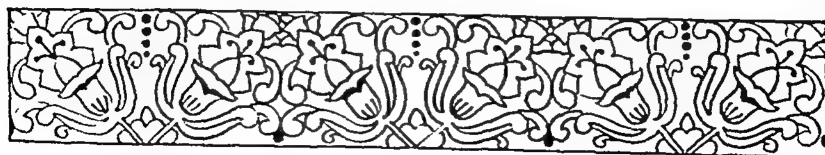
जवाहर किरणावली का प्रकाशन उनके नाम से हमेशा पहिचाना जाएगा जो कल्प वृक्ष को सिंचन करने वाला कार्य है।

श्रीमान बांठिया साहिब की विशेष उपलब्धियों के लिए समाज ने, राज्य ने, तत्कालीन बीकानेर महाराज ने एवं विभिन्न प्रकार की सार्वजनिक एवं लोकोपकारी संस्थाओं ने उनके अद्भुत यशस्वी कार्यों के लिए जो सम्मान, प्रशस्तियां आदि प्रदान की हैं उससे उन संस्थाओं का ही गौरव बढ़ा है क्योंकि सेवाभावी एवं चरित्रवान लोगों का मूल्यांकन करना समाज एवं राष्ट्र का ही आदर करना होता है और उनका तो समग्र कार्य ही समूचे समाज एवं राष्ट्र के गौरव की बात है। अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के लिए अर्पित कर देने वाले ऐसे व्यक्तियों के सम्मान से ही समाज का महत्व बना रहता है।

जौहरी के कारण ही बहुमूल्य पदार्थों का महत्व रहता है अन्यथा वे हीरे जवाहरात तो कांच के टुकड़े के समान हैं। जैसे मूल्यों के कारण पदार्थ की कीमत है, वस्तु की कीमत है, मूल्य गिरते हैं तो पदार्थ का कोई महत्व नहीं होता है।

क्योंकि संस्थाओं में योग्य एवं परिपक्व व्यक्तियों के माध्यम से ही समाज, धर्म, संघ एवं जातीय समस्याओं के समाधान एवं विकास के नये सोपान तैयार किये जाते हैं। श्रीमान बांठिया साहिब को विभिन्न परिस्थितियों में संस्थाओं को चलाने का काफी अनुभव प्राप्त हो चुका था इसलिए वे किसी भी व्यवस्था की सफल क्रियान्विति के लिए उन दक्ष एवं निपुण व्यक्तियों को ही जिम्मेदारी सौंपते थे जो संस्था के निर्धारित लक्ष्य को पूरा करने के साथ ही उसके कल्याणकारी लाभों को अन्तिम व्यक्ति तक पहुंचाने में सक्षम एवं जवाबदेह बना सकता हो।

जिस समूह में या जिस संस्था में ऐसा परिपक्व नेतृत्व होता है उस समूह की सुव्यवस्था के फलस्वरूप न केवल असहाय, निराश्रित निरीह लोगों की व्यथाओं एवं



कष्टों का निवारण होता है अपितु समाज को जो शक्ति एवं दिशाबोध प्राप्त होता है उससे उस समूह की शक्ति पूंजीभूत बनती है एवं उसमें गति एवं क्षमता उत्पन्न होती है।

विभिन्न संस्थाओं में अध्यक्ष/मंत्री/उपाध्यक्ष /अन्य पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य तथा ट्रस्टी आदि देखे जाते हैं परन्तु अक्षम एवं विपरीत व्यक्तियों के कारण उसमें कलह झगड़े आदि देखे जाते हैं जिसके फलस्वरूप उन संस्थाओं की कल्याणकारी योजनाओं को न तो गतिशील रखा जा सकता है, और न ही उसके विकास के लिए नया आधार प्रदान किया जा सकता है।

उपरोक्त परिस्थितियों में जब समाज के एक ऐसे कर्मठ उदारमना प्रखर प्रतिभा के धनी को स्मरण किया जाता है तो सहज ही उनके माध्यम से समाज के सदस्यों को ऐसे पुरुष के अनुकरणीय आदर्शों की शिक्षा दी जा सकती है कि सामाजिक संस्थाओं के पद सेवा और कार्य के लिए होते हैं तथा दिये जाते हैं। संस्था के विभिन्न पदों पर प्रतिष्ठित व्यक्ति को काम करने की सत्ता और शक्ति उपरोक्त पदों से प्राप्त होती है। तथा सारा समाज उनसे नेतृत्व, त्याग, बलिदान की अपेक्षा रखता है।

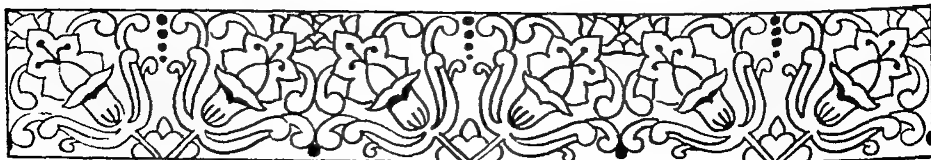
श्रीमान बांठिया साहिब के अलौकिक जीवन को स्मरण करने से विदित होता है कि कहां उनका समर्पित, त्यागमय, निःस्पृह जीवन जिसमें मानव के प्रति मानवीय व्यवहार उसकी वैयक्तिकता का समादर और जीवन के अनूठेपन की चेतना और कहां आज के विभिन्न क्षेत्रों की लापरवाह, क्रूर, निर्मम और दानवीय व्यवस्था, जिसमें इन आत्मघाती लिप्सा में लिप्त संस्थाओं के हाथों से असंख्य निरीहों की क्या गति होगी कहा नहीं जा सकता।

स्वर्ण जयन्ती के इस पावन प्रंसग पर पूज्य आदरणीय चम्पालालजी साहिब बांठिया के अद्भुत प्रेरक पवित्र जीवन से हम सबको शिक्षा लेनी चाहिए कि हम उन तथाकथित धार्मिक संस्थाओं से अपने को बचाकर रखें जो मात्र दिखावे की सेवा और लोक कल्याण के नाटक में संलग्न हैं।

इस प्रसंग पर श्रीमान बांठिया साहिब की सच्ची स्मृति तभी होगी जब हम उनके आदर्शों का अनुसरण कर पवित्र प्रयास वाली विभिन्न लोकोपकारी एवं कल्याणकारी संस्थाओं में शक्ति का सृजन करके अपना एवं समाज का जीवन सार्थक करें। □

—१७०, आर.एन.टी.मार्ग

झाबुआ टॉवर, इन्दौर (म.प्र.)



भीनासर-सरसिज सेठ श्री चम्पालाल जी बाँठिया

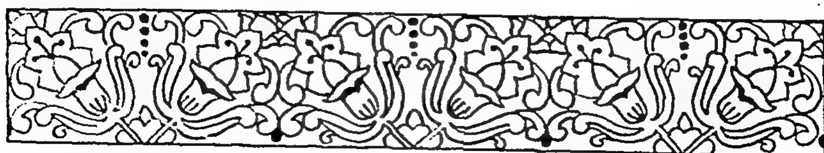
।।परोपकाराय सतां विभूतयः।।

— श्री माणक चन्द रामपुरिया —

मरू प्रदेश का भीनासर बीकानेर ऐसे मानव-मणि, महान् विभूति का जन्म-स्थान है, जिसका यश-सौरभ, कीर्ति-कौमुदी दिगन्त में परिव्याप्त है। वे हैं स्वनाम धन्य सेठ श्री चम्पालाल जी बाँठिया। उन्हें महाराजा श्री गंगासिंहजी के राज्य काल एवं सानिध्य में, एम. एल. ए. तथा राज्य का अवैतनिक मजिस्ट्रेट का पद भार वहन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। समाज सेवी, न्याय-प्रिय 'बाँठिया जी' का कर्ममय जीवन सब के लिए स्पृहणीय था। भीनासर नगर पालिका के यशस्वी चेयरमैन, बीकानेर राज्य, ट्रेड एवं इंडस्ट्रीज एशोसियेशन के अध्यक्ष के पद भार का भी आपने योग्यता पूर्वक निर्वाह कर स्थानीय जन-समाज का हृदय-हार बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। आपकी दानशीलता, सेवा-निष्ठा और कर्त्तव्य-परायणता के कारण ही महाराजा सा. ने आपको रजत राजित, सम्मान स्वरूप 'रजत-छड़ी' तथा चपरास के उपकरणों से आदृत किया। महाराजा सा. के प्रिय भाजन तथा विश्वास-पात्र के रूप में आपका स्थान महत्वपूर्ण था। आपका ऐतिहासिक व्यक्तित्व, समय और समाज के लिए युग-सापेक्ष रहा।

आपकी समाज-सेवा-निष्ठा प्रशंसनीय थी। जब आपने गंगाशहर निवासियों के पेय-जल का अभाव देखा तो अविलम्ब-सर्व साधारण के लिए मीठे-जल की प्राप्ति हेतु यथा-स्थान कुओं का निर्माण करा कर, पेयजल कष्ट का निवारण किया।

शिक्षा प्रेमी के रूप में सामाजिक विकास के लिए भावी संतान के भविष्य को समुज्वल बनाने के लिए, 'जवाहर हाई स्कूल', बालकों के लिए तथा बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के लिए 'बाँठिया गर्ल्स स्कूल' का निर्माण कराया, जो समाज-सेवा और आपके शिक्षा-प्रेम का ज्वलन्त उदाहरण है। आपकी दूरदर्शिता का प्रतीक 'जैन जवाहर विद्यापीठ', जिसका समृद्धिपूर्ण पुस्तकालय-विभाग आज भी शैक्षणिक-गौरव-स्तम्भ है। नारी कल्याण के लिए आपके विशाल हृदय में अनन्य भावना थी। आप की पुनीत भावना थी, 'नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता', एतदर्थ आपने नारी उत्थान और उनके विकास के लिए शिल्प-कला (सिलाई-प्रशिक्षण-केन्द्र) स्थापित कराया जो आपकी नारी-सेवा-निष्ठा का प्रतीक है।



'सब जन हिताय-सब जन सुखाय' की उदार भावना से प्रेरित होकर आपने अपनी पितृ-भक्ति स्वरूप 'सेठ हमीरमल बाँठिया पौषधशाला', बाँठिया अतिथि शाला के निर्माण द्वारा 'अतिथि देवो भव, पितृ देवो भव' का आदर्श उपस्थित किया। सार्वजनिक हित साधना के लिए 'सेठ चम्पालाल बाँठिया धर्मार्थ ट्रस्ट' (न्यास) की स्थापना की जो आपकी महती उदारता का प्रतीक है। जन साधारण की सुविधा तथा नगर-विकास तथा उत्थान हेतु आपने अच्छी सड़कों के निर्माण कार्यों में महत्वपूर्ण योग दिया, जो भीनासर नगर का एक ऐतिहासिक कार्य है। आपकी धार्मिक सेवा भी अप्रतिम है। आपने भीनासर में महान् क्रान्तिकारी जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज सा. का चातुर्मास, का सफल अनुष्ठान सुसम्पन्न कराकर समाज को एक नयी दिशा और प्रेरणा दी तथा विशाल साधु-सम्मेलन के महत्वपूर्ण आयोजन में सफलता प्राप्त कर धर्म का आदर्श उपस्थित किया,जो सदा स्मरणीय रहेगा।

आप 'सादड़ी-सम्मेलन' में स्थानकवासी-जैन सम्प्रदाय के अध्यक्ष-पद का सौभाग्य प्राप्त कर, धर्म एवं सुयश के भागी बने। आप अपने व्यक्तित्व और कर्त्तव्य निष्ठा से, बीकानेर, गंगाशहर, भीनासर इत्यादि स्थानकवासी जैन संघों द्वारा अभिनन्दन-पत्र प्राप्त कर अनन्य सुख और सौभाग्य के भी भागी बने। अनेक सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में भी आपने साहस, उदात्त-चिन्तन और दृढ़ संकल्प का आदर्श उपस्थित किया। जैन साधुओं द्वारा दी जाने वाली बाल-दीक्षा से दुःखी होकर आपने १८ वर्ष से कम यानी अल्पायु में बालक-बालिकाओं को दीक्षित करने का घोर विरोध किया। इसके समर्थन में कतिपय-समाज-नेता, वकील, डॉक्टर तथा शिक्षाविदों ने पूर्ण सहयोग दिया। जिसका पूर्ण श्रेय श्री बाँठियाजी को है। श्री बाँठिया जी की कर्त्तव्य परायणता, सुदक्षता, उदारता और दानशीलता का समुचित उल्लेख पत्र-पत्रिकाओं में भी विशेष रूप से वर्णित है, किन्तु इसका तत्कालीन इयर-बुक-सन् ५४-५५ में विस्तार से वर्णित है।

सेवाव्रती, धर्मानुरागी, उदारमना सेठ श्री चम्पालाल जी सा. का व्यक्तित्व एवं जीवन, लौकिक और अलौकिक दोनों दृष्टिकोण से वरेण्य है। उनका सफल जीवन-आदर्श जन-जन के लिए प्रेरणा प्रद एवं श्लाध्य है। उन्होंने अपना पवित्र और आदर्श जीवन व्यतीत कर जो यश-कीर्ति-स्तम्भ की स्थापना की वह मानव मात्र के लिए प्रकाश-पुञ्ज है। सेठ बाँठिया जी का कर्ममय जीवन यथार्थ में प्रेय और श्रेय दोनों का चरम उत्कर्ष है। यद्यपि उनकी पार्थिव काया इस धरा-धाम पर नहीं है, किन्तु यश-काया सदा अजर और अमर रहेगी—'यावत चन्द्र दिवाकरो'। □

— ४, मेरेडिथ स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००७२

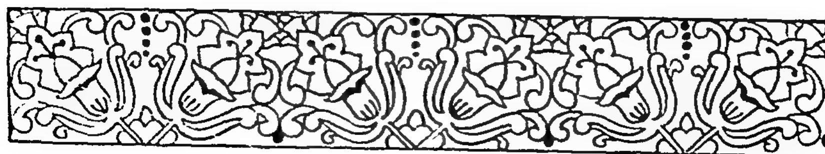


संस्कार-निर्माण एवं साहित्य-प्रकाशन में अनन्य सहयोगी

— डॉ. नरेन्द्र भानावत —

प्रमुख समाज सेवी स्वर्गीय श्री चम्पालाल जी बांठिया के नाम से मैं अपने छात्र जीवन से ही परिचित था। जब मैं चौथी-पांचवीं कक्षा में अपने गाँव कानोड़ में पढ़ता था तब मेरे कुछ वरिष्ठ साथी जवाहर विद्यापीठ, भीनासर (बीकानेर) में रहकर अध्ययन करते थे। जवाहर विद्यापीठ छात्रावास था और वहाँ रहने वाले विद्यार्थी गंगाशहर के चौपड़ा हाई स्कूल में पढ़ते थे। जब भी वे ग्रीष्मावकाश में अपने गांव लौटते, जवाहर विद्यापीठ और उसके मंत्री श्री चम्पालाल जी बांठिया की बात अवश्य करते। आठवीं से दशवीं कक्षा तक मैं जैन गुरुकुल छोटी सादड़ी का विद्यार्थी रहा। वहां मुझे स्व. पं. शोभाचन्द जी वया धार्मिक शिक्षण देते थे। उनकी प्रेरणा से प्रसिद्ध जैनाचार्य श्री जवाहरलाल जी म. सा. के प्रवचन संग्रह 'जवाहर किरणावलियों' को पढ़ने का अवसर मिला। इन किरणावलियों का प्रकाशन जवाहर साहित्य समिति, भीनासर द्वारा किया गया था और इसके मंत्री थे श्री चंपालाल जी बांठिया। इस प्रकार साहित्य के पठन-पाठन के संदर्भ से भी बांठिया जी का नाम छात्र-जीवन से ही ध्यान में आता रहा।

मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद मैं कॉलेज शिक्षण के लिए जवाहर विद्यापीठ भीनासर में प्रवेश लेने की भावना लेकर सन् १९५२ के जून मास के अंतिम सप्ताह में भीनासर पहुँचा था। वहाँ मेरे गाँव के ही पंडित महेश चन्द्र जी जैन गृहपति थे। मैंने डूँगर कॉलेज में प्रथम वर्ष में प्रवेश के लिए आवेदन किया और उधर मैं धर्मनिष्ठ श्रावक, दानवीर सेठ भैरोदान जी सेठिया से मिलने के लिए 'श्री अगरचन्द भैरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था', बीकानेर के सेठिया जैन ग्रंथालय में पहुँचा। सभी लोग सेठिया जी को बाबूजी के नाम से पुकारते थे। बाबूजी ने मुझे मेरे शैक्षणिक जीवन के बारे में पूछा। धार्मिक जानकारी भी ली। जब उन्हें मैंने बताया कि मैं अपनी कक्षा में सदैव प्रथम आता रहा हूँ और मैट्रिक कक्षा में मैंने प्रथम श्रेणी प्राप्त की है तो वे वड़े खुश हुए और पूछा कि आगे कहाँ पढोगे? मैंने कहा-जवाहर विद्यापीठ भीनासर में रहूँगा और डूंगर कॉलेज में पढ़ने आऊँगा। कुछ देर रुककर वे बोले—भीनासर से बीकानेर आने में तुम्हारा समय जायेगा। तुम यहीं आ जाओ। यहां ऊपर कमरे में रहने की व्यवस्था हो जायेगी और पास ही रामपुरिया कॉलेज है, वहां प्रवेश ले लो। वावूजी के इस सहज-सरल आत्मीय वात्सल्य भाव से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ और जवाहर



विद्यापीठ, भीनासर से बीकानेर चला आया। इस कारण स्व. वांठिया जी से मेरा विशेष संपर्क तो नहीं हो सका, पर मैं उनकी सामाजिक एवं साहित्यिक प्रवृत्ति से सदा प्रभावित रहा।

बीकानेर जाने से पूर्व मैंने अ. भा. श्वे. स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस के १२वें अधिवेशन में भाग लिया था। यह अधिवेशन ४, ५, व ६ मई, १९५२ को घाणेराव सादड़ी में हुआ था। हम कुछ साथी जैन गुरुकुल छोटी सादड़ी की ओर से वहां गये थे। उस समय कांफ्रेंस के मुख पत्र 'जैन प्रकाश' के सम्पादक पं. रत्नकुमार जैन 'रत्नेश' थे। तब तक 'जैन प्रकाश' में मेरी कुछ कविताएँ प्रकाशित हो चुकी थीं। अतः रत्नेश जी से मेरा अप्रत्यक्ष परिचय था। सादड़ी में जब वे मिले तो मुझे अधिवेशन की कार्यवाही को निकट से देखने की सुविधा उनके माध्यम से मिल सकी। इस अधिवेशन के अध्यक्ष श्री चम्पालाल जी बांठिया थे। इस अधिवेशन में राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री टीकाराम पालीवाल विशेष रूप से आये थे। इस अधिवेशन के साथ स्थानकवासी परम्परा की विभिन्न संप्रदायों के साधुओं का वृहद सम्मेलन भी हुआ था और इसी अधिवेशन में स्थानकवासी सम्प्रदाओं का विलिनीकरण 'श्रमण संघ' में हुआ था। इस दृष्टि से यह अधिवेशन अपना ऐतिहासिक महत्व रखता है।

बीकानेर में रहते हुए समय-समय पर विभिन्न धार्मिक अवसरों पर बांठिया जी से भेंट होती रही। जवाहर विद्यापीठ के मंत्री के रूप में बच्चों के संस्कार-निर्माण एवं चरित्र-गठन में उनकी बड़ी प्रेरणा रही। श्रीमद् जवाहराचार्य क्रांतद्रष्टा आचार्य थे। आत्मधर्म के साथ उन्होंने अपने प्रवचनों में राष्ट्र धर्म को भी बड़ा महत्त्व दिया तथा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा प्रवर्तित अहिंसात्मक सत्याग्रह का समर्थन किया। स्वतंत्रता, समानता, स्वावलम्बन और स्वदेशीपन पर उनका बड़ा जोर रहा। उनकी प्रेरणा से हजारों लोगों में देशभक्ति की भावना जगी और उन्होंने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर खादी धारण करने का व्रत लिया। आचार्य श्री के प्रवचन सरल, प्रभावी और जीवन-परिवर्तनकारी होते थे। इन प्रवचनों के प्रकाशन की व्यवस्था कर बांठिया जी ने समाज का बड़ा उपकार किया। बाँठिया जी के कारण ही जवाहर किरणावलियों के कई भाग प्रकाशित हो सके। आज भी ये किरणावलियाँ बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं।

दिवंगत आत्मा को कोटि-कोटि प्रणाम और चिर शांति की कामना। □

—सी-२३५ A, दयानन्द मार्ग,
तिलकनगर, जयपुर-४



सेवा एवं सौजन्य के प्रतीक

— श्री चम्पालाल डागा —

मेरा सेठ साहब के निकट आने का प्रथम माध्यम तो श्री जवाहर विद्यापीठ था। मैं कार्यकारिणी का सदस्य लिया गया व प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से मीटिंगों के माध्यम से विचार-विमर्श होता रहता। द्वितीय माध्यम बना परम पूज्य समता विभूति आचार्य श्री नानेश द्वारा गंगाशहर व भीनासर में १२ दीक्षाओं की स्वीकृति व बाद में चातुर्मास की घोषणा व १२ दीक्षाओं के लिए पांडाल की व्यवस्था तथा अन्य व्यवस्था के लिए विचार-विमर्श होता ही रहता।

उनकी सन्निधि से उनकी कार्य शैली की जीवन्तता और दूरदर्शी योजक बुद्धि का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ।

स्व. सेठ श्री चम्पालालजी सा. बांठिया ने धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक सभी धरातल पर अग्रणी होकर कार्य किया। नगर में जिस सुविधा की उनको कमी महसूस हुई, उन्होंने तत्काल उसे दूर किया और स्कूल, पौषधशाला, कुआं, बाग, दवाखाना, अतिथि गृह आदि का निर्माण कराया। इन्होंने सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक व संस्कृति आदि प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी व स्वतन्त्र पहचान बनाई। वे अपने समय के सर्वांगीण व्यक्तित्व के धनी सेठ थे। उन्होंने सेठ (श्रेष्ठ) उपाधि को सार्थक किया।

स्व. सेठ सा. ने आचार्य श्री जवाहर की तनमन से सेवा की उनके विचारों को श्री जवाहर किरणावलियों के रूप में प्रकाशित कराया और जन-साधारण के लिये उपलब्ध कराया। जवाहर किरणावलियों के ये ३५ भाग पूरे जैन समाज में ही नहीं, अन्य समाज में भी आदर का स्थान रखते हैं। युगों तक जैन समाज इन किरणावलियों के माध्यम से सेठ सा. की स्मृति संजोये रखेगा।

मैं स्वयं की तथा श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से पुनः उन महामानव को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ, आपके सद्प्रयासों की सफलता की कामना करता हूँ। □

—मंत्री, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ,

बीकानेर



प्रखर प्रतिभावान

— श्री एस. हस्तीमल जैन, मुणोत —

गणतंत्र भारत की आधार शिला को सुदृढ़ बनाने के लिए ऐसे कर्तव्यनिष्ठ, अनुशासित एवं चिंतनशील नागरिकों की आवश्यकता है, जिनका नैतिक चरित्र ऊंचा हो, जिनमें उत्तरदायित्व वहन करने की शक्ति हो तथा जिनमें धर्म, संस्कृति, देश और राष्ट्र के प्रतिं पूर्ण आस्था निहित हो। साथ ही आचार विचार में समन्वय स्थापित किया हो। इन गुणों से विभूषित-अलंकृत एवं समाज में समादृत श्रावक मुकुट-मणि, जन-जन के कण्ठहार, मृदु-मधुर-मित भाषी प्रख्यात उद्योगपति, अनासक्त समाज सेवी, विद्याविलासप्रिय परोपकार कर्म विहित धन्य नर श्री चंपालालजी बांठिया थे।

जीवन के निर्माण एवं बहुविध विकास के लिए जिन विषयों का अध्ययन आवश्यक है, उसमें मनुष्यों के जीवन चरित्र का अध्ययन भी मुख्य विषय है। महान पुरुषों और आदर्श व्यक्तित्वों के अध्ययन, अनुशीलन और चरित्र-श्रवण से सदा-सर्वदा मार्ग दर्शन मिलता है कि वह अन्धकार में प्रकाश रेखा बन जाता है, भूले-भटके मानस को सच्चे हमसफर साथी का काम कर देता है। आपका जीवन भी आलोक स्तम्भ के समान है जो औरों के लिए प्रेरणादायक है।

आपने भीनासर में लड़कों व लड़कियों के लिए स्कूल का निर्माण कराया। उनकी दृष्टि में शिक्षा मानव जीवन को सुसंस्कृत बनाती है। शिक्षा मनुष्य के हृदय और बुद्धि के नेत्रों को खोल देती है। शिक्षा से मनुष्य अपने हिताहित का भली-भांति विवेक कर सकता है। भावी-पीढ़ी और भविष्य में मानव को बदलने तथा सुसंस्कारी, सुघड़ और स्वावलंबी बनाने में शिक्षा ही एकमात्र आधार हो सकती है। अभ्युदय व निश्रेयस की सिद्धि के लिए व्यक्ति-समाज राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए अर्थात् शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं सामाजिक अभ्युत्थान के लिए उन्होंने जैन जवाहर विद्यापीठ की स्थापना की।

नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।
ज्ञानाग्नि सर्व कर्माणि भस्मसात्कुरूतेःऽर्जुन ।।

इस संसार में ज्ञान के समान कोई पवित्र पदार्थ नहीं है। अर्जुन ज्ञान रूपी अग्नि समस्त कर्मों को भस्मसात कर देती है। इसीलिए श्रुति बार-बार पुकार-पुकार कर कहती है ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं हो सकती; ज्ञान ही एक ऐसा प्रकाश है,



जो हृदय के अन्धकार को, अज्ञान और मोह को, स्वार्थ और द्वन्द्व को विनष्ट कर सकता है।

परोपकारार्थमिदं शरीरम। संसार के समस्त जड़ पदार्थ अपने लिए न होकर औरों के कल्याण-मंगल के लिए है। भूमि, अग्नि, वायु, जल, आकाश ये पंच महाभूत भिन्न-भिन्न रूप में प्राणिमात्र के लिए अत्यंत उपयोगी हैं जबकि विवेक के साथ इसका प्रयोग करें।

शरीर समस्त इन्द्रिय परस्पर एक दूसरे के पूरक व सहयोगी हैं। ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियों के लिए है बिना उनके ये कुछ भी नहीं कर सकते। उसी प्रकार आपने भीनासर में दो कुओं का निर्माण करा कर मीठा पानी उपलब्ध कराया। राजस्थान के तपन भूमि में तपकर संचार करने वाले पथिकों की पिपासा को शान्त करने के लिए तथा जीवन प्रदान के लिए ये दो अमृत स्रोत हैं। राजस्थानवासियों के लिए सुवर्ण उतना मूल्यवान नहीं है जितना जल है, जल को जीवन कहा जाता है। जल स्वच्छता के लिए, पकाने के लिए, विद्युतशक्ति के लिए, औषधियों के निर्माण में, अनेक रोगों के निवारण के लिए जल चिकित्सा के रूप में उपयोग किया जाता है। वैदिक साहित्य में जल को अमृत कहा गया है क्योंकि वह अत्यंत उपयोगी है। वस्तुतः इनका जीवन प्राणिमात्र के हित के लिए था।

पृथ्वी का चक्र धुरी पर चलता है। बिना धुरी के पहिया गतिशील नहीं होता उसी प्रकार नारी भी समाज की महत्वपूर्ण धुरी है उसके आधार के बिना समाज का उद्धार नहीं हो सकता। राम-कृष्ण महावीर-बुद्ध जैसे सपूतों को जन्म देने वाली समाज तथा राष्ट्र की निर्माता मातृ-शक्ति है। जिस प्रकार पक्षी एक ही पंख के बल, पर अनन्त आकाश में विहार नहीं कर सकता, रथ भी एक पहिए पर आगे बढ़ नहीं सकता। पक्षी को उड़ने के लिए दो पंखों की तथा रथ को गतिशील होने के लिए दो चक्र की आवश्यकता है। उसी प्रकार समाज को सुधार-मार्ग पर ले जाने के लिए पुरुष समर्थ नहीं है जिसका अर्द्धांग पक्षाघात हो।

इसीलिए आपने नारी के सर्वांगीण विकास के लिए माध्यमिक स्कूल का निर्माण किया। ताकि सिनेमा, टी.वी. के द्वारा पाश्चात्य स्त्रियों की वेषभूषा का अन्धानुकरण न करते हुए भारत के अतीत की आदर्श स्त्रियों व सती साध्वियों का अनुकरण कर हमारी प्राचीन उज्वल संस्कृति एवं सभ्यता, आचार-विचार तथा रहन-सहन की संदेश वाहिका बने। प्रस्तुत सामाजिक मालुष्य को दूर कर सुरसरि सम सर्वहित करें। आप अनेक हितकारिणी सामाजिक संस्थाओं के अध्यक्ष बने तथा उन संस्थाओं को कुशल नेतृत्व



प्रदान किया जिसके कारण वह फलती-फूलती रही है। आप जनता के इतने लोकप्रिय रहे कि उन्होंने बीकानेर राज्य के विधान सभा के सदस्य के रूप में आपको निर्वाचित किया। आप अनन्य साहित्य प्रेमी थे। आपने विपुल उत्कृष्ट जैन साहित्य प्रकाशन कराया है। आपकी अनमोल सेवाओं का मूल्यांकन जितना करें उतना कम है। आपका कार्य क्षेत्र इतना विस्तृत था कि केवल जैन समाज में ही नहीं बल्कि जैनेतर समाजों में भी आपको भारी सम्मान प्राप्त हुआ।

ऐसे स्मृति शेष प्रखर व्यक्तित्व को स्मरणांजलि। □

—अध्यक्ष, विश्व जैन परिषद, पॉट मार्केट, सिकन्दराबाद

साहस एवं उदारता के आदर्श

— श्रीगणपतराज बोहरा —

आपका सत् संकल्प उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर सेवा-साहस और उदारता के आदर्शों को प्रोत्साहित करेगा।

मेरी श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के रायपुर अधिवेशन में आज से करीब २६ वर्ष पूर्व समादरणीय सेठ सा. से मुलाकात हुई थी और वह मुझे आज भी स्मरण है। उन्होंने ज्योर्तिधर आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. के प्रवचनों को 'जवाहर किरणावली' के रूप में प्रकाशित कराने में जिस सूझ-बूझ और समर्पण भाव का परिचय दिया है, वह केवल स्थानकवासी समाज या जैन समाज ही नहीं, सारे भारत के प्रबुद्ध जनों के लिए अविस्मरणीय रहेगी।

मैं पुनः उन महामानव को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और आपके प्रयास की सफलता की कामना करता हूँ। □

—पूर्व अध्यक्ष, श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर



भीनासर के नर-रत्न

— श्री मुरारीलाल तिवारी —

वैष्णव परम्परा में भगवान विष्णु को श्री तथा लक्ष्मी का स्वामी कहा गया है। 'श्री' शब्द बहुत व्यापक है तथा विशेष अर्थ वाला है। 'लक्ष्मी' इस नाम से हम सभी परिचित हैं। 'लक्ष्मी' जिसके पास होती है उसे हम लक्ष्मी पुत्र कहते हैं।

'लक्ष्मी पुत्र' होना बड़ा सरल है, धनोपार्जन का लक्ष्य बनाईये और कुछ वर्षों में भाग्य के साथ देने पर सम्पन्नता आ ही जाती है। संस्कृत में एक सुभाषित है—

'उद्योगिना पुरुषसिंह मुपैयति लक्ष्मी

दैवेन देवति का पुरुषा वदन्ति'

अर्थात उद्योगी पुरुष के समीप लक्ष्मी आती है, भाग्य से मिलती है—ऐसा का-पुरुष कहता है।

अतः इस सुभाषित के आधार पर श्रावक श्री बांठियाजी लक्ष्मी पुत्र थे। वे इस अर्थ में नगर श्रेष्ठ थे। रियासत के काल में माननीय राजा साहब से और कालान्तर में स्वाधीन भारत में राजस्थान शासन से यह पद पाना उतना कठिन नहीं था। कठिन तथा असम्भव था उनका 'श्री सम्पन्न' होना।

लक्ष्मी जब परोपकारी बनती है या लक्ष्मी पुत्र जब लक्ष्मी को अपनी शक्ति की सीमा से सुख-सुविधा तथा ऐश्वर्य से, जिनके पास उसका अभाव है उनको विभिन्न माध्यमों से वितरित करता है, तब विष्णु प्रिया श्री उसे 'यश कलश' बना देती है। इसीलिए पूरा नाम है 'श्री लक्ष्मी नारायण'। लक्ष्मी की पूर्ववर्ति श्री है और श्री विहीन लक्ष्मी तिजोरी या बैंक में बन्द रहती है। लक्ष्मी इस तरह जब कारावास भोगती है, तब वह किसी दिन छोड़कर चली जाती है। 'श्री' और 'लक्ष्मी' दोनों एक आत्मा के दो छोर हैं, परन्तु व्यवहार में छोर कभी मिलते नहीं क्योंकि संचय की वृत्ति लक्ष्मी से श्री को दूर रखती है। जिस दिन इस प्रवृत्ति से निवृत्ति मुख कोई व्यक्तित्व होता है उस दिन 'जैनत्व' का अपरिग्रह और वैष्णव की पर-पीड़ा-हरण अर्थात् पराई पीड़ा की पहिचान दोनों आत्मालिंगन करने लगते हैं। इस अपरिग्रह की पराकाष्ठा का दूसरा नाम श्री है। अपरिग्रह मनुष्य को लोकोपकारी कार्यों से न केवल जोड़ता है, लोक पीड़ा से तादात्म कराता है, यही जैनत्व है।



गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामचरित मानस में इस प्रवृत्ति को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है—

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
पर पीड़न सम नहीं अधमाई।।

इस आधार पर सेठ श्री चम्पालालजी न केवल दानी थे वरन् वे अपरिग्रही जीवन के साधक थे। यह सही है कि मैंने उनके दर्शन नहीं किए परन्तु वे उनके 'यश' के माध्यम से मृत्युजयी हैं; अब वे स्वयं 'लक्ष्मी पुत्र' नहीं हैं, क्योंकि वे चले गये हैं। लेकिन वे 'श्री पुत्र' की तरह अभी भी जीवित हैं।

भीनासर गया तो उनका छोड़ा हुआ 'वैभव' देखा। वैभव से अधिक उन्हें लक्ष्मी को 'श्री' रूप देने में है।

पूज्यपाद स्व. आचार्य श्री जवाहरलालजी की सेवा सुना है कि उन्होंने बहुत की है क्योंकि जौहरी ही जवाहरात की परख जानता है। और जवाहर यदि चैतन्य स्वरूप हैं तो वे जौहरी को 'श्री सम्पन्न' बनाते हैं, क्योंकि आचार्य को कोई आंकाक्षा नहीं। 'जवाहर' को इसकी कभी चिन्ता नहीं कि वह किसके पास है और वह भी ऐसा 'जवाहर' जो केवल 'लक्ष्मी' को 'श्री' में परिणत कराने का अपने समय का सबसे बड़ा प्रायोगिकी हो इसलिए 'आचार्यश्री' को उचित श्रावक मिला और श्रावक को श्रेष्ठतम 'युग प्रवर्तक' मिले।

यही रहस्य है श्री बांठिया के 'श्री सम्पन्न' होने का। भीनासर और बीकानेर एक नवोदित आधुनिक नगर और एक प्राचीनतम ऐतिहासिक नगर है। अन्तर इतना है कि भीनासर वहां के 'लोकोपकारी' सेवाओं में रत श्रेष्ठियों ने बनाया है और बीकानेर पुराने सामन्तों एवं नर-पतियों की देन है। राजाओं की देन से अपरिग्रही नागरिकों द्वारा निर्माण तथा सेवा की संस्थाओं को प्रतिष्ठित करने का कार्य दानवीर व्यक्तित्वों की देन है।

भीनासर के चप्पे-चप्पे में एक नाम बिना स्याही और प्रदर्शन पट के अमिट छाप से युक्त दर्शनार्थियों के नेत्रों में सहज समा जाता है और वह नाम है 'स्व. सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया'। वहां कन्याशाला है, सभा भवन है, उच्चतर विद्यालय है, ग्रंथालय है, उपाश्रय है, संत-निवास है, अनेकों जीवदया के क्षेत्र हैं; वे सभी बताते हैं कि एक आचार्य की नेश्राय में, अपने जीवन काल में जो अपरिमेय राशि श्री सेठ चम्पालाल ने समर्पित की उससे यही लगता है कि 'नवकार मंत्र' का जो 'सव्व साहूणं' शब्द है वह भीनासर में सार्थक हो गया है। यह केवल प्रार्थना का नहीं केवल स्मरण का ही साकार



हो गया है। इसलिए वे तो अपना जीवन लक्ष्मी के सदुपयोग से या अपरिग्रह से अमर कर ही गये हैं। यह अमरता बाजारू नहीं है, इसकी आज कीमत नहीं की जा सकती है, यह तो भीनासर के उस व्यक्तित्व के/कृतित्व के मूल्यांकन का एक असहाय प्रयास मात्र है।

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने जब यह भाव व्यक्त किया, तब ऐसा ही कोई व्यक्तित्व उनकी कल्पना में आया होगा।

मान लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी
मरो-परन्तु यों मरो कि याद जो करे सभी।
हुई न यों सु-मृत्यु तो वृथा-मरे वृथा जिये।
मरा नहीं वही जो कि जिया न आपके लिए।

वांठिया जी इसलिए मृत्यु पर लक्ष्मी के सदुपयोग के कारण 'लक्ष्मी सम्पन्न' नहीं 'श्री सम्पन्न' व्यक्तित्व का नाम है।

उनके लिए उनका जीवन विज्ञान था जो जैन-धर्म के सिद्धांतों पर आधारित था अतः वे श्रेष्ठ-श्रावक थे और अन्य धर्मावलम्बियो की दृष्टि में वे श्रेष्ठ मानव थे। वे सेठ कम इन्सान अधिक थे जिसकी आज इस राष्ट्र में बहुत कमी है। अन्त में यह लिखने में मुझे जरा भी संकोच नहीं कि उनके छोटे सुपुत्र सुमतिलाल बांठिया तथा उनकी माता जो इन्दौर की हैं वे अहिल्या की धरती की बेटी हैं जहाँ उदारता है हृदय की विराटता है।

उनके योग्य उनके पति में अर्थात् श्री बांठिया में वही उदारता पाकर उनका जीवन धन्य है।

सही तो यह है कि समता-विभूति के पवित्र दर्शन से वे न केवल प्रेरित हुए समता क्या है इसके वे प्रयोग कर्ता भी बन सके।

अतः उन्होंने इस परम्परा को आलोकित किया है। उनकी जीवन-यात्रा उपनिषद् के शब्दों में — असत् से सत् की ओर मृत्यु से अमरता की ओर तथा अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने वाली भव्य-जीवन यात्रा है।

वे एक यशस्वी जीवन के आदर्श हैं। मैं उनके श्री-जीवन की कीर्ति के वखाण में लेख के माध्यम से सम्मिलित हुआ। उनके स्मरण का एक क्षण सार्थक क्षण है। □

—पूर्व सत्र एवं जिला न्यायाधीश, इन्दौर



वो विराट व्यक्तित्व : ये थोड़े से शब्द

— श्री जयचन्दलाल कोठारी —

कहते हैं कुछ विशेष व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो जब देह त्याग देते हैं तो परिचित जनों की स्मृतियों में और प्रगाढ़ता से प्रविष्ट हो जाते हैं। ऐसा ही एक सुपरिचित नाम है भीनासर निवासी, स्मृतिशेष सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया का। यद्यपि वे नहीं रहे किन्तु अभी भी उनकी स्मृतियाँ इतनी जीवन्त हैं कि इस तथ्य को स्वीकारने को मन नहीं करता कि वे नहीं रहे।

गौरवर्ण, सुघड़ नाकनक्श, मँझोली कदकाठी और आकर्षक आकार प्रकार उन्हें प्रकृतितः प्राप्त था, जिसमें अपनी शालीनता, चातुर्य और व्यवहार कुशलता द्वारा उन्होंने चार चाँद और लगा दिये। पगड़ी युक्त विशिष्ट देशी परिधान और मोहक गन्धों का सामयिक प्रयोग उनकी पहचान बन गये थे। चालढाल की ठसक, वोलचाल का घरेलूपन और उठ बैठ की समझ, ये सब देखने की थीं उनकी। एक भरीपूरी सुखी गृहस्थी और योग्य सन्तानें उनके पूर्वपुण्यों का प्रतिफलन थीं। श्री चम्पालालजी बांठिया बीकानेर के विशिष्ट गणमान्य नागरिक, राजदरबार के सम्मान प्राप्त एवं प्रभावशाली व्यक्ति और समाज के मूर्धन्य सदस्य थे। केवल भीनासर ही नहीं, सारा बीकानेर नगर उन्हें एक सेठ के रूप में जानता मानता था। स्थानकवासी जैन सम्प्रदाय उन्हें एक धर्मनिष्ठ सक्रिय श्रावक का मान और गौरव प्रदान करता रहा और रहेगा भी।

यद्यपि मेरा उनसे कौटुम्बिक सम्बन्ध रहा है, अतः सौभाग्य से पुनःपुनः और अत्यन्त निकट से उनके साथ देखने मिलने के अवसर मुझे प्राप्त होते रहे हैं, तथापि उनका शब्द चित्र बनाने और उस विराट व्यक्तित्व को उसमें ढब से समो लेने के कार्य में मेरी लेखनी को बड़े संकोच और असमर्थता का सामना करना पड़ रहा है, अतः अत्यल्प शब्दों द्वारा ही उनकी स्मृति को अपनी श्रद्धा भेंट करने का यत्न कर रहा हूँ।

वैसे मेरे और उनके मध्य वय का दीर्घ अन्तराल था किन्तु इस सत्य का आभास मुझे उन्हीं से हुआ कि वय केवल शरीर से सम्बन्ध रखती है, चेतना की कोई उम्र नहीं होती। हर बार उनके अनुभवों में से कुछ न कुछ नई प्रेरणा और शिक्षा गाँठ बाँध कर ले जाने को प्राप्त होती रही। वे सेठ सिर्फ कहने भर के ही नहीं थे, इस शब्द की पूरी गरिमा वे अपने आचार से प्रकट भी करते थे। उनसे मिलने का एक ऐसा आनन्द था जिसे गँवा देना चाहा नहीं जा सकता था।



होठों की मुस्कुराहट के बारे में तो सभी जानते हैं, किन्तु आँखें भी मुस्कुरा सकती हैं, यह बात शायद सेठ साहब की संगत किये हुए लोग ही जान पाये होंगे। उनकी आकर्षक आँखें अद्भुत रूप से सदैव खिली खिली रहती थीं और बिलकुल लगता था कि स्नेह बिखेरते हुए हँस रही हैं। कुशलक्षेम पूछने का भी उनका एक अपना ढंग था। एक दो वाक्यों में ही लगता था कि पहले मिले तबसे आज तक की सब पूछ ली है। न्यून से न्यून शब्दों का नपेतुले ढंग से प्रयोग करने में वे सिद्धहस्त थे।

कला के वे प्रेमी भी थे और मर्मज्ञ भी। उनके निवास का अवलोकन करने से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है। भीनासर स्थित अपने निवास के पत्थर पत्थर को उन्होंने अपने कलाप्रेम का प्रमाण बनाकर जड़वा रखा है। लक्ष्मी तो उन पर कृपालु थीं ही, सरस्वती ने भी उन्हें अपना स्नेहपात्र बना रखा था। पुस्तकों का गम्भीर रूप से पठनपाठन उनका व्यसन था और विचारों को यथा योग्य रूप में प्रस्तुत करने में भाषा सदा उनकी सहचरी बनी रहती थी। बालदीक्षा के विरोध में अपना मत विभिन्न शीर्षस्थों को पत्रों के माध्यम से उन्होंने इतने प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया कि उनका विरोध मात्र विवशता बन कर रह गया था।

वे जीवन में अन्याय से समझौता करके कभी नहीं चले, उसका विरोध किया और जैसे करना चाहिये वैसे ही किया। कुछ लोगों ने शायद और अर्थ निकाला होगा और उन्हें मुकदमाबाज कहा होगा, पर मेरी दृष्टि में यह उनके चरित्र की एक विशेषता थी। न्यायालयों के द्वार खटखटाने में अवश्य ही उनकी मानसिक शान्ति में विघ्न भी आये होंगे, किन्तु यह मूल्य चुकाना भी उन्होंने स्वीकार किया और सत्य को उद्घाटित करते रहे। यह दृढ़ता उनकी असाधारणता की प्रतीक है।

उन्होंने जीवन को जिया और उसकी सम्पूर्णता के साथ जिया। श्वास का कष्टसाध्य रोग उनके शरीर को तो सताता रहा, पर उनके मन को व्यथित नहीं कर पाया। वे चिन्ताओं और दुखों में से भी सुख के क्षण ढूँढ लेते थे और फिर वही चिरपरिचित मुस्कुराहट उनकी मुखमुद्रा पर नाचने लगती थी। कभी भूले से भी उन्होंने अपने मुख को मन का दर्पण नहीं बनने दिया। उनके विचारों का अनुमान लगा लेना सहजशक्य न था। वे भाँप लेते थे पर भाँपे नही जा सकते थे। सच तो यह है कि वे एक ऐसी किताब की तरह थे जिसे पूरी पढ़ लेने का दावा कोई नहीं कर सका। □

—ओसवाल कोठारी मौहल्ला, बीकानेर



पितृ-स्नेह प्रदाता

— श्री भूपेन्द्र वया —

जवाहर विद्यापीठ के संस्थापक आदरणीय बांठिया सा. का नाम स्मृति पटल पर आते ही अनेक स्मृतियां मुखरित होने लगती हैं। छोटी सादड़ी के पन्द्रह साथियों सहित यहां सन् ४६-४७ में अध्ययन के दौरान पं. श्री महेश चन्द्र जी व पं. श्री पूर्णचन्द्र जी दक की छत्रछाया थी। मेवाड़ से दूरस्थ इस छात्रावास में हमें अपने घर का वातावरण सहित आत्मीय स्नेह उपलब्ध था।

उन दिनों सेठ सा. विद्यापीठ के दक्षिणी भाग की हवेली में विराजते थे और दिन में दोनों समय यहां पधार कर सूक्ष्म निरीक्षण करते थे। हमें किस प्रकार का खाना व दूध दिया जा रहा है इसे वे प्रत्यक्षतः देखते थे। किसी प्रकार की कमी अनुभव होने पर इस सम्बन्ध में गृहपतिजी व रसोईये को आवश्यक निर्देश/आदेश फरमाते थे। रात्रि को भी एक बार पधार कर ध्यान रखते कि हम वास्तव में अध्ययन कर रहे हैं या नहीं।

प्रति शनिवार रात्रि में आयोजित सभा में सेठ सा. भी पधारते एवं हमारे उत्साह में वृद्धि करते थे। यही नहीं, किस प्रकार भाषण, संगीत, कविता, मनोरंजन का कार्यक्रम रखा जाय एतदर्थ परामर्श भी प्रदान करते।

आज भी सेठ सा. का स्मरण कर श्रद्धावनत हूँ। गरीबों के वे मसीहा थे; किसी छात्र के पास यदि पर्याप्त वस्त्र, बिस्तर आदि न होते तो अपने यहां से व्यवस्था करवाते। बच्चों को पितृ तुल्य स्नेह प्रदान करना तो उनका स्वभाव था।

सेठ सा. की सरलता व आत्मीयता को स्मरण करने पर उनकी अनुशासन प्रियता भी नहीं भूल सकते। छात्र का दुःख-दर्द सुनने के लिए उनके द्वार सदैव खुले रहते परन्तु कोई भी अनुशासनहीन हो उन्हें बर्दाश्त न था। उनके व्यक्तित्व में ही ऐसा प्रभाव था कि हम अपनी मर्यादा में ही रहते।

ऐसे पितृ-स्नेह प्रदाता को शतशः नमन। ईश्वर उनके परिजनों को प्रगति पथ में अग्रसर करता रहे। □

—शीतला माता मन्दिर

छोटी सादड़ी (राज.)



अविस्मरणीय पूज्य काका साहब

— श्री हजारीमल बाँठिया —

पूज्य काका साहब श्री चंपालाल जी बाँठिया से मेरा सम्बन्ध बचपन से रहा है। आज से लगभग पचास वर्ष पहले भाई श्री खेमचंद जी सेठिया के साथ उनसे प्रथम बार मिला —जब मैं 'वीर पुत्र'बालोपयोगी मासिक पत्रिका (अजमेर) के संपादक-मंडल में था। मैंने भाई शांति को इसका ग्राहक बनाने के लिये अनुरोध किया तो तुरन्त शांति को बुलाया उसको पत्रिका का ग्राहक शुल्क देकर बना दिया। कई दिनों बाद मुझे पत्र लिख कर भेजा—'वीर पुत्र, बराबर आता है —चि. शान्ति को बहुत पसंद आया है।' वह पत्र आज भी पूज्य काका साहब के हाथ का लिखा तिजोरी में सुरक्षित रखा हुआ है। उनकी जागरूकता व सत्साहित्य के प्रति लगाव इससे स्पष्ट झलकता है।

वि. सं. २००० में हम लोगों ने भारतीय मित्र परिषद् का वार्षिक उत्सव सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्र कुमार जी की अध्यक्षता में बीकानेर में मनाया। स्वनाम धन्य सेठ 'बाबूजी' भैंरूदान जी सेठिया मुख्य अतिथि थे। स्वागताध्यक्ष थे श्री ज्ञानपाल जी सेठिया और प्राचीन वस्तुओं की प्रदर्शनी का उद्घाटन किया मेरे पूज्य मामाजी श्री अगरचंदजी नाहटा ने। इस अवसर पर आयोजित 'मनोरंजन सम्मेलन' की अध्यक्षता पूज्य काका साहब ने की। काका साहब हम लोगों के इस भव्य कार्यक्रम से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने दस हजार रूपये भारतीय मित्र परिषद् को देने की घोषणा कर दी, जिसका मैं प्रधान मंत्री था—भाई श्री माणकचंद जी सेठिया अध्यक्ष थे।

कई दिनों बाद काका साहब ने मुझे भीनासर बुलाया और दस हजार रुपये ले जाने को कहा। मैंने विनम्रता से मना कर दिया-हम इनका क्या करेंगे? उस वक्त तो हमारा विद्यार्थी जीवन है —यह सब काम शौक से कर रहे हैं —कुछ दिनों बाद पढ़ाई छोड़कर रोजगार धंधे वास्ते — कहां चले जावेगें ठीक नहीं, इन रुपयों की कौन देख-भाल करेगा? सुप्रसिद्ध कथाकार और उपन्यासकार स्व. श्री शंभूदयाल जी सक्सेना जो हमारी परिषद् के परामर्शदाता थे—उनके परामर्श से हमने बालोपयोगी शिक्षाप्रद ट्रेक्ट माला प्रकाशित करने की योजना बनाई और पहली पुस्तक 'बालकों के प्रश्न' प्रकाशित की जिसके लिये रु. १५०) मैं काका साहब से लाया और उन्हें विश्वास दिलाया जैसे जैसे जरूरत होगी लेते जावेंगे। ऐसे थे उदार मना काका साहब।



काका साहब सुधारवादी थे। उन दिनों तेरापंथी समाज में बाल दीक्षाएं विशेषकर होती थी। निरे अबोध बच्चों को बहला-फुसलाकर साधु दीक्षा दे देते थे—फिर जब वे बड़े होते पचास प्रतिशत अपने घरों को लौट जाते थे। काका साहब उन दिनों बीकानेर एसेम्बली के एम. एल. ए. थे साथ में पू. लहरचंद जी सेठिया भी एम. एल.ए. थे। पूज्य काका साहब 'बाल दीक्षा' न हो इस के विरोध में एक बिल का प्रस्ताव एसेम्बली में लाये, जिसको समस्त भारत में व्यापक समर्थन मिला—सभी शिक्षा विदों एवं न्याय विदों ने इसके पक्ष में राय दी। जन जागरण हुआ—तेरापंथी समाज में विशेषकर खलबली मच गई। मुझे वे दिन अच्छी तरह याद हैं। काका साहब पर जगह जगह से तेरापंथियों के दबाव आये वे इस बिल को वापिस करलें। किन्तु वे अडिग रहे। एसेम्बली में पूरा समर्थन मिला वह बिल पास हो जाता किन्तु महाराजा बीकानेर को तेरापंथी समाज ने येनकेन प्रकारेण प्रभावित कर दिया था। दीवान साहब के विशेष अनुरोध पर उनको यह बिल वापिस लेना पड़ा। दीवान साहब ने पूज्य काका साहब की सूझ-बूझ और कानून की जानकारी की प्रशंसा की और कहा —बाँठिया साहब नैतिक विजय तो आपकी हो गई है चाहे बिल पास एसेम्बली में न हो सका। इस बिल के कारण तेरापंथी समाज में भी जागृति आई और अब तो पूरा परिपक्व ज्ञान होने पर ही इस समाज में दीक्षायें होती हैं। यही कारण है कि आज इस समाज में बड़े बड़े मनीषी विद्वान हैं और जैनाचार्य श्री तुलसी ने अपने समाज और समस्त भारतीय समाज को नई दिशा दी है।

काका साहब शिक्षा प्रेमी एवं समाज सेवी थे। पूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज साहब की अंतिम दिनों में काका साहब ने जो सेवायें अर्पित की वह सदा स्मरणीय रहेगी। महाराज साहब के स्वर्गवास के बाद 'जवाहर विद्यापीठ' की स्थापना भीनासर में की और जवाहर किरणावली के नाम से अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया। भीनासर में स्थानकवासी साधु-सम्मेलन आप ही की पूर्ण निष्ठा एवं लग्न के कारण सफल हुआ। मुझे वह दिन भी याद है जब काका साहब जैन गुरुकुल पंचकूला के वार्षिक उत्सव में अध्यक्ष के नाते पधारे थे। उन दिनों पू. जवाहर लाल जी महाराज साहब की समुदाय में बीकानेर राज्य में दो ही प्रमुख स्तम्भ थे —पूज्य बाबूजी (भैंरूदान जी सेठिया) और काका साहब।

पिछले अनेक वर्षों से उत्तर-प्रदेश में प्रवास के कारण काका साहब से सम्पर्क कम होता गया। किन्तु पिछले दशक से 'बांठिया डाइरेक्टरी' के कारण काका साहब से कई बार मिलना हुआ। उनको बड़ी प्रसन्नता हुई—भारत के समस्त बाँठिया परिवार का



इतिहास लिखा जा रहा है। मैंने उन्हें बताया समस्त भारत में बाँठिया गौत्र के संख्या में घर एक हजार से अधिक नहीं है किन्तु इस गौत्र के घरों की विशेषता हैं—जहां भी हैं वे अपने गांव में प्रमुख हस्ती हैं। अपना विशेष प्रभाव रखते हैं। उदार वृत्ति के हैं। अपने समय के दानी और शूर वीर जगदेव पंवार के वंशज होने के नाते इस गौत्र में दान देने की उदारता है। अमर शहीद अमरचंदजी बाँठिया के बलिदान, दीवान जसवंतसिंह जी बाँठिया के प्रशासकीय गुणों, श्री कस्तूरमल जी बाँठिया की लेखनी को समस्त भारत नहीं भुला सकता। समस्त ओसवाल समाज में ७७ दानवीर अब तक हुए हैं जिनमें भुजनगर वासी तेजपाल बाँठिया का भी नाम है। पूज्य काका साहब ने बताया —'हमारे पूर्वज भी बाहर से आकर भीनासर में बस गये थे। छत्ते के व्यापार में हमारा फर्म भारत में 'मौजीराम पन्नालाल' अग्रणी था। भीनासर की पक्की सड़कें भाई जी कानीराम जी ने बनाये थे। वे आगमों के ज्ञाता थे एवं साधु-साध्वियों को पढ़ाते थे।'

एक दिन काका साहब ने बताया—मैं भाग्यशाली रहा। मुनीम व भागीदार मुझे अच्छे मिले। मेरी बीसों दुकानें बंगाल, आसाम व बीकानेर में भी रही। सभी ने मुझे कमा कमा कर दिया। मैं कभी व्यापार करने नहीं गया। सब फर्मों के रोजनामचे यहां आते रहते हैं उन्हीं से मैं बहीखाता स्वयं बनाता हूँ। महाजनी बहीखातों का मैं पूरा मास्टर हूँ।

अंतिम दिनों में मैं उनसे कलकता में भाई शांतिलाल के घर मिला था। पीछे भीनासर में जब वे रविवार को दूरदर्शन का कार्यक्रम चि. सुमति के साथ देख रहे थे।

पूज्य काका साहब बड़े निर्भीक सुलझे हुए विचारों के उदारतावादी मानव थे। who's and who पुस्तक, जिसमें भारत के अग्रणी पुरुषों के परिचय छपते हैं, में काका साहब को आदर भाव से स्मरण किया है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है चि. सुमति भी उनकी यश पताका को फहराने में अग्रणी होकर कार्य कर रहा है। □

—५२/१६ शक्करपट्टी, कानपुर (उ.प्र.) २०८००१



चतुर्विध संघ के जागरूक प्रहरी

— श्री मिट्ठालाल मुरड़िया, 'साहित्यरत्न' —

समाज में कुछ व्यक्ति बड़े ही प्रभावशाली होते हैं, जो अपनी आन, बान और शान के साथ जीते हैं, अपनी मर्यादाओं, अपने संकल्पों और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जीवन-संग्राम में सदा आगे रहते हैं। प्रामाणिकता, सच्चाई और न्यायनीति पर चलते हुए वे अपना जीवन पवित्र और मंगलमय बनाते हैं। ऐसे व्यक्ति दृढ़ निश्चयी होते हैं, संकटों और बाधाओं से नहीं घबराते और हिम्मत नहीं हारते हैं, बल्कि अपने साहस और आत्मशक्ति से मुकाबला कर सफलता प्राप्त करते हैं। ऐसे ही कर्मशील और धर्मशील व्यक्तियों में भीनासर (बीकानेर) निवासी स्वनाम धन्य श्री चम्पालाल जी बाँठिया का स्थान सर्वोपरि है। वे समाज और धर्म के रंगमंच पर बड़े ठाठ, प्रसन्नता और हर्षोल्लास के साथ आये, जीये और उसी ठाठ के साथ मुस्कराते हुए चल दिये।

विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी

श्री बांठिया जी विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी थे। उनका प्रभावशाली और आकर्षक व्यक्तित्व गत ५० वर्षों तक समाज पर छाया रहा, वे जीवन के गहरे पारखी प्रतापी पुरुष एवं चतुर्विध संघ के जागरूक प्रहरी थे। उनका बुद्धिबल अनूठा था; वे विचक्षण बुद्धि के विवेकवान, धैर्यवान और प्रभावशाली व्यक्ति थे। इन्हीं गुणों के कारण वे लम्बे समय तक समाज के सम्माननीय बने रहे और अपनी निरन्तर सेवा देते रहे। उनके व्यक्तित्व का निर्माण धर्म के अनूठे उपादानों, न्याय के पावन स्रोतों, दृढ़ता के अनन्य भावों, प्रेम और एकता के अनुदानों और कल्याण के अनुपम संकल्पों से हुआ था। वे समाज और धर्म की हस्ती एवं दीनों के दर्द निवारक स्तम्भ थे। इतिहास में उनके जैसी चमकवाला व्यक्तित्व ढूंढ़ने पर ही मिलेगा।

गौरवशाली पुरुष

श्री बाँठियाजी समाज के गौरवशाली पुरुष थे। उन्हें अधिक बोलना पसन्द नहीं था, किन्तु बड़े प्रेम के साथ सभी की बात सुनते थे। जब वे एक बार किसी बात का दृढ़ निश्चय कर लेते थे, तब फिर कोई ताकत उन्हें विचलित नहीं कर सकती थी। उनका आत्म विश्वास बड़ा प्रबल था; वे गम्भीर प्रकृति के शान्ति और संतोष-प्रिय व्यक्ति थे।



उनकी वाणी में माधुर्य था, उनके व्यक्तित्व में एक ओज, एक तेज एवं आकर्षण ही नहीं एक प्रेरक प्रभाव भी था। अपनी चिर परिचित वेशभूषा में वे सदा चतुर्विध संघ में पहिचाने जाकर आदर पाते रहे। सच पूछा जाय तो उनका जीवन बड़ा व्यवस्थित, संतुलित, संयमित और सुन्दर था।

उनमें जीवन जीने की एक अद्भुत कला थी। वे कला और सौंदर्य के पारखी तथा साहित्य के उपासक थे। समाज के हित चिन्तन में वे कभी पीछे नहीं रहे और कभी किसी पर अवलम्बित नहीं वने। धर्म और समाज के लिए उनका महत्वपूर्ण योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। वे बाँठिया परिवार के यशस्वी पुरुष थे। विद्वानों के प्रति उनके दिल में आदर भाव था, वे जो कहते थे, कर दिखाते थे; उनके लिए कोई कार्य असंभव नहीं था। उनकी दृढ़ता का सिक्का सभी ने स्वीकार किया था, जब तक इस धरा पर जैन समाज रहेगा, तब तक उनकी कीर्ति-कथा अमर रहेगी।

अलंकृत होते रहे

उनके सम्मुख साधु सम्मेलन हुआ, ब्यावर गुरुकुल का अधिवेशन हुआ, भीनासर सम्मेलन हुआ, जवाहर विद्यापीठ का संचालन आया, चतुर्विध संघ की समस्याएं उभरी, किन्तु इस दूरदर्शी व्यक्तित्व ने सभी समस्याओं का समाधान अपनी विवेक बुद्धि से किया और ससम्मान अपने पदों को बेदाग अलंकृत करते रहे। यह अपने आपमें एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

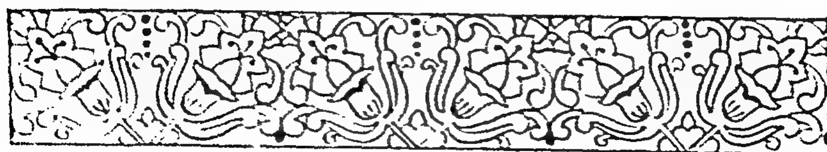
मित्रों के सत्संग से, सन्तों के समागम से, ज्ञानियों से, विद्वानों से, तत्त्व चिन्तकों से, वकीलों से और समाज के अग्रगण्यों से बहुत कुछ सीखकर लाभान्वित होते रहे।

माननीय श्री भैरोंदान जी सेठिया, श्री सतीदासजी तातेड़, श्री हनुमतमल जी सेठिया आदि से परामर्श कर ही किसी काम में हाथ डालते थे।

उनका चमकता हुआ चेहरा, सुन्दर, सुसज्जित उनकी ठेठ पारम्परिक पगड़ी, धोती, उनका आचार-विचार जैन सम्मत और जैन संस्कृति के प्रतीक थे। अपनी कार्य कुशलता, सेवा, मृदुता, मैत्री और सौजन्य के माध्यम से भीनासर, गंगाशहर और बीकानेर के वे लब्धप्रतिष्ठित नागरिक बन गये थे।

स्वभाव में समता की सौरभ

श्री बांठियाजी स्वभाव से बड़े सरल और स्वाभिमानी व्यक्ति थे, उनमें सौजन्य, मैत्री, प्रेम, एकता कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे आधुनिक युग की सभी बुराइयों और बीमारियों से बचे हुए एक आदर्श श्रावक थे।



उनमें समता की सौरभ थी, दया की महक थी, करूणा की आर्द्रता थी, क्षमा की भद्रता थी, वे जागृत थे और जीवन भर जागृत रहे; पचासों को उन्होंने जगाया बनाया और समृद्धि के द्वार तक पहुँचाया। उनकी बैठक में लगा मुनि श्री शान्ति विजय जी का फोटो भी महत्वपूर्ण रहा है।

आचार्य श्री जवाहर के अनन्य भक्त

आचार्य श्री जवाहर के वे अनन्य भक्त थे, उनकी भक्ति भावना सच्ची और निस्वार्थ थी। जवाहराचार्य के सम्पर्क में आने के बाद भी बांठिया जी का जीवन ही बदल गया था। उनके दिल में दया और करूणा का उद्रेक हो गया था। धर्म में उनकी सच्ची लगन थी सभी उपलब्ध वैज्ञानिक उपलब्धियों का उपयोग करते हुए भी वे सच्चे मानव और मानवता के पुजारी थे। वे जीवन भर निर्भीक रहे, और सभी को निर्भीकता का पाठ पढ़ाते रहे; कभी किसी संदेह से आक्रान्त नहीं हुए। वे कान की अपेक्षा आँख पर अधिक विश्वास करते थे।

अंध श्रद्धा, अंधभक्ति और आडम्बर के खिलाफ वे लड़ते रहे, जूझते रहे और अपने अदम्य उत्साह से सफलता प्राप्त करते गये। उनके कार्य क्षेत्र पर उनकी प्रखर बुद्धि, अनुभव और आत्म विश्वास शंखनाद करता हुआ उन्हें गौरवान्वित करता रहा।

उनकी जिन्दा दिली के कई प्रसंग आज भी मेरे प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

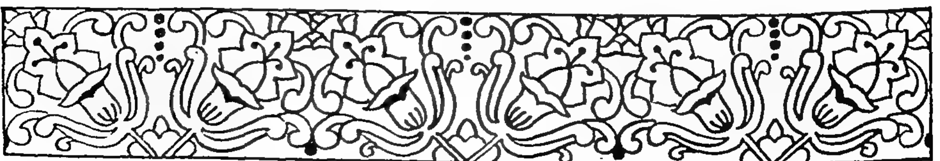
सच्चे गुणग्राही

आधुनिक जैन समाज के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जवाहर साहित्य पर उन्हें श्रद्धा थी, उसके प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने काफी प्रयत्न किया था।

कानोड़ के पं. पूर्णचन्दजी दक, दिल्ली के डा. इन्द्रचन्दजी शास्त्री और ब्यावर के प. शोभाचन्दजी भारिल्ल पर उनकी श्रद्धा थी, इनके परामर्श से ही धार्मिक कार्यों में भाग लेते थे।

देश की बदलती हुई परिस्थितियों का भी उन्हें गहरा ज्ञान था। वे गुणग्राही थे और स्वयं गुणी बन गये थे।

रतलाम के श्री वर्धमानजी पीतलिया, जयपुर के श्री दुर्लभजी जौहरी, बम्बई के श्री T. G. शाह, बरेली के श्री रतनलाल जी नाहर, मद्रास के श्री इन्द्रचन्दजी गेलड़ा, वम्बई के श्री चिम्मनलाल चवकुभाई शाह और अपने बड़े भ्राता का श्री बांठिया जी के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।



उनका पारिवारिक जीवन बड़ा सुखी था, सर्वत्र सद्भावना और सौहार्द था। श्री बांठियाजी जिस व्यक्ति पर एक बार विश्वास कर लेते थे, जीवन भर उस व्यक्ति पर उनका विश्वास बना रहता। आज वे नहीं हैं, किन्तु उनके जीवन की सौरभ सर्वत्र फैली हुई है।

कुछ समय पहले बेंगलोर के फिलोमिना हॉस्पिटल में—मैं उनसे मिलने गया था, वे अस्वस्थ थे, न मैं उन्हें पहचान सका, न वे मुझे। कुछ ही क्षणों बाद पहचान की धुंधली स्मृति हटते ही बिना बोले ही दोनों ओर से अश्रु धारा बह चली। यह था उनके जीवन का सच्चा और बोलता हुआ मर्म स्पर्शी जिसे कभी नहीं भुलाया जा सकेगा। ☐

—श्री ह.मु. जैन छात्रावास नं. २०, प्रीमरोज रोड़, बेंगलोर-२५

समन्वय एवं प्रगति के उद्घोषक

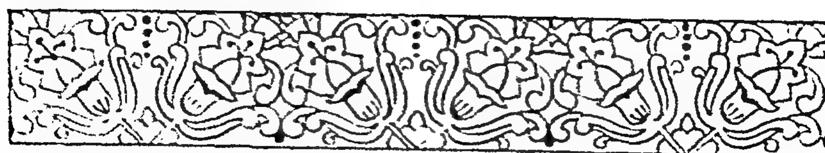
— श्री मान सिंह वैद —

श्री चम्पालाल जी साहब जैन धर्म के इतिहास में समन्वयवाद की शृंखला की एक कड़ी थे। वे बहुत तत्वज्ञानी थे अपने गहन चिन्तन मनन से वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सम्प्रदायवाद बुरा नहीं है साम्प्रदायिकता बुरी है।

वे कहा करते थे—

'हम सब भगवान महावीर के अनुयायी हैं हमारा मंत्र एक है हमारा लक्ष्य एक है हमारे में साम्प्रदायिकता नहीं झलकनी चाहिये।' रूढ़िवादिता उन्हें कतई पसन्द नहीं थी। वे बड़े स्पष्टवादी थे— उनकी सहज ऋजुता उनके उदय का रहस्य था और उनका बाल-सुलभ हृदय ही उनके मुक्त स्मित का हेतु था। उनकी जीवनी से हमें इस शृंखला को आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिलेगी। ☐

—सागर भवन, १४७ प्रिन्सेस स्ट्रीट बम्बई-२



कुशल व्यापारी एवं समाज सुधारक बांठियाजी

— डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा —

१९वीं सदी के सातवें दशक के पश्चात-राजस्थान में भी समाज सुधार की दिशा में प्रयत्न प्रारंभ हो गये थे। मेवाड़ में देश हितकारिणी सभा ने जहां राजपूत, ब्राह्मण व महाजन जाति में विवाह सम्बन्धी कुरीतियों को दूर करने के लिये अनेक नियम बनाये। तदनन्तर कुछ समय पश्चात अंग्रेज अधिकारी वाल्टर के प्रयत्नों से विवाह को लेकर राजपूतों में जो कुरीतियां प्रचलन में थी, उनमें सुधार करने का प्रयत्न किया गया।[१] इसी समय राजस्थान में स्वामी दयानन्द ने जिस प्रकार से आर्य समाज का प्रचार किया, उससे सामाजिक कुरीतियों के विरोध में जनजागरण पैदा करने में बड़ी सहायता मिली। २०वीं सदी आते-आते आवागमन के साधनों के विकास के साथ राजस्थान से निष्क्रमण करने वाले मारवाड़ियों की संख्या बढ़ने लगी तथा दूसरी और अंग्रेजी भारत से पढ़े लिखे लोग अच्छे रोजगार के लालच में राजस्थान के राज्यों में अबाध गति से आने लगे। निष्क्रमण किये हुए व्यापारियों और अंग्रेजी भारत से राज्यों में आने वाले पढ़े-लिखे लोगों पर देश में चल रहे समाज सुधार का व्यापक प्रभाव पड़ रहा था। इसका परिणाम था कि राजस्थान में समाज सुधार के लिए जनसाधारण भी प्रयास करता नजर आने लगा।[२] इस पत्र में मैं उन मारवाड़ी व्यापारियों की जानकारी दे रहा हूँ, जिन्होंने समाज सुधार की दृष्टि से क्रान्तिकारी कार्य किये। राजस्थान में प्रायः सभी राज्यों में अनेक मारवाड़ी व्यापारी हुए हैं जिन्होंने अपने-अपने समाज में बाल विवाह, वृद्ध विवाह, बाल दीक्षा, ओसर-मोसर का विरोध व विधवा विवाह व अन्तर्जातीय विवाह आदि के लिये प्रयत्न किये थे। उन सबका यहां वर्णन करना संभव नहीं है। अतः यहाँ हम केवल बीकानेर से सम्बन्धित स्वतन्त्रता पूर्व के मारवाड़ी व्यापारियों द्वारा समाज सुधार की दिशा में किये गये प्रयत्नों पर प्रकाश डालेंगे।

अंग्रेजी भारत में रहकर जब राज्य का व्यापारी अपने मूल राज्य में आता और अपने समाज में व्याप्त कुरीतियों को देखता तो उसकी इच्छा होती कि अंग्रेजी भारत की भांति यहां भी इन परम्परागत रूढ़ियों में कुछ सुधार होने चाहिये।[३] यहां यह उल्लेखनीय है कि इस सोच के सभी मारवाड़ी नहीं थे बल्कि इनकी संख्या गिनती की ही होती थी। बीकानेर में महाजन जाति के इन मारवाड़ी व्यापारियों में सेठ रामकृष्ण मोहता, सेठ



वालचन्द मोदी, सेठ रामगोपाल मोहता, सेठ श्री कृष्णदास जाजू, सेठ चम्पालाल वांठिया, सेठ खूवराम सर्राफ आदि के नाम उल्लेखनीय थे।

वीसवीं सदी के दूसरे दशक के पश्चात् अपनी-अपनी जातियों यथा ओसवाल, माहेश्वरी, अग्रवाल व सरावगी आदि में मारवाड़ियों ने समाज सुधार की दृष्टि से कुछ प्रयत्न किये फिर भी स्वजाति के विरोध के फलस्वरूप उन्हें सफलता नहीं मिली। किन्तु राज्य का मोहता परिवार स्वजाति वन्धुओं के विरोध के वावजूद समाज सुधार से विमुख नहीं हुआ। सन् १९२३ में जयपुर राज्य के विड़ला परिवार के एक सदस्य सेठ रामेश्वरदास विड़ला ने अपनी पूर्व पत्नी के स्वर्गवास होने पर खुर्जा निवासी श्री वालमुकन्द झँवर की पुत्री के साथ दूसरा विवाह कर लिया। श्री झँवर कोलवार जाति से सम्वन्धित थे। इस विवाह सम्वन्ध से माहेश्वरी समाज में एक सामाजिक आन्दोलन शुरू हो गया। समाज का एक वर्ग कोलवारों को डीडू माहेश्वरी नहीं मानता था। उस पक्ष ने विड़लाओं और उनके साथ सम्वन्ध रखने वालों के सामाजिक वहिष्कार का प्रचण्ड आन्दोलन आरंभ कर दिया। उसने धीरे-धीरे देश व्यापी-संघर्ष का भयानक रूप धारण कर लिया। कलकत्ता में इस संघर्ष को माहेश्वरी जाति की पंचायत और संघ के कलह का भीषण रूप दे दिया तथा उनके नाम से सारा माहेश्वरी समाज दो दलों में वँट गया। कोलवारों को दोनों ही पक्ष माहेश्वरी मानने को तैयार नहीं थे और उनके साथ विवाह सम्वन्ध रखने के कारण विड़लाओं का सामाजिक वहिष्कार किया हुआ था। किन्तु विड़ला परिवार ने इस आन्दोलन की कोई परवाह नहीं की।[४] ऐसे समय में वीकानेर के मोहता परिवार ने विड़लाओं से विवाह सम्वन्ध करके समाज की परवाह नहीं की। इसके पश्चात् सन् १९२७ में पंढरपुर में अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी सम्मेलन में, जिसकी अध्यक्षता स्वयं रामगोपाल मोहता ने की थी, अन्य माहेश्वरी वन्धुओं यथा सेठ गोविन्ददास मालपाणी व सेठ वृजलाल वियाणी आदि के सहयोग से श्री मोहता ने माहेश्वरी समाज में उठे कोलवार आन्दोलन को जिसमें कोलवारों से अन्तर्जातीय विवाह का विरोध चल रहा था, समाप्त करने के लिये कोलवारों के माहेश्वरी होने की घोषणा करके, उनके साथ रोटी-वेटी को वैध करार दिया गया। कोलवारों के अलावा गुजरात तथा दक्षिण भारत में रहने वाले सभी माहेश्वरियों के साथ रोटी-वेटी का सामाजिक व्यवहार खोला गया जो किसी कारण से पूर्व में वन्द हो गया था।[५]

कुछ समय पूर्व ही श्री रामगोपाल मोहता की धर्मपत्नी का देहान्त हो गया। उस समय श्री मोहता की अवस्था ५० वर्ष की थी। अतः घर वालों का दवाव था कि कोई सन्तान न होने के कारण उन्हें पुनर्विवाह कर लेना चाहिये। इस पर विधवा विवाह के



पक्षधर श्री मोहता ने अपने छोटे भ्राता मूलचन्द मोहता, जिसकी मृत्यु कुछ समय पूर्व हो गई थी की विधवा से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। घरवालों की तरफ से उनका कोई विरोध नहीं हुआ और यह विवाह सम्पन्न हो गया। माहेश्वरी समाज में संभवतः यह पहला विधवा विवाह था। श्री मोहता विवाह करके ही सन्तुष्ट नहीं हुए उन्होंने मारवाड़ी समाज में विधवा के जीवन का सही चित्रण करते हुए 'अबलाओं का इन्साफ' नाम से पुस्तक का प्रकाशन किया और उसे लोगों तक पहुंचाने के लिये इलाहाबाद से निकलने वाले 'चाँद' में छपवा दिया। यहां यह उल्लेखनीय है कि चाँद के सम्पादक श्री रामरखसिंह सहगल श्री मोहता के मित्र थे। चाँद के इस अंक की मारवाड़ी, विशेष रूप से कलकत्ता के लोगों में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। कलकत्ता के समाचार पत्रों में श्री रामगोपाल मोहता और चाँद के सम्पादक के विरुद्ध अत्यन्त रोषपूर्ण और उत्तेजनापूर्ण लेख प्रकाशित हुए। चाँद पत्रिका का मारवाड़ियों ने बहिष्कार कर दिया। श्री मोहता के फोटो जलाये गये और जब चाँद के सम्पादक कलकत्ता गये तो उन पर हमला किया गया। राजनैतिक नेताओं, यहां तक कि महात्मा गांधी से भी चाँद के इस अंक के विरुद्ध फतवा जारी करवाया गया। सरकार पर भी इस अंक को जब्त करने के लिये जोर डाला गया, जिसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। पुस्तक की बिक्री पर इस सारे आन्दोलन का यह प्रभाव पड़ा कि पहला संस्करण हाथों हाथ बिक गया और दूसरा भी छपकर तैयार हो गया। इस अंक में सत्य घटनाओं के आधार पर विधवा महिलाओं पर होने वाले वीभत्स व गुप्त अत्याचारों की कहानी अत्यन्त करुण शब्दों में दी गई थी।[६]

श्री रामरखसिंह सहगल ने मारवाड़ियों की सामाजिक स्थिति का और अधिक भयानक चित्र खेंचने हेतु सन् १९२९ में चाँद का मारवाड़ी अंक निकाल दिया। कहा जाता है कि इसकी सामग्री जुटाने में श्री मोहता का हाथ था। इस अंक का भी मारवाड़ी समाज में भयंकर विरोध हुआ। समाज में श्री मोहता पर चाँद से अपने सम्बन्ध तोड़ लेने के लिये काफी दबाब डाला गया। किन्तु श्री मोहता इसके लिये तैयार नहीं हुए। उन्होंने इसके बाद अपने पुत्र के विवाह के अवसर पर चाँद के सम्पादक श्री रामरखसिंह सहगल को पांच हजार रुपये देकर मदद की।[७]

माहेश्वरियों की भाँति ओसवाल समाज में भी अनेक लोग हुए जिन्होंने समाज में आई कुरीतियों को दूर करवाने का प्रयत्न किया।[८] बीकानेर राज्य में भी राजस्थान के अन्य भागों की भाँति जैन श्वेताम्बरों के कुछ धड़ों में 'बाल दीक्षा' देने की परम्परा रही है। इनमें तेरापंथी सम्प्रदाय अग्रणीय रहा है। धनाढ्य लोगों के इस वर्ग में अनेक लोग 'बाल दीक्षा' के विरोधी हो गये और समाज में एक कुरीति मानते हुए इस प्रथा को



समाप्त करवाने हेतु वहुत प्रयत्न किया। सन् १९४२ में चुरू नगर में २८ नावालिंग भाई वहिनों की जैन धर्म के तेरापंथ सम्प्रदाय की रीति-नीति के अनुसार 'वाल दीक्षा' देने का कार्यक्रम वनाया। जव इस वर्ग के कुछ समाज सुधारकों को इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने इसका विरोध किया। इसमें फतैपुर (जयपुर) के सेठ सोहनलाल दूगड़ व वीकानेर के सेठ चम्पालाल वांठिया का नाम उल्लेखनीय था। श्री सोहनलाल दूगड़ ने महाराजा वीकानेर को एक प्रकाशित पत्र लिखकर भेजा और उसमें अपील की गई कि इन अशिक्षित वद्यों पर होने वाले इस अत्याचार को रोका जाये। इस पत्र में उन्होंने पहले प्रचलित वाल दीक्षा व वर्तमान में होने वाली वाल दीक्षा की कमियों को वतलाते हुए इस कार्यक्रम को रोकने की हमेशा के लिये अपील की।[९]

श्री चम्पालाल वांठिया जो वीकानेर राज सभा के सदस्य भी थे, ने सन् १९४३ में 'वाल दीक्षा' पर राज्य में प्रतिवन्ध लगवाने के लिये 'वाल दीक्षा प्रतिवन्धक विल' राजसभा, वीकानेर में प्रस्तुत किया। इसके लिये उन्होंने वाल दीक्षा के विरोध में काफी प्रचार-सामग्री प्रकाशित की। इस दृष्टि से उनके द्वारा प्रकाशित करवाई गई 'वाल दीक्षा विवेचन' उल्लेखनीय थी।[१०] इस पुस्तक में श्री वांठिया ने 'वाल दीक्षा' देने की विधि-विधान पर चर्चा करते हुए साधु वनाने के कानूनी पक्ष पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। सेठ चम्पालाल वांठिया द्वारा प्रस्तुत विल की देश भर में प्रतिक्रिया हुई। विल के पक्ष और विपक्ष में आन्दोलन छिड़ गया। इस विल को राज सभा में शीघ्र पास करवाने के लिये पं. श्यामा प्रसाद मुकर्जी व श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित ने तार द्वारा अपना समर्थन भेजा।'[११] इसी भांति अनेक लोगों ने वाल दीक्षा के पक्ष में वुकलेट छपवाकर प्रचारित करवाई।[१२] देश भर के अंग्रेजी और हिन्दी के समाचार-पत्रों ने पक्ष व विपक्ष में समाचार प्रकाशित किये।[१३] अन्त में जव १९४४ में विल पर वहस करने का समय आया तो तेरापंथ के अनेक लोग राज्य के शासक से मिले और धार्मिक हस्तक्षेप न करने हेतु विल पास न करने की अपील की। परिणाम स्वरूप महाराजा के इस प्रकार के आश्वासन दे दिये जाने के कारण यह विल पास न हो सका।[१४]

इसके अतिरिक्त स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् तो मारवाड़ी समाज में समाज सुधार की दिशा में अनेक कदम उठाये गये जिनमें मारवाड़ी व्यापारियों के संगठनों का सर्वाधिक योगदान रहा। इस प्रकार स्वतन्त्रता पूर्व वीकानेर राज्य के सेठ साहूकारों ने समाज सुधार के सम्वन्ध में उपरोक्त वर्णित जो प्रयत्न किये, उनके वड़े दूरगामी परिणाम निकले।



सन्दर्भ

१. डॉ. एम.एस. जैन—आधुनिक राजस्थान का इतिहास, पृ. २४७-८०

२. डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा—मारवाड़ी व्यापारी, आर्थिक एवं सामाजिक विश्लेषण पृ. १३१-१३२

३. सन् १६०७ में चुरू में स्वामी गोपालदास द्वारा स्थापित सर्व हितकारिणी सभा को स्थापित करने में राज्य के मारवाड़ी व्यापारियों का सर्वाधिक योगदान था। देखें —गोविन्द अग्रवाल, जन सेवक स्वामी गोपालदासजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ. ४६-६५

४. भानपुरा से निकले माहेश्वरी जाति के इतिहास में कोलवार आन्दोलन की विस्तार से चर्चा मिलती है।

५. सत्यदेव विद्यालँकार—एक आदर्श समत्व योगी, पृ. ४६-५४

६. वही, पृ. ८७

७. वही, पृ. ८८

८. अगर हम जैन धर्म के स्वेताम्बर सम्प्रदाय के समय-समय पर होने वाले विभाजन का अध्ययन करें तो पता चलता है कि प्रत्येक विभाजन जैन धर्म की कठोरता से छुटकारा पाने के उद्देश्य से हुआ। इसके अतिरिक्त अगर हम जैनों में महात्मा जाति का विश्लेषण करें तो यह जैन जाति में सुधार आन्दोलन का प्रतीक माना जा सकता है।

६. महाराजा बीकानेर से अपील-लेखक, श्री सोहनलाल दूगड़, दिनांक २६-१०-१६४२, (कल्याण प्रेस, सीकर में मुद्रित)

१०. बाल दीक्षा विवेचन, लेखक पं., इन्द्रचन्द्र शास्त्री, प्रकाशक चम्पालाल वांठिया, मार्च, सन् १६४४ (कलकत्ता)

११. वही

१२. इस बिल के विरोध में लिखी जानी वाली पुस्तक में 'वाल दीक्षा और जैनागमन' लेखक श्री चन्द रामपुरिया, प्रकाशक श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, २०१ हरिजन रोड़ कलकत्ता, उल्लेखनीय थी।

१३. इस बिल की देश के जिन समाचार-पत्रों में चर्चा हुई, उनमें नेशनल काल, दिनांक १५-६-१६४४; हिन्दुस्तान टाईम्स, दिनांक १७ जून, १६४४; वीर अर्जुन, १७ जून, १६४४, १३ अगस्त, १६४४, २६ अगस्त, १६४४; दैनिक विश्वामित्र, २४ अगस्त, १६४४

१४. होम डिपार्टमेन्ट, बीकानेर, १६४४, नं. VII, पृ. १-१०३ (रा.रा.अ.बी.) ☐

—सहायक निदेशक,

राज. राज्य. अभिलेखागार, बीकानेर



गागर में सागर

— श्री अन्नाराम 'सुदामा' —

मैं जब पहुँचा तो वे अपनी वही में कुछ लिख रहे थे—बड़ी तन्मयता से। अकेले ही थे। उनके चारों ओर नीरवता बिखरी थी। सहसा पद चाप का कुछ आभास पा, आँखें उनकी ऊपर उठी। चार मिले चौंसठ खिलें, की सुखद छाया में, राम-रमी हुई उनसे। चश्मा उतार कर उन्होंने एक ओर रख दिया, बड़े सहज भाव में बोले, 'पधारो माट्साब, विराजो।'

मैं एक ओर बैठ गया।

होंठ उनके फिर खुले, 'सुनाओ कोई नई-जूनी ?'

कुछ संकोच और सदाशय में मैंने कहा, 'नई तो साब, इस समय ध्यान में कोई है नहीं, और जूनी आप मेरे से अधिक जानते हैं, क्या सुनाऊँ ?'

'सुनाने में भी कंजूसी तो देने में तो आपसे कोई क्या निकलवाले ?' और इसके साथ ही एक सहज हँसी उनके होठों पर उछलती कमरे के आकाश में फैल गई।

'सुनाने की तो लाचारी ही समझें, हाँ आपसे कुछ सुनने की इच्छा इस समय जरूर प्रबल हो रही है—समय दे सकें तो!'

'गाड़ी चलती है तब तक तो समय ही समय है, फरमावो क्या सुनाऊँ ?' और मुस्कराहट उनके होठों पर फिर अपनी पूरी लम्बाई में फैल गई।

'इस समय आयु आपकी' ?

'बयासी ही समझो आप।'

'इस उम्र में भी लिखा-पढ़ी करते हैं ?'

'आप देख ही रहे हैं, कर तो रहा हूँ। अपने काम को खुद जैसा भरोसेमंद और सन्तोषप्रद, मुनीम-गुमाश्ता कोई क्या करेगा ?'

'शरीर पूरी तरह स्वस्थ है ?'

'दमे की बीमारी है, आज की नहीं बहुत पुरानी पर है उसके लिए चिन्ता करने में मुझे विश्वास नहीं, विश्वास है उसके इलाज में। दवा लागू पड़ गई है, समय पर वह



ले लेता हूँ, सावधानी भी रखता हूँ, बीमारी हावी नहीं होती—दबी रहती है, अंधे को दो आँखें चाहिए, अपना काम निकल जाता है—बस इतना बहुत है।'

'असाध्य बीमारी को लेकर आखिर चिन्ता तो कुछ रहती ही होगी?'

'एक सोखता तो धँसी बैठी है घर में पहले से ही, चिन्ता कर दो-चार नई और न्योतूं, क्या निकालूं इस समझदारी में, सकूंगा कितने दिन?' और एक हल्की-सी हँसी और नाच उठी उनके होठों पर।

'केस-मुकदमे भी तो आपके यदा-कदा चलते ही रहते हैं, उनकी परेशानी तो कुछ रहती ही होगी?'

'हाँ चलते हैं वे भी' हार-जीत भी होती ही है उनमें, व्यापार भी करते हैं, घाटा-मुनाफा भी होता ही है पर मैं हार-जीत और घाटे-मुनाफे को न साथ लेकर ही सोता और न वश पड़ते उन्हें अपनी थाली पर ही बैठने देता। हाँ, अनुकूलता के लिए कोशिश करने में अपनी ओर से पाछ कोई रखता नहीं। क्या होगा की चिन्ता ओढना न मुझे आता और न सुहाता।'

'घर में कभी तनाव?'

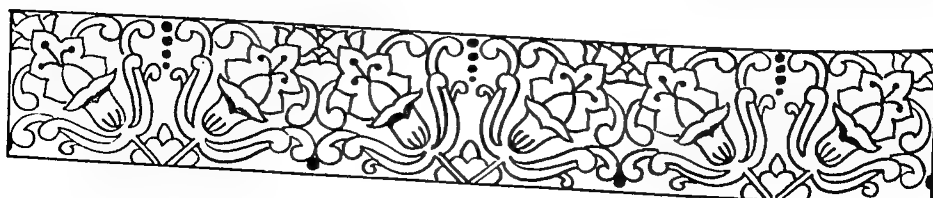
'अपनी सन्तान, अपनी पत्नी, अपनी बहुएँ पराया कोई है नहीं, तनाव फिर किससे? और तनाव किया पोसाता भी नहीं, हार में भी घाटा और जीत में भी। हाँ मौके-बेमौके आँख कभी मींचली और कभी दिखादी यह बात अलग है। तनाव में रहता, तो इतना शायद जीता भी नहीं, जी भी जाता तो समझो जीता ज्यादातर खाट पर ही, मैं भी धाप जाता और धाप जाते घर वाले भी। आगे नर्क है या नहीं, मैं तो यहाँ भोग ही लेता।' और फिर मुस्करा दिए।

'आपके लम्बे स्वास्थ्य का रहस्य?'

'असली रहस्य तो ईश्वर ही जानता है, मैं तो केवल इतना ही जानता हूँ कि घर-बाहर कहीं भी रहूँ, खाता-सोता समय पर हूँ। भूख से एक भी कौर अधिक नहीं लेता, चाहे वह अमृत ही हो।'

'मतलब, मन पर काबू है आपका?'

'मन पर काबू तो बड़ा मुश्किल है, कमजोरियाँ भी हैं, हैं वे हैं, सन्त तो मैं हूँ नहीं, साख भी रखनी पड़ती है और सामाजिकता भी, हाँ इतना जरूर है कि खाने-पीने और बोलने पर काफी हद तक काबू रखने की इच्छा रहती है न ओछा बोलना पसन्द



और न ओछा सुनना, भरोसा दे दिया किसी को तो घाटा-मुनाफा कुछ भी हो, फिर पीछे खिसकना मेरे स्वभाव में नहीं। और तभी एक नौकर आया। हाथ में उसके चावियों का एक गुच्छा था। वह कुछ उतावल में लगता था। गुच्छा उसने एक खूंटी पर टांगा और चलने लगा। उसकी ओर देखते उन्होंने उसे पूछा 'झूमका लिया किस खूंटी से था रे?'

पल भर दीवार की ओर देखते उसने धीरे से उत्तर दिया, 'साव उस परली खूंटी से।'

'तो फिर परली पर टाँग उसे, यहाँ क्यों टाँगता है?' झूमका उसने उतारा और सही जगह पर टाँग, चल दिया वह।

वे मेरी ओर देखते वोले, 'नियत जगह पर रखी चीज माट्साव, अन्धेरे में ही ठाई मिल जाती है—दिक्कत तनिक भी नहीं होती।'

'विल्कुल ठीक फरमाते हैं आप। औरों की तो साव, क्या कहूँ मैं, मुझे तो इसके अभाव में कभी-कभी वड़ी परेशानी भुगतनी पड़ती है। ऐन वक्त जूते कभी वारसाली में खोजता हूँ, कभी घर के पिछवाड़े में, इसे पूछता हूँ, उसे धमकाता हूँ, कोई नहीं वोलता, पारा वेमतलव ऊँचा चढ़ जाता है, खोजते-खोजते आखिर मिलते वे गाय के छप्पर में हैं।'

दो मिनट और वैठकर, मैंने कहा, 'इजाजत हो साव?'

'और इजाजत अभी नहीं दूं तो?' फिर उसी प्रथम-हँसी की पुनरावृत्ति-निरोग और निश्छल। स्वास्थ्य का काफी कुछ राज शायद इसी में हो, मैंने सोचा।

मैं उठा और चल दिया, खाली नहीं कुछ लेकर, जड़ नहीं-जीवन्त, एकपक्षीय नहीं, सवके लिए, अधिकस्य अधिकम् फलम् की तरह प्रिय, प्रेरक और पारदर्शी। □

—गंगाशहर (वीकानेर)



ले लेता हूँ, सावधानी भी रखता हूँ, बीमारी हावी नहीं होती—दबी रहती है, अंधे को दो आँखें चाहिए, अपना काम निकल जाता है—बस इतना बहुत है।'

'असाध्य बीमारी को लेकर आखिर चिन्ता तो कुछ रहती ही होगी ?'

'एक सोखता तो धँसी बैठी है घर में पहले से ही, चिन्ता कर दो-चार नई और न्योतूं, क्या निकालूं इस समझदारी में, सकूंगा कितने दिन ?' और एक हल्की-सी हँसी और नाच उठी उनके होठों पर।

'केस-मुकदमे भी तो आपके यदा-कदा चलते ही रहते हैं, उनकी परेशानी तो कुछ रहती ही होगी ?'

'हाँ चलते हैं वे भी' हार-जीत भी होती ही है उनमें, व्यापार भी करते हैं, घाटा-मुनाफा भी होता ही है पर मैं हार-जीत और घाटे-मुनाफे को न साथ लेकर ही सोता और न वश पड़ते उन्हें अपनी थाली पर ही बैठने देता। हाँ, अनुकूलता के लिए कोशिश करने में अपनी ओर से पाछ कोई रखता नहीं। क्या होगा की चिन्ता ओढना न मुझे आता और न सुहाता।'

'घर में कभी तनाव ?'

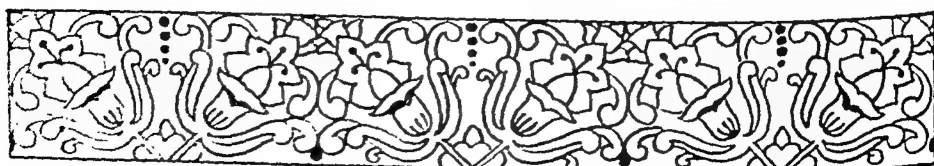
'अपनी सन्तान, अपनी पत्नी, अपनी बहुएँ पराया कोई है नहीं, तनाव फिर किससे ? और तनाव किया पोसाता भी नहीं, हार में भी घाटा और जीत में भी। हाँ मौके-बेमौके आँख कभी मींचली और कभी दिखादी यह बात अलग है। तनाव में रहता, तो इतना शायद जीता भी नहीं, जी भी जाता तो समझो जीता ज्यादातर खाट पर ही, मैं भी धाप जाता और धाप जाते घर वाले भी। आगे नर्क है या नहीं, मैं तो यहाँ भोग ही लेता।' और फिर मुस्करा दिए।

'आपके लम्बे स्वास्थ्य का रहस्य ?'

'असली रहस्य तो ईश्वर ही जानता है, मैं तो केवल इतना ही जानता हूँ कि घर-बाहर कहीं भी रहूँ, खाता-सोता समय पर हूँ। भूख से एक भी कौर अधिक नहीं लेता, चाहे वह अमृत ही हो।'

'मतलब, मन पर काबू है आपका ?'

'मन पर काबू तो बड़ा मुश्किल है, कमजोरियाँ भी हैं, हैं वे हैं, सन्त तो मैं हूँ नहीं, साख भी रखनी पड़ती है और सामाजिकता भी, हाँ इतना जरूर है कि खाने-पीने और बोलने पर काफी हद तक काबू रखने की इच्छा रहती है न ओछा बोलना पसन्द



और न ओछा सुनना, भरोसा दे दिया किसी को तो घाटा-मुनाफा कुछ भी हो, फिर पीछे खिसकना मेरे स्वभाव में नहीं। और तभी एक नौकर आया। हाथ में उसके चाबियों का एक गुच्छा था। वह कुछ उतावल में लगता था। गुच्छा उसने एक खूंटी पर टांगा और चलने लगा। उसकी ओर देखते उन्होंने उसे पूछा 'झूमका लिया किस खूंटी से था रे ?'

पल भर दीवार की ओर देखते उसने धीरे से उत्तर दिया, 'साब उस परली खूंटी से।'

'तो फिर परली पर टाँग उसे, यहाँ क्यों टाँगता है ?' झूमका उसने उतारा और सही जगह पर टाँग, चल दिया वह।

वे मेरी ओर देखते बोले, 'नियत जगह पर रखी चीज माट्साब, अन्धेरे में ही ठाई मिल जाती है —दिक्कत तनिक भी नहीं होती।'

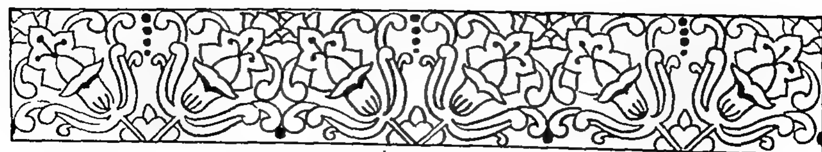
'बिल्कुल ठीक फरमाते हैं आप। औरों की तो साब, क्या कहूँ मैं, मुझे तो इसके अभाव में कभी-कभी बड़ी परेशानी भुगतनी पड़ती है। ऐन वक्त जूते कभी बारसाली में खोजता हूँ, कभी घर के पिछवाड़े में, इसे पूछता हूँ, उसे धमकाता हूँ, कोई नहीं बोलता, पारा बेमतलब ऊँचा चढ़ जाता है, खोजते-खोजते आखिर मिलते वे गाय के छप्पर में हैं।'

दो मिनट और बैठकर, मैंने कहा, 'इजाजत हो साब ?'

'और इजाजत अभी नहीं दूं तो ?' फिर उसी प्रथम-हँसी की पुनरावृत्ति-निरोग और निश्छल। स्वास्थ्य का काफी कुछ राज शायद इसी में हो, मैंने सोचा।

मैं उठा और चल दिया, खाली नहीं कुछ लेकर, जड़ नहीं-जीवन्त, एकपक्षीय नहीं, सबके लिए, अधिकस्य अधिकम् फलम् की तरह प्रिय, प्रेरक और पारदर्शी। □

—गंगाशहर (बीकानेर)



साकार अनन्वय अलंकार : बांठिया जी

— विद्यावारिधि डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया —
एम.ए., पी-एच. डी., डी.लिट्.

यदि किसी को जगत जानना है तो उसे एशिया जानना होगा, और एशिया जानना है तो उसे भारत जानना होगा। इसी प्रकार भारत के लिए उसे राजस्थान, राजस्थान के लिए बीकानेर और तदर्थ उसे भीनासर जानना होगा और यदि किसी को भीनासर जानना हो तो उसे स्वर्गीय सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया को जानना होगा। यह परिचय दरअसल बिन्दु में सिन्धु तथा गागर में सागर जैसे कथन को चरितार्थ करता है। बांठियाजी अपने बेनजीर व्यक्तित्व और कुशल कर्तृत्व से पूरे समुदाय और समाज से उठकर समग्र साधु-संसार में समा गए थे।

श्री बांठिया जी मात्र बड़े कुल में उत्पन्न होकर बड़े नहीं बने थे। उनके बड़े बनने का मूलाधार रहा है उनके जीवन में बड़े-बड़े गुणों का उजागरण होना। उदाहरण के लिए यह कहा जा सकता है कि उनमें श्रम के संस्कार जन्मजात थे। वे आरम्भ से ही स्वावलम्बी और सदाचारी प्रवृत्ति के सुधी श्रावक थे। कुशाग्र बुद्धिमत्ता और अपूर्व सूझ-बूझ की सत्ता श्री बांठियाजी की अतिरिक्त विशेषता थी। वे कठोर श्रम-साधना और अपूर्व प्रामाणिक जीवन-यापना के प्रबल पक्षधर थे। उनमें आत्मिक गुणों के प्रति आरम्भ से ही आदरभाव विद्यमान थे। वे सर्व-धर्म समभाव के प्रशंसक थे।

सत्य और अहिंसा से अनुप्राणित सेवाभाव के संस्कार इनकी जीवनचर्या के प्रमुख अंग बन गए थे। जनहितकारिणी अनेक उपयोगी योजनाओं में सक्रिय रहकर आपने अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। शिक्षा और स्वाध्याय के उन्नयन में उनकी कथनी और करनी इकसार बनकर समाज के सामने आई। फलस्वरूप समाज में आपकी दानप्रियता के बलबूते पर अनेक विद्यालय, पुस्तकालय और वाचनालय स्थापित हुए जिनमें समाज के अनेक शत-सहस्र युवक-युवतियों ने यथेच्छ लाभार्जन लिया। प्रसन्नता का संदर्भ है कि यह क्रम आज भी निर्बाध रूप से सक्रिय है। जनहित की इसी परम्परा में औषधालय खुलवाना तथा मिष्ठ कुओं को खुदवाना वस्तुतः आपकी उदात्त भावना का दस्तावेज है।

समाज के प्रसिद्ध संस्थानों तथा स्थानकों की व्यवस्था में सतत सक्रिय रहकर भी जनसेवा में आप सहज सुलभ रहे। उच्च पदों पर रहते हुए भी आपमें किसी प्रकार



का अहंकार प्रकट नहीं हुआ। आपकी लोकप्रियता और साधुता के ब्याज से आपको तत्कालीन प्रशासन ने 'ऑनरेरी मजिस्ट्रेट' मनोनीत किया। आपने अपनी सूझ-बूझ से पक्ष-विपक्ष की भूमिका से ऊपर उठकर सदा निष्पक्ष रहने को प्रमाणित किया। आपकी सज्जनता और सच्चरित्रता ने लोक मानस द्वारा आपको विधान सभा का सदस्य निर्वाचित किया। श्री बांठियाजी की ऐतिहासिक समाज-सेवाएँ 'कीर्ति स्तम्भ' की नाईं प्रकाशित हैं।

श्री बांठियाजी जिनधर्मी थे तथापि आपके द्वारा सभी धर्मों के प्रति आदर भाव रहे, आप सचमुच सर्वधर्म सम्मेलन के प्रतिनिधि एवं प्रबल पक्षधर थे। उल्लेखनीय बात यह है कि आप किसी राग अथवा विराग के प्रशंसक नहीं रहे, अपितु आपके जीवन का क्षण-क्षण प्रतिक्षण सदैव वीतराग के प्रति लालायित रहा।

श्री बांठियाजी के सामाजिक और राजनीतिक जीवन की कीर्ति-कौमुदी यत्र-तत्र विकीर्ण ही नहीं है अपितु वह बीकानेर की गोल्डन जुबली बुक तथा 'हू इज हू' जैसी विख्यात विवरणिकाओं में भी शब्दायित है। वे अपनी कर्त्तव्य परायणता, श्रमशीलता और विनयशीलता जैसे आत्मिक गुणों से आज भी लोक में आदरपूर्वक स्मरण किए जाते हैं। अनेक समितियों में उनकी अशेष स्मृतियों के उल्लेख सदा-सदा के लिए रक्षित और सुरक्षित हैं। ऐसे कीर्तिवंत बेजोड़ नक्षत्री भव्यजीवी भाई बांठियाजी को मेरे अनन्त शाब्दिक श्रद्धासुमन सादर समर्पित हैं। □

—मंगल कलश
३९४, सर्वोदय नगर, आगरा रोड,
अलीगढ़ २०२००१



प्रगति-पथ के पथिक

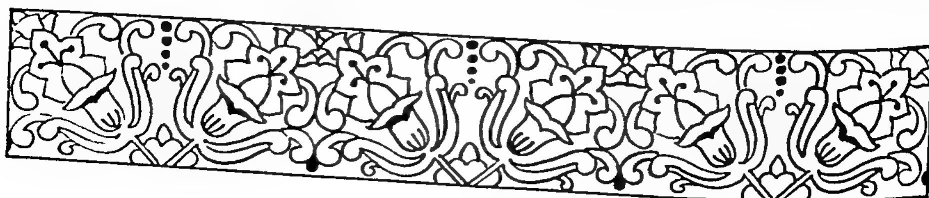
— श्री हरि कृष्ण झंवर —

ऐसे महानुभाव के बारे में लिखने में मुझे कठिनाई महसूस होती है क्योंकि उम्र व अनुभव में वे मुझसे कई गुना अग्र थे। लेकिन बांठियाजी के कई गुणों से मैं प्रभावित हुआ, उसका विवरण करना चाहूँगा। करीब १९७८ में मुझे और मेरी पत्नी श्रीकान्ता को मेरे प्रिय मित्र श्री सम्पत चोरड़िया द्वारा श्रीमती व श्री बांठियाजी से परिचय कराया गया। तदनन्तर कुछ अवसरों पर मुझे भीनासर में उनके निवास स्थान में मिलने का मौका मिला। जब भी मुझे बीकानेर आने का अवसर मिला श्री बांठियाजी ने मुझे खाने के लिये निमंत्रित किया और मुझे उनके साथ कई घंटों तक बातचीत करने का मौका मिला।

आप सादगी के पथ-प्रदर्शक और लोक-प्रिय व्यक्ति थे। यद्यपि उनकी और मेरी उम्र में लगभग ४५ वर्ष का फर्क था। लेकिन यह फर्क उन्होंने महसूस नहीं होने दिया। हम आपस में तरह-तरह के विषयों पर निसंकोच चर्चा करते थे। आप कला प्रिय थे और अपने यहाँ इकट्ठी की हुई कला-कृतियों का संग्रह उन्होंने समझाकर हमें बताया था। आपने अंग्रेजों तथा राजाओं के राज्यों के समय अपने कई रोमांचक अनुभव हमें सुनाए। आप चतुर, बुद्धिमान और समाजसेवी थे। ये दोनों गुण एक ही व्यक्ति में पाना दुर्लभ होता है। जबकि इन गुणों के कारण आप आदरणीय पात्र थे। बीकानेर नरेश श्री गंगासिंहजी तथा अन्य महानुभाव भी आपसे उचित सलाह के लिए विचार-विमर्श करते थे।

हमारा सौभाग्य है कि आपकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी से भी हमारा परिचय हुआ। आप बहुत ही प्रभावशाली महिला हैं। श्री बांठियाजी की प्रेरणा से ही श्रीमती तारादेवी ने समाज के पर्दा-रिवाज वातावरण से दूर हटकर धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में अग्रण्य भाग लिया। आप मंच से सामाजिक कुरीतियों पर प्रकाश डालती हैं। जब श्रीकान्ता ने उनका ऐसे उत्साह व लगन से सामाजिक क्षेत्र में आगे आने की प्रेरणा का रहस्य पूछा तो श्रीमती तारादेवी ने इन सबका श्रेय श्री बांठियाजी के प्रोत्साहन को दिया।

उस जमाने में ऐसा प्रोत्साहन राजस्थान के मारवाड़ी समाज में औरतों को देना स्वप्न में भी नहीं सोचा जा सकता था। यह सत्य है कि जिस समाज में स्त्रियों को उन्नति



के पथ से रोका जाता है, वह समाज कभी आगे नहीं बढ़ सकता है। महिलाओं के दबे रहने से सामाजिक प्रगति नहीं हो सकती है। आज स्वतन्त्रता प्राप्त किए ४५ वर्ष पूरे हो गये हैं पर स्त्रियों की जागृति के विषय में हमारा देश अभी तक बहुत पीछे है। आज भी हम श्री बांठियाजी के बताए हुए मार्ग का अनुकरण करें तो हमारे समाज से अंधविश्वास, पिछड़ापन और कुरीतियाँ दूर होकर समाज का कल्याण हो सकता है। □

—'झंवर हाऊस'
१७५, टी.एच.रोड़, मद्रास-६०००८१

आदर्श एवं पूज्य

— श्री कन्हैयालाल पटवा —

विरला जाणंति गुणा, विरला पालंति निद्धणा नेहा, विरला परकज्ञकरा, पर दुक्खे दुक्खिय विरला अर्थात् गुणों के ज्ञाता विरले होते हैं। विपन्नता प्राप्त व्यक्ति से स्नेह निभाने वाले विरले होते हैं। पराया कार्य सुधारने वाले और पराये दुख में दुखी होने वाले विरले होते हैं।

सेठजी चम्पालाल जी बांठिया इन सब मानवीय गुणों से अलंकृत उदारचित्त, साहसी, कर्मठ, सहनशील, न्याय नीति सम्पन्न पुरुषार्थी मानव थे। उनकी सौम्य मुखमुद्रा, स्नेहिल आत्मीय व्यवहार हर किसी अपरिचित को भी आकर्षित करता था।

सेठजी करुणामूर्ति, उदारमना, कर्मयोगी, सादगीपूर्ण उच्चविचार, नम्रता आदि सर्वगुण सम्पन्न थे।

सेठजी चम्पालाल जी के निधन से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

मैं उनको अपना आदर्श मान कर नमन करता हूँ। □

—करीमगंज



प्रगति-पथ के पथिक

— श्री हरि कृष्ण झंवर —

ऐसे महानुभाव के बारे में लिखने में मुझे कठिनाई महसूस होती है क्योंकि उम्र व अनुभव में वे मुझसे कई गुना अग्र थे। लेकिन बांठियाजी के कई गुणों से मैं प्रभावित हुआ, उसका विवरण करना चाहूँगा। करीब १९७८ में मुझे और मेरी पत्नी श्रीकान्ता को मेरे प्रिय मित्र श्री सम्पत चोरड़िया द्वारा श्रीमती व श्री बांठियाजी से परिचय कराया गया। तदनन्तर कुछ अवसरों पर मुझे भीनासर में उनके निवास स्थान में मिलने का मौका मिला। जब भी मुझे बीकानेर आने का अवसर मिला श्री बांठियाजी ने मुझे खाने के लिये निमंत्रित किया और मुझे उनके साथ कई घंटों तक बातचीत करने का मौका मिला।

आप सादगी के पथ-प्रदर्शक और लोक-प्रिय व्यक्ति थे। यद्यपि उनकी और मेरी उम्र में लगभग ४५ वर्ष का फर्क था। लेकिन यह फर्क उन्होंने महसूस नहीं होने दिया। हम आपस में तरह-तरह के विषयों पर निसंकोच चर्चा करते थे। आप कला प्रिय थे और अपने यहाँ इकट्ठी की हुई कला-कृतियों का संग्रह उन्होंने समझाकर हमें बताया था। आपने अंग्रेजों तथा राजाओं के राज्यों के समय अपने कई रोमांचक अनुभव हमें सुनाए। आप चतुर, बुद्धिमान और समाजसेवी थे। ये दोनों गुण एक ही व्यक्ति में पाना दुर्लभ होता है। जबकि इन गुणों के कारण आप आदरणीय पात्र थे। बीकानेर नरेश श्री गंगासिंहजी तथा अन्य महानुभाव भी आपसे उचित सलाह के लिए विचार-विमर्श करते थे।

हमारा सौभाग्य है कि आपकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी से भी हमारा परिचय हुआ। आप बहुत ही प्रभावशाली महिला हैं। श्री बांठियाजी की प्रेरणा से ही श्रीमती तारादेवी ने समाज के पर्दा-रिवाज वातावरण से दूर हटकर धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में अग्रण्य भाग लिया। आप मंच से सामाजिक कुरीतियों पर प्रकाश डालती हैं। जब श्रीकान्ता ने उनका ऐसे उत्साह व लगन से सामाजिक क्षेत्र में आगे आने की प्रेरणा का रहस्य पूछा तो श्रीमती तारादेवी ने इन सबका श्रेय श्री बांठियाजी के प्रोत्साहन को दिया।

उस जमाने में ऐसा प्रोत्साहन राजस्थान के मारवाड़ी समाज में औरतों को देना स्वप्न में भी नहीं सोचा जा सकता था। यह सत्य है कि जिस समाज में स्त्रियों को उन्नति



के पथ से रोका जाता है, वह समाज कभी आगे नहीं बढ़ सकता है। महिलाओं के दबे रहने से सामाजिक प्रगति नहीं हो सकती है। आज स्वतन्त्रता प्राप्त किए ४५ वर्ष पूरे हो गये हैं पर स्त्रियों की जागृति के विषय में हमारा देश अभी तक बहुत पीछे है। आज भी हम श्री बांठियाजी के बताए हुए मार्ग का अनुकरण करें तो हमारे समाज से अंधविश्वास, पिछड़ापन और कुरीतियाँ दूर होकर समाज का कल्याण हो सकता है। □

—'झंवर हाऊस'

१७५, टी.एच.रोड़, मद्रास-६०००८१

आदर्श एवं पूज्य

— श्री कन्हैयालाल पटवा —

विरला जाणंति गुणा, विरला पालंति निद्धणा नेहा, विरला परकज्जकरा, पर दुक्खे दुक्खिय विरला अर्थात् गुणों के ज्ञाता विरले होते हैं। विपन्नता प्राप्त व्यक्ति से स्नेह निभाने वाले विरले होते हैं। पराया कार्य सुधारने वाले और पराये दुख में दुखी होने वाले विरले होते हैं।

सेठजी चम्पालाल जी बांठिया इन सब मानवीय गुणों से अलंकृत उदारचित्त, साहसी, कर्मठ, सहनशील, न्याय नीति सम्पन्न पुरुषार्थी मानव थे। उनकी सौम्य मुखमुद्रा, स्नेहिल आत्मीय व्यवहार हर किसी अपरिचित को भी आकर्षित करता था।

सेठजी करुणामूर्ति, उदारमना, कर्मयोगी, सादगीपूर्ण उच्चविचार, नम्रता आदि सर्वगुण सम्पन्न थे।

सेठजी चम्पालाल जी के निधन से समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

मैं उनको अपना आदर्श मान कर नमन करता हूँ। □

—करीमगंज



भीनासर की अमूल्य निधि

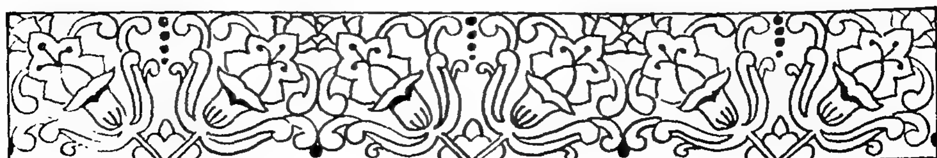
—श्री लक्ष्मणसिंह राठौड़ —

'जननी जणै तो दोय जण, के दाता कै सूर।
नीतर रीजै बांझड़ी, मती गमाजै नूर।।'

इस संसार में अमर ख्याति वास्तव में दो ही व्यक्तित्व प्रखर रूप से शाश्वत स्मृतियाँ छोड़ जाते हैं। एक दानवीर दाता और दूसरा शूरवीर। एक समाज को संवारता है, सुजाता है, निखारता है, गति देता है—अभावों की पूर्ति करता है। दूसरा —समाज को निर्भय-निडर व आश्वस्त बनाता है। दोनों ही समाज के सिरमौर हैं। वह जननी धन्य है जिसकी कोख से ऐसे पुत्ररत्न पैदा होते हैं। वह नगर वस्ती धन्य है जिसमें ऐसी विभूतियां अवतरित होती हैं। युग ऐसे ही महापुरुषों के गौरव से जगमगाता है। अस्तु।

स्वर्गीय दानवीर सेठ चम्पालालजी बांठिया का व्यक्तित्व-कृतित्व भीनासर नगर की अमूल्य निधि है। उन्होंने लगभग चार दशक तक भीनासर को सही नेतृत्व प्रदान किया और अपने प्रखर प्रतिनिधित्व से संजोया संवारा है। भीनासर के इतिहास में उनकी देन को सदैव चिरस्मृति के रूप में याद किया जाएगा। जवाहर सैकेण्डरी स्कूल, बांठिया बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय, जवाहर विद्यापीठ, पेयजल व्यवस्था और आचार्य प्रवर जवाहरलालजी म.सा.की स्मृति में अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन उनकी चिरस्मृति के रूप में सदैव जुड़े रहेंगे। उनकी दूरदर्शिता, सूझबूझ, मौलिकता, नेतृत्व शक्ति और समाज सेवा निश्चय ही बेजोड़ एवं स्तुत्य हैं। यह कहा जा सकता है कि विगत पचास वर्ष की उनकी देन को भीनासर के नवनिर्माण से विलग कर दें तो शेष नगण्य ही बचेगा।

शुभ मंगलमय चिन्तन और शुभ संकल्प समाज की अमूल्य निधियां हैं। चूंकि श्री बांठियाजी शुभचिन्तक थे अतः वे रात-दिन इसी शुभ मंगलमय चिन्तन में मग्न रहते थे और जब कोई समाजोपयोगी कार्य उनके सामने आता तब वे शुभ संकल्प एवं दृढ़ निश्चय के साथ स्वयं को पूर्णतया उस कार्य में लगा देते थे। धुन के धनी, सेवापरायण एवं अटल निर्णयी श्री बांठियाजी इस कदर किसी कार्य में लगते थे कि उसे पूर्ण करके ही छोड़ते। मां के इस लाडले सपूत ने बाधाओं कठिनाइयों से घबराकर कार्य को कभी अधूरा छोड़ना सीखा ही नहीं था। संस्कृत साहित्य में कहावत है कि निम्न श्रेणी के लोग किसी कार्य में आने वाली बाधाओं पर विचार करके उस कार्य को प्रारम्भ करने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाते हैं। जो मध्यम श्रेणी के व्यक्ति होते हैं वे कार्य प्रारम्भ तो कर

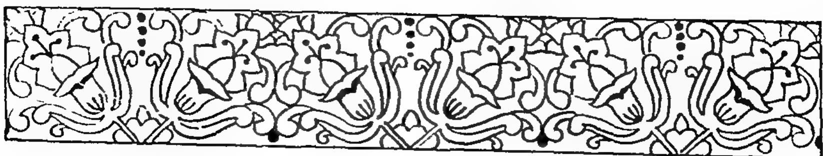


देते हैं किन्तु कठिनाइयां आने पर मैदान छोड़कर भाग खड़े होते हैं। एक तीसरे प्रकार के व्यक्ति और होते हैं जो कितनी भी कठिनाइयों, बाधाओं से न घबराकर कार्य को पूर्ण करके ही विराम लेते हैं। इस कोटि के पुरुषों को उत्तम पुरुष कहा जाता है और श्री चम्पालालजी बांठिया इसी उत्तम पुरुषों की श्रेणी के व्यक्ति थे। संस्कृत की सूक्ति चरैवेति, चरैवेति, चरैवेति (चलते रहो, चलते रहो, चलते रहो), उन पर पूर्णतया चरितार्थ होती है।

किसी कार्य को सम्पादित करने हेतु यदि उनको सहयोगी नहीं मिलते, तो वे कवीन्द्र रवीन्द्र की 'एकला चलो रे' की उक्ति को चरितार्थ करते हुए अकेले ही पूर्ण मनोयोग से उस कार्य में लग जाया करते थे। यही कारण था कि सफलताएं सदा उनका वरण करतीं। सामांजिक, धार्मिक, शैक्षिक, औद्योगिक, न्यायिक एवं साहित्यिक आदि अनेक क्षेत्रों में स्थापित किए गए अभूतपूर्व कीर्तिमान इसी बात के मुंह बोलते प्रमाण हैं।

'स्मृतिग्रन्थ' के प्रकाशन द्वारा उनके विराट् व्यक्तित्व का विशद विवरण प्रस्तुत करके बहुजन को लाभान्वित करने एवं बांठियाजी के कृतित्व को अमरत्व प्रदान करने का बीड़ा सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति द्वारा उठाया गया है —जो कि एक अतीव प्रशंसनीय कार्य है। धन्य हैं श्री बांठियाजी एवं (आप जैसे) प्रकाशन समिति सदस्य, जो सदा परोपकार के कार्यों में ही निरत हैं। प्रकाशन समिति को आशातीत सफलताएँ मिले—ऐसी ही असीम शुभ कामनाओं सहित। □

—प्रधानाध्यापक, जवाहर माध्यमिक विद्यालय, भीनासर



व्यक्ति नहीं, एक संस्था

— श्री राजीव प्रचंडिया —

जन्म और जीवन प्रकृति की ये दो शाश्वत सम्पदाएँ हैं। जीव जब जन्म लेता है तो कुछ विशिष्ट बातों को वह अपने साथ लिए होता है; किन्तु जब ये विशिष्ट बातें उसके जीवन में घटित होती हैं या यूं कहें अभिव्यक्त होती हैं तब उसके जीवन की सार्थकता सिद्ध होती है। श्री बांठियाजी का जीवन सार्थकता को लिए हुए था। यही कारण है कि हम आज भी उन्हें विविध रूपों में स्मरण कर रहे हैं। यह इस बात का एक प्रमाण है। उनमें जो भी गर्भित था उसे उन्होंने बाहर निकालकर समाज को सौंप दिया। उनका जीवन व्यक्तिपरक से हटकर समष्टिगत हो गया था। यह अनुभूतिजन्य है कि जिसने जीवन की कला को पहिचान लिया, उसने जन्म के मर्म को समझ लिया। श्री बांठियाजी अपनी मात्र पिच्चासी वर्ष तक की वय में जीवन की यथार्थता से अवबोधित थे। इसलिए उन्होंने जो जिया, जितने क्षण भी जिया, वह सब अपने लिए ही नहीं, समाज के लिए, राष्ट्र के लिए भी जिया। उनके व्यक्तित्व को निश्चय ही बहुआयामी कहा जा सकता है। जब हम उनके कर्तृत्व पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते हैं कि इस अकेले व्यक्तित्व में इतनी क्षमता और शक्ति-स्फूर्ति कहाँ से आती थी? जो अहर्निश जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चाहे वह सामाजिक क्षेत्र हो या सांस्कृतिक, चाहे फिर औद्योगिक क्षेत्र हो या न्यायिक, सबमें उनका व्यक्तित्व सदैव एक 'मिरर' की भांति परिलक्षित होता है। उन्हें यदि 'एनर्जेटिक' कहा जाय तो यह कथन उनके लिए अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा। युवाओं के लिए वे निश्चय ही एक प्रेरणा स्रोत थे। सुश्रावक के संस्कार आरम्भ से ही उनमें गहरे समाए हुए थे। स्वाध्याय, संयम तथा सेवा उनके जीवन के अभिन्न अंग कहे जा सकते हैं। आचार्य श्री जवाहलालजी म.सा. के वे परम सेवक-सुश्रुषक थे। गुरु महाराजों की भक्ति में उन्हें अपूर्व सुख और शान्ति मिलती थी।

'णाणस्स णणस्स सारो' अर्थात् ज्ञान जीवन का सार है। बिना ज्ञान के जीवन निस्सार है, इस बात से वे भली भांति परिचित थे। इसी को ध्यान में रखकर उन्होंने अनेक शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण कराया। छात्रों के लिए भीनासर (राजस्थान) में श्री जवाहर हाई स्कूल, छात्राओं के लिए श्री बांठिया बालिका माध्यमिक स्कूल तथा जवाहर पुस्तकालय/ वाचनालय का निर्माण कराया। इतना ही नहीं जवाहर विद्यापीठ की स्थापना भी की जिसमें महिला सिलाई बुनाई केन्द्र को विशेष रूप से रखा। उनकी



धारणा थी कि आज प्रत्येक व्यक्ति को विशेषकर महिला को आत्मनिर्भर होना चाहिए। आत्मनिर्भरता/स्वावलम्बन से जीवन में आनन्द का निर्झर फूटता है।

लक्ष्मी का वरण अपने पुरुषार्थ आदि के माध्यम से हरेक कर सकता है किन्तु उसे सही सही उपयोग में लाना हरेक के वश में नहीं। इसलिए यह गौरतलब बात है कि श्री बांठिया जी ने इस दिशा में भी एक आदर्श की स्थापना की। उनकी दानप्रियता और कल्याणकारी प्रवृत्तियों ने उनसे धार्मिक ट्रस्ट संस्थाएँ-शालाएँ खुलवाकर समाज को एक दिशा दी। आज भी ये संस्थाएं समाज के कमजोर वर्ग के लिए असहाय, पीड़ित-प्रपीड़ितों के लिए अनवरत कार्यशील हैं।

प्यासे की प्यास बुझाने के लिए इन्होंने भीनासर क्षेत्र में मीठे व मृदुजल के एक नहीं दो-दो कुओं का निर्माण कराया। यह सब जानते हैं और अनुभव भी करते हैं कि राजस्थान की भूमि में पानी का अभाव है। पानी वहाँ के निवासियों के लिए अमृत समान है। ऐसे क्षेत्र में पानी की सुविधा जुटाना वस्तुतः एक बहुत बड़ा पुण्योपार्जन का कार्य है, जिसे श्री बांठियाजी ने चरितार्थ किया। आज भी जो राहगीर वहाँ से गुजरता है वह अपनी तीव्र प्यास को बुझाकर, कुआं-स्थापक को दुआएँ देता आगे बढ़ जाता है।

श्री बांठियाजी कलाप्रेमी थे। उन्होंने अपने ही क्षेत्र में एक ऐसी हवेली बनवायी जो स्थापत्यकला में अपना विशिष्ट स्थान रखती है। दूरदराज से लोग इस कलाकृति को देखने आते हैं और श्री बांठियाजी की कलाप्रियता से अभिभूत होते हैं।

श्री बांठियाजी 'ऑनरेरी मजिस्ट्रेट' थे। यह उनकी दूर-दर्शिता एवं न्यायप्रियता का एक ज्वलन्त उदाहरण है। उनके सटीक निर्णय आज भी लोगों की जुबान पर हैं। वे इस क्षेत्र में भी लोकप्रिय थे। राजनीति के क्षेत्र में यदि श्री बांठियाजी का आंकलन किया जाए तो इनकी इस क्षेत्र में भी जो सेवाएं हैं वे सचमुच श्लाघनीय तो है ही साथ ही ऐतिहासिक भी बन पड़ी हैं। उन्होंने अपने विधान सभा सदस्यकाल में बाल दीक्षा के विरोध में जो विधेयक प्रस्तुत किया वह सचमुच समाज के लिए एक वरेण्य साबित हुआ।

श्री बांठियाजी ने चहुँदिशाओं में अपनी कार्यकुशलता से अपने को निश्चित रूप से प्रमाणित किया है। उसी का ही यह नतीजा था कि इनको नगरपालिका एवं बीकानेर राज्य व्यापार उद्योग संघ का अध्यक्ष, साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था, बीकानेर का (३७ वर्षों तक) अध्यक्ष बनाया गया, साथ ही साथ तत्कालीन महाराजा श्री गंगासिंहजी द्वारा पब्लिक सर्विस मैडल फर्स्ट क्लॉस से सम्मानित व चाँदी छड़ी, चपड़ास तथा



बीकानेर जैन समाज की ओर से स्वर्णपदक से इनको सम्मानित कर स्वयं गर्वित और गौरवान्वित हुए। इतना ही नहीं समय-समय पर अनेक संस्थाओं द्वारा अभिनन्दन-सम्मान पत्रों से इनका सम्मान होता रहा है। सम्मान होना इतनी वड़ी वात नहीं है किन्तु इस सम्मान में मान का न होना, बड़ी वात है। श्री वांठिया जी स्वाभिमानी तो थे किन्तु अभिमानी कदापि नहीं। वे सरल, स्नेही और गुणग्राही थे।

श्री बांठियाजी वस्तुतः एक व्यक्ति नहीं, एक संस्था थे। नयी पीढ़ी के लिए एक प्रेरक स्तम्भ थे, आदर्श थे। धन्य है जैन समाज और अनन्य है यहाँ की रज जिसने एक ऐसी विभूति को पाया जो वर्षों बाद, उपलब्ध हुआ करती है। ऐसी महान आत्मा को मेरे अनेक-अनेक प्रणाम। □

—मंगल कलश ३९४, सर्वोदय नगर,
आगरा रोड, अलीगढ़, (उ.प्र.) २०२००१

सदैव स्मरणीय

— पं. चन्द्रभूषण मणि त्रिपाठी —

स्व. बांठिया जी के बारे में जितना लिखा जाय, उतना थोड़ा ही है। कई बार उनसे मिलना हुआ था। सरलता, माधुर्य, कर्त्तव्य परायणता आदि विशिष्ट गुण उनके अन्तस्तल में कूट-कूट कर भरे हुए थे। उनकी स्मृति सदैव बनी रहेगी।

—परीक्षाधिकारी
श्री तिलोकरत्न स्था. जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड,
आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी महाराज मार्ग,
अहमदनगर-४१४००१



कर्मयोगी श्री बांठियाजी

— श्री रिखबदास भंसाली —

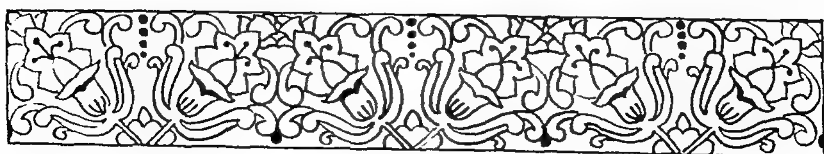
समाज के उन्नयन और विकास में जिन महानुभावों का निष्काम योगदान रहता है उनकी स्मृति कभी धूमिल नहीं होती। ऐसे महापुरुष अपने पीछे एक महक छोड़ जाते हैं जो परोक्ष रूप में भी प्रेरणा प्रदान करती रहती है।

स्वर्गीय श्री चम्पालाल जी बांठिया का जीवन सादगी और संयम का आदर्श प्रतीक था। आपकी दृष्टि संकीर्णता से परे, अत्यंत व्यापक एवं उदार थी। स्पष्टवादिता आपकी महती विशेषता थी। अनुभव, ज्ञान और चिंतन के क्षेत्र में उनका हृदय और मस्तिष्क विशेष आकर्षित रहा है। समाज के सभी क्रियाकलापों में तन, मन और धन से सहयोग सक्रिय रूप से प्रदान करना उनके जीवन का शुभ संकल्प था। सबको साथ लेकर चलने की आप में अद्भुत क्षमता थी। मानवीय आचार ही व्यक्ति की चेतना शक्ति को विकसित करता है और नर से नारायण बना देता है। श्रद्धेय बांठिया जी में भी कर्मठता, उदारता एवं समाज सेवा की भावना कूट कूट कर भरी थी। जवाहर विद्यापीठ की स्थापना, श्री जवाहर हाई स्कूल भीनासर का निर्माण एवं जवाहर किरणावलियों का प्रकाशन जैसे अनेक महान कार्यों में उनकी धर्म एवं समाज के विकास के प्रति अटूट सेवा भावना दृष्टिगोचर होती है। साथ ही सुसंस्कारों के जागरण हेतु शिक्षा के क्षेत्र में भी उनकी गहन अभिरुचि रही है।

ऐसे कर्मयोगी के प्रति श्रद्धा-सुमन समर्पित करना मेरा अहोभाग्य है। वे जीवन पर्यन्त समाज एवं देश को अपनी सेवायें देते रहे। ऐसे महामानव को मैं विनयावनत होकर अपनी भावांजलि अर्पित करता हूँ।

मैं शासन देव से यही प्रार्थना करता हूँ कि उनकी भावना के अनुरूप समाज निरंतर गतिशील रहे और भावी पीढ़ी उनके अनूठे व्यक्तित्व से प्रेरणा प्राप्त कर स्व और पर के कल्याण में अपने जीवन को समर्पित कर एक आदर्श मानव बनकर उनके आदर्शों को हृदयंगम करें। यही हमारी उस आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ऐसे महान ओजस्वी व्यक्ति से प्रेरणा प्राप्त कर कुछ सेवा प्रदान कर सकूं, यही मेरी मनोकामना है। □

—२२७/१बी आचार्य जगदीश चन्द्र बोस रोड़, ७ वीं मंजिल, कलकत्ता-७०००२०



अपने में बेजोड़

— श्री नथमल लूणिया —

पूज्य प्रवर स्व. सेठ श्री चम्पालाल जी बांठिया अपने क्षेत्र के एक वहु प्रतिष्ठित प्रसिद्ध एवं चर्चित व्यक्ति रहे हैं। वे बड़े चतुर, दूरदर्शी, नीतिज्ञ, कुशल एवं कर्मठ पुरुष थे। अनोखी सूझबूझ के धनी श्री बांठिया जी वड़े हंसमुख, विनोदी मृदुभाषी एवं मिलनसार स्वभाव के थे। यों, मैंने उन्हें कभी किसी से दो जुवान होते हुए तो नहीं देखा, फिर भी उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व की यह विशेषता थी कि उन से वेरुखी में जा कर या टकरा कर जल्दी कोई जीत नहीं पाता था। आस पास के क्षेत्र में उनका वड़ा प्रभाव, सम्मान एवं दबदबा भी था।

यों तो भीनासर का यह बांठिया परिवार बड़ा कुलीन, संभ्रांत एवं अपने क्षेत्र का सर्वाधिक समृद्ध परिवार रहा है किन्तु श्री चम्पालाल जी इनमें विशेष प्रसिद्ध हुए। सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक सेवा कार्यो में आपका सराहनीय योगदान रहा है। सार्वजनिक कार्यों में आपकी अभिरुचि थी और इस हेतु वे अपना अमूल्य समय भी देते थे। इसी परिवार द्वारा निर्मित भीनासर में लड़कों एवं लड़कियों की स्कूलों के क्रमशः विकास एवं संवर्धन में आपकी सूझबूझ, श्रम एवं अप्रतिम योगदान सर्वविदित है। भीनासर की सुप्रसिद्ध श्री मुरली मनोहर गौशाला का कार्यभार भी वर्षों तक आपने संभाला था।

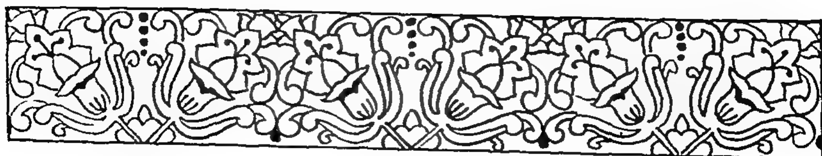
जिनशासन श्रृंगार श्रीमद् जवाहराचार्य अपने जीवन के अंतिम समय में जब भीनासर विराजे थे तो श्री बांठिया जी ने उनकी तन, मन, धन से निष्ठापूर्वक सेवा की। आचार्य श्री के स्वर्गारोहण के पश्चात् भव्य वैकुण्ठी में उनकी शव यात्रा में जुटे हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ आज भी नजरों के सामने है जिसका सफल संयोजन, नियंत्रण श्री बांठिया जी ने किया। आचार्य श्री की पावन स्मृति में श्री जवाहर विद्यापीठ, पुस्तकालय, वाचनालय आदि की स्थापना भी आपके सद्प्रयास से हुई जो आज भी हमारे सामने है। आचार्य श्री के युगांतरकारी अनमोल प्रवचनसाहित्य संपादित होकर आपकी प्रेरणा से ही जवाहरकिरणावलियों के रूप में लिपिबद्ध होने से न केवल उनकी कल्याणी वाणी को ही अमरत्व मिला, बल्कि इससे जन जन में धार्मिक, आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक चेतना का उदय एवं विकास भी हुआ।



भीनासर नगरपालिका के अध्यक्ष, बीकानेर विधानसभा के सदस्य एवं न्यायालय के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बनने के साथ ही समय समय पर आप राजकीय सम्मान से भी सम्मानित हुए। प्रबन्ध कुशलता आपका विशिष्ट गुण था। परिस्थितियों के अनुरूप किसी सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्सव, समारोह को अपने ढंग से सुसंपन्न करा देने में आप सुदक्ष थे। भीनासर का वृहत् साधु सम्मेलन एवं समय समय पर होने वाले आचार्यों, संतों के चातुर्मास, दीक्षा समारोह आदि में आपकी प्रबन्ध कुशलता सदा याद रहेगी। अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के सम्माननीय अध्यक्ष के रूप में आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और इस संस्था के प्रधान कार्यालय को बम्बई से राजधानी दिल्ली ले आए। सुप्रसिद्ध साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था, बीकानेर के भी आप वर्षों तक माननीय अध्यक्ष रहे एवं वहां के श्री संघ द्वारा सम्मानित, पुरस्कृत भी हुए।

संक्षप में मैं यही कहूँगा कि सेठ चम्पालाल जी का बेजोड़ व्यक्तित्व था। वे अपने ढ़ंग के एक निराले व्यक्ति थे। मैं उनकी सप्तम पुण्य तिथि पर इन्हीं शब्दों के साथ अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। □

— नवरंग एण्ड कं.
लालजी मार्केट, पटना-४



उदारमना एवं अनन्य सेवाभावी

— श्री पुखराजमल एस. लुंकड़ —

जीवन के साथ मृत्यु लगी है किन्तु ऐसे भी कुछ व्यक्तित्व होते हैं जिन्हें न मृत्यु मार सकती है और न कालचक्र ही मिटा सकता है। वे अपने लिए नहीं जीते बल्कि समाज, संघ और राष्ट्र के लिए तन-मन-धन से न्यौछावर होकर अमर हो जाते हैं। स्व. सेठ चम्पालाल जी बांठिया ऐसे ही व्यक्तियों में एक थे।

उनकी जीवन गाथा एवं कार्यों की सुगंध से मैं सुपरिचित हूं। अ.भा.श्वे.स्था. जैन कांफ्रेंस के (सन् १९५२ ई.) सादड़ी सम्मेलन में आप अध्यक्ष निर्वाचित हुए। कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष के नाते आपने स्थानकवासी जैन समाज की महत्त्वपूर्ण सेवाएँ की हैं।

आपका व्यक्तित्व बहुमुखी था। धर्म, समाज, शिक्षा, राजनीति आदि अनेक क्षेत्रों में आपने उल्लेखनीय कार्य किये। सादड़ी में सम्पन्न साधु-सम्मेलन के आप अध्यक्ष थे एवं बाद में सन् १९५६ ई. में भीनासर में विराट साधु-सम्मेलन बुलाने में भी आपकी अहम भूमिका रही थी। बीकानेर महाराजा श्री गंगासिंह जी द्वारा आप विशेष सम्मानित नागरिक थे एवं नगरपालिका तथा राज्य व्यापार उद्योग संघ के अध्यक्ष रहे। बीकानेर राज्य की विधान सभा के सदस्य भी आप रहे और बीकानेर न्यायालय में आनरेरी मजिस्ट्रेट के रूप में सेवाएं दीं।

उद्योग एवं व्यापार के क्षेत्र में आप जाने-माने व्यक्ति थे और इसी प्रकार लोक कल्याणकारी प्रवृत्तियों, समाज सेवा के कार्यों में भी उदारतापूर्वक दान देकर कीर्ति बढ़ाई। जैन जवाहर विद्यापीठ की स्थापना, पौषध शाला, कुंओं का निर्माण, श्री जवाहर हाईस्कूल, श्री बांठिया बालिका माध्यमिक स्कूल आदि आप की आज भी यशोगाथा गा रहे हैं। पूज्य आचार्यश्री जवाहरलाल जी महाराज के प्रवचनों का प्रकाशन 'जवाहर किरणावलियाँ' शीर्षक से कराकर आपने उनकी वाणी को घर-घर तक फैलाया।

अनेक संघों, संस्थाओं द्वारा आपका सम्मान हुआ। आपने अनेक संस्थाओं का निर्माण किया एवं अनेक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दिया। आप एक आदर्श श्रावक थे। अपनी धुन के धनी, स्वभाव से उदार एवं धर्म के प्रति अटल आस्थावान ऐसे विरले श्रावक से वर्तमान पीढ़ी उनके जीवन-चरित्र एवं कार्यों से प्रेरणा ग्रहण करेगी।



मैं व्यक्तिशः और अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली की ओर से स्व. बांठिया जी की दिव्यात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके पुत्रों से यही कामना करता हूँ कि वे भी अपने यशस्वी पिता की तरह समाज, धर्म और राष्ट्र को सेवाएं देकर उनका आदर्श बनाये रखें। □

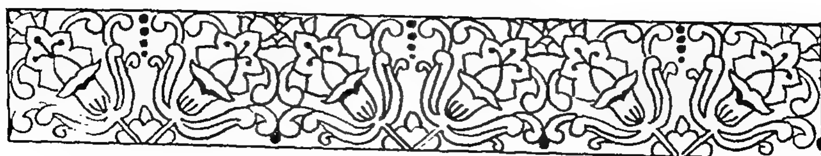
— पूर्व अध्यक्ष-अ.भा. श्वे. स्था.
जैन कांफ्रेंस, दिल्ली

स्वनाम धन्य चम्पा सुमन

— श्री फूलचन्द लूणिया —

श्रीमान् स्व. श्रेष्ठी श्री चम्पालाल जी बांठिया के विषय में जितना भी लिखा जाय, कम है। यथा नाम तथा गुण के धनी श्री बांठिया जी आज हमारे बीच नहीं रहे, फिर भी उनके गुणों की सौरभ विद्यमान है। फूलों में चम्पा के फूल की सुगंध दूर से ही आती रहती है, इसी प्रकार श्री बांठिया जी के सद्गुणों की सुगंध दूर दूर में भी फैल गई थी। फूल खिलता है, फिर मुरझा जाता है लेकिन सुगन्ध छोड़ जाता है। इसी प्रकार श्री बांठिया जी हमारे समाज में अवतरित होकर खिले, अनेक शुभ-कार्यों में भरसक योगदान दिया, जिसे समाज कभी भूल नहीं सकता। ई. सन् १९५६ में भीनासर में साधु सम्मेलन हुआ, उस समय मैं भी वहां गया था तब उनके निवास स्थान का भवन देखने में आया। बहुत ही सुन्दर कारीगरी से सुसज्जित, ऐसे भवन आज तो विरले ही बना सकते हैं। श्री बांठिया जी के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति के साथ हार्दिक स्मरणांजलि। □

—दीवान सुरप्पा लेन
चिकपेट, बैंगलोर-५३



स्वधर्मी वात्सल्य के प्रतीक

— श्री गुमानमल चोरड़िया —

स्वनामधन्य श्रीमान् चंपालाल जी साहिब बांठिया, आचार्य श्री जवाहर के अनन्य भक्त थे। आपका व्यापारिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपूर्व अविस्मरणीय योगदान रहा है। आप कर्मठ, निष्ठावान, उदारमना, श्रद्धाशील, सुश्रावक होने के साथ-साथ आचार्य श्री जवाहर के प्रति पूर्ण समर्पित थे।

द्वितीय महायुद्ध के वक्त का प्रसंग है। आप श्री का व्यवसाय बंगाल में विशाल पैमाने पर विस्तृत था, आचार्य श्री जवाहर भीनासर में विराज रहे थे, आपने आचार्य श्री के समक्ष कलकत्ता प्रस्थान करने हेतु अपनी भावना व्यक्त की। आचार्य श्री जवाहर के मुखारविन्द से यह भाषा उद्‌बोधित हुई कि यहां कौनसी कमी रहेगी, आप श्री ने बंगाल जाने का विचार स्थगित कर दिया। आपके विशाल मात्रा में जूट की खरीदी की हुई थी, जूट के भाव इतने बढ़े कि आपको उस वक्त संभवतया एक करोड़ का या लाखों रुपये का मुनाफा हो गया। लिखने के भाव यही है कि बड़े व्यवसायी होने पर भी आपने आचार्य श्री के भावों के अनुरूप ही कार्य किया, सर्वभावेण समर्पण किया यह आपकी आचार्यश्री के प्रति अटूट श्रद्धा का परिचायक है।

आचार्य श्री जवाहर भीनासर स्थिरावास विराज रहे थे, दर्शनार्थी जो भी आते उनको बहुत प्रेम से, सन्मान से, आप स्वयं पास में बैठकर भोजन करवाया करते थे। हमारा परिवार आचार्य श्री के दर्शनार्थ भीनासर गया था हमने वहां स्वयं का चौका भी लगाया था परन्तु प्रथम दिवस आपके वहां ही भोजन किया था, उस वक्त जिस प्रेम से आपने पास बैठकर भोजन करवाया वह आज भी स्मृति पटल पर अंकित है। यह आपकी स्वधर्मी वात्सल्यता का प्रतीक है।

आप कुशाग्र बुद्धि के धनी होने के साथ श्रमनिष्ठ एवं मानवीय संवेदना में रचे-पचे थे। आपने आचार्य श्री जवाहर के व्याख्यानों को लिपिबद्ध करवा कर प्रकाशित करने में जो दक्षता दिखलाई, जो गुरूत्तर भार सम्हाला वह आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का एक अभिन्न अंग है। सेवा धर्म आपके जीवन का अभिन्न अंग था। □

—सौंथली वालों का रास्ता
जौहरी बाजार, जयपुर-३०२००३



श्रद्धानिष्ठ संघ सेवक

— श्री पी. सी. चोपड़ा —

भीनासर का बांठिया परिवार स्थानकवासी समाज और धर्म की सेवा करने के लिए प्रख्यात है। जीवन की संध्या में पूज्य श्री जवाहराचार्य भीनासर पधारे तब इस परिवार का उत्साह अनुपम था। बांठिया परिवार के अग्रगण्य उत्साही सेठ चम्पालालजी बांठिया की पूज्य श्री के प्रति अनुपम भक्ति थी। जब तक आचार्य श्री वहां विराजमान रहे आप समस्त घरेलू काम काज से छुटकारा लेकर अनन्य भाव से उनकी सेवा में तल्लीन हो गये। न दिन गिना न रात। तन-मन-धन से जुट गये। चिकित्सा की दृष्टि से कोई खामी नहीं रखी। फिर भी जब पूज्य श्री का स्वास्थ्य निरन्तर गिरता चला गया तो उन्होंने एक वर्ष पूर्व ही स्वर्णमंडित रजत विमान तैयार करवा लिया।

आपने पूज्य श्री के व्याख्यानों को सम्पादित करवा कर 'जवाहर किरणावली' के नाम से प्रकाशित करवाये जो आज भी पाठक बड़ी रुचि से पढ़ते हैं। श्री जवाहराचार्य के अन्तिम जीवन काल में पूज्य श्री की जयन्ती एवं दीक्षा स्वर्ण जयन्ती के आयोजन-कर्ता भी सेठ चम्पालाल जी बांठिया ही थे। पूज्य श्री की स्मृति में भीनासर में श्री जवाहर विद्यापीठ के नाम से शिक्षण संस्था की स्थापना में आपका प्रमुख योगदान रहा। पूज्य श्री एवं समाज के प्रति आपकी विशिष्ट सेवाओं के लिए अनेक संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित किया गया एवं अभिनन्दन पत्र भेंट किये गये।

ऐसे संघनिष्ठ दानवीर एवं जनश्रद्धा के केन्द्र श्री चम्पालाल जी बांठिया का सामाजिक, धार्मिक, व्यावसायिक, औद्योगिक व राष्ट्रीय क्षेत्र में अद्वितीय योगदान रहा है। वे समग्र जैन समाज के पथ प्रदर्शक एवं अग्रणी थे। उनका यशस्वी जीवन सदैव जन-मन को अनुप्रेरित करता रहेगा।

उनकी स्मृति में प्रकाशित होने वाले स्मृति ग्रन्थ की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं अर्पित करता हूँ। □

—पूर्व अध्यक्ष, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर



एक अनूठा व्यक्तित्व

— श्री दीपचंद भूरा —

कुछ ऐसे व्यक्ति जन्म लेते हैं जिनकी मृत्यु के वाद भी समाज एवं देश उनको भुला नहीं पाता। देश और समाज को दी गई उनकी सेवाओं के लिए पूरा समाज उनका सदैव ऋणी रहता है। ऐसे ही एक अनूठे व्यक्तित्व का नाम है स्व. सेठ श्री चंपालाल जी सा. बांठिया।

मेरा बांठिया परिवार से बहुत घनिष्ट संपर्क रहा है। कलकत्ता में इनकी एक फर्म—हमीरमल सोहनलाल बांठिया का मेरे जीवन की व्यावसायिक उन्नति में वहुत महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस परिवार का मेरे प्रति जो प्रेम व स्नेहभाव रहा है उसे मैं कभी विस्मृत नहीं कर सकता।

धार्मिक क्षेत्र में आपकी उपलब्धियां अत्यंत सराहनीय रही हैं। सन् १९५६ में विराट् साधु-सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन कर आपने अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया था। आप साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था के ३७ वर्षों तक अध्यक्ष रहे। आपको बीकानेर जैन समाज की तरफ से विशिष्ट समाज-सेवा के लिए स्वर्णपदक से भी सम्मानित किया गया। आपने आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज साहव की बहुत सेवा की एवं उनके प्रवचनों को 'जवाहर किरणावलियों' के माध्यम से जन जन तक पहुँचाने का श्रेय भी आपको ही है। बीकानेर राज परिवार के साथ आपके अत्यन्त मधुर संपर्क रहे। आप बीकानेर राज्य की विधानसभा के सदस्य भी रहे। बीकानेर न्यायालय के कई वर्षों तक आनरेरी मजिस्ट्रेट के रूप में भी कार्य किया तथा विशिष्ट समाज सेवा के लिए तत्कालीन महाराजा श्री गंगासिंह जी द्वारा पब्लिक सर्विस मेडल फर्स्ट क्लास से आपको सम्मानित भी किया गया।

उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ताराबाई बांठिया आज भी धर्म एवं समाज के लिए प्रेरणादायक काम कर रही हैं एवं आदर्श जीवन व्यतीत कर रही हैं।

यश और कीर्ति की जो पताका बांठिया सा. ने फहराई थी उसको उनके उतराधिकारी सुचारु रूप से थामे हुए उच्च कुल की मर्यादा का पालन करते हुए कटिबद्ध हैं। यह हर्ष का विषय है। □

—पूर्व अध्यक्ष, श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ
देशनोक (बीकानेर)



दीप्तिमान नक्षत्र

— श्री जसकरन सुखानी —

प्रतिभावान व्यक्ति विरासित से नहीं वरन् अपने सत्कर्म और सेवाभाव से समय की शिला पर विशिष्ट कीर्ति अंकित कर जन-जन के प्रिय हो जाते हैं। ऐसे ही प्रखर व्यक्तित्व के धनी कर्तव्य परायण, धर्मनिष्ठ उदारमना थे चम्पालाल जी बांठिया।

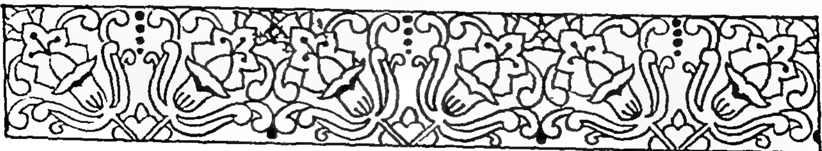
मैंने बचपन में बांठिया साहब को कई धर्मसभाओं में व समाज सेवा के कार्यों में अग्रणी रहकर तन, मन, धन से सेवा करते देखा है। वे जब भी किसी सभा में, संस्था में आते थे तथा अपनी भागीदारी निभाते थे तो ऐसा लगता था कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं बल्कि शक्ति का प्रतीक पुंज है। सचमुच, समाज में उनकी अपनी अलग पहचान थी।

विभिन्न धर्म सभाओं में उनका आगमन श्रेष्ठता का प्रतीक माना जाता था क्योंकि अपनी व्यापारिक कुशलता एवं सूझ-बूझ के साथ वे निरन्तर लोक कल्याणकारी प्रवृत्तियों से सदैव जुटे रहते थे तथा अपनी उदारता तथा सेवाभावना से सबके हृदयहार बन जाते थे।

मरूधरा की इस पावन धरती पर जन्म लेकर आपने अपनी धार्मिक आस्था, सेवा भावना से अपने जीवन में एक ऐसी सुगन्ध पैदा की है जो भीनासर ही नहीं आसपास के सभी क्षेत्रों में आज भी सुगन्धित है।

श्री बांठिया जी बीकानेर की प्राचीन नगर परम्परा व संस्कृति के दीप्तिमान नक्षत्र थे। विभिन्न समुदायों, समाजों, संगठनों एवं राज समाज के प्रतिष्ठानों से आपका सघन स्नेहिल सम्बन्ध था। सबके बीच सबसे ऊपर वे बेदाग व्यक्तित्व के धनी थे अतः उनकी कही पत्थर की लकीर मानी जाती थी। महाराजा गंगासिंह जी, शार्दुलसिंहजी, व सांसद करणीसिंह जी सहित बीकानेर राजघराने के आप सदैव विश्वासपात्र रहे।

श्री बांठियाजी कठमुल्लापन के सख्त विरोधी थे। आडम्बरों का समर्थन उन्होंने धार्मिक व सामाजिक स्तर पर कभी नहीं किया। वे कहा करते थे 'समय की गति प्रबल है इसे रोकने वाला रुक जाता है। देश, काल, परिस्थिति को देखते हमें आचरण मर्यादित करने चाहिए, अपने सांस्कृतिक व आध्यात्मिक मानव मूल्यों का दर्पण समर्पण करके नहीं बल्कि उन पर उदारता की भावना से दृढ़ रहकर।'



उनके जीवन का सार उक्त विचार में समाहित है। नाम के लिए उन्होंने सेवा कार्य नहीं किया। दानी थे पर अभिमानी नहीं थे, दान का प्रचार नहीं करते थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में कई व्यावसायिक, धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक वादविवाद अपनी समन्वयात्मक विलक्षणता से सुलझाये। वीकाणे के इस युगंधर सपूत, समाज-भूषण, करुणानिधान, सेवानिष्ठ तथा संस्कृति रक्षक नररत्न को शत शत नमन ! □

—मंत्री, भारत जैन महामंडल शाखा, बीकानेर

कर्मवीर एवं धर्मवीर

— श्री सोहनलाल सिपानी —

सेठ श्री चम्पालालजी सा. बांठिया चतुर्विध संघ के गणमान्य व्यक्ति थे। उनका व्यक्तित्व बड़ा मनमोहक और आकर्षक था। उनका जीवन कर्तव्य पालन, सेवा और कई संस्थाओं के गौरवपूर्ण पदों से शोभित था। वे बड़े धार्मिक और श्रद्धाशील व्यक्ति थे। उनका जीवन बहुत पवित्र और सच्चा था।

जैसा मैंने उनके बारे में सुना था, व्यवहार और व्यक्तित्व में उससे भी अधिक पाया। ऐसे मैं उनके गुणों और अनुभवों से विशेष लाभान्वित नहीं हो सका किन्तु जितना परिचय और सान्निध्य प्राप्त हुआ वह मेरे लिए स्मरणीय बन गया।

सचमुच वे समाज के कुशल कलाकार, आदर्श श्रावक और सुधारवादी सज्जन थे। ऐसे कर्मवीर और धर्मवीर पुरुष को मेरा शत शत वन्दन। □

—सिपानी एन्टरप्राइजेज

३ बेनरघट्टा रोड़, बैंगलोर-५६००२९



मानवीय गुणों के धनी

— श्री हरिश्चन्द्र दक —

बीकानेरी-पगड़ी, गोल चेहरा, घनी मूंछे, मझला-कद, गठा-बदन, बाहर से यही बांठियाजी का स्वरूप था। किन्तु इस व्यक्तित्व में विविध प्रतिभाओं का पुंज था, जिसके प्रकाश से जैन समाज ही नहीं सम्पूर्ण मारवाड़ की धरा आलोकित थी।

मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि मुझे बांठियाजी पर कभी कुछ लिखना पड़ेगा। क्योंकि उनके व्यक्तित्व के समक्ष मेरी लेखनी नगण्य है। पर आज अब उनके ८५ वर्ष के दीर्घ एवं यशस्वी जीवन के उपरान्त जो स्मृति ग्रन्थ उनकी श्रद्धा में प्रकाशित हो रहा है यह लेख उसमें एक श्रद्धा सुमन के रूप में समर्पित है।

पिता श्री एवं बांठिया सा. के सम्पर्क गहरे थे। सामाजिक, साहित्यिक एवं जनोपयोगी कार्यों में पिता श्री से सलाह लेते थे।

एक अद्‌भुत सहयोग था सरस्वती पुत्र एवं लक्ष्मी पुत्र के आपसी स्नेह का।

कक्षा ८ से ११ तक की मेरी शिक्षा भीनासर विद्यापीठ के सान्निध्य में हुई। बांठियाजी विद्यापीठ के संरक्षक थे। वे यदा-कदा छात्रावास एवं पुस्तकालय में आते, वहां की व्यवस्था देखते तथा छात्रों के भोजन आदि की व्यवस्था की स्वयं जांच करते। वे सहज थे। इतने सहज कि छात्रों के द्वारा आयोजित छोटे से छोटे कार्यक्रम में आग्रह पर सम्मिलित होते थे।

छोटी उम्र और अपार उत्साह। हम बच्चों ने तरुण परिषद का गठन किया। हस्तलिखित पत्रिका निकाली। प्रति सप्ताह बैठक और भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों का आयोजन। एक वर्ष पूर्ण होने पर तरुण परिषद का वार्षिक अधिवेशन था। एक नाटिका एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया था। समस्या थी अर्थ की एवं मंच के लिए पर्दों की। उत्साह के अतिरेक में मैं बांठिया सा. के पास गया उनसे सारी बात कही, उन्होंने ध्यान से सुनने के पश्चात परिषद को आर्थिक सहयोग भी दिया तथा बीकानेर की एक फर्म से पर्दे भी दिलाये। इतना ही नहीं, परिषद के वार्षिक अधिवेशन के कार्यक्रम में पूरे समय उपस्थित रहे तथा कार्यक्रम समाप्ति पर बालकों की पीठ थपथपा कर उत्साहवर्धन किया।

प्रसंग भीनासर में द्वितीय साधु-सम्मेलन के आयोजन का था। इसका जिम्मा बांठिया जी पर था। सदा की तरह दो माह पूर्व ही पंडितजी को बुला लिया गया।



तैयारियां जोर शोर पर थी, पांडाल बन रहा था। मंच तैयार हो रहा था। बैनर लिखे जा रहे थे। प्रतिदिन सांय काल बांठियाजी एवं पंडितजी में दिन भर की तैयारी पर चर्चा होती व अगले दिन का कार्यक्रम तय होता।

एक प्रश्न पर पंडितजी एवं बांठियाजी में गंभीर मतभेद था।

बांठियाजी सम्मेलन में आने वाले लोगों के भोजन की व्यवस्था सशुल्क करना चाहते थे। उनका तर्क था, निशुल्क भोजन, समाज पर भार है। निशुल्क वस्तु की कोई परवाह नहीं करता। जो समाज निशुल्क व्यवस्था नहीं कर सकते उन पर हम भार डालते हैं। इससे गलत परम्परा पड़ती है।

पर बांठियाजी अपने निश्चय पर अटल थे। अन्ततः दोनों के मध्य समझौता हुआ कि इस अवसर पर भोजन व्यवस्था पूर्णतः निशुल्क न रखकर नाम मात्र का शुल्क ५० पैसा प्रति डाईट रखा जावे। तथा इस एकत्र रकम को समाज के ही किसी परमार्थ कार्य में खर्च किया जावे।

बांठियाजी दूर द्रष्टा थे, उनकी दृष्टि पैनी थी। वह आने वाले समय और उसकी मांग को समय से पूर्व भांपने की क्षमता रखते थे।

१९५३ की बात है मैंने १०वीं द्वितीय श्रेणी से पास करली थी और आगे नहीं पढ़कर व्यवसाय करना चाहता था। पिताजी भीनासर पधारे हुए थे। एक सायं बांठियाजी के पास ले गये। बोले यह व्यवसाय करना चाहता है आपकी क्या राय है।

बोले पंडितजी ठीक ही है। जो करे करने दो। व्यवसाय के बारे में मेरी सलाह है इसे अच्छा कटर बना दो, सीख कर पूंजी हो तो रेडीमेड का व्यवसाय करे नहीं तो सिलाई की दुकान। मेरा माथा ठनका मैं कुछ नहीं बोला। पर मन में विचार उठे, मैं १०वीं पास और दर्जी बनूं। यह मेरा अपमान है।

पर सोचता हूँ उनकी सलाह मानी होती तो आर्थिक क्षेत्र में सफलता की कई सीढ़ियां पार की होती। □

—प्राचार्य, राज. उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय, मावली जं.



इतिहास पुरुष

— श्री अमृतलाल मेहता 'साहित्यरत्न'—

श्रीमान चम्पालालजी बांठिया का जन्म भीनासर (बीकानेर) राज. में हुआ। धार्मिक वातावरण अग्रगण्य घराना होने से आपको साधु संतों का सान्निध्य मिला करता। शिक्षा से भी आपका अच्छा लगाव था। अखिल भारतवर्षीय जैन कान्फ्रेन्स के सक्रिय सदस्य अध्यक्ष बन सेवाओं में संलग्न रहे।

श्रीमद् जवाहराचार्य की सेवाओं का योग मिलने पर तन मन धन से समर्पित भाव से सेवा कर पुण्य अर्जित किया। आचार्यश्री की पुण्य स्मृति में अपने अतिथि भवन में जवाहर विद्यापीठ की स्थापना कर आदर्श उपस्थित किया।

पंडित पूर्णचन्दजी दक, पंडित महेशचन्द्रजी जैन के सान्निध्य में विपन्न एवं होनहार छात्रों को आत्मनिर्भरता हेतु सुन्दर वातावरण उपलब्ध हुआ।

लक्ष्मीलाल दक, मिट्ठालाल मुरड़िया, मोहनलाल मेहता, अमृतलाल मेहता, भूमराज सोनी, सौभागमल नाहर, सुन्दरलाल मल्लारा आदि कई छात्रों ने समाज सेवा में कीर्तिमान स्थापित किये।

भीनासर-गंगाशहर के संधि स्थल पर विशाल भवन छात्रावास पुस्तकालय हेतु निर्माण करा संघ को समर्पित कर अपनी कीर्ति पताका फहराई।

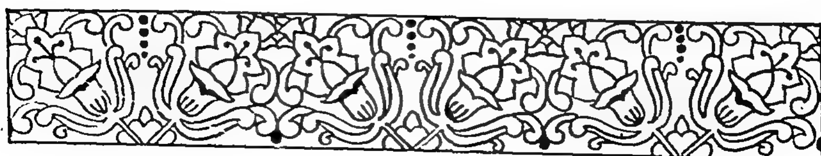
निजी बगीचे में अपने कुएं से समीप एवं दूरवर्ती नागरिक पानी भरने आते। सभी नर नारी श्रद्धावनत हो गुणग्राम करते।

आचार्यश्री जी जिस भाग में विराजते थे बगीचे के उस भाग को पौषधशाला के रूप में समर्पित कर धर्माराधन में अपनी अभिरुचि का परिचय दिया।

जवाहराचार्य के प्रवचनों का संकलन जवाहर किरणावलियों के कई भागों में प्रकाशन करा साहित्यिक सेवाओं का संकेत दिया।

जवाहर विद्यापीठ का प्रथम बैच जिसमें हम चार साथी थे एक बार पढ़ने से मन उचट गया। बांठियाजी ने आत्मीयता समझा बुझा हमें पुनः विद्याध्यन की ओर उन्मुख किया।

भीनासर साधु सम्मेलन में आपकी आदर्श सेवाएं स्तुत्य एवं प्रशंसनीय रही।



अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के विविध कार्यकलापों में आपका सक्रिय सहयोग सदा सर्वदा स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा।

बांठिया परिवार इसी तरह सामाजिक शैक्षणिक सेवाओं में संलग्न रहे इसी कामना से विराम देता हूं। □

—६६१ से. ४, हिरण मगरी,
उदयपुर-३१३००१

वीर प्रसविनी मरुधरा के कर्मवीर सपूत

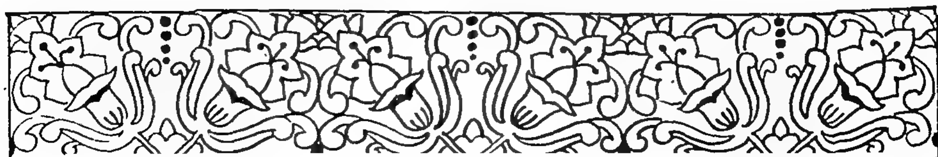
— श्री भंवरलाल कोठारी —

महामना स्वर्गीय चम्पालालजी बांठिया हमारी रत्नगर्भा वसुन्धरा के एक अनुपम रत्न थे। वे वीर प्रसविनी मरुधना के कर्मवीर सपूत थे। उनका व्यक्तित्व वहुआयामी था। वे कुशल व्यवसायी थे। पर उससे अधिक वे समर्पित समाज-सेवी थे। शिक्षा-प्रेमी, साहित्यानुरागी, कला-मर्मज्ञ, सजग विधायक, कुशल प्रबन्धक, अनन्य गुरुभक्त, सेवानिष्ठ समाजचेता, दृढ़धर्मा, प्राणी-मित्र, न्यायविद आदि विविध रूपों में वे सुप्रतिष्ठत थे।

युग प्रवर्तक क्रांतद्रष्टा आचार्य जवाहर के वे निष्ठावान अनुयायी थे। उनका रोम-रोम उनके लिए समर्पित था। जवाहर विद्यापीठ के प्रारम्भ से ही और जीवन के अन्तिम समय तक वे संस्थापक-संचालक रहे। भीनासर के जवाहर-धाम में उन्होंने जवाहर हाईस्कूल, जवाहर पुस्तकालय, वाचनालय की स्थापना की। जवाहर वाणी को 'जवाहर किरणवालियों' के रूप में संपादित प्रकाशित करवाकर आपने जीवन जागृति-मूलक राष्ट्रीय सत् साहित्य मंजूषा को जो शाश्वत ज्ञान-रश्मियों का अनुपम संग्रह भेंट किया है वह आपके देदीप्यमान सार्थक जीवन की युग-युगान्तरों तक कायम रहने वाली अमर कृति हैं।

उस आत्मचेता महामना मनीषी को मेरा भावपूर्ण नमन! □

— ओसवाल कोठारी मोहल्ला, बीकानेर



'चरैवेति' के साधक

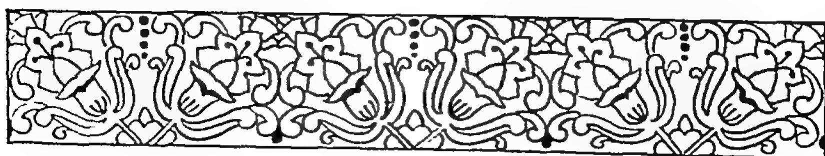
— श्री लालचन्द 'पुनीत' —

सशक्त विचारों के अनुरूप वे उस समय लौह पुरुष गिने जाते थे। चिन्तन की गहराइयों से नवनीत निकाल पाना उनकी खूबी थी; मतभेद से उन्हें कोई अर्थ नहीं था। उनका अपना नारा तो चलते रहो चलते रहो ही था। जीवन पर्यन्त थकने का नाम उन्होंने लिया ही नहीं। पुरुषार्थ को आराध्य देव मान कर अपने मानस को एक खुली पुस्तक के रूप में रखा ताकि हर कोई उनके जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन की सार्थकता को समझे और जीवन को अपने लिये नहीं दूसरों के लिये जीने की विविधता को अंगीकार करे।

प्रारम्भ में मेरा लगाव बांठिया गौत्र की प्रतिभाओं के रूप में था, जिसे भाई हजारीमलजी बांठिया ने अधिक सक्रियता प्रदान कर मुझे बांठिया डायरेक्ट्री के सम्पादन का भार सौंपा, जिसमें 'जीवन खण्ड' अभी अपूर्ण है, तथापि इस माध्यम से मैं बांठियां गौत्र के अनेक बहुआयामी पुरुषों के कार्य-कलापों के साथ अपने इस ग्रंथ से सम्बद्ध मनीषी के बारे में भी अनेक विशेष तथ्यों को जान पाने में समर्थ हुआ। इससे मुझे वही पुराना हीरा अब अधिक तराशा हुआ व जानदार वजनी अनुभव होने लगा। मैं उन लोगों को अत्यन्त ही भाग्यशाली समझता हूँ जिन्हें ऐसे विचारक का सान्निध्य मिला जो चिन्तक, लेखक, विचारक, समाज सेवी और सबसे पहले एक मानव थे।

विसर्जन की प्रवृत्ति के पक्षधर होने के कारण जीवन पर्यन्त लोकोपयोगी कार्यों के लिये मुक्तहस्त से दान-पुण्य किया और इस तथ्य को प्रतिपादित किया कि किसी के पास कितनी धन-सम्पदा है उसका कोई विशेष अर्थ नहीं है, अर्थ इसमें निहित है कि वह औरों के लिये कितना लगा सकता है—जुटा सकता है। आलोचनाओं को सम्बल मान कर अपनी मंजिल की ओर वे सदा बढ़ते रहे, निराशा व असफलताओं के धूमिल वातावरण से वे कभी विचलित नहीं हुए और एक कर्मयोगी की भांति अपने मिशन में सदा दत्तचित्त रहे। □

—कंसारा स्ट्रीट, बालोतरा (बाड़मेर)



दानवीर समाजसेवी सेठ

— श्री तोलाराम मिन्नी —

ओजस्वी व्यक्तित्व के धनी, सुश्रावक, कर्मठ कार्यकर्ता, भीनासरवासी स्व. सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया को कौन नहीं जानता। आपका जन्म बांठिया कुल में सेठ श्री हमीरमलजी बांठिया के यहाँ वि. सम्वत् १९५९ मिती मिगसर सुदी १५ को हुआ था।

आपने स्व. १००८ श्रीमज्जैनाचार्य पूज्यवर्य श्री जवाहरलालजी म.सा. की सेवा तन, मन, धन से की। उनके व्याख्यानों का संकलन पं. श्री शोभाचन्दजी भारिल्ल से कराया जो आज जवाहिर-किरणावलियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। आचार्यश्री जी की यादगार में आपने 'जैन जवाहर विद्यापीठ' की स्थापना कराई जो आज 'दादा-गुरु का पुण्यधाम' कहलाता है, और 'श्री बांठिया-हाल' के सामने ही है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना के लिए यह 'हाल' बहुत ही उपयोगी है। संत-सतियों के ठहरने तथा धर्मध्यान के लिए समाज के काम आता है। त्रिवेणी के मध्य केन्द्रित है।

वि. सं. २०१२ में 'वृहत्-साधु सम्मेलन' भीनासर में श्री बांठियाजी ने कुशल कार्यकर्ता का परिचय दिया। आपकी संघठित सुव्यवस्थित भावना अनुकरणीय है। कोई भी शुभ कार्य आना चाहिए फिर आप उसे अमल में लाने के लिए कसर नहीं रखते। मेरे स्व. पू. पिताजी श्री जैवन्तमलजी मिन्नी आपके घनिष्ट एवं पड़ौसी मित्र थे। वे कहा करते थे कि बांठियाजी बात के धनी एवं समय की पाबन्दी रखते थे। उनकी हवेली की कारीगरी को विदेशी —दूर-दूर के लोग देखने आते थे। गांव में दो कुवों का निर्माण कराकर मीठा पानी उपलब्ध कराया जो दूर-दूर तक प्रसिद्ध है।

महान् क्रान्तिकारी पू. जवाहराचार्य का अन्तिम समय में यहीं विराजना हुआ। दूर-दूर से दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता था। बांठिया बंधु तथा गंगाशहर-भीनासर संघ सभी अतिथियों का उत्साहपूर्वक स्वागत कर रहा था। आपने एक वर्ष पूर्व चाँदी की एक सुन्दर वैकुण्ठी (विमान) तैयार कराई। जिसको आचार्यश्रीजी सहित अग्नि-संस्कार किया गया। ठीक वैसी ही एक और वैकुण्ठी आज भी विद्यमान है जो संत-संतियों के देहावसान पर उपयोग में आती है।

श्री वांठियाजी का खान-पान आहार भी संतुलित था। इसी कारण आपने अपने जीवन के ८५ वर्ष संयमपूर्ण व्यतीत किये। वि. सम्वत् २०४४ मिती चैत सुदी ३ को आपका स्वर्गवास हो गया। यह सम्पूर्ण जैन समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। □

—४४ दिवान रामा रोड़, मद्रास-८४



भीनासर के भामाशाह

— श्री लच्छीराम पूगलिया, भीनासर —

श्री चम्पालालजी बांठिया सद्गुणों के भण्डार थे। उन्होंने भीनासर की सुख-सुविधा और भलाई के लिये जितना कार्य किया, उनका लेखा-जोखा लिखना मेरे वश की बात नहीं है। मैं तो उन्हें भीनासर का भामाशाह ही मानता हूँ। मेरा घर उनकी हवेली के बिल्कुल पास सटा हुआ है। मैं पिछले साठ वर्षों से उनके विषय में गहराई से जानता हूँ। वे चरित्र की दृष्टि से अपने आप में एक महान व्यक्ति थे। छोटे से भीनासर नगर में जितने भी सेवा-संस्थान बने-बनाये हैं, वे प्रायः सबके सब श्री बांठियाजी के प्रयास से बने हैं जैसे श्री जवाहर हाई स्कूल, श्री जवाहर विद्यापीठ, बांठिया बालिका विद्यालय, नगर जल सप्लाई संस्थान, श्री बांठिया पौषधशाला, बांठिया व्याख्यान हॉल, पोस्ट ऑफिस का भवन, पुस्तकालय, वाचनालय आदि। श्री बांठिया मुरली मनोहर गौशाला, ओसवाल पंचायती, म्युनिसिपल बोर्ड भीनासर में स्थापित करना, पानी की कमी को दूर करने के लिये कुओं का निर्माण कराना, और भी कई कार्य उन्होंने जनहित के लिए कराये और उनकी स्थायी सुन्दर व्यवस्था की।

उनमें साम्प्रदायिकता नाममात्र की नहीं थी। उनका जीवन राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत था, राष्ट्र के प्रति पूरी तरह से समर्पित थे। उन्होंने जो भी सेवा कार्य किया निःस्वार्थ भाव से किया। वे पढ़े-लिखे जरूर कम थे, लेकिन उनका ज्ञान और अनुभव इतना अधिक था कि उनके सामने अच्छे पढ़े-लिखे सब बौने दिखलाई पड़ते थे। वे इतने अधिक होशियार और अनुभवी थे कि उनके कार्य करने का तरीका अनोखा और बेमिसाल होता था। फिजूलखर्च से वे कोसों दूर रहते थे। वे सरल स्वाभावी, मितभाषी, मिलनसार और गहरे विचारवान व्यक्ति थे। बीकानेर स्टेट सरकार में उनकी काफी प्रतिष्ठा थी। वे बीकानेर एसेम्बली के सदस्य भी थे। बीकानेर जिला व्यापार मण्डल के वे अध्यक्ष भी रहे। वे पंचकूला गुरुकुल और स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के भी अध्यक्ष रहे और भी अनेक संस्थाओं से जुड़े रहे और उन्हें बराबर सहयोग सहायता देते रहे। बाल दीक्षा के विरोध में जनहित की दृष्टि से एक बिल एसेम्बली में रखा जिसका समझदार लोगों ने पूरी तरह समर्थन किया।

उन्होंने स्थानकवासी जैन समाज की इतनी अधिक ठोस सेवा की जिसका एक अलग इतिहास है। उस पर एक बड़ा ग्रंथ लिखा जा सकता है। पूज्य आचार्यश्री



जवाहरलालजी महाराज साहब के वे अनन्य भक्त थे। आचार्यश्री जवाहर महान दूरद्रष्ट क्रान्तिकारी संत थे। ऐसे उच्च कोटि राष्ट्र संत को हमारे इस क्षेत्र व नगर में ले आये यह साधारण कार्य नहीं था। इतनी लम्बी दूरी से और बड़े-बड़े श्रीमंतों के नगरों को बाद देकर हमारे भीनासर जैसे छोटे से नगर में ले आना कोई आसान कार्य नहीं था, बहुत बड़े सामर्थ्य की बात है। उनकी सेवा जिस लगन और श्रद्धा के साथ थी वह स्वर्णाक्षरों में लिखा एक इतिहास ही है। यह ऐतिहासिक घटना हमेशा अमिट रहेगी। उन्होंने श्री जवाहर किरणावलियों के रूप में आचार्यश्री जी का साहित्य प्रकाशित कराकर समाज के सम्मुख एक ऐसी नवनिधि प्रस्तुत कर दी जिसके कारण पाठक उनको हमेशा साधुवाद देता रहेगा। वस्तुतः वे स्वयं साहित्य निर्माण के कारण अमर हो गये। श्री स्थानकवासी सम्प्रदाय का जो वृहद् साधु सम्मेलन इस नगर में हुआ, वह बाँठियाजी की बुद्धि और कौशल का एक ऐसा प्रमाण था जिसकी प्रशंसा क्षेत्र के सारे लोगों ने भरपूर की। उनका सारा जीवन कर्म सापेक्ष था। वे सच्चे धार्मिक और पक्के आस्तिक थे। लेकिन कुसंस्कारों, गलत परम्पराओं, अज्ञान और रूढ़ियों की बातों में कतई विश्वास नहीं था। वे सही रूपमें क्रांतिकारी और उत्कट समाजसेवी थे। मैंने उनके जीवन जीने की शैली में आचार्य नरेन्द्रदेवजी और डाक्टर राममनोहर लोहिया जैसा रूप देखा। वे अपना निजी कार्य हमेशा अपने हाथ से किया करते थे। आलस्य उनमें नाम मात्र का नहीं था। पास पड़ौस और गाँव में मुस्किल और कठिनाई के आये कार्य करने में वे तत्पर रहते अपने पास से पैसे खर्च करके भी आई मुसीबत को मिटाते थे। ऐसे समाजसेवा के ठोस कार्य हर कोई कर सके यह संभव नहीं है। वे स्थापत्य कला के विशेष पारखी थे। उन्होंने अपनी हवेली को बड़े सुन्दर और कलात्मक रूप से बनायी। नवागन्तुक व्यक्ति हवेली को देखकर आकर्षित होता है और उनके शिल्प मर्मज्ञ होने का प्रमाण-पत्र देता हुआ फिर आगे बढ़ता है।

उनके विषय में मैं जितना लिखूँ थोड़ा है। वे अब हमारे बीच नहीं हैं। उन्होंने जन कल्याण के हित में जितने कार्य किये वे हर व्यक्ति के लिये अनुकरणीय हैं। उनके परिवार से पूरी आशा है कि वे सब उनके द्वारा किये समाज हितैषी कार्यों को आगे बढ़ाते हुए उनकी 'यशोगाथा' को और अधिक विस्तार करने में पूरी जागरूकता से कार्य करेंगे। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि एक मात्र यही ठीक होगी उनके किये सद्कार्यों को पूर्ण जागरित होकर करते रहें। वर्तमान आचार्य श्री नानालालजी महाराज के प्रति भी उनकी पूर्ण श्रद्धा थी। अपने समाज की कीर्ति बढ़ती देखकर वे बड़े प्रसन्न होते थे। □

—भीनासर (बीकानेर)



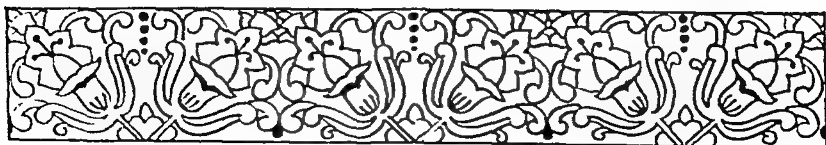
महान विभूति

— डॉ. बहादुर सिंह कोचर —

यह हमारा मानव जन्म अत्यंत ही दुर्लभ है और इसे पाकर इसका उपयोग किस भांति किया जाय, यह प्रत्येक व्यक्ति की चेतनाशक्ति पर आधारित है। हममें से अधिकांश अपने स्वार्थों की पूर्ति में ही लगे रहकर अपनी जीवन लीला की इतिश्री कर लेते हैं; बिरले ही ऐसे होते हैं जो इस दुर्लभ जीवन का सदुपयोग परहित के लिए करते हैं। अपने ही विकास और अर्थोपार्जन तथा उदरपूर्ति में तो अधिकांश लोग लीन रहते ही हैं कतिपय विभूतियाँ अवतरित होती हैं जो स्वयं से कहीं अधिक समाज के विकास की ओर चिंतन करती हैं और क्रियाशील रहती हैं। यह सत्य है कि आज के विषम जटिल आर्थिक युग में सामान्य व्यक्ति को अपनी ही बात सोचनी पड़ती है और अपनी ही चिंता करनी पड़ती है, परन्तु ऐसे ही परिवेश में जो व्यक्ति दूसरों के विषय में सोचे, चिंतन करे, अपने चिंतन को अपने कार्यों से साकार करे वस्तुतः वह महान होता है। समाज-सेवा और धर्म-सेवा के रंग में तन, मन और धन से अपना योगदान देकर मनुष्य महानता की सीढ़ियां चढ़ता है। वह भले ही शरीर से चला जाय उसके कार्य उसे अमर बना देते हैं।

ऐसी ही एक महान विभूति ने साहसी-प्रसवा मरुधरा में जन्म लेकर अपने साहस वादिता से न केवल अपने व्यवसाय को चार चांद लगाये अपितु अपने रचनात्मक सेवाकार्यों से अपना जीवन सार्थक किया था। अपना समय श्रम, शक्ति, धन, चिंतन और साधन समाज को समाज के धार्मिक एवं जन हितकारी कार्यों में लगाकर अनेक संस्थाएं एवं ज्ञात-अज्ञात व्यक्ति विकसित कर दिये थे। उन्होंने अपने जीवन का अमूल्य समय लगाकर अपना अर्जित धन लगाकर अनेक संस्थाएँ खड़ी कर दी, जिनका लाभ आज भी अन्य अनेकों को मिल रहा है। इन संस्थाओं के माध्यम से आज भी वह महान आत्मा अमर है।

पगड़ी धारण किये हुए सादे सरल भारतीय मारवाड़ी पोशाक पहने मृदुभाषी, मितभाषी, शिष्टभाषी मध्यम कद के, सांवले रंग के श्री चंपालालजी बांठिया की सेवाओं को कौन भुला पायेगा। वे चतुर्विध संघ के जाने-माने एवं पहिचाने गौरवशाली व्यक्ति थे। उनके सम्मुख जब जब कोई समाज और धर्म संबंधी समस्याएँ आई आपने अपने धैर्य, विवेक, साहस, सद्भाव, मैत्री, सेवा, कर्त्तव्य भावना के अनन्त अनुपम उपादानों



से निर्मित व्यक्तित्व से उन समस्याओं का सहज समाधान किया। अपने आत्मविश्वास, आत्मबल और आत्मजागरण के द्वारा न केवल अपनी आत्मा का उत्थान कर आत्मकल्याण किया अपितु समाज का कल्याण कर समाज को गौरवान्वित किया। आप युगपुरुष आचार्यश्री जवाहरलालजी महाराज साहब के अनन्य भक्त थे, उनके सिद्धान्तों को गतिशील बनाने वाले श्रद्धावान सुश्रावक, साधुमार्गी जैन संघ को सुदृढ़ बनाने वाले समाज स्तम्भ थे। परमादरणीय मुनिराजों एवं महासतियाँजी की सेवा में सदैव तत्पर रहने वाले श्री चंपालालजी बांठिया ने एक संप्रदाय विशेष के उन्नयन तक ही अपना ध्यान सीमित नहीं रखा अपितु सर्वसाधारण के हितार्थ कुएँ निर्माण करवाना, विद्यालय, पुस्तकालय, वाचनालय, विद्यापीठ, पौषधशाला, सिलाई बुनाई केन्द्र आदि स्थापना करना, उनका संचालन करना और उनका विकास करना आपके स्तुत्य एवं स्मरणीय कार्य थे, हैं और रहेंगे। समय एवं समाज आपका सदैव आभारी रहेगा। □

—स्नातकोत्तर विभागाध्यक्ष,
व्यवसाय प्रशासन विभाग,
श्री जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बीकानेर



समाज के गौरव

— श्री प्रतापसिंह बैद —

स्वर्गीय श्री चम्पालालजी बांठिया ओसवाल (जैन) समाज में एक ऐसे व्यक्ति हो गए हैं जिन पर गर्व किया जा सकता है।

मैं लगभग १०-१२ वर्ष का रहा हूंगा हमारे मकान १० कैनिंग स्ट्रीट कलकत्ता में आपका प्रतिष्ठान था। हमारी पूज्य दादीजी बांठिया की बेटी थी सो मैं उन्हें दादाजी कहता था —उनका स्नेह भी महान था। बाद में नजदीकी सम्बन्धी हो गये।

सिद्धांतों के लिए मर मिटना व्यक्तिगत आदर्श है। पर ऐसे आदर्शों की सफल निष्पत्तियां व्यक्ति को यथार्थ महानता तक पहुंचा देती है। विचार और सिद्धान्त इन दो बिन्दुओं पर व्यक्तित्व की नींव लगाई जाती है। विचारों में जब स्थिरता आ जाए तो वे सिद्धांत बन जाते हैं। जीवन की उच्चतम भूमिका तक पहुंचने के लिए हरेक व्यक्ति अपने कुछ सिद्धान्त बनाकर चलता है और विजय पाता है।

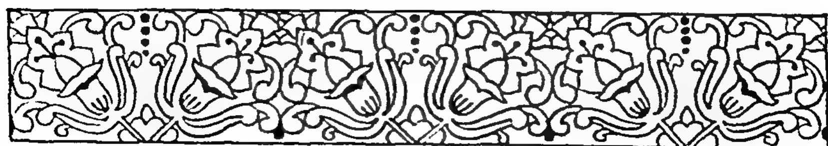
पूज्य दादाजी श्री चम्पालालजी का ऐसा ही प्रेरक व्यक्तिव था। उनके अपने सिद्धांत थे, विचार थे और जीने का अपना अनोखा तरीका था। वे बनी बनाई लकीरों पर चलना पसन्द नहीं करते थे। उनमें स्वतन्त्र अस्तित्व को स्थापित करने की क्षमता थी। उनके जीवन विश्लेषण में कुछेक सिद्धान्त आज भी अनुकरणीय हैं।

वे खुद के लिए पूर्ण रूप से जीए, जीवन भर औरों के लिए भी जीए। उन्होंने परार्थ के नाम पर जीवन के अगिणत क्षण विसर्जित किये। समाज सेवा, संघ सेवा के साथ साथ जो भी उनके पास समस्याएं लेकर आता, उन्हें प्रेम से अपनाते, समाधान देते। उनकी निःस्वार्थ सेवाओं ने उन्हें 'समाज रत्न' तक बना दिया।

आगम की इस गाथा को मानो उन्होंने जीवन में उतारने का संकल्प सा कर लिया था —

'जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयं मासे, जयं सये, ।
जयं भुंजंतो भासंतो पाव कम्मं न बंधई ।।

यह (मानव) जन्म मात्र सुख भोग के लिए नहीं है, सिर पर कठिन दायित्व भी है। यह दायित्व ज्ञान उनमें पूरा था।



मुझे दृढ़ विश्वास है कि आत्म कृत सुकृत्यों के कारण उनकी आत्मा को निश्चय ही सद्गति की प्राप्ति हुई है। उनकी आत्मा को चिर शांति मिले यही मेरी कामना है। हम उनके पदचिह्नों पर चलकर उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पण कर सकते हैं। मैं नतमस्तक होकर उस पुण्य आत्मा को प्रणाम करता हूँ। □

—पूर्व अध्यक्ष भारत जैन महामण्डल बम्बई
महावीर आटो पार्ट्स महावीर भवन, श्रीलाल मार्केट,
सिलीगुड़ी-७३४४०१

विशिष्ट गरिमायुक्त व्यक्ति

— श्री सोहनलाल कोचर —

किसी के व्यक्तित्व को जानने के लिए कभी कभी अल्पसमय भी पर्याप्त होता है जैसा कि श्रद्धेय स्वर्गीय चम्पालालजी बांठिया के विषय में घटित हुआ।

उनके सुपुत्र श्री धीरजलालजी बांठिया ने आयकर सम्बन्धी परामर्श के लिए मुझ से समय नियत किया और मैंने देखा कि निर्धारित समय पर एक ऐसे व्यक्ति से मेरा साक्षात्कार हुआ जो प्रथम दृष्टि में ही एक सरल किन्तु विशिष्ट गरिमायुक्त व्यक्ति लगे।

धोती कमीज कोट और पगड़ी पहने मेरा उनका प्रथम मिलन ही कुछ ऐसा लगा जैसे मैं अपने सामने किसी पिता-तुल्य व्यक्ति को देख रहा हूँ और ज्यों-ज्यों परामर्श सम्बन्धी वार्तालाप होता गया मुझे लगा कि यह व्यक्ति काम, क्रोध, राग, द्वेष एवं मोह-माया के अन्तर जाल से निश्चित रूप से अपने आप को अलग कर चुका है। यद्यपि परामर्श स्वरूप ऐसे भी कुछ सुझाव मैंने दिये जिससे कि किसी अन्य व्यक्ति का हित न हो तथापि उन्होंने किसी भी ऐसे परामर्श को स्वीकार नहीं किया जो किसी का अहित करे, चाहे वह निर्विवाद रूप से न्यायोचित ही क्यों न हो। मेरी दृष्टि में ऐसा व्यक्ति निःसन्देह श्रद्धा के पात्र हैं। इस के बाद भी उनसे मेरी मुलाकात दो बार उनके भीनासर स्थित बंगले पर हुई और मुझे यह कहना ही होगा कि उनके अन्तरमन में मैंने किसी प्रकार की लालसा नहीं पाई। आडम्बर से वह मुझे कोसों दूर लगे। मैंने उन्हें एक सहज व्यक्ति एक अच्छा इन्सान पाया। उन्हें मेरा शततः प्रणाम। □

—८६ कैनिग स्ट्रीट कलकत्ता- ७००००१



सेवा एवं उदारता के प्रतीक

— श्री मोहनलाल कठौतिया —

श्रीमान चम्पालालजी बांठिया से मेरा सम्पर्क विगत ४५ वर्षों से उनके जीवन पर्यन्त बना रहा। दिल्ली में उनके व्यवसाय में साझेदारी से प्रारम्भ हुआ। सम्पर्क धीरे-धीरे अपनत्व बनता गया। २ वर्ष बाद हमने बिजली के पंखों का कारखाना लगाया और उसमें भी हमारा साथ अन्त तक सौहार्द्रपूर्ण रहा। आपसी स्नेह पारिवारिक सम्बन्ध में परिणत हो गया जो आज तक अखंड चल रहा है।

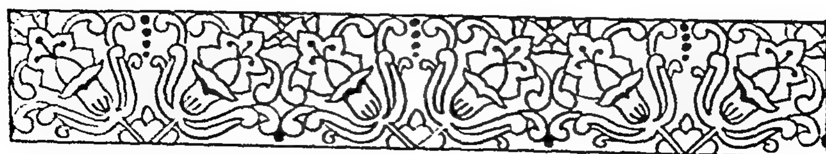
श्री बांठियाजी हंसमुख एवं स्पष्टवादी थे। कला से उनका विशेष प्रेम था। अतः आपने अनेक कला पूर्ण वस्तुओं का संग्रह भी किया।

उनकी सहनशीलता अनुकरणीय थी। मैंने उनको कभी क्रोधित होते नहीं देखा। दूरदर्शिता के साथ-साथ समाज सेवा की भावना उनकी तीव्र थी। सम्पन्नता और उदारता का उनके जीवन में संयोग था जो सब जगह नहीं मिलता। समाजहित के लिये उन्होंने अनेक विद्यालय, पुस्तकालय का निर्माण कराया और भी अनेक जनोपयोगी कार्यों में उनका सहयोग यथासम्भव बराबर चलता रहा जिसका पूरा विवरण उनकी जीवनी में लिखा है।

बीकानेर राज्य में उन्होंने अच्छा सम्मान प्राप्त किया। तत्कालीन बीकानेर नरेश श्रीमान गंगासिंहजी अपने राज्य के साहूकारों की हित रक्षा में बड़े सजग थे। राज्य में सहयोगी साहूकारों को चांदी की छड़ी-चपड़ास आदि बख्शिशों द्वारा सम्मानित करते थे। उन साहूकारों में श्री बांठियाजी का नाम उल्लेखनीय है। राज्य के अधिकारियों से उनका निकट सम्पर्क भी था और समाज के लोगों में आपसी विवादों को भी उन्होंने बुद्धिमत्ता से सुलझाकर परस्पर सद्भावना को सुरक्षित रखने में अच्छी भूमिका निभाई।

धार्मिक क्षेत्र में विशेषकर जैन स्थानकवासी समाज में उन्होंने ख्याति अर्जित की। उच्च पदों पर आसीन रहे, साधु-सन्तों की सेवा एवं धर्मार्थ कार्यों में अनेक प्रकार से सहयोग देते रहे। उनकी साम्प्रदायिक भावना भी विशालता में परिणित हो गई।

श्वास की तकलीफ रहते हुए भी वे अपने कर्त्तव्यपालन में सदैव सक्रिय रहे —यह उनकी विशेषता थी। इतनी लम्बी आयुष्य में भी कभी उनमें निराशा नहीं दिखाई दी।



जैन धर्म में जीवन से अधिक महत्व मृत्यु का है। जो श्रावक अंत समय में विशुद्ध विचारों के साथ अनशन युक्त मृत्यु को प्राप्त करता है वह उच्च गति को प्राप्त होता है और उसकी आध्यात्मिक विचारधारा अगले जीवन में भी प्रवाहित रहती है। श्री बांठियाजी ने संथारा (अनशन) के साथ अपनी जीवन-यात्रा को सम्पन्न किया, यह धार्मिक जगत में अति महत्वपूर्ण है।

ऐसे महान मित्र के प्रति मैं अपनी स्नेहांजलि अर्पित करते हुए आनन्द का बोध करता हूं। □

—निदेशक, अध्यात्म साधना केन्द्र,
नई दिल्ली-३०

अपनी अलग पहचान

— श्री सत्य प्रकाश गुप्ता —

श्रेष्ठी वर्ग में अपनी अलग छवि के लिए सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया का व्यक्तित्व सदैव चमकता रहा। वैसे मेरे पूज्य पिताजी श्री महावीर प्रसाद गुप्त का बांठिया परिवार से सन् १६२८ से सम्बन्ध रहा है और तब से वे उनके मुख्तार आम थे। बचपन से सेठजी को पिताजी के पास आते देखता रहा हूँ, सन् १६३६ में सेठजी से मेरा परिचय हो गया। सन् १६४२ में अपना कार्य शुरू करने पर सेठजी से निकटता बढ़ी और सन् १६४४ में तो उनका अधिकतर कार्य मैंने संभाल लिया था, काम सामाजिक हो या कचहरी का या आयकर सम्बन्धी हो बराबर उनसे मिलना होता था इस प्रकार घनिष्ट पारिवारिक सम्बन्ध हो गया।

सेठजी की स्पष्टवादिता ने मुझे सदैव प्रभावित किया। बीकानेर में उनका इनकम टैक्स सम्बन्धी कार्य शुरू किया तब उन्होंने मुझे स्पष्ट रूप से कहा— नये डाक्टर की तरह आप्रेशन मत कर डालना। मैंने भी विश्वासपूर्वक कह दिया—यदि कार्य ठीक नहीं हो तो आप मुझसे कार्य नहीं करवाना। उन्हें विश्वास में लेकर मैंने कार्य किया और अन्त तक सफल रहा। इसी विश्वास के सहारे मैं उनका अंतरंग बन गया। उनकी



प्रसन्नमुद्रा एवं अपनत्व की भावना कभी भूली नहीं जा सकती। रामपुरिया आईस फैक्ट्री में भी मुझे सहयोगी बनाया और लाखों का व्यवसाय की देख रेख का कार्य मुझे सौंप दिया जो मेरे लिए कल्पनातीत था।

सेठजी की मुझ पर असीम कृपा रही है। २६ वर्ष की अल्पायु में मैंने अपना मकान बनाने की ठान ली तो सेठजी का इसमें मुझे पूर्ण सहयोग मिला। सन् १६५० से तो उन्होंने अपना इनकम टैक्स का सारा कार्य मुझे सौंप दिया था और मैंने रिटायर होने तक कार्य निष्ठा से किया लेकिन इतनी लम्बी अवधि में भी उनसे किसी बात पर मनमुटाव नहीं हुआ। उनका विश्वास अमर बेल की तरह बढ़ता ही गया। हां, एक दो बार मेरी ओर से त्रुटियाँ भी हो गई लेकिन उन्होंने अन्यथा न लेकर उदारता का परिचय दिया।

उनके गुणों का बखान करना कठिन है। वे जबान के पक्के, गरीब अमीर में अन्तर न करने वाले, अपनों के हितैषी, स्पष्टवक्ता व अत्यन्त मिलनसार थे। मेरे पिताजी व दादाजी के देहावसान की सूचना मिलते ही तत्काल सांत्वना देने मेरे घर पर आए थे।

मेरे जीवन में पढ़े-लिखे, ज्ञानी, करोड़पति व लखपति बहुत आए परन्तु सेठजी जैसा कोई नहीं था। मेरी अस्वस्थता के समय आपने मद्रास अपने समधीजी को लिखा था 'आप सत्य प्रकाशजी के लिए जो करेंगे वह मैं अपने लिए समझूंगा' यह उनकी आत्मीयता का परिचायक है।

वस्तुतः उस विराट व्यक्तित्व को शब्दों में बांधना मेरी सामर्थ्य में नहीं है उनकी कमी अपूरणीय है तथा सदा कचोटती रहेगी। □

—ग्रीन कॉटेज, माल, मसूरी



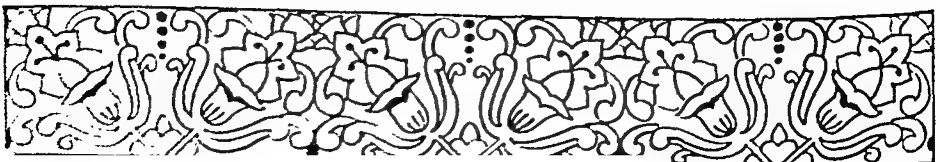
धर्मनिष्ठ कर्मनिष्ठ समाजसेवी

— श्री जयचन्दलाल रामपुरिया —

श्रद्धेय चम्पालालजी बांठिया जो कि मेरे सगे चाचीश्वसुर थे, को समाज कभी भी विस्मृत नहीं कर सकता। उनका व्यक्तित्व बहु आयामी था। धार्मिक एवं सामाजिक सेवा-प्रकल्पों की स्थापना एवं उनके कुशल संचालन में उन्होंने उच्चतम कीर्ति को प्राप्त किया। वे वास्तव में समाज-भूषण व समाज-गौरव थे।

आदरणीय चम्पालालजी नीति-परायण धर्मनिष्ठ एवं सुश्रावक थे। आचार्य प्रवर जवाहरलालजी महाराज की अन्तिम समय में भीनासर में सतत् सेवा, उनके प्रवचनों व साहित्य का प्रकाशन, उनकी पावन स्मृति में जैन जवाहर विद्यापीठ की स्थापना आदि धर्म एवं संघ के प्रति उनकी दृढ़ आस्था के प्रतीक हैं। स्वर्गीय बांठिया साहब अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष भी रहे। अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस का तेरहवां स्वर्ण जयन्ती अधिवेशन भीनासर में उनके सतत् प्रयत्न से अत्यन्त ही समारोहपूर्वक व सफलतापूर्वक विनयचंद भाई दुर्लभजी जौहरी की अध्यक्षता में दिनांक ४-५-६ अप्रेल १९५६ को सम्पन्न हुआ। इसका उद्‌घाटन भारत के गृहमंत्री, माननीय गोविन्द वल्लभ पंत ने किया। इस समारोह में मोहनलालजी सुखाड़िया, जयनारायणजी व्यास, बलवंतरायजी मेहता व श्रीमती रुक्मणि अरूडेल आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। चम्पालालजी सा. ने मुझे इस समारोह का स्वागताध्यक्ष का पद संभालने के लिए कहा। मैंने उनकी भावना का सम्मान करते हुए यह पद स्वीकार किया। उनकी निष्ठा व लगन से यह सम्मेलन ऐतिहासिक बन पड़ा। ऐसे धर्मनिष्ठ, कर्मनिष्ठ समाजसेवी चम्पालालजी बांठिया को मैं अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। □

—५ पन्नालाल बनर्जी लेन (फैन्सी लेन)
कलकत्ता-७००००१



प्रेरणा के अजस्र स्रोत

— श्री केशरीचन्द सेठिया —

श्रेष्ठीवर्य श्री चम्पालालजी बांठिया का जन्म मरुधरा के प्रसिद्ध नगर भीनासर में हुआ था। भीनासर में बांठिया परिवार की ख्याति एवं कीर्ति की सुवास चारों ओर फैली हुई है। सुसम्पन्न श्रीमंत परिवारों में इसकी गणना की जाती है। बांठियाजी उन इनेगिने व्यक्तियों में से थे जिन्होंने हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा की छाप छोड़ी।

मंझलाकद, गेहूँ वर्णी चेहरे पर स्मितहास व दृढ़ता का अनोखा सम्मिश्रण, घनी मूंछें, आकर्षक चेहरा, सर पर राजस्थानी बहुरंगी पगड़ी आपके व्यक्तित्व को उभारती थी।

अल्पवय में ही आप पाट (जूट) का व्यवसाय महानगरी कलकत्ता में करने लगे। व्यापार के क्षेत्र में विशेष कर पाट के क्षेत्र में आप के फर्म की अच्छी साख थी। लेकिन प्रारम्भ से ही आपको व्यापार में कम और सामाजिक, धार्मिक, कार्यों में अधिक रुचि थी।

हमारे परिवार का सम्बन्ध इस परिवार से ७०-८० वर्षों से भी अधिक का है।

मैं जब किशोरावस्था में था आपको निकट से देखने का अवसर मिला है। प्रायः वे हमारे सेठिया ग्रंथालय में स्वर्गीय पूज्य दादाजी श्री भैरोंदानजी से मिलने सलाह-मशवरा करने आते रहते थे। पू. दादाजी का स्नेह इनके प्रति अधिक था। वे वाबूजी का सम्मान ही नहीं करते उन पर श्रद्धा भी रखते थे।

श्री जैन हितकारिणी संस्था व अन्य संस्थाओं की बैठकों के कारण उनका आना होता ही रहता था। सामाजिक उन्नयन व नव परिवर्तन सम्बन्धी चर्चाओं के अतिरिक्त समाज की बिखरी शक्ति को सुसंगठित करने तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में नवयुवक-नवयुवतियों को आगे लाने उनमें धार्मिक संस्कार आदि पर मंत्रणा होती थी। समाज में फैली कुरीतियों के प्रति उनके दिल में एकाग्रता एक कसक थी। अपने समाज के बच्चों को व्यवहारिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा व सुसंस्कार दे सकें इसके लिये वे जीवन पर्यन्त प्रयत्नशील रहे।

महान क्रान्तिकारी आचार्य श्री जवाहर के आप अनन्य परमभक्त ही नहीं उनके प्रति अगाध श्रद्धा भी रखते थे। स्वर्गीय आचार्य श्री के उद्बोधनों को 'जवाहर



किरणावली' के माध्यम से ३५ भागों में प्रकाशित करवाकर एक महान एवं महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उनका यह चिरस्मरणीय कार्य साहित्य जगत में सदा सदा के लिये स्मरणीय रहेगा। आचार्य प्रवर अपनी अंतिम अवस्था में भीनासर में ही विराजते थे। उस समय आपने जो सेवा की वह अनुकरणीय है। उस समय पूरे भारतवर्ष का तीर्थ स्थल बन गया था भीनासर।

मुझे और अधिक नजदीकी से देखने का अवसर उस समय मिला जब मैं छात्र था। उस वर्ष पंचकुला गुरुकुल का वार्षिकोत्सव आपकी अध्यक्षता में मनाया गया। उनकी कार्य कुशलता, तत्काल निर्णय व उनके क्रान्तिकारी विचारों से प्रभावित हुआ।

राजनैतिक क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी एक विशेष पहचान बनाई थी। सरकारी, गैर सरकारी अनेक संस्थाओं में आप पदाधिकारी रहे।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ बीकानेर ने आपके सन्मानार्थ प्रशस्ति पत्र व शाल भेंट करने के लिये मुझे व समाज के विशिष्ट व्यक्तियों को यह कार्य सौंपा। हम उनकी हवेली में गये। काफी अर्से से वे रुग्णावस्था में थे। उन्होंने आचार्यश्री, संघ और समाज के प्रति जो श्रद्धा भक्ति के भाव व्यक्त किये उससे हम सब गद्‌गद् हो गये। यह हमारी अंतिम भेंट थी उनके साथ।

आज वे हमारे हमारे बीच नहीं हैं पर उनके द्वारा समाज की बिखरी शक्ति को सुसंगठित करने, ज्ञान वृद्धि के कार्य में सतत तत्पर रहने व प्रगति पथ पर उन्मुख बनाने में उन्होंने जो कुशल नेतृत्व दिया वह हमेशा हमेशा इतिहास के पन्नों में यादगार बनकर प्रेरणा का अजस्र स्रोत रहेगा। □

—सहमंत्री, श्री अ.भा. साधुमार्गी
जैन संघ एवं मंत्री साधुमार्गी
जैन संघ, मद्रास



अद्वितीय कर्मयोगी

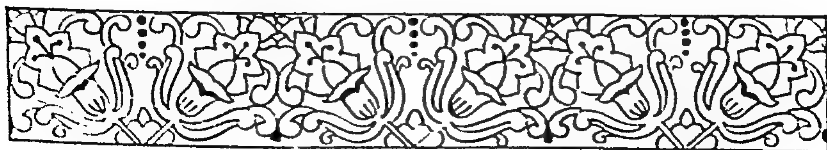
— श्री धनराज बेताला —

श्रीमान् सेठ साहब श्री चम्पालालजी बांठिया अपने सुदीर्घ जीवन काल में ऐसे कर्मयोगी हुए जिनकी बहुआयामी समाजसेवा, संघर्ष एवं उपलब्धियों का अपूर्व खजाना है जिसको अनावृत्त करना किसी एक लेखनी से संभव नहीं है। सेठ साहब के जीवन की झांकी मुझे मेरे पूज्य मामासा स्व. श्री मूलचन्दजी सा. पारख व उनके निकट सम्पर्कों से ही प्राप्त हुई। आदरणीय श्री बांठियाजी जिनका कि जैन समाज में उनके कार्यों से जो विशिष्ट स्थान था और उनका सम्पर्क सूत्र अनेकानेक नगरों, कस्बों एवं गांवों के विशिष्ट महानुभावों से था उनमें पूज्य मामासा का भी प्रमुख स्थान था जिसके कारण सेठ सा. का सान्निध्य प्राप्त करने व कर्म शैली से परिचित होने का मुझे भी अवसर प्राप्त हो सका।

श्रीमान् सेठ सा. श्री चम्पालालजी सा. बांठिया जिस किसी भी कार्य को हाथ में लेते उसे अपने सत् पुरुषार्थ से पूरा करने तक आराम से नहीं बैठते। कार्य करने की आपकी विशिष्ट शैली थी, जिसमें उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति को प्रभावित कर उससे अपने मतानुकूल कार्य करने के लिए तैयार कर लेने की अद्वितीय क्षमता थी। आपने अपने जीवन काल में समाज सेवा, जनोपयोगी कार्यों के ऐसे कीर्तिमान स्थापित किये, वैसे करने वाले युग पुरुष कम ही होते हैं। आप द्वारा किये गये कार्यों के कीर्ति स्तम्भ आज भी भीनासर के एक छोर से दूसरे छोर तक स्पष्ट परिलक्षित होते हैं।

आपके जीवन काल के महान क्रान्तिकारी श्रीमद् जवाहराचार्य के आचार्यत्व काल की उपलब्धियों का समय उल्लेखनीय ही नहीं वरन ऐतिहासिक हो गया। पूज्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के सदुपदेशों को जवाहर किरणावलियों के रूप में पुस्तकों की बड़ी शृंखला प्रकाशित करवाकर आपने सत् साहित्य प्रकाशन में अमरत्व प्राप्त कर लिया। सद्धर्म मन्डन जैसे विशिष्ट ग्रन्थ भी आपके पुरुषार्थ से जैन जगत को प्राप्त हुए।

आपके द्वारा समाज में संस्थाओं के माध्यम से जो कार्य सम्पन्न हुए जिनसे आप स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष बनाये गये। आपके अध्यक्षीय कार्यकाल में स्थानकवासी श्रमणसंघ सुसंगठन को प्राप्त हुवा जिसका श्रेय भी आपकी विलक्षण कार्यशैली को ही है।



आपके द्वारा सेठ सा. की स्मृति में ग्रन्थ प्रकाशन की जो योजना बनाई है। वह सेठ सा. की सेवाओं के आयामों को उद्घाटित करेगी, जिससे समाज की आगामी पीढ़ी को सेवा कार्यों में संपृक्त होने हेतु प्रोत्साहित करेगी आपका यह सत् प्रयास अत्यन्त सफल हो यही कामना है। □

—मंत्री, श्री सुरेन्द्र कुमार सांड
शिक्षा सोसाइटी, नोखा

यशस्वी एवं समर्पित व्यक्ति

—श्री जसकरन बोथरा —

स्व. सेठ श्री चम्पालाल जी सा. बांठिया की स्मृति में आपने जो स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन का निर्णय लिया है, वह बहुत सामयिक व उपयुक्त है। क्योंकि सेठ सा. उसके वास्तविक अधिकारी हैं।

मेरा सेठ सा. से सम्पर्क बहुत पुराना है। भीनासर साधु सम्मलेन में उनके साथ रहकर व्यवस्था आदि का गंगाशहर क्षेत्र का भार सम्भालने वालों में से भी एक था। उसके बाद श्री जवाहर विद्यापीठ में भी साथ रहकर खूब कार्य करने का सुअवसर मिला। साथ कार्य करके मैंने यह अनुभव किया कि सेठ सा. दीर्घ अनुभवी व विरक्त सूझ-बूझ के धनी थे। उनकी पकड़ बहुत पैनी थी। वे शीघ्र निर्णय लेने में पूर्ण सक्षम थे। गांव-समाज में उनकी अपनी एक छाप थी।

गंगाशहर-भीनासर में श्री जवाहर विद्यापीठ, श्री जवाहर हाईस्कूल, श्री बांठिया बालिका विद्यालय, पीने के पानी हेतु कुआ, बाग आदि का निर्माण युगों-युगों तक उनकी स्मृति को तरोताजा रखेगा।

श्री जवाहर किरणावलियों का प्रकाशन कराके उन्होंने समाज और देश को एक युगान्तरकारी साहित्य सुलभ कराने की पहल की, जिसके लिए वे सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे।

उनके यशस्वी जीवन के प्रति मेरी हार्दिक श्रद्धा। □

—नई लाइन गंगाशहर (बीकानेर)



समाज सेवा के सेठ

—डॉ. महेन्द्र भानावत —

धनवीर कई होते हैं, समाजवीर बहुत कम। जो समाजवीर होते हैं उनकी पहचान अधिक लम्बी और फैलाव लिये होती है। लोकमान उन्हीं का होता है जो धन-भूषण के साथ-साथ उतने ही समाजभूषण होते हैं। जैन समाज में ऐसे वीरों की कमी नहीं रही, जिन्होंने लोकहितकारिणी प्रवृत्तियों में अपना अधिकांश समर्पित कर दिया। युद्धवीर महाराणा प्रताप के साथ दानवीर भामाशाह सोने में सुगंध की तरह आज भी याद किये जाते हैं।

ऐसे ही भीनासर के सेठ चम्पालालजी बांठिया स्मरणीय हो रहे हैं। कानोड़ में तो जवाहर विद्यापीठ था ही पर वहां पढ़ते-पढ़ते यह भी सुन लिया था कि मारवाड़ के भीनासर में भी इसी से मिलता-जुलता जैन जवाहर विद्यापीठ है। जैन गुरुकुल, छोटी सादड़ी से दसवीं पास कर आगे पढ़ने जाने की जगह तब मेवाड़ के छात्रों के लिये या तो उदयपुर थी या फिर मारवाड़। बोर्डिंग की दृष्टि से तब कुचेरा, राणावास और भीनासर का बड़ा नाम था। मेवाड़ के छात्र इन छात्रावासों में पढ़ने लग गये थे। पढ़ने के अलावा अन्य सभी प्रवृत्तियों में भी इधर के छात्र सराहे जाते थे।

राणावास केवल तेरापंथी समाज का था पर कुचेरा, भीनासर में ऐसी कट्टरता नहीं थी। यह कट्टरपन हमारे घर-परिवार में भी नहीं रहा और वहां भी नहीं रहा जहां हम पढ़ सके। बीकानेर जाने पर दो सेठों के नाम जिधर देखो उधर ही चर्चा में रहते। इनमें से एक नाम भीनासर के सेठ श्री चंपालालजी बांठिया का होता और दूसरा बीकानेर के सेठ श्री भैरोंदानजी सेठिया का। बीकानेर में ही नहीं, देश के पूरे जैन समाज में सेठिया-बांठिया बड़े आदर की दृष्टि से देखे जाते।

बांठियाजी से भीनासर में उनके घर की बैठक में मिलना हुआ। उनके विद्यापीठ में भी मिलना हुआ पर एक साधारण छात्र की हैसियत से अन्य छात्रों के साथ। वातचीत में लगा कि उनकी वाणी में एक ऐसा घोष विद्यमान है जिसमें कहने से अधिक कुछ सार्थक करने की फलश्रुति है और वह प्रभावना भी है जिसमें सामर्थ्य का संवल और सामाजिक स्वीकृति है।

वे आगे से आगे कुछ करने की धुन लिये रहते। समाज के काम। गांव के काम। शिक्षा के काम। सेवा के काम। सव तरफ उनकी दृष्टि दौड़ती थी। एकता और



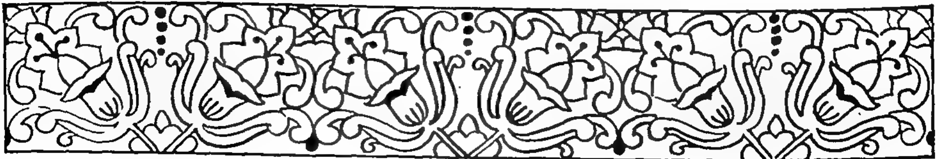
अखंडता में उनका पक्का विश्वास था इसलिए वे तड़ और फड़ को किसी समाज में देखना पसंद नहीं करते थे। जैन समाज में जो विभिन्न पंथ और संप्रदाय घर कर गये थे और सम्प्रदाय में भी जो अन्तर-सम्प्रदाय पैदा हो गये थे उन्हें एक करने का उन्होंने भागीरथ प्रयास किया। अपने भीनासर में ही विराट साधु सम्मेलन कराना उन्हीं के बूते की बात थी। आवश्यकता सभी महसूस कर रहे थे पर इतना साहस और सबको एकमंच पर ला खड़ा करना उन्हीं का अद्भुत कौशल था। यही कौशल उन्होंने सादड़ी में अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस का सम्मेलन कर दिखाया जिसकी बड़ी व्यापक चर्चा रही और सारे देश का जैन समाज वहां उमड़ा। बांठियाजी ने अध्यक्ष की भूमिका लेकर वह सम्मेलन ऐतिहासिक ही नहीं बनाया, उसे एक ऐतिहासिक मोड़ भी दिया।

बांठियाजी उस तरह के दानी नहीं थे जिनके वहां दान लेने वालों की पंक्ति लगी रहती थी और वे गुपचुप अपनी बंधी मुट्ठी दूसरों की मुट्ठी में खोल देते थे। वे हर समर्थ व्यक्ति को जहां समाजहित में अच्छा करने की सामर्थ्य देते वहां अर्थ की कमी की संपूर्ति के लिये कर्मशील दृष्टि-पथ देते और उसके संरक्षक बन उसे पूर्णता दिलाते। ऐसे सब तरह के कार्य उन्होंने सम्पन्न करवाये जिनसे सभी आम खास लाभान्वित होते। स्कूल, वाचनालय, पुस्तकालय, सत्साहित्य प्रकाशन, नगरपालिका, विधानसभाई सदस्य, हवेली निर्माण, ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, पौषधशाला, कुए खुदवाना, धार्मिक ट्रस्टों का संचालन जैसे कार्यों में वे अपनी बहुमुखी-चहुंमुखी-सर्वमुखी-सर्वसुखी ऊर्जा क्षमता के साथ कइयों को साथ लिये चलते। प्रेरित करते। साधन जुटवाते। सुविधाएँ मुहैय्या करवाते इसलिए जहां उनकी जैसी चाह बन जाती वहां वैसी राहें प्रियदर्शिनी हों पगायमान हुई मिलतीं।

समाज की ऐसी विभूतियों को हमें बार-बार स्मरण कर उनके सेवा कार्यों को जग जाहिर करना चाहिये पर कई बार उनके परिवार वाले ही उन्हें विस्मृत करते पाये जाते हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि सेठ चंपालालजी बांठिया को समाज और उनका परिवार दोनों ही निरन्तर याद किये हुए हैं इसीलिए उनके द्वारा संचालित प्रवृत्तियां आज भी चलायमान हैं और वे सुवासिनी बनी हुई हैं।

इस अवसर पर मैं श्री जवाहर विद्यापीठ के कार्यकर्ताओं को भी साधुवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने बांठियाजी की स्मृति को इस रूप में अक्षुण्ण बनाने का संकल्प लिया। □

— ३५२ श्री कृष्णपुरा, उदयपुर-३१३००१



महामना को शत्-शत् प्रणाम !

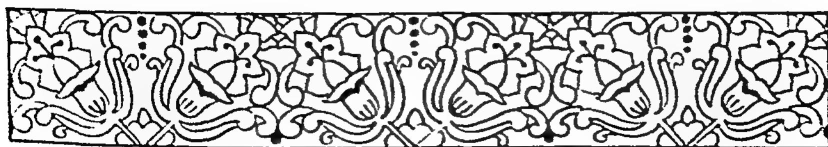
— डॉ. विष्णु दत्त आचार्य —

सौम्यता, सेवा और सत्कार के त्रिवेणी संगम में अवगाहन किया हो ऐसा मुझे अनुभव हुआ, जब नगर सेठ स्व. श्री चम्पालाल जी बांठिया से मेरा प्रथम साक्षात्कार हुआ। सांगोपांग मारवाड़ी पहनावे में सजा-संवरा, इकहरे बदनवाला, दीदारू नयनाभिराम चेहरा बरबस मुझे आकृष्ट कर रहा था। मृदुता युक्त मुस्कराहट और नेत्रों से छलकता स्नेहिल स्वागत सोने में सुहागे का काम कर रहा था। बात-चीत की शैली, नपी तुली शब्दावली, भाषा सौष्ठव और वाणी का मिठास देख लगता था धन की अधिष्ठात्री देवी श्री लक्ष्मी जी के साथ वीणा वादिनी मां सरस्वती का भी आपके यहां वास है। आतिथ्य में आपकी गृह लक्ष्मी दो कदम आगे ही रही थी जिसे देख सुखी दाम्पत्य-जीवन की संपुष्टि स्वतः ही हो रही थी। इस अवसर पर सेठ साहब के सुपुत्र चि. सुमति की देखने को मिली सुसंस्कारित शिष्ट व्यवहार की झलक भी श्लाघनीय रही थी।

फिर वह घड़ी आई जब अतिसंकोच के साथ श्रीमान् सेठ साहब ने मेरे साथ वातचीत का अपना आशय व्यक्त किया जिसको किसी भी कीमत पर सम्पूर्ण किए जाने का श्रीमती सेठानीजी का सानुग्रह निवेदन था जिसे मैंने प्रभु का आदेश या उसके निमित्त की जानेवाली सेवा के रूप में तत्काल सहर्ष स्वीकार कर स्वयं को अति सौभाग्यशाली समझा और माना कि सर्वशक्तिमान की आज मुझ पर विशेष कृपा हुई है।

आशय को स्पष्ट करते हुए श्रीमती सेठानीजी ने कहा कि सेठ साहब को किसी बात की चाहना नहीं रही है लेकिन जीवन की एक अन्तिम इच्छा अवश्य है और वह यह कि भीनासर स्थित उनके तीन विद्यालय भवन राजकीय जवाहर माध्यमिक विद्यालय, श्री बांठिया उ. प्रा. बालिका विद्यालय एवं राजकीय प्राईमरी स्कूल, भीनासर, बीकानेर (राज.) विधिवत् रूप से राजस्थान सरकार के सुपुर्द कर दिए जाए। प्रभु इच्छा बलियशी ! उन्हें आश्चर्य तो अवश्य ही हुआ लेकिन तत्काल यह कार्य सम्पादित हो जाने से उन्हें जो आत्मतोष मिला इससे मुझे भी प्रसन्नता हुई जिसके लिए मैं सेठ साहब का आभारी हूँ। स्व. महामना को शत्-शत् प्रणाम ! □

—जोशीवाड़ा, बीकानेर



अनुपम शिक्षा प्रेमी

— सुबोध बाला गुप्ता —

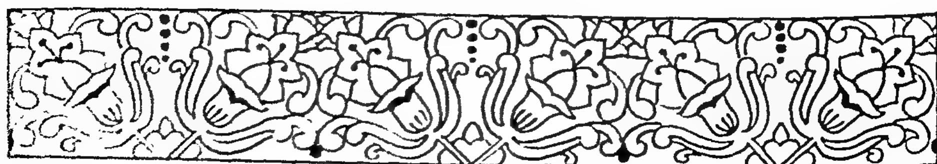
श्री बांठिया बालिका विद्यालय में अक्टूबर १९९० से मैंने प्रधान अध्यापिका का कार्यभार सम्भाला है तभी से बांठिया परिवार से मेरा परिचय हुआ है। प्रथम बार बात करने पर ही ऐसा लगा जैसे वर्षों पुरानी जान-पहचान है। पूरा परिवार ही अनूठा-विरला है जो अपनी अमिट छाप छोड़ देता है। आप लोग किसी को परेशान होते तो देख ही नहीं सकते उनकी समस्याएं स्वयं ही जानकर हल करने का प्रयत्न करते हैं, आप लोगों से एक बार बात होने पर शायद ही कोई भुला सकता है। फिर स्वर्गीय सेठ श्री चम्पालाल जी बांठिया के कार्य क्षेत्र ही इतने अधिक हैं शायद ही कोई क्षेत्र छोड़ा हो जिसमें उनका योगदान न हो। मैं तो उनके समक्ष अपने आप को कुछ लिखने योग्य भी नहीं समझ पा रही। मैं केवल शिक्षा क्षेत्र के विषय में ही दो शब्द लिखुंगी।

भीनासर में छात्र-छात्राओं के लिए पढाई की कोई व्यवस्था न थी सभी माता-पिता अपने बच्चों को दूर भेजने में सक्षम नहीं थे। आपने उनकी कठिनाई को दूर करने के लिए शिक्षा क्षेत्र में बालक-बालिका के लिए विद्यालय खुलवाकर अनुपम कार्य किया, जिसका कर्ज शायद ही कभी कोई पूरा कर सकेगा। आप मन में जिस कार्य को करने की सोच लेते थे पूरा करके ही छोड़ते थे। अगर इस धरा पर आप जैसे थोड़े और व्यक्ति हो जायें तो निरक्षरता निर्धनता अपने आप ही समाप्त हो जायेगी।

'यह श्री बांठिया बालिका विद्यालय है, शिक्षा का उत्तम आलय है।
पढ़ती यहां चार सौ छात्रायें हैं, सभी गुण गाती श्री बांठिया जी के
जो करते अच्छी देख-रेख वे ही हैं इसकी महाशक्ति।'

सभी छात्र-छात्राओं की शुभकामनायें आपको प्रेषित हैं। नारी जाति ही नहीं वरन् समस्त मानव समाज आपका ऋणी रहेगा तथा एक आदर्श मानव के रूप में आपकी याद बनी रहेगी। सबसे अधिक प्रसन्नता की बात है आपका परिवार आपके चलाये कार्य को ही आगे बढ़ा रहे हैं। भगवान से प्रार्थना है यह परिवार हमेशा प्रगति करता रहे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ। □

— प्रधानाध्यापिका, रा. बांठिया बालिका उ.प्रा. विद्यालय, भीनासर



नारी जागरण के प्रेरक

— राजकुमारी शर्मा —

जीवन में हमेशा कई प्रकार की विकट समस्याएं प्रतिदिन आती रहती हैं। शायद उनमें से कुछ ऐसी भी होती है जिनका समाधान न हो, पर मानव जाति के इतिहास में यह बात नहीं के बराबर लागू होती है क्योंकि उनके निराकरण के लिये ईश्वर कुछ ऐसी महान विभूतियों को इस पृथ्वी पर मानव कल्याण के हेतु अवतरित करते हैं, जो अपना जीवन जन साधारण की भलाई व उनके उत्थान में अर्पित कर देते हैं। ऐसी ही एक विभूति के दर्शन का अहोभाग्य हमें प्राप्त हुआ, जिनके जन कल्याण के कार्य आने वाली कई पीढ़ियों तक याद रहेंगे। ये तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी, धुन के पक्के, भीनासर के गौरव श्रीमान् चम्पालाल जी बांठिया थे, जिन्हें हम शत शत नमन् करते हैं।

उनके जन कल्याण के कार्यों को हम जीवन पर्यन्त नहीं भुला पायेंगे। भीनासर में बालिकाओं के प्राथमिक शिक्षा से आगे कोई व्यवस्था नहीं थी। बालिका चाहे कितनी ही तीव्र बुद्धि हो उसे अपने घर बैठना पड़ता था। तब आपने मन में एक संकल्प लिया कि बालिकाओं को इस हानि से बचाया जाये और इसी के फलस्वरूप आपने उच्च प्राथमिक स्तर तक क्रमोन्नत करने हेतु नये शाला भवन का निर्माण करा कर सरकार को अर्पित किया। जहां बालिकाएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं। यह उनके नारी जाति के प्रति श्रद्धा व उनके उत्थान की ही इस प्रवृति का द्योतक है। नारी जाति उनके इस कार्य के लिए युगों तक ऋणी रहेगी। इसके साथ-साथ आपने नारी जो पिछड़ी और गरीब तथा परिवार वालों द्वारा प्रताड़ित हो उनके जीवन निर्वाह हेतु एक महिला सिलाई बुनाई केन्द्र की स्थापना कराई।

नारी का सम्मान करने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी! आपको समस्त मानव समाज एक आदर्श के रूप में आने वाले समय में याद रखेगा। आपने जहां व्यापार में दक्षता प्राप्त की वहीं नगरपालिका, न्याय क्षेत्र तथा अन्य कई क्षेत्रों में अभूतपूर्व कार्य किये। आपके यशोगान हेतु हमारे पास शायद शब्द ही नहीं। अपने जनोपयोगी कार्यों के कारण क्या बालिकाएँ क्या बालक और क्या समाज द्वारा शोषित महिला वर्ग आपको हमेशा-हमेशा याद रखेगा। □

—अध्यापिका, रा. बांठिया बालिका उ.प्रा. विद्यालय, भीनासर



आदर्श समाज रत्न

— श्री मदनलाल जैन —

सेठ जी के जन्म-जात गुण

मनुष्य मात्र के प्रति संवेदना शील प्यार-दयालुता और करूणा सेठ चम्पालाल जी के जन्म जात गुण थे उनकी निस्पृह समाज सेवा अभिनन्दनीय थी। सेठ जी के व्यक्तित्व में धार्मिकता, समाज-निष्ठा और सेवा शीलता की त्रिवेणी का पावन संगम था। मरुधरा के इस महामानव का ध्यान प्रारम्भ से ही समाज सेवा एवं राष्ट्रीयता की ओर सदैव बना रहा। शिक्षा-जगत एवं धार्मिक प्रचार और प्रसार में आप श्री के अथक प्रयासों से अनेक संस्थाओं का आर्विभाव हुआ था। सामाजिक व लोक-कल्याणकारी प्रवृत्तियों में संलग्न रह कर आप ने जो कार्य किये, स्वयं में आदर्श हैं।

जन सेवा के मसीहा

शुद्ध मन से जन सेवा करने वाले पुरुष बिरले ही नजर आते हैं—निस्वार्थ जन सेवा की महानता निर्विवाद है। सब प्रकार के स्वार्थों से एवं भेद-भावों से परे रह कर जन-कल्याण के प्रति सेवा की भावना को अपनाने वाले, कल्याण कारी और सुखद समाज की स्थापना करने वाले हमारे चरित्र नायक सेठ बांठिया जी जन सेवा के मसीहा रूप थे। समाज को दी गयी आपकी विशिष्ट सेवाओं के लिए विभिन्न सामाजिक संस्थाओं की और से आप को सम्मानित किया गया था और अभिनन्दन पत्र भी भेंट किये गये थे।

यश से तो वे निर्लिप्त थे

कहते हैं कि दुनिया के लोग यश के लिये पागल होते हैं और अधिकांश लोग उसके पीछे-पीछे मारे मारे फिरते हैं पर यह उनकी पकड़ में नहीं आता। कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं, जिनके पीछे यश भागता है पर वे उसकी पकड़ में नहीं आते। स्वनाम धन्य सेठ श्री चंपालाल जी बांठिया ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों में थे जो अपने काम से काम रखते थे—यश से तो वे निर्लिप्त थे। □

—जैन स्टोर्स, हिरनगेट के अन्दर,
जालंधर सिटी (पंजाब)-१४४००१



जैन रत्न श्री चम्पालाल जी बांठिया स्मृति स्तवन

— रचयिता : श्री सरदार-भाई-कोचर —

भीनासर सपूत चम्पालाल जी महान्
जैन विभूति तुम्हें जन-जन नमन्
था-विख्यात न्यायविद-न्यायकीर्तिमान
था समाजोद्धारक, सामाजिक कृतिउल्लेखमान्=१=

था संघ भूषण, था संघ नायक,
था संघ पालक, था संघ विस्तारक,
था संघ हितकारक, था संघ कल्याणकारक,
था संघ उद्धारक, था संघ तेजस्वीदीपक=२=

था वह दिव्य ज्योत, था वह दिव्य रत्न,
था वह दिव्य प्राण, था वह प्रेरणारत्न,
था वह दिव्य जीवन, था वह मरुधर रत्न
था वह दिव्य श्रावक, था वह दिव्य वीर भूषण=३=

थे तुम मरुधरा के महामानव,
थे तुम बहुआयामी गुणों के व्यक्तित्व,
थे तुम अग्रणी प्रेरणाप्रद प्राणित्व,
थे तुम कविहृदय यशस्वी कर्तृत्व=४=

जीवन था तुम्हारा प्रेरणा पुंज,
जीवन था तुम्हारा काव्यकुंज,
जीवन था तुम्हारा प्रख्यातपुंज,
जीवन था तुम्हारा चहुँदिशिगुंज=५=

जन जन देखे नयन, जवाहर विद्यापीठनिर्माण,
जन जन प्यास बुझाये, मीठे पानी कुंवों का अवतरण,
हर छात्र तेरी यशोगाथा गाये, जवाहर हाई स्कूल प्रदान
हर छात्रा तेरी स्मृति संजोये, बांठिया माध्यमिक कन्याशालादान=६=



स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स का था प्राण,
साधु सम्मेलन के प्रवर्तक, किया वह नियोजन,
विशेषताएँ झलकाता हुआ था वह नर केशरी रत्न,
बीकानेर राज घराने का था वह स्नेह भरा राज्य भूषण=७=

□

— आर. के. भवन, जैल रोड़, बीकानेर-३३४००५

चंपालाल बांठिया

— श्री गोवर्धन दास —

चंपा सी महक जीवन में फैलाई।
पारावार सी लिए गहराई।
लासानी थे लाल हमीरी।
लक्ष्मी सरस्वती कृपा पाई।
बांकुरा रहे समाज धर्म सेवी।
ठिकाने की सदैव बात कही।
यादगार भीनासर में रहेगी स्थायी।

□

—प्रधानाध्यापक ही. सौ. रामपुरिया विद्यानिकेतन,
गंगाशहर (बीकानेर)



ऐसे थे सेठ

— श्री के. एस. पंवार —

ऐसे थे सेठ चम्पालाल जी बांठिया,
वे थे एक दानी महान्।
भीनासर गांव बड़ा भारी,
जहां रहते हैं सैकड़ों नर नारी।
यहीं सेठ चम्पालाल जी का जन्म हुआ,
साक्षात् लक्ष्मी का आगमन हुआ।१।
दानवीर सेठ के कामों को देखें,
क्या क्या उन्होंने कार्य किये।
स्कूलें खोली, जवाहर विद्यापीठ चलाई,
कन्या पाठशाला की शुरूआत कराई।
फिर राजा ने उनको दिया वह सम्मान।२।
ऐसे थे सेठ....
भीनासर के इन्द्र वन,
जनता के लिए कुएें खुदवाये,
पानी पीने को, पिलाने को
उन्होंने कई वाग लगाये,
हम नहीं भूल सकते उनके
किये हुए उपकार महान्।३।
ऐसे थे सेठ.....
प्रातः काल रोज उपासरे जाते थे,
दीन, दुखी, गरीबों को रोज समझाते थे,
अहिंसा और सत्य के वे थे ऐसे अवतार,
उनको कभी न भूलेगा
जैन जगत का यह संसार।४।
ऐसे थे सेठ.....। □

—प्राचार्य, एम.एम. सी. उ.मा. वि. स्कूल, बीकानेर



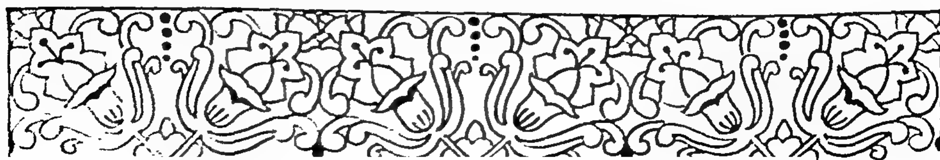
असमानता के समानता

— श्रीमती तारा देवी बांठिया —

गृहस्थ जीवन में सुखी वही कहलाता है। जिसका दाम्पत्य जीवन सुखी है। सुख और दुःख एक सिक्के को दो पहलू हैं और हर एक के जीवन में आते रहते हैं। समय देखकर उससे समझौता कर लिया जाय यही सुखी जीवन का आधार है।

हमारी उम्र में बहुत अन्तर था। उम्र के साथ विचारों में भी फर्क था। तब पर्दा प्रथा भी बहुत ही जोरों पर थी औरतें आपस में भी बोलती नहीं थी। हर एक को उत्तर भी नहीं दे सकती थी। सिर्फ इशारे से या टिचकारी से ही जबाब दिया जाता था। बुजुर्गों के आगे चलना भी मना था। ऐसे समय में उन्होंने और हमने समय के साथ समझौता किया। बीच का रास्ता अपनाया। भगवान बुद्ध ने कहा कि रस्सी को ना ज्यादा खेंचों और ना ज्यादा ढील दो मध्यम मार्ग अपनाओ। यही सफल जीवन का रहस्य है। गृहस्थ के कार्यों में भी हम एक दूसरे के पूरक रहे। हर एक कार्य एक दूसरे की सलाह से करते थे।

उनका स्वभाव विनोदी था। बात ऐसी अचूकी करते ताकि सभी हँसे बिना नहीं रहते और जब कड़े रुख से रहते तो सभी डरते थे हर एक बोलने में भी घबराता था। वे एक निडर व्यक्तित्व के धनी थे। नमोत्थुण में एक शब्द आया है पुरुषसिहाणं, वे पुरुषों में सिंह के समान थे। जब भीनासर में साधु सम्मेलन हुआ तब बीकानेर के प्रमुख श्रावक श्रीमान् सतीदासजी तातेड़ आये और उन्होंने कहा कि आप हमारी नाक कटवाओगे क्या? तव उन्होंने जबाब दिया कि मैं क्यों कटवाऊँ? उन्होंने कहा 'हम सम्मेलन का हंकारा भरा आये पर हम बीकानेर में करवा नहीं सकते, यदि आप आगे रहो तो हम आपके साथ हैं। उन्होंने कहा—बीकानेर गंगाशहर और भीनासर में आदमी बहुत हैं क्या वे कुछ नहीं कर सकते। तातेड़ सा. बोले आगे काम करने वाला संपन्न आदमी आपके सिवाय कोई नहीं है सो हमारी नाक आप ही रख सकते हो' आखिर उन्होंने हंकारा भरा और अच्छी तरह बढ़िया तरीके से सम्मेलन सफल किया। गांव में भी पंच पंचायती हर वक्त होती ही रहती थी। कभी गाँव एक तरफ और आप एक तरफ रहकर भी गाँव की पंचायती सम्हाल लेते थे और सफलतापूर्वक हल निकाल लेते थे। कोर्ट कचहरी में भी कभी केस अपनी जिंदगी में हारे नहीं। वे कहा करते थे कि केस हारना मेरे कोष में ही नहीं है। वे साम दाम दंड भेद सव नीतियों के जानकार थे सो कोई भी उपाय काम में



लाकर अपने विरोधी को कभी अदालत में जीतने नहीं दिया। बुद्धि के वहुत ही विचक्षण थे, उन्हें हाजिर जवाव उपजता था। वे एक असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे।

पू. जवाहरलालजी महाराज के अन्यय भक्त थे। उनकी वहुत सेवा की और उनके प्रति पूर्ण समर्पित थे। पूज्यजी महाराज भी एक जवाहर की अपेक्षा एक जौहरी भी थे। उन्हें आदमी को परखने की कला वहुत आती थी। वृद्धा अवस्था में उनके दो चातुर्मास हुए। इनका वहुत ज्यादा संपर्क रहा। मुझे तो उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त न हो सका पर वे मुझे कहा करते थे कि मेरा जीवन सामाजिक कार्यों में ढालने वाले जवाहरलालजी महाराज ही हैं। चातुर्मास में उन्होंने एक वात कही कि जहाँ हमारा चातुर्मास हो और आप ताश खेलो क्या यह अच्छा लगता है तव मुझे शर्म महसूस हुई और मैंने कहा कि अच्छा नहीं लगता है आज से ही मुझे सौगंध दिला दीजिये अव मैं कभी नहीं खेलूँगा। अव ताश नहीं खेलो तो दूसरी तरफ कुछ कार्य करो। तव से उनकी रुचि सामाजिक कार्यों में हो गई और उन्होंने समाज में भारी कार्य किया। कुम्हार घड़े को जैसा रुप देता है घड़ा वैसा ही वन जाता है सो इनके घड़ने वाले जवाहरलालजी महाराज थे सो उनका रूप आज समाज के सामने है। उनकी भी भक्ति असीम थी। वो मुझे कहा करते थे कि जव पूज्यजी महाराज पाट पर विराजते थे तव लगता था कि कोई देवता विराजे हैं—उनकी वड़ी-वड़ी आँखें थी, गौर वर्ण था और उनके उपदेशों का वहुत भारी प्रभाव पड़ता था। आदमी का काया-कल्प हो जाता था।

एक वार उदयपुर में आपका चातुर्मास था वहाँ एक वेश्या आपकी वहुत भक्त थी उसके एक लड़की थी आपने कहा कि तुम तो अपना धंधा करती हो पर इस लड़की से यह धंधा मत करवाना। तव उसने कहा कि इस लड़की से शादी कौन करेगा। उन्होंने उस रोज उसी पर व्याख्यान दिया और कहा कि इस सभा में कोई माई का लाल है जो इस लड़की से शादी करे। उस वक्त वहाँ मोहनलालजी सुखाड़िया थे उन्होंने खड़े होकर कहा कि मैं इससे शादी करूँगा और उन्होंने शादी कर ली। यह उनकी वाणी का प्रत्यक्ष प्रमाण था।

आचार्यश्री जी के स्वर्गवास के १ साल पहले ही आपने चाँदी की वैकुंठी तैयार करवा ली थी। जव पूज्यजी महाराज का स्वर्गवास हो गया तव इतने भाव विह्वल हो गये कि चाँदी की वैकुंठी सहित उनका पार्थिव शरीर चंदन एवं खोपरे के साथ ही जला दिया गया। उनके पीछे उछाल भी चाँदी के रुपये वोरों में भरकर की गई और वाद में जव शरीर जल गया तव कुछ चाँदी और खरीदकर एक और वैकुंठी घर में कारीगर विठाकर दूसरी वनाकर जवाहर विद्यापीठ को भेंट में दे दी।



आपने पूज्यश्री के नाम पर इस संस्था का नाम जवाहर विद्यापीठ रखा। उनके व्याख्यानों पर आधारित जवाहर किरणावलियों का प्रकाशन भी बहुत अच्छे ढंग से करवाया। आज विद्यापीठ की स्थापना के ५० साल पूरे हो गये स्वर्ण जयंती मना ली है। धन्य हैं आचार्यश्री जवाहरलालजी महाराज और धन्य हैं उनके अनन्य भक्त श्री चम्पालालजी बांठिया। □

—अध्यक्षा, श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति

गंगाशहर, भीनासर

अजात शत्रु

— श्रीमती सबर कंवर चोरड़िया —

पूज्य पितृश्री का व्यक्तित्व बहुआयामी, इन्द्रधनुषी एवं सौरभान्वित था। उनमें धरती की धीरता, सागर का गांभीर्य, हिमालय की अडिगता, सूर्य की तेजस्विता एवं सरिता का समर्पण समाहित था। कर्मठता एवं सात्त्विक विचारों के प्रतीक रूप में आप सदैव प्रेरणादायक रहेंगे। उनका विवेक तलस्पर्शी एवं परमगहन था; किसी से कुछ कहने से पूर्व वे अपनी बात तोल कर बोलते थे।

उनकी दृष्टि विशाल, कार्यशैली विलक्षण एवं आत्मीयता मानव मात्र के लिए थी। पड़ौस में, गली में या भीनासर में किसी को कोई काम हो, हवेली के द्वार सदैव खुले थे। समाज के हितचिन्तक, सन्मार्ग दर्शक एवं प्रेरणास्तंभ रूप में उनका आदर्श अनुकरणीय रहेगा।

गुरु भक्ति एवं संत-सेवा में आप अग्रणी रहे। यही नहीं, संघ व शासन के प्रति उनकी निष्ठा भी सच्चे श्रमणोपासक की थी। संघ व समाज सम्बन्धी कार्यों में उनका चिन्तन समष्टि के लिए था; वहां व्यष्टि का महत्व गौण था।

सचमुच आपका जीवन हर खुशी से सराबोर था। आपने आजीवन न तो किसी का बुरा चाहा और न किया। किसी ने आपको धोखा दिया हो फिर भी आपने अपना व्यवहार नहीं बदला। आप तो एक वृक्ष के समान थे, जो पत्थर मारने पर भी फल देता है। ऐसे अजातशत्रु को शतशः वन्दन, नमन। □

—३४२, मिंट स्ट्रीट साहुकार पेट

मद्रास-६०००७९



पूज्य पिताजी : मेरे आदर्श

—श्री धीरज वांठिया —

मैं अपने आप को विशेष भाग्यशाली मानता हूँ, जिसे पूज्य पिताजी का सर्वाधिक स्नेह मिला। १९८० तक मैं उनके पास बीकानेर में ही रहता था। यह कुछ पूर्व जन्म के संस्कारों की ही बात थी, कि वे हमेशा मेरी हर बात पर विशेष ध्यान देते थे।

वैसे तो हर पिता अपने बच्चों को स्नेह करते ही हैं, और हर सन्तान अपने पिता का स्नेह पाता ही है —लेकिन पिताजी मेरे लिए एक साधारण पिता से, कुछ बढ़कर थे। एक पिता के रूप में उनकी यादें आज भी मेरे मन-मस्तिष्क में अपनी अमिट-छाप बनाए हुए है। उनके सभी कार्य मेरे लिए जिन्दगी के मापदण्ड स्वरूप हैं— वे इतने गुणों के भण्डार थे—कि उनके जीवन से जो भी सीख सकूं-कम है। वे निज पर शासन, फिर अनुशासन, स्पष्टवक्ता, दूरदर्शी, बात की पकड़ वाले, न्यायनीति सम्पन्न, परोपकार भावना से ओत-प्रोत, हर बात की वास्तविकता को समझकर पहचानकर ही उसका अनुकरण करते थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन जनसेवा के लिए समर्पित कर दिया था उनका पूरा जीवन ही ऐसे उदाहरणों से भरा-पड़ा है— लेकिन मैं यहां संक्षिप्त में कुछ लिख रहा हूँ।

पहले मैं, उनके विशेष स्नेह को अपने बाल्यकाल से ही शुरू कर रहा हूँ। मैं कक्षा १ से १० तक भीनासर जवाहर हाई स्कूल में ही पढ़ता था, जो हमारे मकान से १ किमी. भी दूर नहीं होगी—लेकिन मैं शायद ही कभी स्कूल पैदल गया हूं। सुबह पिताजी को प्रायः १० बजे (Court) कोर्ट पधारना होता था— लेकिन मुझे स्कूल छोड़कर ही वे कोर्ट पधारते थे, एवं शाम को ४ बजे स्कूल की छुट्टी होने से पहले या तो स्वयं पधार जाते या गाड़ी सिर्फ मुझे घर छोड़ने के लिए, बीकानेर से भिजवा देते।

मैं १५ वर्ष की उम्र में कॉलेज में आ गया था—तो मुझे तुरन्त लायसेंस दिलवा दिया और मैं कभी स्कूटर या कभी स्वयं गाड़ी लेकर कॉलेज जाने लगा। जब भी मुझे कुछ रुपए की जरूरत होती—तो उन्होंने हमेशा मुझे तिजोरी की चाबी ही दी, मैं अपनी इच्छा से ले सकता था। उनका नियम था — १५ दिन में रोकड़ मिलाते थे —उससे पहले खर्चे का हिसाब लिख देना ही पर्याप्त था।



१९६७ में १९ वर्ष की उम्र में मेरी शादी हो गई। शादी चूंकि अहमदाबाद हुई थी। वहां खुलापन अधिक था —इसलिए पिताजी ने बीकानेर में भी, हमें कभी, कहीं भी जाने के लिए मना नहीं किया। और सहजता से उसे सहर्ष स्वीकार भी किया। वे बहुत दूरदर्शी थे —परिस्थितियों को पहचान कर इस प्रकार व्यवहार करते थे कि दूसरे को आभास भी नहीं हो पाता था।

१९६८ में बी.कॉम करने के बाद, मैं व्यापार का कार्य सीखने रामलालजी भाईजी के पास हमारे बीकानेर के प्रतिष्ठान पर जाने लगा था। वहाँ भी मुझे पिताजी ने ६ महीने बाद ही मुझे अपने निर्णय से कार्य करने की पूरी-पूरी छूट दे दी। एक-दो साल में ही मेचवेल इलेक्ट्रीकल्स पूना में मुझे डायरेक्टर भी बना दिया। यह उनका मेरे प्रति स्नेह और विश्वास ही था कि उन्होंने जल्दी ही निर्णय की स्वतन्त्रता के साथ, आगे बढ़ने का मौका दिया।

१९८० में मुझे कलकत्ता जाने के लिए कहा क्योंकि बैद परिवार से, जो कि हमीरमल चम्पालाल में हमारे भागीदार थे—आपसी मतभेद शुरू हो गए थे। उधर मेरे बड़े भाई शान्तिलालजी के साथ कपड़े का व्यवसाय था, जिसे मेरा छोटा भाई देखता था— हमारे मनमुटाव हो गए थे। पूज्य पिताजी ने ये दोनों इतने बड़े निर्णय भी मुझे अपनी सूझबूझ से सलटाने को कहा। बैद परिवार के साथ हमारे कोर्ट केस की स्थिति थी लेकिन वो नहीं करके मैंने आरबीट्रेशन का रास्ता चुना। मुझे आपने मद्रास में सेठ साहब मोहनमलजी साहब चोरड़िया के पास अकेले ही इसके लिए भेजा। दुर्भाग्यवश कोई फैसला नहीं हो पाया। लेकिन फिर भी, पिताजी ने इसे खुले दिल से सराहा। बड़े भाई साहब के साथ कपड़े के व्यवसाय से हुए मनमुटाव को भी मैंने जिस निर्णय से भी सुलझाया। पिताजी ने इन दोनों निर्णयों से अधिक सहमत न होने पर भी मेरी हिम्मत बढ़ाई, मुझे टोका नहीं।

कोर्ट कार्य के लिए भी मुझे, जब मैं बीकानेर में रहता था जाना पड़ता था। राजकुमारी मालू ट्रस्ट केस के लिए उन्होंने मुझे हाईकोर्ट इनकम टैक्स कमीशनर आदि सभी जगह पूर्ण विश्वास के साथ भेजा। आपने कहा 'हर कार्य में सफलता/असफलता दोनों मिलती है।' यह पिताजी का विश्वास ही था कि मैं हर क्षेत्र में जाने में सक्षम हो सका। एक पिता को अपने पुत्र पर इतना आत्मविश्वास हो, यह एक विशेष बात थी और यह सौभाग्य मुझे मिला। आज मुझे यह उनका एक आर्शीवाद सा प्रतीत होता है।

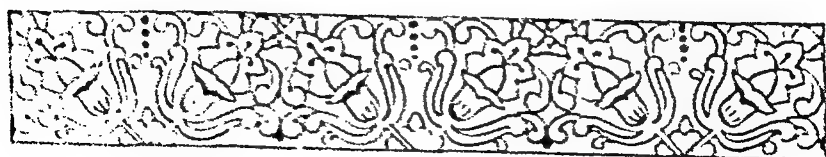
१९८५ में जब पिताजी को प्रोस्टेट की तकलीफ हुई और ऑपरेशन के लिए बैंगलौर जाना था —तब भी पूज्य पिताजी ने सभी को साथ चलने के लिए मना कर



दिया और मुझे साथ लेकर बैंगलौर गए। यह एक पुत्र के लिए कितनी सौभाग्य की वात है। आपरेशन पूर्ण सफल रहा—लेकिन कुछ उम्र के कारण उसके बाद से, धीरे-धीरे उनके स्वास्थ्य में गिरावट ही आती गई। वे अपने अंतिम समय तक भी पूर्ण स्वावलम्वी थे और इतनी हिम्मत थी कि उनके चेहरे से या वात से, किसी अन्य को उन्होंने कभी भी दैहिक कष्ट का आभास नहीं होने दिया।

१९८६ अक्तूवर में कलकत्ता में मैंने जव नया फ्लेट लिया, तव पिताजी को लिखा अव आप एक दफा पधारें, तो अच्छा रहेगा। पिताजी यही सोचकर कि मैं अव इससे ज्यादा स्वस्थ नहीं होऊंगा जनवरी १९८७ को पू. मासा के साथ कलकत्ता भी पधारे। लेकिन २ महीने में ही खांसी अस्थमा ज्यादा हो जाने से, उनका दिल फिर उठ गया और वोले अव वीकानेर चलते हैं। १५ मार्च के लगभग हम लोग वीकानेर पहुंचे—वहाँ तवियत में थोड़ा सुधार आने लगा तव मुझे कहा 'तुम वापस कलकत्ता चले जाओ। कुछ जरूरी काम पेन्डिंग थे —पहले वो निपटाकर, फिर ३/४ महीने में एक दफा देश आ जाना।' मैं २८ मार्च को ही वापस पहुंचा था कि पूज्य पिताजी का १ अप्रेल को देहावसान हो गया। हम सभी भाई-वहिन, वम्वई-मद्रास-कलकत्ता से दिल्ली पहुंचकर २ अप्रेल को वीकानेर पहुंचे और यह हमारा सौभाग्य था कि ऐसी पुण्य आत्मा के अन्तिम दर्शन हो सके। आज मुझे ऐसा लग रहा है कि वे अपने पवित्र चरणों से नए घर को पवित्र करने ही, कलकत्ता पधारे थे। आज उन्हीं के आशीर्वाद से यह घर फल-फूल रहा है। आज पिताजी हमारे वीच नहीं है, लेकिन मैं अपने घर में रहते हुए हर पल उन्हें अपने करीव पाता हूं। इस घर में उनका वह स्पर्श ही मेरे लिए एक विशेष महत्व रखता है।

मेरे जन्म से पहले की वात है उनकी दूरदर्शिता का एक उदाहरण आज के संदर्भ में देखते हैं तो लगता है कि उन्होंने जो वात १९३६ में सोची थी आज वो सुप्रीम कोर्ट में कानून वनने के लिए पेडिंग है। तव उन्होंने अकेले ही वाल दीक्षा का विरोध करने का वीड़ा उठाया। उन दिनों वीकानेर में एसेम्वली हुआ करती थी—पिताजी एम.एल.ए. थे, उन्होंने वाल दीक्षा विरोधी एक विल रखा। समाज के कुछ अन्य धार्मिक सम्प्रदायों ने इसका विरोध किया, क्योंकि यह एक धार्मिक भावना थी। सामन्तशाही जमाना था —'एसम्वेली' जरूर थी लेकिन महाराजा ही सर्वोपरि हुआ करते थे। उन्होंने पिताजी को वुलाकर कहा यह Bill Withdraw कर लो। क्योंकि हमें सिर्फ समाज सुधार ही नहीं करना है वरन् राज भी करना है इसके लिए सभी सम्प्रदायों को साथ लेकर चलना पड़ता है। अतः यह कानून तो नहीं वन सका —लेकिन पिताजी भी अपनी



बात पर अडिग थे, जो उन्होंने २ /३ हजार पत्र छपवाकर देश के सभी प्रमुख नेताओं/उद्योगपतियों, चिन्तकों एवं अन्य प्रमुख लोगों को पोस्ट कर दिए और उनके समर्थन स्वरूप, जो जवाब आए उसकी एक किताब SOME OPENIONS छपवा दी। आज के सन्दर्भ में वो एक अमूल्य दस्तावेज है।

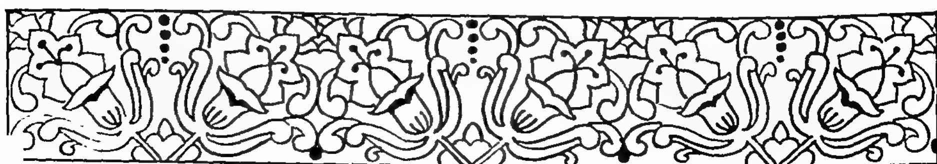
दूरदर्शिता का दूसरा उदाहरण भीनासर साधु सम्मेलन था जो १९५६ में सम्पन्न हुआ। पिताजी का यह सोचना था कि समस्त भारतवर्ष के स्थानकवासी साधुवर्ग अपना पद त्याग कर, एक आचार्य के अन्तर्गत कार्य करें, तो ही धर्म की गरिमा एवं दूसरे समाज पर इसका प्रभाव बना रह सकेगा। आने वाली पीढ़ी के लिए यह जरूरी भी है कि धर्म को एक संगठन का रूप भी दिया जाए। उनके सफल नेतृत्व में, भीनासर साधु सम्मेलन पूर्ण सफल रहा। लेकिन दुर्भाग्यवश फिर जल्दी ही साम्प्रदायवाद पनपने लगा और आज वो एक अभिशाप सा बन गया है। पिताजी ने हमेशा पूरी जिन्दगी इस बात का विरोध किया चाहे इसके लिए उनको कैसी भी परिस्थिति का सामना क्यों न करना पड़ा।

उन्होंने जवाहरलालजी महाराज साहब की अनन्य सेवा की, क्योंकि उनके उदार विचार एवं धर्म को समय के अनुरूप परिवर्तन के वे समर्थक थे। यह बात उनकी दृष्टि से सही थी। यही कारण था कि इसके बाद वे किसी अन्य से इतना नहीं जुड़ सके। वे हमेशा हर बात को समझकर उसकी तह तक पहुंचकर ही, उसका अनुसरण करते थे।

वे बहुत ही न्यायनीति सम्पन्न व्यक्ति थे—इसलिए हमारे भुआ साहब श्रीमती राजकुमारी मालू, जो वर्षों से विधवा थे एवं उनके कोई पुत्र भी नहीं था। वे अपनी वसीयत में पू. पिताजी को भाई होने के नाते Executor of the Will बनाना चाहते थे। पिताजी की एक शर्त थी कि यदि वे अपनी कुल सम्पत्ति का ३० % धर्म कार्यों के लिए देना निश्चित करें, तो ही वे ट्रस्टी बनेगें। उनके यह मान लेने पर उन्होंने ट्रस्टी बनना स्वीकार किया।

इसके लिए उन्हें अपनी जिन्दगी के २० वर्ष हाईकोर्ट/सुप्रीम कोर्ट में लगाने पड़े, लेकिन हिम्मत नहीं हारी और उसका ही फल था कि हर बार उन्हें सफलता मिली। उन्होंने हमेशा अन्याय का विरोध किया—उससे समझौता नहीं किया और इसके लिए बड़ी से बड़ी चुनौती का सामना भी किया।

कलकत्ता में आपने चम्पालालजी बैद के साथ भागीदारी में जूट का बड़ा व्यापार मैं. हमीरमल चम्पालाल के नाम से शुरू किया था। चम्पालालजी बैद ने अपने



जीवन-काल तक उसे इस तरह निभाया तथा हमेशा कहते थे ये ही मेरे सेठ हैं—हम लोग तो इनके कारण ही खड़े हुए हैं। पिताजी ने जिस पर विश्वास किया —पूरा ही किया। हमीरमल चम्पालाल का इतना बड़ा व्यापार मात्र चम्पालालजी वैद के, पूर्ण विश्वास के साथ, उन पर छोड़ रखा था। आज इतना विश्वास करने वाले इन्सान, संसार में मिलने दुर्लभ हैं।

हम लोगों ने पिताजी को कभी भी दोपहर में सोते हुए या गप्पें लगाते हुए नहीं देखा, आलस्य उनसे कोसों दूर था। वे हमेशा कुछ ना कुछ लिखते या पढ़ते रहते थे। रोज ही ढेर सारे पत्र आते थे— १०/१२ पत्रों का तो उसी दिन ही, जवाब भी दे देते। वे चाहे कितने भी व्यस्त क्यों ना हो— यदि उनसे मिलने कोई गया—तो सभी कार्य छोड़कर पहले उससे बात करते। बात समाप्त होते ही, तुरन्त अपने कार्य में व्यस्त हो जाते। उन्होंने शायद ही कभी किसी से कहा होगा—कल आना, सोचकर बताऊंगा। वे बहुत ही स्पष्टवक्ता एवं हाजिर जवाबी थे। वे कर्मठ, साहसी एवं पुरुषार्थी महापुरुष थे।

नियमबद्ध जीवन उनका लक्ष्य था। शादी विवाह में सभी लोगों को बर्तन आदि देते थे। घर में बर्तन हैं—तो उन्होंने कभी ना नहीं कहा। और वो भी यदि कोई दोपहर में भयंकर गर्मी में भी आ गया—तो भी सब कार्य छोड़कर, उसे पहले बर्तन देते। किसी से भी शायद यह नहीं कहा कि बाद में आ जाना और वो भी नियमानुसार स्वयं कष्ट सह लेना स्वीकार्य था पर दूसरों को कष्ट न देना उनका महालेख था। जिसने पहले लिखवाया है—उसे ही देते चाहे कोई भी ब्राह्मण माली क्यों ना हो। परिवार में भी किसी के यहां शादी है— लेकिन बर्तन दूसरे ने लिखा रखे हैं तो पिताजी तो उसे ही देंगे। ऐसी बहुत सी विशेष बातें थी —छोटे वर्ग को बराबरी का दर्जा देना उनकी विशेषता थी जिससे पूरे ग्रामवासी उनसे बहुत प्रभावित थे। होली दीवाली सैंकड़ों की संख्या में लोग उनसे मिलने आते थे। साधारण व्यक्ति से भी स्नेह निभाने वाले, ऐसे व्यक्ति संसार में कम ही मिलते हैं। यह प्रक्रिया उन्होंने अपने पूरे जीवन-काल तक ज्यों की त्यों निभाई। १९८५ के बाद कुछ अस्वस्थ रहने लगे थे—सो ऊपर सामने के कमरे में विराजते थे—फिर भी उनका जीवन तो ऐसे ही नियम बद्ध था।

उनके गुणों को लिखना, लेखनी के बाहर की बात है। वे मित्रों के परम मित्र एवं समस्त मानव मात्र को एक ही पिता की सन्तान समझने वाले संसार में विरले ही देखने को मिलते हैं। आज सन्त तुलसी के ये शब्द स्मरण हो रहे हैं—

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।



इन दोहों के उपरान्त एक और घटना याद आने लगी है। पूज्य पिताजी श्री मुरली मनोहर गौशाला के अध्यक्ष थे। राजकाज में भी उनका पूरा वर्चस्व था। उन्हें पता लगा सरकार को १०,००० रुपया जमा करवाकर गायों के चरने के लिए, गौचर भूमि छुड़ाई जा सकती है। तब पूज्य पिताजी ने अपने स्नेही मित्र श्री वंशीलालजी राठी को बुलाकर कहा-आप १०,००० रुपया देकर यह धर्म कार्य क्यों नहीं कर देते। वे पिताजी की बात कभी नहीं टालते थे। उनसे १०,००० रुपया दिलाकर ५४०० बीघा जमीन गायों के चरने के लिए सरकार द्वारा गोचर भूमि रूप में सदैव के लिए छुड़वा दी। वे चाहते तो स्वयं भी १०,००० दे सकते थे लेकिन उन्हें अपने मित्रों से विशेष स्नेह था और समस्त मानव मात्र को एक ही पिता की सन्तान समझते थे सो यह कार्य उन्होंने श्री वंशीलालजी राठी द्वारा करवाया।

पिताजी में एक विशेष दिव्य अलौकिक शक्ति थी—जिससे वे जो भी बात किसी से करते उसे पूर्ण समर्थन के लिए तैयार कर लेते। और जिस भी कार्य का उन्होंने कभी बीड़ा उठाया उसे पूर्ण अवश्य किया। भीनासर में बाबा सालमनाथजी का कुआ यों ही बेकार पड़ा था। पिताजी ने उनसे बात की और उन्हें इस बात के लिए राजी कर लिया कि यदि वे यह जमीन दे देवें तो वहां एक गर्ल्स स्कूल बनाकर वे सरकार को समर्पित कर देंगे इस तरह वहां एक बांठिया बालिका विद्यालय बनवाकर उन्होंने सरकार को दे दिया, जो आज भी सफलतापूर्वक चल रहा है। इसी तरह पू. जवाहरलालजी महाराज की स्मृति में जवाहर हाई स्कूल लड़कों के लिए बनवाया और वो भी सरकार को दे दिया। उनका शिक्षा के प्रति भी बहुत लगाव था। उन दिनों जवाहर विद्यापीठ की स्थापना आचार्यश्री जवाहरलालजी म.सा. की स्मृति में भीनासर में आपके अथक प्रयासों से हुई जिससे आर्थिक दृष्टि से असम्पन्न लड़कों को रहने खाने की व्यवस्था थी। इसमें एक जवाहर पुस्तकालय भी बनवाया। गांव में पानी की कमी थी —तो उन्होंने दो कुए भी खुदवाए और गांव की इस समस्या का भी हल निकाला। धार्मिक ध्यान-साधना के लिए एक पौषधशाला भी बनवाई। उनकी सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि थी और हर क्षेत्र में उनका कार्य आज उनकी याद भीनासर वासियों में तरोताजा किए हुए है। वे पूर्ण रूपेण धार्मिक थे— लेकिन साथ ही सम्प्रदायवाद से बहुत परे थे। उनकी बातें सच्चाई पर आधारित थी। ऐसे थे मेरे पूज्य पिताजी। यह हम लोगों के लिए बहुत गर्व की बात है। मैं श्रद्धावनत होकर उन्हें शतः शतः नमन करता हूं। □

५ जी मेन्डेविला एपार्टमेन्ट

६ मेन्डेविला गार्डन, बालीगंज

कलकत्ता-७०००१९



परम पूज्य बाबूजी : स्मृतियों के वातायन से

— श्री सुमतिलाल बांठिया —

सेठ श्री चम्पालाल जी बांठिया मेरे परमपूज्य पिताजी थे, जिन्हें हम घर में बाबूजी कहकर पुकारते थे। चैत्र शुक्ला तृतीया वि. संवत् २०४४ तदनुसार दिनांक १ अप्रेल १९८७ को आपका संथारापूर्वक स्वर्गवास हो जाने पर समाज के विशिष्ट व्यक्तियों तथा हमारे परिजनों, सम्बन्धियों व भीनासर गांव वासियों ने उनके आदर्श जीवन पर एक स्मृति ग्रंथ प्रकाशित करने की प्रेरणा दी ताकि अन्य लोग भी उनके जीवन से कुछ प्रेरणा ले सकें। अतः पूर्व में निजी स्तर पर ग्रंथ प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया तदनन्तर श्री जवाहर विद्यापीठ भीनासर की स्वर्ण जयन्ती का प्रसंग आया। इस संस्था के संस्थापक पूज्य पिताजी ही थे अतः संस्था ने मीटिंग में सर्व सम्मति से निर्णय लिया कि संस्था अपनी स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर अपने संस्थापक सेठजी की पुण्य स्मृति में ग्रंथ प्रकाशित करेगी अतः अब प्रस्तुत ग्रंथ जिसमें उनकी जीवन गाथा व स्मृति कथा संकलित है को संस्था प्रकाशित करवा रही है एतदर्थ हम संस्था के प्रति आभारी हैं और ग्रंथ में व्यय की जाने वाली राशि संस्था को भेंट स्वरूप प्रदान कर दी गई है ताकि संस्था पर अतिरिक्त व्यय भार न बढ़े।

पूरा मरु प्रदेश बाबूजी को सेठ (श्रेष्ठ) कहकर पुकारते थे। कोई भी व्यक्ति सेठ यूं तो नहीं कहलाता है उसमें सेठों के लायक गुण होने चाहिए। सिर्फ धन सम्पदा से ही व्यक्ति सेठ कहलाये तो आजकल बड़े शहरों में हर मोहल्ले में सैकड़ों करोड़पति व्यक्ति निवास करते हैं लेकिन कोई उन्हें सेठ नहीं कहता क्योंकि वे अपना भला करते हैं अपने व अपने परिवार के लिए पैसा उपार्जन करते हैं जब कि बाबूजी ने अपना पूरा जीवन समाज के लिए न्यौछावर कर दिया। हालांकि कलकता में उस समय आपका जूट का बहुत बड़ा व्यापार मै. हमीरमल चम्पालाल के नाम से चलता था लेकिन आपने सिर्फ उसमें पैसा लगा दिया बाकी सारा कार्य पार्टनर चम्पालाल जी बैद ही देखते थे आप तो सिर्फ १ महीने के लिए अपने व्यापार स्थल पर कलकता जाते थे बाकी ११ महीने समाज सेवा में ही बिताते थे और विशेषकर अपने गांव के लिए तो पूर्णतः समर्पित थे। गांव में जो भी विकास हुआ सब आपके प्रयास से ही हुआ। गांव के लड़कों को पढ़ने के लिए गंगाशहर बीकानेर जाना पड़ता था इसलिए आपने भीनासर के जवाहर हाई स्कूल की स्थापना की। लड़कियों के लिए हमीरमलजी बांठिया उच्च प्राथमिक कन्या



विद्यालय की स्थापना की। उक्त दोनों भवनों का निर्माण कर कुछ वर्ष अपने स्वयं के खर्चे से स्कूल चलाया वाद में सरकार को उक्त दोनों भवन समर्पित कर दिए। भीनासर के दो कुंओ का निर्माण कराकर गांव वासियों को मीठा पानी उपलब्ध करवाया जब तक वाटर वर्क्स की स्थापना नहीं हुई आपने पूरे गांव को निःशुल्क पानी उपलब्ध करवाया।

गांव वासियों के हर सुख दुख में आप भागीदार थे गांव का कोई व्यक्ति वीमार हुआ और उसे इलाज की जरूरत होती उसके लिए तुरन्त अपनी गाड़ी ड्राइवर उपलब्ध करवाते और उसे अस्पताल पहुंचाने की व्यवस्था करते और यदि कोई गरीव है इलाज का पैसा भी नहीं है तो उसे आर्थिक सहायता भी प्रदान करते थे। तभी गांव वाले उन्हें याद करते हैं। गांव वालों के आपस में कोई झगड़ा हो जाता तो उन्हें कोर्ट कचहरी में जाने की जरूरत नहीं थी सेठजी उन दोनों की वात सुनते और आपस में समझौता करवा देते थे। गांव वाले जानते थे कि वे निष्पक्ष फैसला देंगे अतः उनकी वात मानते भी थे। गांव में किसी के भी कोई व्याह शादी होती तो उसके लिए वर्तन आदि जो भी जरूरत होते आप उन्हें निःशुल्क उपलब्ध करवाते थे। आप गांव वालों का इतना ख्याल रखते थे अतः गांव वाले भी आपको उतना ही सम्मान देते थे। शाम को खाना खाने के बाद आप दो घंटा घर के बाहर पाटे पर विराजते थे। उस समय गांव का कोई भी पुरुष वहां से निकलता तो आपको अभिवादन किए विना नहीं निकलता था। यदि साइकिल पर सवार है तो साईकिल हाथ में लेकर पैदल ही जाता था तथा गांव की कोई स्त्री उस सड़क से गुजरती तो पूरा घूंघट निकाल कर पाटे से काफी पहले से चप्पल हाथ में ले लेती और काफी आगे गुजर जाने के बाद ही चप्पल पहनती थी। यह सब सम्मान का सूचक है।

आप गांव के किसी आदमी से भी फालतू बात नहीं करते थे। न तो उन्हें फालतू बात कहना पसन्द था और न ही सुनना। वे टु दी पॉइंट ही बोलते थे वैसे उनके चेहरे पर भी इतना ओज व रौब था कि किसी व्यक्ति की कोई निरर्थक बात कहने की हिम्मत भी नहीं होती थी गांव वाले क्या शुरू में तो हम बच्चे भी उनसे डरते थे और जितनी जरूरत की बात होती थी उतनी ही करते थे। उन्हें एकान्तवास ही ज्यादा पसंद था। वैसे शुरू में कई वर्षों तक तो दोपहर में आपके ताश की महफिल जमती थी और अपने बराबरी के मित्रों के साथ दोपहर में ३-४ घंटे ताश खेलते थे। उसके बाद आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज सा. का भीनासर में चातुर्मास हुआ। धार्मिक संस्कार तो आपमें शुरू से ही थे अतः आचार्य श्री का व्याख्यान सुनने जाते थे तथा आचार्य श्री के व्याख्यानों से आप अत्यधिक प्रभावित हुए; उनके व्याख्यान ही ऐसे थे कि सुनने बैठने के बाद उठने की इच्छा भी नहीं होती थी। एक बार कांग्रेस के दिग्गज नेता मदनमोहन मालवीय बीकानेर पधारे तो उन्हें भी आचार्य श्री का व्याख्यान सुनने के लिए अर्ज किया



गया उन्होंने कहा मुझे आधा घण्टा से ज्यादा समय नहीं है आचार्य श्री को भी यह बात कह दी गई तो आचार्य श्री ने अपना व्याख्यान शुरू करने के ठीक आधा घंटा बाद रुक गए और मालवीय जी को कहा कि आपको जाना है तो मालवीयजी भी व्याख्यान से इतने प्रभावित हुए उन्होंने कहा नहीं महाराज आप और व्याख्यान चलाइये मैं बैठूंगा और दो घंटे व्याख्यान चला और वे एकाग्रचित होकर बैठे रहे और आचार्य श्री के परम भक्त हो गए। उसके बाद जब लन्दन गोलमेज कांफ्रेंस में भाग लेने गए तब दिल्ली से विशेषकर आचार्य श्री से मिलने व मांगलिक श्रवण करने के लिए आए फिर आशीर्वाद लेकर लन्दन गए और पिताजी के जीवन में भी आमूलचूल परिवर्तन करने वाले आचार्य श्री ही थे। वे पारखी थे उन्होंने सोचा यदि ये व्यक्ति अपना समय ताश में नष्ट नहीं करके रचनात्मक कार्यों में लगाए तो समाज का भी बहुत उत्थान हो सकता है अतः एक दिन आपको पास बुलाकर कहा कि हम आपके भीनासर में चातुर्मास करें और आप दोपहर में सेवा में नहीं आकर ताश खेलें क्या यह अच्छा लगता है। आप पर उनकी बात का इतना प्रभाव हुआ कि उसी समय खड़े खड़े ही आचार्य श्री को कह दिया कि आज से और अभी से ही मुझे जीवन पर्यन्त ताश खेलने का सौगन दिला दीजिये और आपने सौगन ले लिये उसके बाद जिन्दगी में ताश नहीं खेली और पूरा जीवन समाज सेवा में लगा दिया। आचार्य श्री जवाहरलालजी के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी और आपने उनकी अनन्य सेवा की। आचार्य श्री का स्वास्थ्य अनुकूल न होने के कारण विहार करने की स्थिति नहीं थी अतः अन्तिम कई वर्षों तक भीनासर में विराजे अतः सेवा का अत्यधिक मौका मिला।

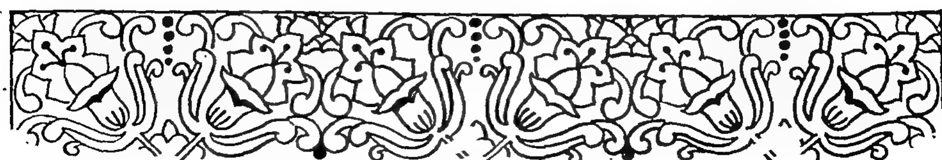
जवाहराचार्य के प्रति सेठजी की अनन्य श्रद्धा एवं भक्ति को आज भी लोग याद करते हैं। आपने भीनासर में मुख्य सड़क पर स्थित भव्य हॉल जहां पहले लड़कियों का स्कूल चलता था (स्कूल के लिए आपने नया भवन बनाकर उसमें स्थानान्तरित कर दिया) आपने व आपके बड़े भाई श्री सोहनलालजी ने अपने पुण्यश्लोका पिताश्री हमीरमल जी की स्मृति में श्री जवाहर विद्यापीठ को दान में दे दिया जो साधु साध्वियों के व्याख्यान, पौषध आदि के ही काम में आता है। साथ ही इस हॉल के पास ही आपके निजी कमरे बनाये हुए थे वे भी आपने ट्रस्ट बनाकर धर्मार्थ प्रदान कर दिए जो साधु साध्वियों के ठहरने आदि के काम आते हैं।

बाल दीक्षा के आप प्रबल विरोधी थे। आप महाराजा गंगासिंह जी के समय बीकानेर राज्य विधान सभा के सदस्य थे और बाल दीक्षा के विरोध में एक विधेयक प्रस्तुत किया उस समय तेरापंथियों में बाल दीक्षाएं ज्यादा होती थी। वे सब मिलकर महाराजा के पास गये और महाराजा को सभी प्रजाजनों को साथ लेकर चलना होता था अतः महाराजा साहब ने सेठ साहब को बुलाकर कहा कि या तो आप ये विधेयक



वापिस ले लीजिये वर्ना मुझे वीटो पॉवर से गिराना होगा। आपने पूछा —क्या यह विधेयक गलत है तो महाराजा साहब ने कहा — 'विधेयक बहुत अच्छा है और मैं खुद इसका समर्थक हूं लेकिन मुझे सिर्फ सुधार ही नहीं करना वरन् राज्य भी करना है।' अतः सेठसाहब ने महाराजा की भावनाओं का आदर करते हुए विधेयक वापिस ले लिया और आपने देश भर के प्रमुख व्यक्तियों को इस विधेयक की प्रति भेजी और इसे अपार समर्थन मिला और इसके समर्थन में जो लोगों ने अपने विचार लिखकर भेजे उनके मुख्य अंश हम इस ग्रन्थ में छाप रहे हैं तथा आपने इन सभी लोगों के विचारों को संकलित कर एक पुस्तक Some opinions छपवाई और लोगों ने इसे बहुत सराहा तो आपकी मेहनत सफल हो गई। महाराजा सेठ साहब की समाज को दी गई सेवाओं से बहुत प्रभावित हुए और उन्हें विशिष्ट समाज सेवा के लिए पब्लिक सर्विस मैडल फर्स्ट क्लास देकर सम्मानित किया और चांदी की छड़ी और चपड़ास देकर सम्मानित किया। बीकानेर जैन समाज ने भी उत्कृष्ट समाज सेवा के लिए आपको स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया।

पिताजी आलस्य से कोसों दूर थे। उनकी तो यही वृति थी कि काल करे सो आज कर और आज करे सो अब, पल में परले होएगी फिर करेगा कब। इस तरह सब काम हाथों हाथ सलटाते थे और इतने नौकर चाकर होते हुए भी अपना काम हाथ से ही करते थे। अपने कपड़े अपने आप धोते थे और एकदम सादगी से रहते थे। समय की पाबन्दी व नियमितता उनके विशेष ग्रहण योग गुण थे। कभी भी किसी ब्याह शादी फंक्शन या मीटिंग कहीं भी जाना हो और उसमें समय १० बजे का दिया है तो ठीक १० बजे पहुंचते थे। उसी तरह घर में भी सुबह उठने का समय ७ बजे, नाश्ते का समय ८ बजे, सुबह का खाना १२ बजे, दोपहर की चाय ४ बजे, शाम का खाना ६.३० बजे व रात को दूध १० बजे व १०.३० बजे सोना—जीवन पर्यन्त यह एक ही समय रहा और उसमें भी नियमितता। न कभी ज्यादा खाया न कभी कम। दही या दही से बनी हुई चीज उन्होंने जिन्दगी में कभी छुई भी नहीं। अपने जैन शास्त्रों में दही को महाविगय बताया है; एक दिन पड़ा रहने से इसमें असंख्यात जीवों की उत्पति हो जाती है जो हम खुली आंखों से नहीं देख सकते, माइक्रोस्कोप से देखे जा सकते हैं। अतः उनको दही से घृणा हो गई कभी जिन्दगी में दही नहीं खाया। उनकी इतनी नियमितता व समय की पाबन्दी के कारण उन्होंने अपने जीवन के ८५ वर्ष बहुत आराम से बिताए। हालांकि उनको बचपन से अस्थमा की बीमारी थी जो पैतृक असर था लेकिन इसके लिए वे अमेरिका से एक दवाई मंगाते थे जिसकी एक मात्रा में ही अस्थमा ठहर जाता था। अतः इस असाध्य बीमारी के होते हुए भी अपनी नियमितता के कारण बीमारी को कभी अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया।



मैं बहुत सौभाग्यशाली रहा क्योंकि पूज्य बाबूजी को मेरे ऊपर पूर्ण आत्म विश्वास था और वे मेरी कार्यशैली से पूर्णतः संतुष्ट थे। सन् १९७५ में शादी होने के २-३ महीने बाद ही मुझे कलकत्ता भेज दिया और बड़े भाई शांतिलालजी के साथ कपड़े का होलसेल का व्यापार शुरू करवा दिया लेकिन सन् १९७९ में उनकी लड़की की शादी के बाद आपस में मनमुटाव हो गया तो सन् १९८० में पुनः बीकानेर बुला लिया और टिम्बर का काम संभला दिया। मेरे काम संभालने के बाद सभी पार्टनरों को हटा दिया और मुझे व्यवसाय सम्बन्धी सभी निर्णय स्वयं लेने की पूर्ण स्वतन्त्रता दी और उनके इसी विश्वास व आशीर्वाद से मैं इस व्यवसाय को सफल व लाभदायक बनाने में कामयाब रहा। श्री जवाहर विद्यापीठ संस्था के प्रमुख संस्थापक पूज्य पिताजी ही थे और शुरू से ही इसका काम संभालते थे करीब २० वर्ष तक संस्था के मंत्री, कोषाध्यक्ष व ट्रस्टी रहे बाद में शारीरिक अस्वस्थता के कारण १९७५ में कोषाध्यक्ष पद व १९७६ में मंत्री पद से त्यागपत्र देकर कार्य समाज को संभला दिया लेकिन समाज ने ट्रस्टी में उनके साथ मेरा नाम जोड़ दिया और बाद में उनके देहावसान के बाद सन् १९८८ में मुझे मंत्री भी बना दिया और पूरी लगन से मैं अपने दायित्व का निर्वहन कर रहा हूँ और पूज्य पिताजी के लगाए इस पौधे का सिंचन कर रहा हूँ जो अब एक वट वृक्ष बन चुका है। पूज्य बाबूजी के कारण हमें भी आज समाज में वही आदर व सम्मान मिल रहा है इसे मैं उनके आशीर्वाद का ही फल मानता हूँ।

उनके किन-किन गुणों का मैं वर्णन करूं मेरी लेखनी थक जायेगी लेकिन फिर भी उनके पूरे गुणों का वर्णन मैं नहीं कर सकता। वास्तव में वे एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक संस्था थे इसीलिए बीकानेर की गोल्डन जुबली बुक व हूजहू किताब में भी उनका उल्लेख किया गया और अनेक सामाजिक संस्थाओं ने उन्हें अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया। हम चाहते हैं कि उनके जीवन से कुछ ग्रहण कर सकें। भगवान से प्रार्थना करता हूं कि हमें शक्ति दे ताकि जीवन पर्यन्त उनके बताये मार्ग पर चलते रहें और उनके अधूरे छोड़े कार्यों को पूरा करने में सक्षम हो सकें यही हमारी पूज्य बाबूजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। □

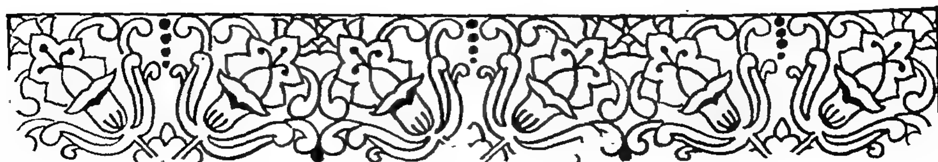
मंत्री एवं ट्रस्टी श्री जवाहर विद्यापीठ
भीनासर-३३४४०३ (बीकानेर)



स जीवति गुणा यस्य, यस्य धर्मः स जीविति।
गुण-धर्म विहीनस्य, जीवितं निष्प्रयोजनम्॥

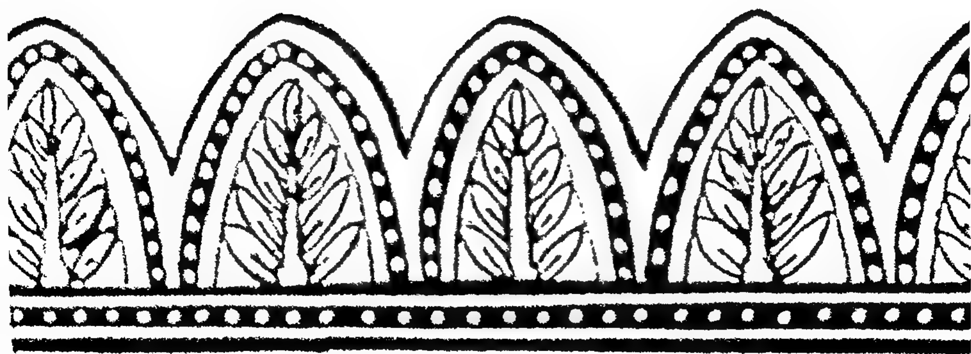
—चाणक्य नीति

जिसके अन्दर गुण और धर्म विद्यमान हैं उसी का जीवन सच्चा जीवन है। गुण और धर्म विहीन जीवन निरर्थक है।

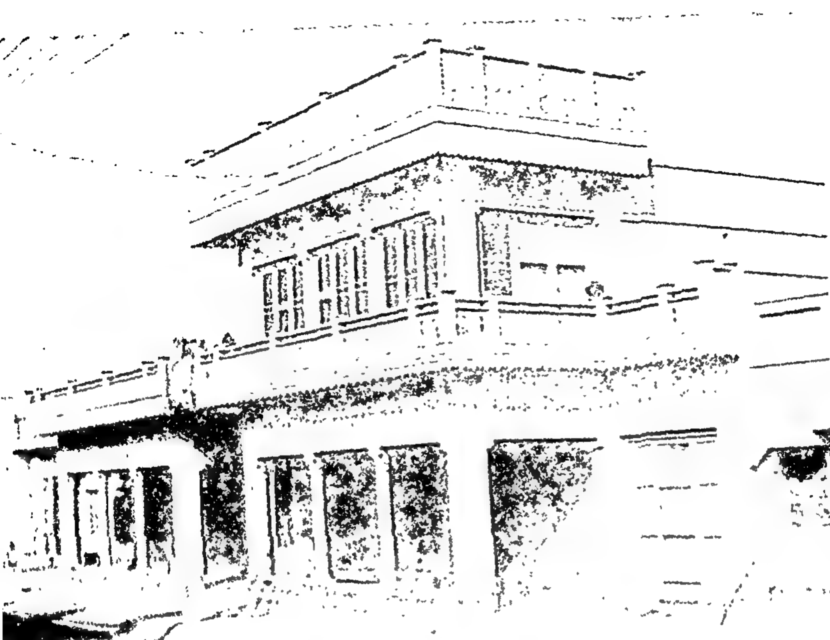


चित्र वीथी

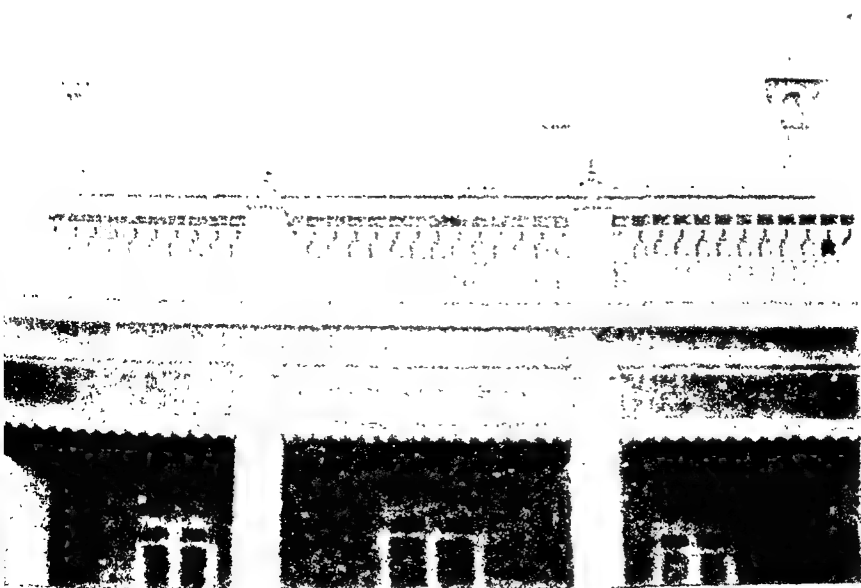
सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक व राजनैतिक



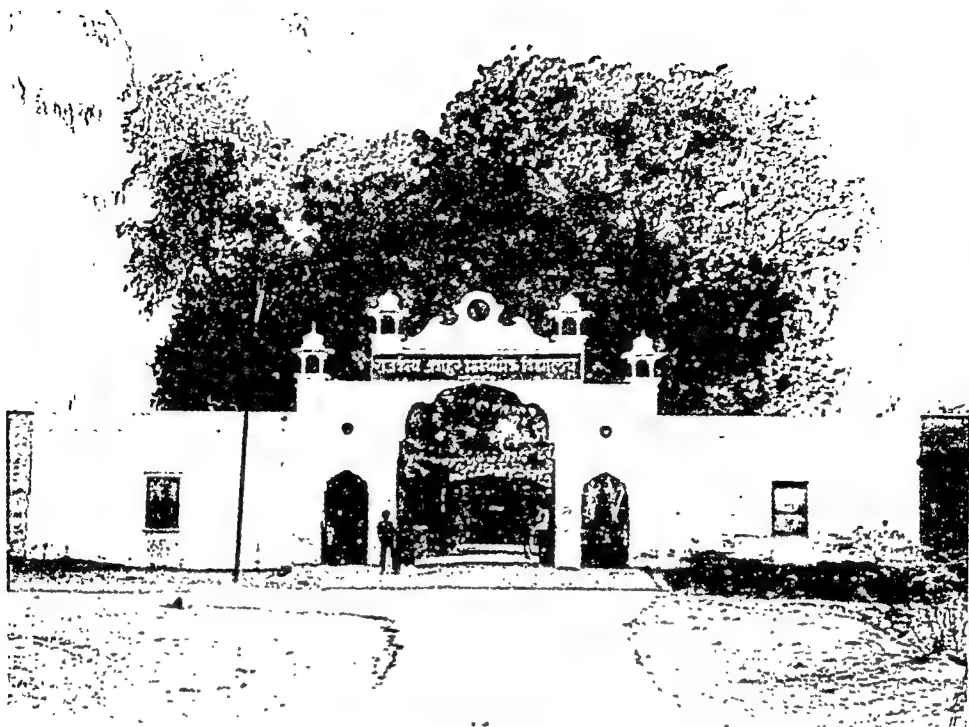
सेठजी द्वारा स्थापित भीनासर की संस्थाएं



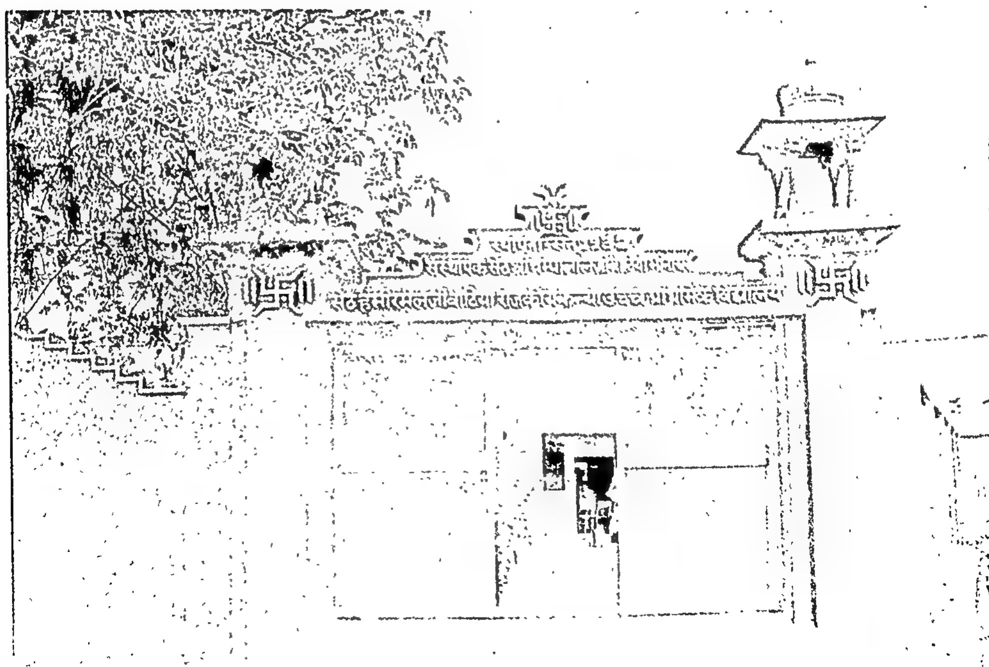
श्री जवाहर विद्यापीठ



[illegible]



राजकीय जवाहर माध्यमिक विद्यालय



सेठ श्री· हमीरमलजी बांठिया राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय



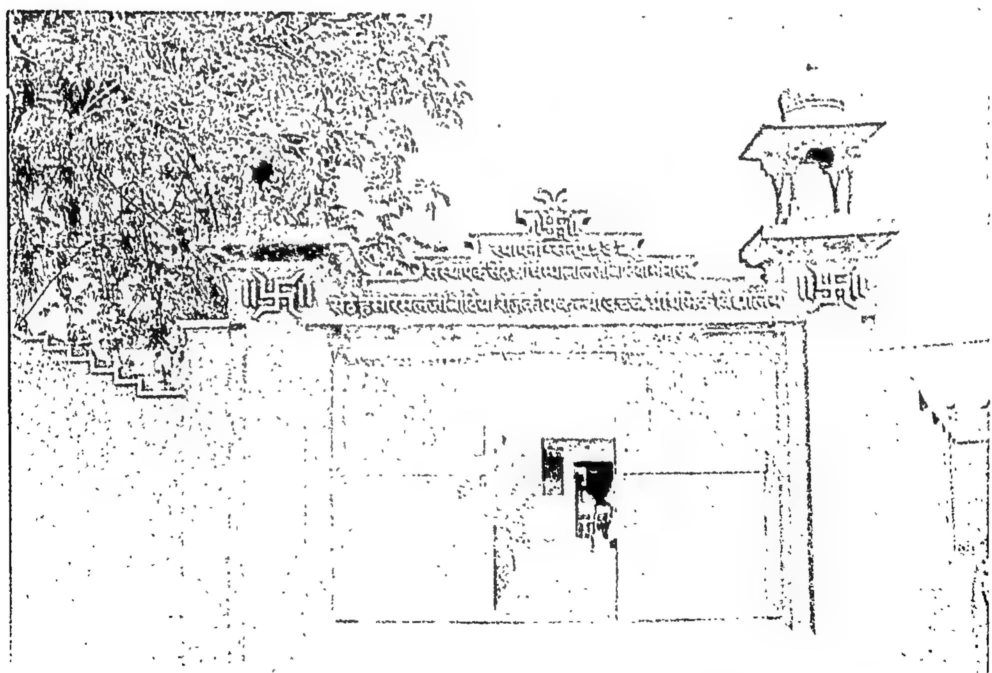
सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया धर्मार्थ ट्रस्ट



[illegible]



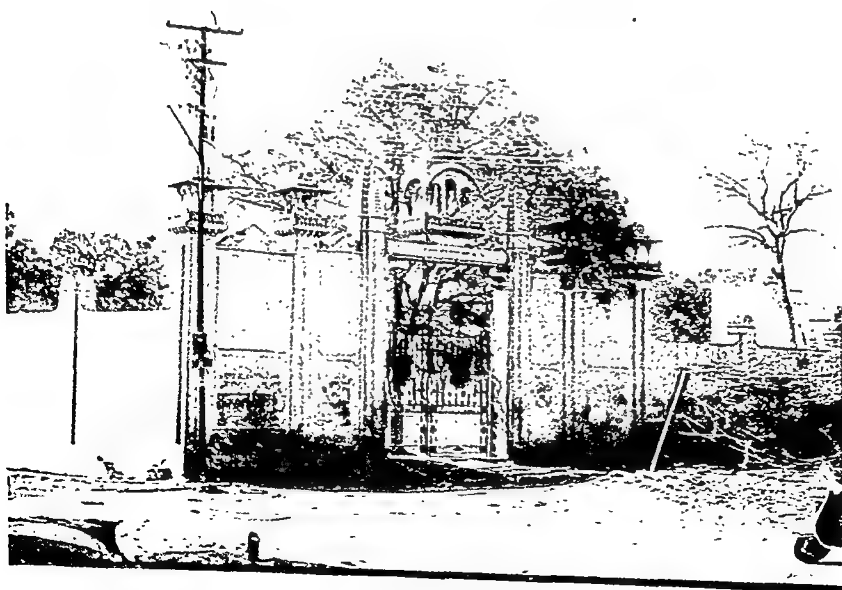
राजकीय जवाहर माध्यमिक विद्यालय



सेठ श्री· हमीरमलजी बांठिया राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय



सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया धर्मार्थ ट्रस्ट



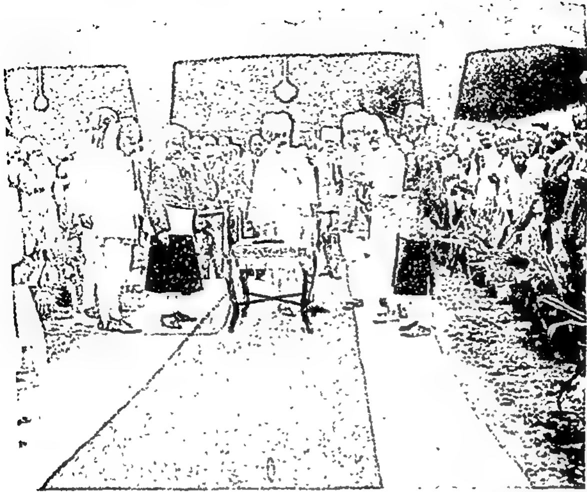
आनन्द सागर कुआं

बीकानेर राज दरवार की पार्टी में महाराजा गंगासिंहजी, सार्दुलसिंहजी, विजयसिंहजी, करणीसिंहजी आदि विदेशी अतिथियों व गणमान्य नागरिकों के साथ विशेष आमन्त्रित सदस्य के रूप में सेठजी पृष्ठ पंक्ति में

BIKANER GOLDEN JUBILEE

1887-1937

वीकानेर गोल्डन जुवली वुक जिसमें सेठजी का चित्र प्रकाशित किया गया



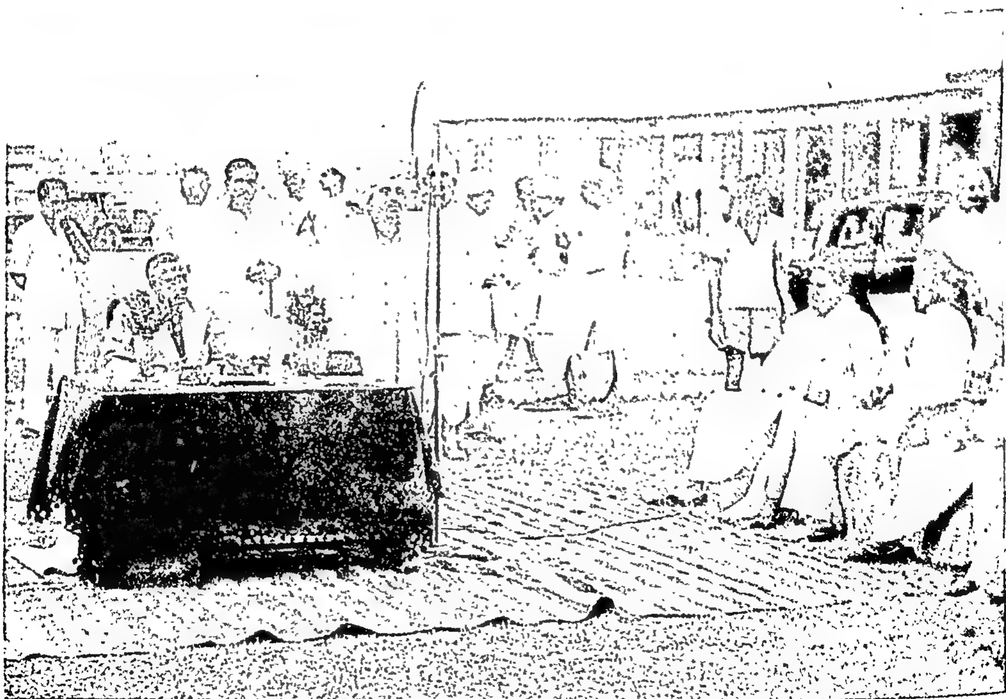
बांठिया बालिका विद्यालय के उद्घाटन हेतु तीन बटन दबाकर ताला, कुण्डी व दरवाजा खोलते हुए महाराजा सार्दुलसिंहजी के साथ सेठ सा.



बांठिया बालिका विद्यालय का उद्घाटन करके बांठिया हॉल में प्रवेश करते हुए तत्कालीन बीकानेर महाराजा सार्दुलसिंहजी के साथ में सेठजी, जयचन्दलालजी रामपुरिया व महाराज भैरूंसिंहजी आदि।



मुख्य अतिथि बीकानेर के तत्कालीन वित्त मंत्री नारायणसिंहजी का अभिनन्दन करते हुए।



उद्घाटन समारोह के विशिष्ट व्यक्तियों के साथ (कुर्सी पर बैठे हुए श्री भंवरलालजी रामपुरिया तथा पीछे विचार-विमर्श करते हुए बांठिया सा.)



सेठजी भाषण देते हुए कार्यक्रम अध्यक्ष/मुख्य अतिथि बांये से डाक्टर ओझा व श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। साथ में कम्पनी के डायरेक्टर धीरजलाल बांठिया व फूलचन्द बैद।

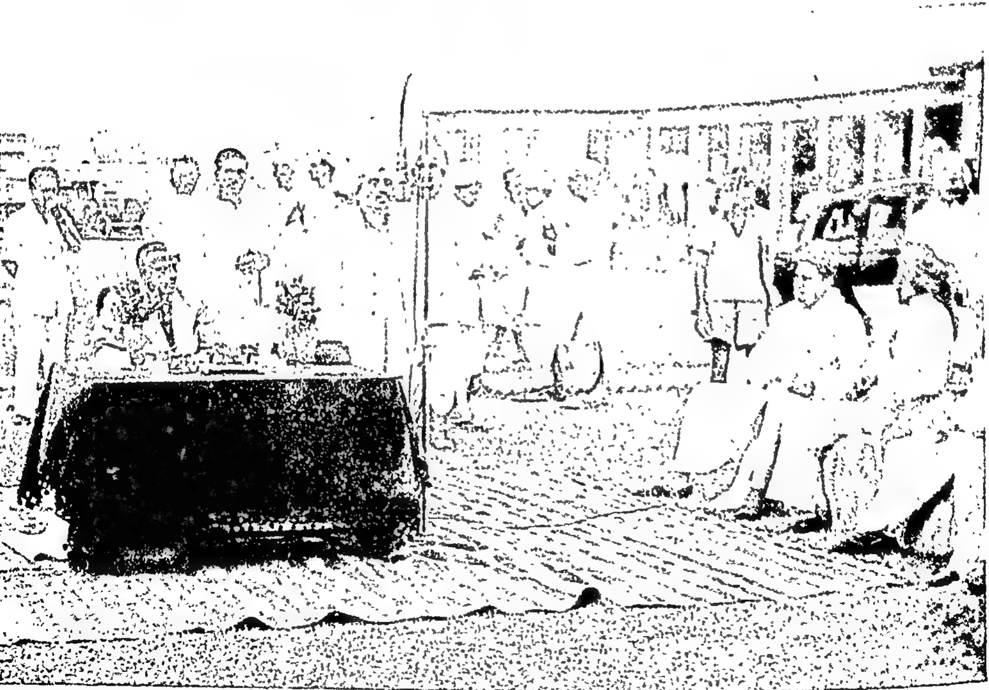


रजत जयन्ती समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत को चांदी का स्मृति-चिह्न भेंट करते हुए।

रामपुरिया आईस फैक्ट्री का उद्घाटन समारोह



मुख्य अतिथि वीकानेर के तत्कालीन वित्त मंत्री नारायणसिंहजी का अभिनन्दन करते हुए।



उद्घाटन समारोह के विशिष्ट व्यक्तियों के साथ (कुर्सी पर बैठे हुए श्री भंवरलालजी रामपुरिया तथा पीछे विचार-विमर्श करते हुए बांठिया सा.)



सेठजी भाषण देते हुए कार्यक्रम अध्यक्ष/मुख्य अतिथि बांये से डाक्टर ओझा व श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। साथ में कम्पनी के डायरेक्टर धीरजलाल बांठिया व फूलचन्द वैद।



रजत जयन्ती समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत को चांदी का स्मृति-चिह्न भेंट करते हुए।



जवाहर विद्यापीठ के उद्घाटन के सगय मुख्य अतिथि सोहनलालजी दूगड़ का स्टेशन पर स्वागत करते हुए वायें से—सेठजी, श्री दीपचन्दजी भूरा, जवाहरमलजी सेठिया, सोहनलालजी दूगड़ व महावीरप्रसाद गुप्त वकील



जवाहर विद्यापीठ के उद्घाटन के समय दाहिने से—वनेचन्द भाई दुर्लभजी, गुरांसा, इन्द्रचन्दजी गेलड़ा श्री एवं श्रीमती सोहनलालजी दूगड़, शोभाचन्द्रजी भारिल्ल, जुगराजजी सेठिया एवं सेठजी।



जवाहर विद्यापीठ भीनासर में एक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाराजा करणीसिंहजी के साथ आते हुए सेठजी



जवाहर विद्यापीठ के कार्यक्रम के दौरान बायें से—श्री देवीसिंहजी भाटी, जुगराजजी सेठिया, डॉ. छगन मोहता, कविता बांठिया, डॉ. करणीसिंहजी, सेठजी तथा पीछे भंवरलालजी कोठारी, रोशन सेठिया, छाजेड़जी, जसकरणजी बोथरा, शुभू पटवा, सोहनलालजी मोदी, सोहन सेठिया, कन्हैयालाल बोथरा, धीरजलाल बांठिया, दौलतराम बांठिया, इन्द्रचन्द बोथरा, तोलाराम बोथरा, विनल डागा, डॉ. जेठमल नरोठी व डॉ. बोथरा



गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी सन् 1980 को जवाहर माध्यमिक विद्यालय, भीनासर में एन.सी.सी. द्वारा युद्ध प्रदर्शन के अवसर पर अध्यक्षीय भाषण करते हुए सेठ साहव। इस अवसर पर आप द्वारा पुरस्कार वितरण भी किया गया। स्कूल के तत्कालीन प्रधानाध्यापक श्री विष्णुदत्तजी आचार्य व भीनासर गांव के अन्य वरिष्ठ नागरिक उपस्थित थे।

वांठिया वालिका विद्यालय, भीनासर के वार्षिकोत्सव का निरीक्षण करते हुए सेठजी व सेठानीजी के स्टाफ व विद्यार्थियों के साथ। इस अवसर पर आप द्वारा पुरस्कार वितरण भी किया गया।

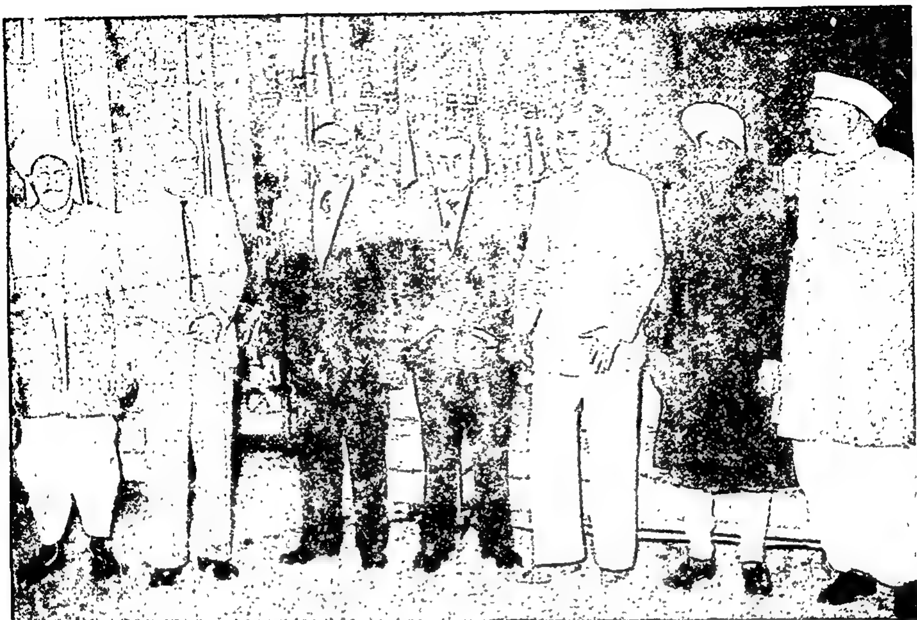
श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकुला जिला-अम्बाला (हरियाणा) के अध्यक्ष चुने जाने पर स्वागत करते हुए गुरुकुल के विद्यार्थीगण

श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकुला के वार्षिकोत्सव पर समाज के विशिष्ट व्यक्तियों के साथ मंचस्थ सेठजी

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा दिये गये अभिनन्दन पत्र का वाचन करते हुए श्री भँवरलालजी कोठारी तथा मंच पर विराजमान सेठजी व श्री फूसराजजी बच्छावत



सेठजी को अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी वैद



All India Fan Manufacturers Association के वार्षिक अधिवेशन के समय इम्पीरियल होटल, नई दिल्ली में। दाहिने से—उद्योगपति श्री गजाधरजी सोमानी, एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री मोहनलालजी कठोतिया, दिल्ली। बीच में—श्री मन्नु भाई शाह कैविनेट मिनिस्टर, भारत सरकार व एकदम वाएँ खड़े सेठजी परिलक्षित हैं।



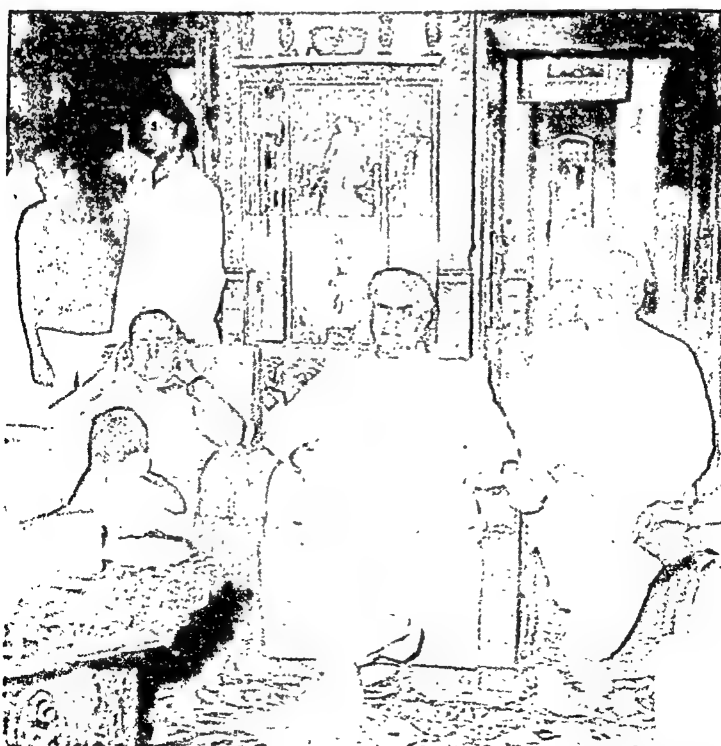
अहमदावाद में धीरज की शादी के समय मद्रास में। दायें से—सेठजी, समधी श्री मोहननलजी सा चोरड़िया, चुन्नीलालजी मेहता वम्बई, श्री छगनलालजी बैद व अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ



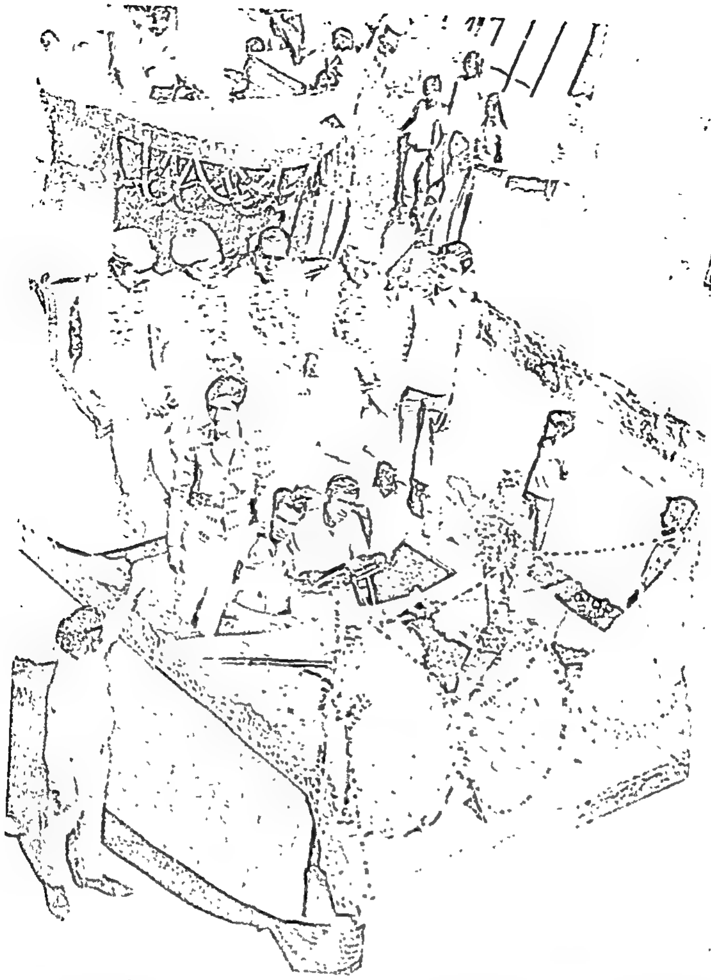
देश के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलालजी नेहरू के बीकानेर आगमन पर नाल हवाई अड्डे पर स्वागत करते हुए सेठजी पीछे श्रीमती इन्दिरा गाँधी



राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलालजी सुखाड़िया को हवेली में दिये गये भोज के अवसर पर सेठजी बीकानेर के तत्कालीन जिलाधीश श्री मुन्नालाल गोयल के साथ



श्री मोहनलाल सुखाड़िया व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती इन्दुबाला सुखाड़िया से विचार-विमर्श करते हुए सेठजी



श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस के ब्यावर सम्मेलन के अवसर पर निकली शोभायात्रा में तत्कालीन व पूर्व अध्यक्षों के साथ सेठजी

सन् 1952 में श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेन्स के बारहवें सादड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष चुने जाने पर हाथी के हौदे पर निकली शोभायात्रा में सेठ साहब के साथ कांफ्रेन्स के भू.पू. अध्यक्ष श्री मोहनमल सा चोरड़िया मद्रास तथा स्वागताध्यक्ष सादड़ी निवासी श्री दानमलजी बरलोटा



शोभायात्रा में सेठ साहब जनसाधारण का अभिवादन स्वीकार करते हुए।

सन् 1952 में श्री अखिल भारतवर्षीय स्थानकवारी जैन कांफ्रेन्स के वारहवें सादड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष चुने जाने पर माल्यार्पण कर स्वागत करते हुए स्वागताध्यक्ष श्री दानमलजी वरलोटा



सादड़ी सम्मेलन में सेठ अचलसिंहजी सांसद, आगरा के साथ।

सादड़ी सम्मेलन में राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री टीकारामजी पालीवाल तथा स्वागताध्यक्ष श्री दानमलजी वरलोटा के साथ।



सादड़ी सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए (साथ में कुन्दनमलजी फिरोदिया व अन्य गणमान्य सदस्यगण)



सादड़ी (मारवाड़) सम्मेलन में कांफ्रेन्स के भूतपूर्व अध्यक्ष मद्रास के सेठ मोहनलालजी चोरड़िया के साथ।



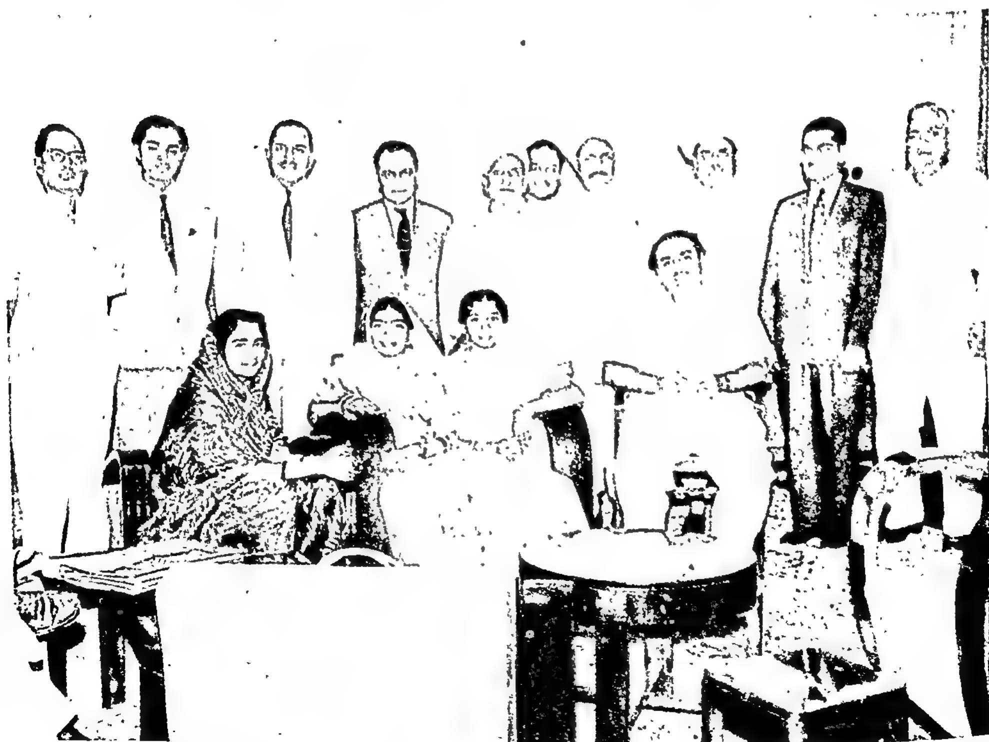
सादड़ी सम्मेलन में दायें से —श्री इन्द्रचन्दजी गेलड़ा मद्रास के पास विराजमान सेठजी (एकदम दायीं ओर जयपुर के वनेचन्द भाई दुर्लभजी)

सन् 1952 में सादड़ी सम्मेलन के समय घर पधारे अतिथियों के साथ। बायें से —जयपुर के बनेचन्द भाई दुर्लभजी, सेठजी, राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री टीकारामजी पालीवाल व दिल्ली के आनन्दराजजी सुराणा व नाथूरामजी मिर्धा।



सन् 1948 में श्री C.S. वैंकटाचार्य (सरदार पटेल के Special Representative for Excession of Bikaner State) के बीकानेर आने पर हवेली में स्वागत करते हुए सेठजी

H.H. श्री करणीसिंहजी को राजतिलक के समय गिन्नी भेंट करते हुए



H.H. करणीसिंहजी वर्ल्ड टूर से आने पर कलकत्ता मारवाड़ी समाज ने सम्मान किया उस अवसर पर। बायें से—आनन्दसिंहजी H.H. के सेक्रेट्री अभयकुमार रामपुरिया, रतनलालजी रामपुरिया, वागड़ीजी (पगड़ी वाले), चन्दनमलजी पटवा, सेठजी, चम्पालालजी बैद व कमलसिंहजी रामपुरिया तथा बैठे हुए : बायें से—महारानी सा. सुशीला कुमारीजी, रतनलालजी रामपुरिया की पुत्रियां सुशीला व निर्मला तथा H.H. श्री करणीसिंहजी।



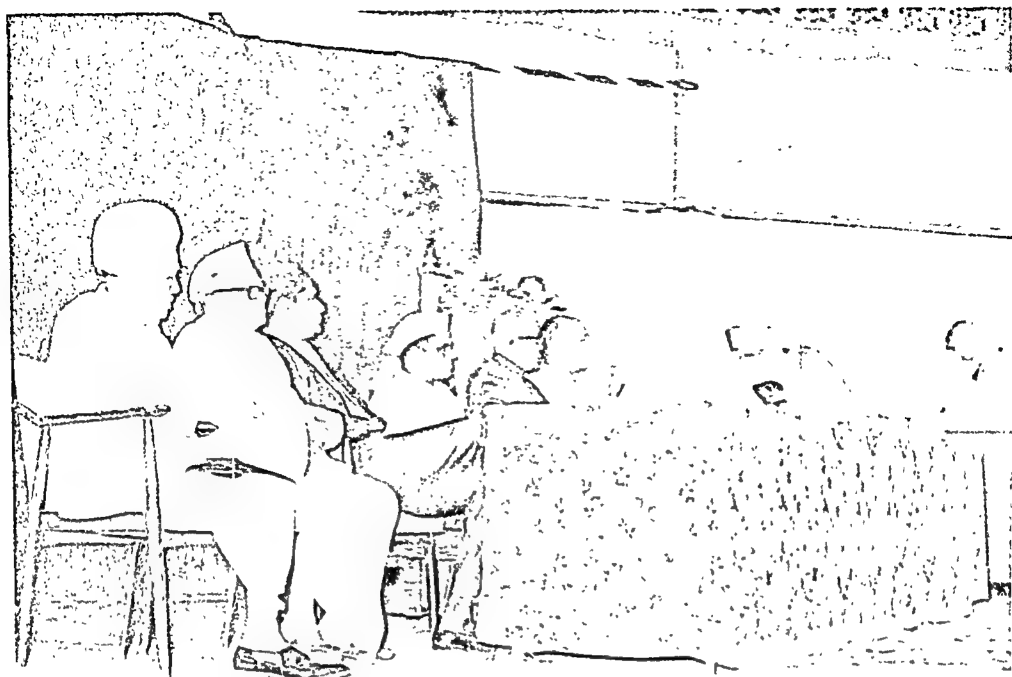
सन् 1952 में चुनाव के समय तत्कालीन महाराजा श्री करणीसिंहजी के हवेली पधारने पर मिलनी भेंट करते हुए

सन् 1952 में बीकानेर लोकसभा के चुनाव के समय हवेली पधारने पर बीकानेर महाराजा श्री करणीसिंहजी के साथ विचार-विमर्श करते हुए

H.H. श्री करणीसिंहजी के साथ सेठजी मुन्नीलालजी बैद व बांठिया गर्ल्स स्कूल के अध्यापक श्री व्यासजी



सन् 1952 में M.P. का चुनाव जीतने पर महाराजा करणीसिंहजी के हवेली पधारने पर गांवों की समस्याओं की जानकारी देते हुए सेठजी। साथ में श्री बंशीलालजी राठी, नेमचन्दजी कांकरिया, मगनलालजी मल्ल आदि परिलक्षित हैं।



महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री सुधाकर राव नाईक के साथ बम्बई में एक समारोह में। मंच पर बाईं ओर सेठजी व दाईं ओर मोहनलालजी कठोतिया माइक पर भाषण देते हुए



बम्बई के शेरिफ श्री चुन्नीलालजी मेहता व उनके पुत्र राजेन्द्र मेहता के साथ



बड़े पुत्र धीरज की शादी के अवसर पर अहमदाबाद में बारात रवाना होने से पूर्व का एक दृश्य। बायें से—श्री छगनलालजी वैद, मगनमलजी वांठिया, सेठजी के श्वसुर श्री जेठमलजी कोठारी इन्दौर, समधी श्री मोहनमलजी चोरड़िया मद्रास, सेठजी, रामकरणजी वांठिया, अमरचन्दजी लूणिया व श्री खींवराजजी चोरड़िया मद्रास आदि।



विशिष्ट व्यक्तियों के साथ। दाहिने से—बीकानेर के तत्कालीन प्राइम मिनिस्टर श्री जसवन्तसिंहजी, तत्कालीन कमिश्नर श्री भगवंतसिंहजी, प्रसिद्ध सर्जन डाक्टर एल. एम. सिंघवी, सेठजी, मोहनलालजी वांठिया, चम्पालालजी वैद व लक्ष्मणभाजी गुना।

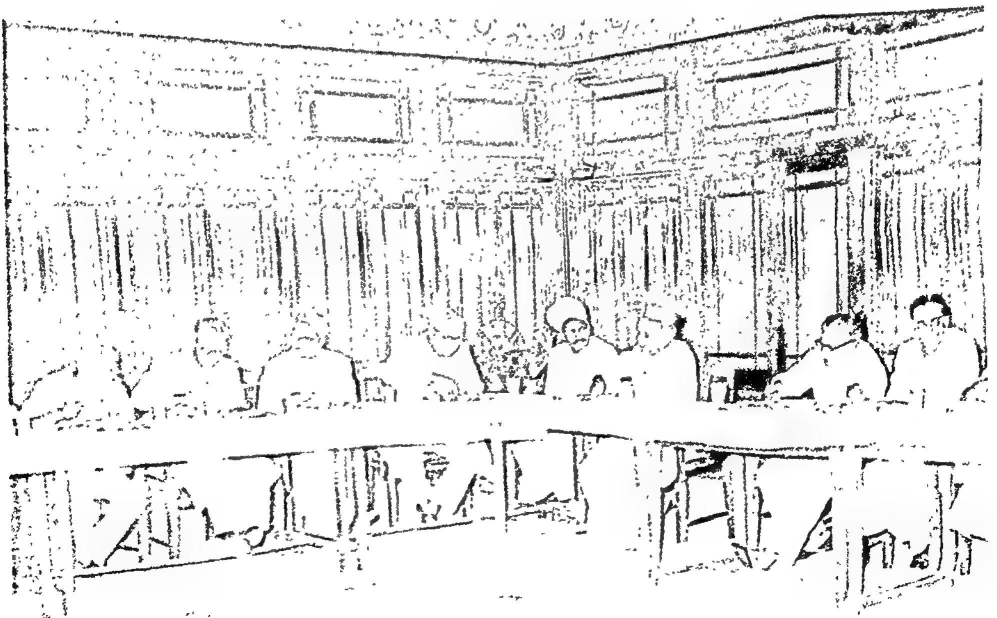
हवेली में दी गई पार्टी में तत्कालीन निदेशक श्री एम. एन. तुलानी, सेठजी, तत्कालीन कमिश्नर श्री भगवंतसिंहजी, चम्पालालजी वैद व अन्य परिलक्षित हैं।

हवेली के सुसज्जित सुरम्य कक्ष में (बायें से —श्री एम. एन. तुलानी, इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड के इन्चार्ज श्री ए. एस. मेहता व सेठजी तथा पीछे खड़े हुए शांतिलाल बांठिया, कुंजीलाल गहलोत व भैरूंदानजी बांठिया)

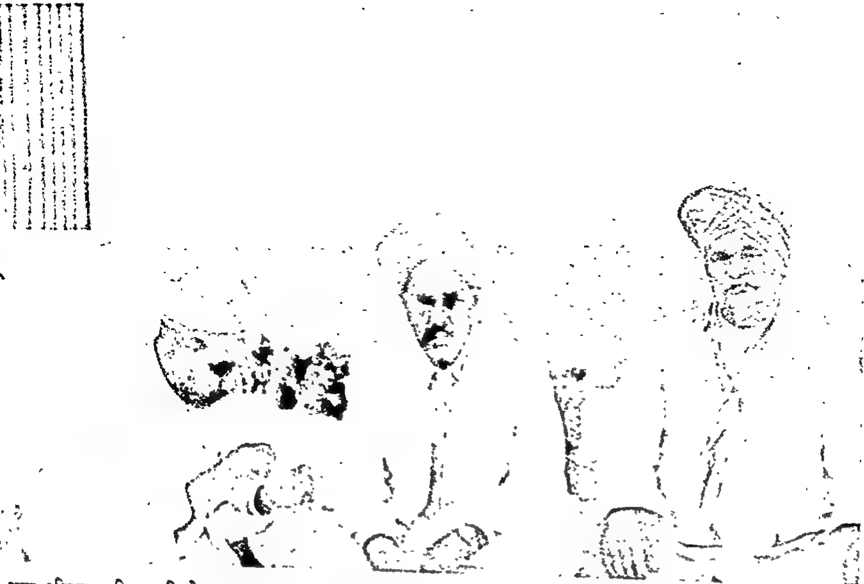
अपने पार्टनर श्री चम्पालालजी वैद व एडवोकेट सत्यप्रकाशजी गुप्ता के साथ।

ठाकुर दीपसिंहजी व तत्कालीन माइन मिनिस्टर जसवन्तसिंहजी के साथ।

हवेली में अधिकारियों को दी गई पार्टी में (दाहिने से—श्री महावीर प्रसाद जी गुप्ता, सेठजी, शांतिलालजी, तत्कालीन कलेक्टर श्री C.S. Gupta, S.B.B.J. के जनरल मैनेजर सत्यदेवजी, इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड के इन्चार्ज ए. एस. मेहता, DIG गोवर्धनजी तथा P.A. to Commissioner विद्यासागरजी सूद आदि)



हवेली के चौक में तत्कालीन अधिकारियों को सेठजी द्वारा दी गई पार्टी का एक दृश्य।

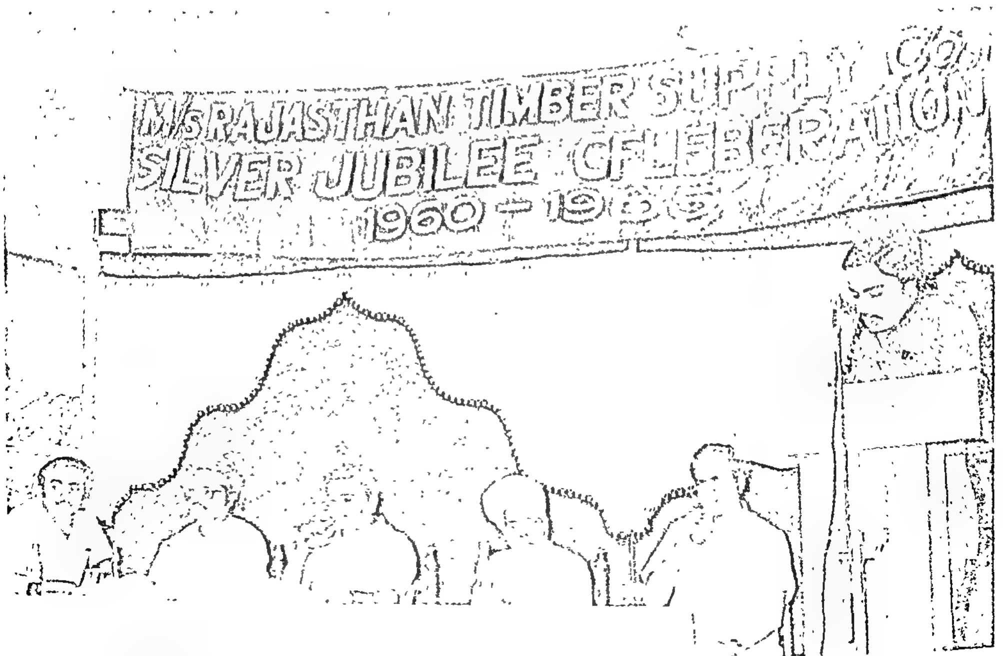


पुत्र धीरज की शादी के अवसर पर अहमदाबाद में समधी श्री लालचन्दजी मेहता व मोहनमल सा चोरड़िया के साथ।

सेठजी अपनी द्वितीय पुत्री लवरदेवी की सगाई के अवसर पर मद्रास में अपने समधी श्रीमान् मोहनमल सा चोरड़िया (अगरचंद मानमल) उनके भाई खींवराज जी चोरड़िया व चम्पालालजी वैद आदि के साथ।

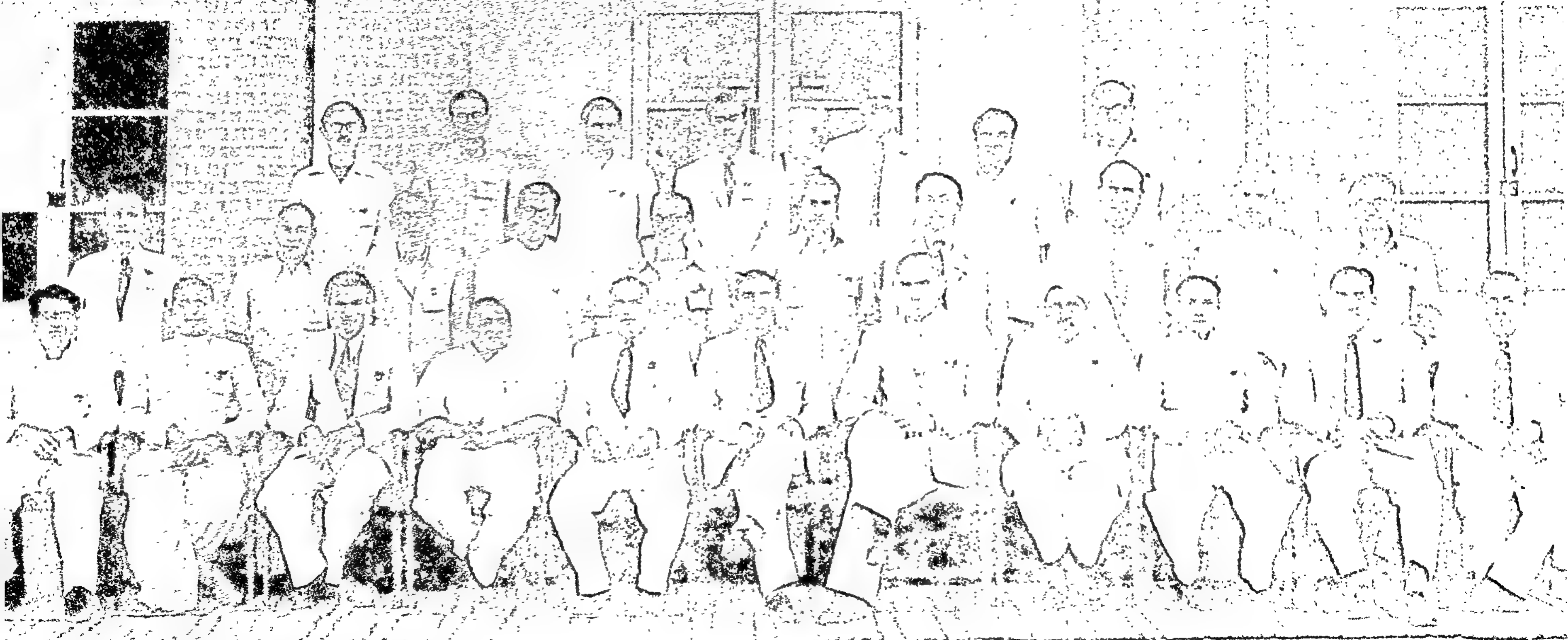


बीकानेर की फर्म राजस्थान टिम्बर सप्लाई कम्पनी की रजत जयन्ती के अवसर पर।
बायें से—माणकचन्दजी बच्छावत, धनपतसिंहजी खजांची, धीरजलाल, सेठजी, रामलालजी बांठिया, सुमतिलाल व तरुण खजांची आदि।



जुवली के अवसर पर मुख्य अतिथि बीकानेर के विधायक श्री बी. डी. कल्ला, कार्यक्रम अध्यक्ष जिला प्रमुख भवानीशंकर शर्मा के साथ

श्री अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस, नई दिल्ली की मैनेजमेंट कमेटी व स्टाफ मेम्बर्स के साथ सेठजी



पांचवे दशक में एक विशेष आयोजन के अवसर पर बीकानेर के गणमान्य विशिष्ट व्यक्तियों व डॉक्टरों के मध्य सेठजी



ल कांग्रेस (आई) कमेटी भीनासर —सेठजी का स्वागत करते हुए। साथ में उदयरामसर के श्री गोवर्धनसिंहजी यादव



सा बनाने की फैक्टरी मै. मैगडेल इलेक्ट्रिकल्स इंडिया लि. पूना के तीन प्रमुख शेयर होल्डर्स श्री [illegible] कठोतिया दिल्ली, श्री रामकृष्णजी बजाज बम्बई व सेठजी कम्पनी के अन्य [illegible] व स्टाफ के साथ एक पार्टी में। अब कम्पनी का नाम [illegible] इलेक्ट्रिकल्स में बदल दिया गया है

महाप्रयाण यात्रा के कुछ दृश्य











श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर द्वारा सेठजी की पुण्यस्मृति में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया स्मृति व्याख्यानमाला के प्रथम वर्ष के आयोजन में बायें से—संस्था के उपाध्यक्ष चम्पालालजी डागा, समारोह के अध्यक्ष दीपचन्दजी भूरा तथा भाषण देते हुए समारोह के मुख्य अतिथि बीकानेर के तत्कालीन कलेक्टर मदनलालजी गुप्ता



महावीर जयन्ती के अवसर पर दिनांक 7 अप्रेल 1990 को आयोजित व्याख्यानमाला के प्रथम चरण में दिये गये विषय 'वर्तमान युग में जैन धर्म की सार्थकता' में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली सुश्री सुजाता जैन को पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए जिला कलेक्टर। पृष्ठ भाग में हैं कार्यक्रम संचालक प्रोफेसर सुमेरचन्द जैन व संस्था के अध्यक्ष भंवरलालजी कोठारी।



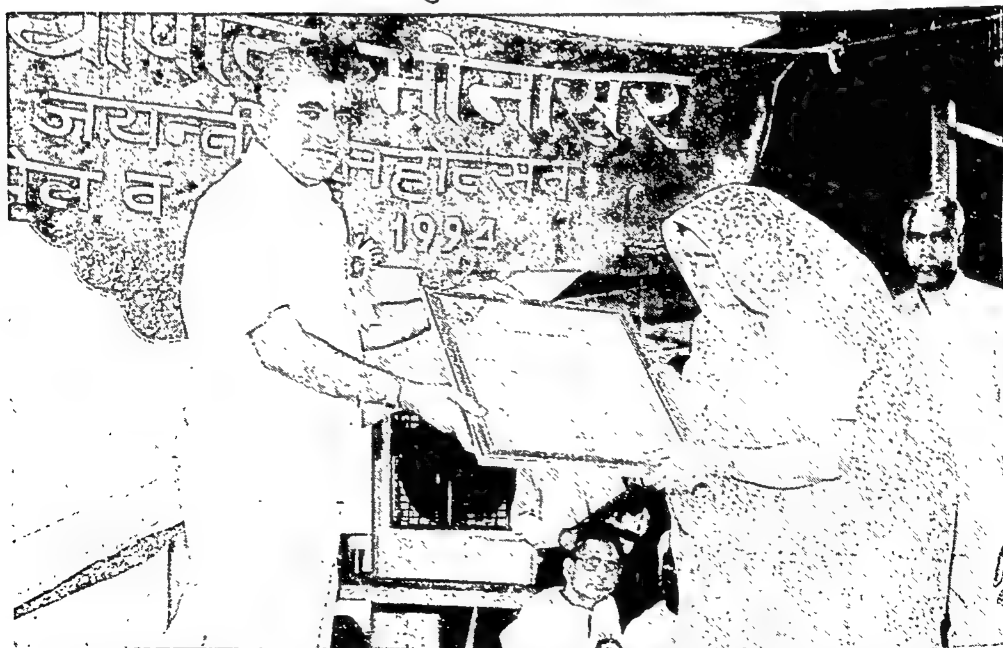
दिनांक 28-3-91 को आयोजित सेठ श्री चम्पालालजी वांठिया स्मृति व्याख्यानमाला (द्वितीय वर्ष) में दिये गये विषय 'विश्व शांति और जैन धर्म' में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले मनोज कुमार वैद को मुख्य अतिथि श्री जे. के. जैन डाइरेक्टर, राज्य अभिलेखागार पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए। पीछे: संस्था के मंत्री सुमतिलाल वांठिया व माईक पर संस्था अध्यक्ष भंवरलालजी कोठारी।



दिनांक 15-4-92 को आयोजित सेठ श्री चम्पालालजी वांठिया स्मृति व्याख्यानमाला के तृतीय वर्ष में मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर श्री आर. के. मीणा सेठजी के चित्र को माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए। पीछे: संस्था मंत्री सुमतिलाल वांठिया उपस्थित हैं। इस व्याख्यानमाला के विषय '[illegible] का जीवन पर प्रभाव' के विजेताओं को प्रदान किये जाने वाले पुरस्कार



दिनांक 30-4-92 को संस्था की स्वर्ण जयन्ती पर आयोजित सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया स्मृति व्याख्यानमाला 'अहिंसा, शाकाहार और भारतीय संस्कृति' विषय पर आयोजित की गई। इस अवसर पर मंच पर विराजित बायें से—संयोजक श्रीमान् रिखबचन्दजी जैन दिल्ली, मुख्य अतिथि श्री रमेशचन्द्रजी रूंगटा जिला कलेक्टर, कार्यक्रम अध्यक्ष श्री गुमानमलजी चोरड़िया जयपुर, संस्था अध्यक्ष श्री बालचन्दजी सेठिया, संस्था उपाध्यक्ष श्री भंवरलालजी बडेर व संस्था मंत्री श्री सुमतिलाल बांठिया।



श्री जवाहर विद्यापीठ स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के मुख्य कार्यक्रम में दिनांक 1-5-94 को संस्था के संस्थापक सेठजी द्वारा समाज को दी गई विशिष्ट सेवाओं के लिए मरणोपरान्त समाजभूषण पदवी प्रदान कर सम्मानित किया गया। उक्त सम्मान पत्र उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी बांठिया समारोह के मुख्य अतिथि श्री देवीसिंहजी भाटी नहर एवं सिंचाई मंत्री राजस्थान सरकार से ग्रहण कर रही हैं।



जवाहर विद्यापीठ स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मुख्य समारोह में दिनांक 1 मई 1994 को कार्यक्रम मुख्य अतिथि श्रीमान् देवीसिंहजी भाटी, नहर एवं सिंचाई मंत्री, राजस्थान सरकार समाजभूषण श्री चम्पालालजी बांठिया स्मृति ग्रंथ का विमोचन करते हुए। विमोचन हेतु ग्रंथ प्रस्तुत कर रहे हैं संस्था अध्यक्ष श्री बालचन्दजी सेठिया।



...चन के पश्चात् ग्रंथ की प्रथम प्रति समारोह अध्यक्ष श्रीमान् गुमानमलजी चोरड़िया, जयपुर को ... कर रहे हैं मुख्य अतिथि श्रीमान् देवीसिंहजी भाटी, नहर एवं सिंचाई मंत्री, राजस्थान सरकार ...

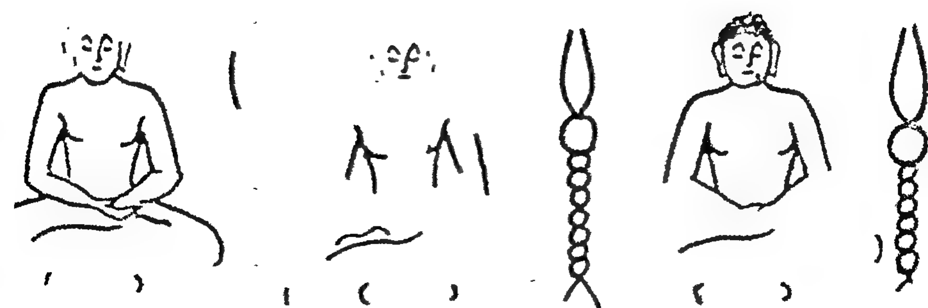


सेठ श्री चम्पालालजी बांठिया स्मृति व्याख्यानमाला की वर्ष 1994 की विद्यालय स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम रही कु. सीमा बांठिया को पुरस्कार प्रदान करते हुए समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. रामप्रतापजी, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति राज्य मंत्री, राजस्थान सरकार।



सेठ सा. की सबसे छोटी पौत्री कविता की सगाई दिनांक 22-5-94 को श्री गौतम सामसुखा आत्मज श्री दिलीपजी सामसुखा, कलकत्ता से सम्पन्न हुई जो शीघ्र ही दिनांक 13-12-94 को विवाह-सूत्र में बंधने वाले हैं।

सम्मान, अभिनन्दन
वन्दन, श्रद्धार्पण



राजकीय सम्मान

अभिनन्दन एवं सम्मान

उधोग-व्यापार, समाज-सेवा, शिक्षा प्रसार, धार्मिक एवं जनकल्याणकारी क्षेत्रों में बांठिया सा. ने अनुकरणीय व आदर्श कार्य किये। तत्कालीन नरेश, सामाजिक संस्थाओं आदि द्वारा आपको अभिनन्दित/सम्मानित किया जाना आपकी लोकप्रियता व निःस्वार्थ सेवा का ही परिणाम है।

उल्लेखनीय सेवाओं का मूल्यांकन

सेठ सा. का राजघराने से घनिष्ट सम्बन्ध था। तीन पीढ़ियों से निजत्व का व्यवहार रहा और अनेक अवसरों पर महाराजा सा. का आपकी हवेली पर पदार्पण हुआ। आपकी बहुआयामी सेवाओं को गोल्डन जुबली बुक, बीकानेर व हूज-हू में रेखांकित किया गया।

पब्लिक सर्विस मैडल फर्स्ट क्लास

विशिष्ट समाज सेवा के लिए महाराजा श्री गंगासिंह जी द्वारा बांठिया सा. को पब्लिक सर्विस मैडल फर्स्ट क्लास प्रदान किया गया। यह ऐतिहासिक व महत्त्वपूर्ण सम्मान पाकर भी आपने स्वयं को समाज का साधारण सेवक ही माना। अपनी दूरदर्शिता, कार्यकुशलता व अनवरत सेवा से एक आदर्श स्थापित किया।

(मैडल द्रष्टव्य पिछले कवर पृष्ठ पर)

गंगा गोल्डन जुबली मैडल का सम्मान

महाराजाधिराज श्री गंगासिंहजी बहादुर के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव संवत् १९४४-१९९४ में राज श्री बीकानेर द्वारा गोल्डन जुबली मैडल देकर सम्मानित किया गया।

(मैडल द्रष्टव्य पिछले कवर पृष्ठ पर)



कैफियत का सम्मान

महाराजा श्री गंगासिंहजी बहादुर द्वारा दिनांक २५-१०-१६३६ को कैफियत का सम्मान दिया गया।

चांदी की छड़ी एवं चपड़ास का सम्मान

दिनांक ३०-१०-१६३७ को बीकानेर नरेश द्वारा चांदी की छड़ी एवं चपड़ास देकर सम्मानित किया गया।

पैर में सोना पहनने की इज्ज़त

दिनांक २२-१०-१६३६ को महाराजा सा. द्वारा प्रदत्त विशिष्ट सम्मान। महाराजा द्वारा आपके परिवार को पैर में सोना पहनने की इज्ज़त प्रदान की गई।

बीकानेर राज्य विधान सभा सदस्य के रूप में मनोनयन

महाराजाधिराज श्री गंगासिंह जी के समय में बीकानेर लेजिसलेटिव एसेम्बली के मेम्बर (M.L.A.) के रूप में आपको मनोनित किया गया।

बीकानेर न्यायालय में ऑनरेरी मजिस्ट्रेट के रूप में मनोनयन

महाराजाधिराज श्री गंगासिंह जी के समय में बीकानेर राज्य के न्यायालय में आपको ऑनरेरी मजिस्ट्रेट के रूप में मनोनित किया गया और कई वर्षों तक न्यायाधीश के रूप में कार्य किया।

बीकानेर राज्य व्यापार उद्योग संघ के अध्यक्ष के रूप में मनोनयन

महाराजाधिराज श्री गंगासिंह जी के समय में बीकानेर राज्य व्यापार उद्योग संघ के अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया।

भीनासर नगरपालिका के अध्यक्ष के रूप में मनोनयन

भीनासर के नागरिकों द्वारा सर्वसम्मति से नगरपालिका के अध्यक्ष के रूप में मनोनीत किया गया।

卐 卐 卐 卐 卐

सामाजिक सम्मान

विशिष्ट समाज-सेवा : स्वर्णपदक सम्मान

श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन श्री संघ द्वारा संवत् २००६ में विशिष्ट समाज सेवा के लिए स्वर्णपदक प्रदान कर आपको सम्मानित किया गया।

(स्वर्ण पदक द्रष्टव्य पिछले कवर पृष्ठ पर)

अभिनन्दन पत्र : श्री जैन गुरुकुल व्यावर

दिनांक २३-१२-४८ को श्री जैन गुरुकुल व्यावर के वार्षिकोत्सव का अध्यक्ष बनाया गया व अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। (मूल अभिनन्दन पत्र परिशिष्ट में)

अभिनन्दन-पत्र : श्री जैन जवाहिर मण्डल, देशनोक

संस्था द्वारा सेठ सा. को सप्तम वार्षिकोत्सव का सभापति बनाया गया और दिनांक १७-१-५० को अभिनन्दन-पत्र भेंट कर बहुमान किया गया। (मूल अभिनन्दन पत्र परिशिष्ट में)

अभिनन्दन पत्र : श्री वर्द्धमान स्था. जैन श्रावक संघ, व्यावर

दिनांक १५-६-५४ को अ. भा. स्था. जैन कान्फ्रेंस के अध्यक्ष रूप में पदार्पण पर आपको सम्मानित कर अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया। (परिशिष्ट में द्रष्टव्य अभिनन्दन-पत्र)

अभिनन्दन-पत्र : श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ (त्रिवेणी)

त्रिवेणी संघ (बीकानेर, गंगाशहर, भीनासर) द्वारा आपको अग्रगण्य समाज-सेवक, सत्साहित्य प्रसारक एवं विवेक-सम्पन्न महानुभाव रूप में सम्मानित कर दिनांक १८-११-७३ को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया। (परिशिष्ट में द्रष्टव्य अभिनन्दन पत्र)

सम्मान-पत्र : श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

दिनांक २५-६-७६ को श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर द्वारा नोखामंडी में आपको सम्मान-पत्र समर्पित कर अभिनन्दित किया गया। (मूल अभिनन्दन पत्र परिशिष्ट में)



मरणोपरान्त सम्मान

श्रद्धार्पण-पत्र : श्री श्वे. साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था

संस्था की हीरक जयन्ती के अवसर पर दीर्घकालीन सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए आपको श्रद्धार्पण-पत्र (मरणोपरान्त) प्रदान किया गया, जिसे दिनांक ६-१-६१ को आपकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी बांठिया ने प्राप्त किया। (मूल श्रद्धार्पण-पत्र परिशिष्ट में)

श्रद्धा सुमनांजलि : राजकीय बांठिया बालिका उच्च प्रा. विद्यालय

शाला की हीरक जयन्ती के अवसर पर दिनांक ३-४-६४ को शिक्षक अभिभावक समिति द्वारा मरणोपरान्त श्रद्धा सुमनांजलि के रूप में सम्मान-पत्र दिया गया जो आपके पुत्र सुमतिलाल बांठिया ने प्राप्त किया। (मूल श्रद्धा सुमनांजलि परिशिष्ट में)

समाज भूषण पदवी सम्मान पत्र : श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर

संस्था व समाज को दी गई विशिष्ट सेवाओं के लिए संस्था की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर दिनांक १-५-६४ को प्रदत्त समाज भूषण सम्मान पत्र आपकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी बांठिया ने प्राप्त किया। (मूल सम्मान पत्र परिशिष्ट में)

सेठ श्री चम्पालालजी बाँठिया स्मृति व्याख्यानमाला : श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर

युवा वर्ग में धर्म के प्रति आस्था एवं वक्तृत्व प्रतिभा का विकास करने के लिए संस्था द्वारा वर्ष १९९०-९१ से प्रतिवर्ष महावीर जयन्ती को विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तरीय भाषण प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं एवं दोनों वर्ग के विजेताओं को सेठ श्री चम्पालालजी बाँठिया स्मृति पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है।



श्रीमान सेठ चम्पालालजी साहब बांठिया, भीनासर (बीकानेर)
की सेवा में सादर समर्पित

अभिनन्दन-पत्र

आज गुरुकुल के इक्कीसवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर स्नातक सम्मेलन को आपका अभिनन्दन करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

गुरुकुल तथा ट्रेनिंग कॉलेज के स्नातकों का यह संघ आपके क्रान्तिकारी विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुआ है। गुरुकुल की पवित्र भूमि में अ. भा. स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स के कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में हम आपका स्वागत करते हैं।

लक्ष्मीपुत्र !

समाज में लक्ष्मीपुत्रों की कमी नहीं ! कमी है तो विचारों में क्रांति तथा कार्यतत्परता की ! ये दोनों ही चीजें आप में कूट-कूट कर भरी हुई हैं।

आप क्रान्तिकारी विचारों के युवक हैं। समाज में व्याप्त शिथिलता के विरुद्ध आपको हमेशा आवाज बुलन्द करते देखा है।

राजस्थान की पवित्र भूमि में बेसमझ बच्चों की दीक्षा का विरोध करने के लिए बीकानेर काउन्सिल में बिल पेश करके आपने अपूर्व निर्भीकता एवं साहस का परिचय दिया है।

समाज भले आपके इस बिल का समर्थन न करे, किन्तु निकट भविष्य में वह समय आवेगा जब उसे अपनी भूल स्वीकार करते हुए आपके बिल का समर्थन करना होगा।

साहित्यसेवी !

जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज साहब के मौलिक अपूर्व साहित्य के प्रकाशन में आपने जो तत्परता दिखाई है उसका समाज-चिरऋणी रहेगा।

क्रान्तिकारी योद्धा !

आप अवस्था से ही युवक नहीं हैं अपितु विचारों से भी युवक हैं। आपकी असाम्प्रदायिक मनोवृत्ति समाज के लिए आदर्शरूप है ! धार्मिक क्षेत्र में आप हमेशा उदारता से काम करते देखे गये हैं।

शिक्षाप्रेमी !

शिक्षा-प्रचार के काम में सदैव अग्रणी रहे हैं। स्थानकवासी समाज की संस्थाओं में शायद बहुत कम ऐसी संस्थायें होंगी जहां आपकी सहायता नहीं पहुंची हो। कई संस्थाओं की अध्यक्षता भी आप कर चुके हैं और उन्हें बड़ी-बड़ी सहायता दी है। श्री जैन गुरुकुल ब्यावर को इसी वर्ष दी हुई ११११११) की रकम आपकी उदारता का एक उज्ज्वल उदाहरण है।

श्री जैन जवाहर विद्यापीठ के मंत्री का कार्यभार भी आप ही संभाले हुए हैं तथा उसका संचालन बड़ी योग्यतापूर्वक कर रहे हैं। आपकी ओर से एक कन्या पाठशाला भी चल रही है।

अन्त में हम आपका अभिनन्दन करते हुए शासनदेव से प्रार्थना करते हैं कि आप चिरायु हों तथा अपने क्रान्तिकारी विचारों से समाज में व्याप्त शिथिलाचार तथा साम्प्रदायिकता को मिटाने में अग्रसर हों।

हम हैं आपके—

ब्यावर — स्नातक,

२३-१२-४८ — श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर

श्री वीतरागाय नमः

समाजभूषण, दानवीर सेठ
श्रीमान् चम्पालाल जी बांठिया, भीनासर निवासी
के
कर कमलों में सादर समर्पित

अभिनन्दन-पत्र

महानुभाव !

आदरणीय, समाजभूषण, दानवीर सेठ चम्पालाल जी बांठिया, हमें आज आप जैसे नवीनविचारक, समाज-सुधारक, कार्यदक्ष, मिलनसार वृत्ति के, निराभिमानी व्यक्ति को इस पुनीत संस्था के सप्तम वार्षिकोत्सव का सभापति बनाते हुए कितना हर्ष हो रहा है, यह कल्पना के परे की चीज है, इसे तो कोई हमारे हृदय-स्थल तक पहुंचकर ही जान सकता है । यद्यपि हमने पिछले कई वार्षिकोत्सवों पर श्रीमान् से सभापति पद को सुशोभित करने की प्रार्थना की थी, लेकिन कई आवश्यक कारण बताकर आप टालम टोल करते रहे । खैर, अन्त में आपने हमारी उत्कट इच्छाओं का आदर किया और इस मण्डल ने, जो कि एक महान् आत्मा के नाम पर स्थापित किया गया है और जिनके कि आप परम भक्त हैं, आपको अपनी ओर आकृष्ट किए बिना नहीं छोड़ा और साथ ही हमारी अनेक बार की प्रार्थनाओं का असर भी आप पर पड़ना निश्चित ही था । इन्हीं सब कारणों से हम लोगों पर परम कृपा करके आपने इस बार इस पद को स्वीकार करके हमें कृतार्थ किया ।

हम श्री जैन-जवाहिर-मंडल के सदस्यगण आपकी इस कृपा के लिए पूर्ण कृतज्ञ हैं और हृदय से आपका अभिनन्दन करते हैं और जगन्नियन्ता से बार बार प्रार्थना करते हैं कि सदैव ही हमारे समाज को ऐसे नर-रत्नों से सुशोभित रखें, ताकि वे समाज के उत्थान को सदैव आगे बढ़ाते रहें ।

हम हैं, आपके दर्शनाभिलाषी—

सदस्यगण,

दिनांक : १७-१-५०

श्री जैन जवाहिर मंडल, देशनोक

अभिनंदन-पत्र

माननीय दानवीर सेठ चम्पालालजी सा० बाँठिया
अध्यक्ष, अ० भा० स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स की
सेवा में सादर समर्पित

प्रिय महोदय !

आज ब्यावर नगर में अपने मध्य आपश्रीमान् को पाकर और आपके स्वागत का सुअवसर पाकर हमें असीम आनन्द और उल्लास का अनुभव हो रहा है। आप शरीर से पूर्ण स्वस्थ न होते हुए भी मार्ग के अनेक कष्टों को सहर्ष सहन करके यहां पधारे हैं यह आपकी कर्त्तव्य-परायणता और समाज-सेवा की प्रबल भावना का ज्वलन्त प्रमाण है।

समाज-भूषण !

ब्यावर का साधुमार्गी समाज भारत में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। संघऐक्य की प्रवृत्ति के बीज उसीने बोये थे परन्तु दुर्दैव से कुछ दिनों से यहां के संघ में अनैक्य होगया। अतएव आपने मान्य सेठ मोहनमलजी सा० चोरड़िया, श्री जवाहरमलजी मुणोत, कान्फरेन्स के मन्त्री श्री आनन्दराजजी सुराणा एम. एल.ए. श्री कानमलजी नाहटा और लाला गिरधारीलालजी जैन एम० ए० तथा श्रीधीरजलाल के० तुरखिया के साथ कान्फरेन्स के शिष्टमंडल के नेता के रूप में पधारकर उस अनैक्य को अतीव कौशल, अप्रतिहत धैर्य और प्रशंसनीय मध्यस्थभाव से दूर करके यहां अपूर्व हर्ष, उल्लास और धर्मोत्साह प्रसरित कर दिया है और यहाँ के धार्मिक प्रवृत्तियों में आई हुई निष्प्राणता को दूर कर सजीवता ला दी है। ब्यावर का श्री संघ आपके इस स्तुत्य प्रयास के लिए अन्तःकरण से आभार प्रदर्शित करता है। आशा है जब कभी हमें आपके मार्गदर्शन की अपेक्षा होगी तभी आप इसी तरह हमें कृतार्थ करते रहेंगे।

महानुभाव !

विपुल वैभव के स्वामी होते हुए भी आपकी नैसर्गिक निरभिमानिता श्रीमन्तों के लिए आदर्श है। स्वभाव की सरलता, निश्छल-वृत्ति, स्पष्ट वक्तृत्व और आदर्श मिलनसारी आपके व्यक्तित्व की एक बड़ी विशेषता है जो अजनबी को भी अनायास ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

दानवीर !

साधारणतः सभी पुत्र अपने पिता की सम्पत्ति के उत्तराधिकारी होते हैं किन्तु आप अपने पूज्य पिता श्री की सम्पत्ति के साथ उनकी उदारता के भी उत्तराधिकारी बने हैं। आपने अब तक एक लाख रुपये से भी अधिक का दान करके यह सिद्ध कर दिया है कि आप सच्चे लक्ष्मीपति हैं। आप ही की उदारता के प्रताप से भीनासर में कन्याशाला आदि संस्थाओं का संचालन हो रहा है। आप अपने विशाल व्यवसाय को सम्हालते हुए भी अ० भा० स्थानकवासी जैन कान्फरेन्स दिल्ली के अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित होकर सराहनीय समाज-सेवा कर रहे हैं। साथ ही कई शैक्षणिक और साहित्यिक संस्थाओं का भी सफल संचालन कर रहे हैं यह आपकी कर्त्तव्य-परायणता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

साहित्य-प्रेमी !

प्रखर तत्त्वज्ञ गम्भीर विचारक, युगप्रवर्त्तक स्व० जैनाचार्य श्री जवाहिरलालजी महाराज के प्रेरणाप्रद प्रवचनों को 'ग्रन्थावली' के रूप में प्रकाशित करवा कर साहित्य-जगत् का महान् उपकार किया है। आपकी यह कृति युग-युगान्तर तक आपकी कीर्ति को चिरस्थायिनी बनाये रखेगी।

वस्तुतः आपकी असाम--असीम विशेषताओं को इस छोटे से मान-पत्र में व्यक्त करना सम्भव नहीं है। अंत में हमारी हार्दिक कामना है कि आप चिरायु हों और धर्म एवं समाज की इसी प्रकार निरंतर सेवा करते रहें।

ब्यावर
१५-६-५४

शुभाकांक्षी—
श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, ब्यावर

श्री वीर राजस्थान प्रेस, ब्यावर

अग्रगण्य समाज-सेवक, सत्साहित्य-प्रसारक एवं विवेक-सम्पन्न महानुभाव
श्रीमान् सेठ चम्पालाल जी सा. बांठिया
के कर-कमलों में सादर समर्पित

अभिनन्दन-पत्र

सम्माननीय महानुभाव ! समाज-सेवा के लिए प्रख्यात भीनासर के बांठिया परिवार के सुयोग्य उत्तराधिकारी के रूप में आपने सुसंस्कृत समाज-संरचना हेतु अपूर्व निष्ठा एवं अध्यवसाय से संस्थापित नित-नूतन कीर्तिमानों द्वारा अपने पूर्वजों की यशोगाथा को सदा-सर्वदा के लिए स्मरणीय एवं सम्माननीय बना दिया है। आपका उज्ज्वल आदर्श सम्पूर्ण समाज के लिए प्रेरणादायक एवं मार्गदर्शक है।

सत्साहित्य-प्रेमी ! सत्साहित्य जनमानस को सुसंस्कारों से समृद्ध बनाने का एक विशिष्ट माध्यम माना गया है। एतदर्थ भौतिक उपलब्धियों से चमत्कृत इस युग में युगदृष्टा श्रीमज्जवाहराचार्य के प्रेरक प्रवचनों को 'जवाहर-किरणावली' के रूप में प्रकाशित करने सम्बन्धी आपके सत्प्रयत्नों के लिए समाज उपकृत एवं कृतज्ञ है।

आदर्श समाज-नेता ! आपको नेतृत्व की आकांक्षा नहीं परन्तु समाज सदैव आपके चिन्तन, मनन एवं अपूर्व कार्य-क्षमता से लाभान्वित होने के लिए लालायित रहा है। अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष-पद पर आपको प्रतिष्ठित करके समाज ने स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया है। आपको समाज-सेवा के पुनीत क्षेत्र में युवा-पीढ़ी को अग्रसर करने का सुन्दर श्रेय प्राप्त है।

युवकोचित उत्साह-मूर्ति ! आप वय से वृद्ध हैं परन्तु आपमें युवकोचित उत्साह, स्फूर्ति एवं तेजस्विता की त्रिवेणी के दर्शन करके युवा-पीढ़ी आपको अपना प्रमुख प्रतिनिधि मानने में अत्यन्त गौरव एवं उल्लास अनुभव करती है।

समाज के धार्मिक आचार-विचार के आधारभूत श्रमण-वर्ग की ज्ञान और संयम में एकनिष्ठा को अक्षुण्ण रखने के लिए आपके प्रबल प्रयत्न और सामयिक सूझबूझ के फलस्वरूप ही सं. २०१२ का वृहद् साधु-सम्मेलन भीनासर में सोत्साह, सानन्द सम्पन्न हुआ था, जो आपकी सुदक्षता एवं क्षमता का प्रकाशमान प्रमाण है।

संघ-गौरव के प्रतिष्ठापक ! संघ-गौरव की सुरक्षा हेतु प्रयत्न-रत विभूतियों में आप प्रमुख हैं। परमश्रद्धेय स्वर्गीय श्री हुकमीचंद जी म. सा. के पाटानुपाट श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहरलाल जी म. सा. की सेवा, भक्ति और प्रभावना के लिए आपके द्वारा किया गया अनवरत श्रम समाज के इतिहास में प्रकाशस्तम्भवद् दैदीप्यमान है।

आदर्श शिक्षा-प्रेमी ! आप अपने युगानुरूप शिक्षा प्राप्त कर सके, परन्तु भावी-पीढ़ी को श्रमनिष्ठ शिक्षा-प्राप्ति हेतु प्रोत्साहित करने के लिए जवाहर सेकण्डरी स्कूल तथा बांठिया कन्या विद्यालय (भीनासर) का विशाल एवं भव्य भवन-निर्माण आपके शिक्षा-प्रेम तथा सात्विक दान का प्रतीक है। इसी प्रकार परम पूज्य श्री जवाहराचार्य जी म. सा. की पुण्य-स्मृति में संस्थापित श्री जवाहर विद्यापीठ के प्रारंभ से ही मंत्री रह कर पुस्तकालय, छात्रावास, शिक्षणशाला, महिला उद्योगशाला जैसी लोकोपकारी प्रवृत्तियों के माध्यम से आपने समाज के सर्वतोमुखी विकास-कार्यों का श्रीगणेश किया है।

हम आपके सम्मान के लिए यथोचित स्वर-संरचना में असमर्थ हैं परन्तु आपके आदर्शों से समृद्ध भावोर्मियों से प्रेरित होकर हम अपनी भावनाओं का पुञ्ज प्रस्तुत करते हैं कि आप शतायु हों और आपके उज्ज्वल आदर्श समाज में सदैव सचेतना का संचार करते रहें।

स्थान : श्री जवाहर विद्यापीठ, भीनासर
सं. २०३०, मिती मार्गशीर्ष कृष्णा ६, रविवार
दिनांक १८ नवम्बर, सन् १९७३

हम हैं आपके—
सदस्यगण—श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ,
बीकानेर-गंगाशहर-भीनासर

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

बीकानेर (राजस्थान)

द्वारा

सादर समर्पित

सम्मान–पत्र

समाजरत्न, दानवीर सेठ श्रीमान् चम्पालाल जी सा. बांठिया

भीनासर (बीकानेर)

आदरणीय महोदय,

* आपका धर्मानुराग एवं शिक्षा-प्रेम समाज के सभी क्षेत्रों में प्रकाशमान है।
* आपने युगद्रष्टा, युगस्रष्टा, युगप्रवर्तक महान् ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज के जीवनोद्धायक, सारगर्भित, हृदयस्पर्शी प्रवचनों का प्रकाशन कर समाज, राष्ट्र एवं मानव मात्र की अपरिमित सेवा की है।
* आपकी उदारता तथा दानशीलता समाज के विकास में विशेष उपयोगी एवं प्रेरणादायक रही हैं।
* आपकी कार्यकुशलता एवं कर्तव्यनिष्ठा से समाज सदैव लाभान्वित हुआ है।
* आपका अप्रमादी एवं क्रियाशील जीवन सदैव एक प्रकाशस्तंभ के रूप में समाज का मार्गदर्शन करता रहा है और करता रहेगा।

अतः श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ अत्यन्त प्रसन्नता एवं विनम्रतापूर्वक आपको यह सम्मान-पत्र समर्पित करते हुए आपके सुदीर्घ आयुष्य हेतु मंगल कामना करता है।

नोखामंडी

दिनांक २५ सितम्बर, १९७६.

भंवरलाल कोठारी
मंत्री

गुमानमल चोरड़िया
अध्यक्ष

जैन आर्ट प्रेस- बीकानेर

कर्मयोगी, आदर्श समाजसेवी, उदारता एवं जीवट के प्रतीक, श्रावकरत्न
सेठ श्री चम्पालाल जी बांठिया की स्मृति में समर्पित

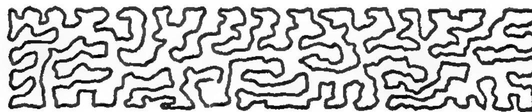
श्रद्धार्पण-पत्र

आस्था एवं श्रद्धा से स्मरणीय :
आप बहुआयामी समर्पित एवं प्रतिभापुञ्ज रहे हैं। जन-जन की श्रद्धा व आस्था के केन्द्ररूप आप सदैव प्रेरणास्त्रोत रहे हैं। समग्र जैन समाज के अग्रणी तो थे ही, सेवा के कार्यों द्वारा आजीवन पर्यन्त जन सामान्य से भी जुड़े रहे। आपकी अपूरणीय क्षति जैन व जन क्षेत्र दोनों के लिए है।
साक्षात कर्मयोगी :
आपने सामाजिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में अनवरत अथक सेवाएँ देकर एक आदर्श प्रस्तुत किया है। दूरदर्शिता, कार्यकुशलता एवं लगन से आपने विविध क्षेत्रों में (नगरपालिका, उद्योग-व्यापार, न्याय एवं वैधानिक) चक्रिल सीढ़ियां पार कर सफलता पाई थी। बीकानेर राज्य के एम.एल.ए. एवं ऑनरेरी मजिस्ट्रेट के रूप में आपने अमिट छाप छोड़ी है। तत्कालीन महाराजा श्री गंगासिंह जी द्वारा सम्मानित होने, अनेक संस्थाओं द्वारा अभिनंदित व प्रशंसित होकर भी आप अहं से कोसों दूर रहे एवं असीम उत्साह पूर्वक सजगता व सक्रियता से अपने कर्मक्षेत्र में अडिग रहे।
अनेक संस्थाओं की जीवंत संस्था :
जवाहर हाई स्कूल, बालिका विद्यालय, जैन जवाहर विद्यापीठ, महिला सिलाई केन्द्र, पौषधशाला, गेस्ट हाउस, धार्मिक ट्रस्ट जैसी संस्थाएं स्थापित कर आपने उनके संचालन में भी सक्रिय योगदान दिया। सड़कों की मरम्मत / निर्माण, मीठे कुओं का निर्माण जैसे कार्यों से आपका स्थान जन-जन के हृदय में था। ये संस्थाएं आज कीर्तिस्तम्भ हैं और ज्ञान, सेवा, स्वावलम्बन का प्रकाश वितरण कर रही हैं।
साहित्य प्रसार संरक्षण :
श्रीमद जवाहराचार्य के व्याख्यानों को जवाहर किरणावली रूप में प्रकाशित कराने की आपकी योजना समय से आगे थी। उनकी वाणी को सदियों के लिए अमर कर आपने कीर्तिमानीय कार्य किया है। सादड़ी सम्मेलन में स्थानकवासी जैन समुदाय के लिए आपकी भूमिका युगबोध की पर्याय है।
स्मृति शेष :
पार्थिव रूप में विद्यमान न रहते हुए भी आपके कार्य जन-मन को सर्वदा अनुप्रेरित करते रहेंगे। श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था आपकी विशेष आभारी है कि इसे 37 वर्षों तक आपका दिशा-निर्देशन मिला। एतदर्थ हम आभारी हैं।

ऐसी दिव्यात्मा को श्रद्धार्पण कर हम कृतज्ञ हैं। सादर नमन सहित....

हीरक जयन्ती समारोह,
दिनांक : 6 जनवरी 1991

- श्रद्धावनत
श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी
संस्था, बीकानेर के सदस्यगण



भीनासर के गौरव, नारी, उन्नयन के अग्रदूत एवं

अनुकरणीय समाजसेवी

सेठ चम्पालालजी बांठिया

की पुनीत स्मृति में सादर समर्पित

श्रद्धासुमनांजलि

भीनासर के गौरव !

बीकानेर के गौरवमयी धरती के भीनासर उपनगर में अपने जीवन के ८४ वसन्त देखते हुए आपने जो कीर्ति अर्जित की, उसकी यशपताका अद्यावधि निर्बाध रूप से फहराती रही है और हमारे अन्तर्मन को पुलकित एवं गौरवान्वित करती रही है। तत्कालीन बीकानेर राज्य में आपने जन-प्रतिनिधि एवं मानद न्यायाधीश के रूप में सेवाएं देकर जन-जन से जो अन्तरंग जुड़ाव स्थापित किया, वह चिरस्मरणीय है। प्रत्येक समाजसेवी के लिए आपकी हार्दिक उदारता व सदाशयता नमनीय है।

नारी उन्नयन के अग्रदूत !

भारतीय स्वतन्त्रता से पूर्व ही आपने नारी-जाति में स्वाभिमान व स्वावलम्बन की भावना जाग्रत करने हेतु नारी-कल्याण की अनेक शैक्षिक व व्यावसायिक प्रवृत्तियों का शुभारम्भ एवं सफल संचालन कर, जिस दूरदर्शिता तथा सेवा भावना का परिचय दिया, वह अभिनन्दनीय है।

अनुकरणीय समाज-सेवी !

कहा जाता है कि लक्ष्मी और सरस्वती का मेल दुर्लभ ही होता है, पर आपने अपने कर्त्तव्य से सुगम सिद्ध किया और लक्ष्मी के वरद-पुत्र होकर श्री सरस्वती मन्दिरों के निर्माण में जिस अग्रगण भूमिका का निर्वहन किया, वह स्तुत्य है। बांठिया बालिका विद्यालय तथा जवाहर विद्यालय इसके प्रत्यक्ष साक्षी हैं। अनेक सार्वजनिक व सामाजिक प्रवृत्तियों के निर्माण व संचालन द्वारा आपने जो कीर्तिमान स्थापित किया, वह वन्दनीय है।

अपने मृदु एवं स्नेहिल व्यवहार से आपने प्रत्येक समकालीन के हृदय में जो अमिट स्थान बनाया, वह हमारे लिए मार्गवर्धक, प्रेरक एवं अनुकरणीय है। आज आपकी पुनीत स्मृति में अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित कर हम कृतार्थ हैं।

श्रद्धावनत :

हीरक जयन्ती समारोह

रविवार, ३ अप्रेल, १९९४

शिक्षक-अभिभावक समिति व नागरिकगण

राजकीय बांठिया बालिका उ.प्रा. विद्यालय,

भीनासर (बीकानेर)

सेवा, सरलता एवं सौम्यता की प्रतिमूर्ति
आदर्श श्रावक रत्न एवं संघनिष्ठता के प्रतीक
सेठ श्रीमान् चम्पालालजी बांठिया को मरणोपरांत

समाज-भूषण

सादर समर्पित सम्मान-पत्र

सम्मानीय !

अदम्य उत्साह, स्फूर्ति एवं जीवट से ओत-प्रोत आपका जीवन जन-जन के लिए प्रेरक एवं स्मरणीय है। बहुआयामी व्यक्तित्व एवं प्रखर प्रतिभा द्वारा आपने समाज की प्रगति के लिए जो कार्य किये हैं वे स्तुत्य एवं अनुकरणीय हैं।

अग्रगण्य श्रावक !

आपने उदात्त, सात्विक एवं मर्यादित रह कर आदर्श श्रावक का सागार धर्म-पूर्ण आस्थापूर्वक निर्वहन किया। आचार-विचार एवं व्यवहार में आप सदैव सहज रहे। भौतिक समृद्धि में भी आप निर्लिप्त एवं अप्रमत्त रहकर आत्माभिमुख रहे। आपकी न वैभव प्रदर्शन की प्रवर्ति रही और न बाह्य आडम्बर के प्रति आसक्ति।

कर्मयोगी !

तत्कालीन बीकानेर नरेश एवं अनेक संस्थाओं से सम्मानित अभिनंदित होकर भी आप अहं से दूर ही रहे। सक्रियता एवं विशाल हृदयता ही आपके जीवन पाथेय रहे। आपने उद्योग, व्यापार, नगर पालिका, न्याय एवं वैधानिक क्षेत्रों में आदर्श प्रस्तुत किया, धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक, नगरपालिका न्याय एवं वैधानिक क्षेत्रों में आदर्श प्रस्तुत किया, धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहकर कीर्तिमानीय कार्य भी किये। श्लाघनीय है आपकी दूरदर्शिता कि आपने तत्कालीन आलोचनाओं एवं विरोध के बावजूद बाल दीक्षा निषेध विधेयक प्रस्तुत करने का साहस किया, जिसकी उपादेयता आज भी प्रासंगिक है।

निःस्वार्थ सेवा के प्रतीक !

शिक्षा प्रसार सेवा एवं स्वावलम्बन के क्षेत्रों में अनेकानेक संस्थाओं, जवाहर हाई स्कूल, बांठिया बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय, जवाहर विद्यापीठ, पौषधशाला, धार्मिक ट्रस्ट की स्थापना कर आपने लोक कल्याण कार्यों को गतिशील रखा तो समाज को लोकप्रिय नेतृत्व भी प्रदान किया श्रीमद्जवाहराचार्य की वाणी को कालजयी बनाने हेतु 'जवाहर किरणावली' का प्रकाशन साहित्य के क्षेत्र में मील का पत्थर है।

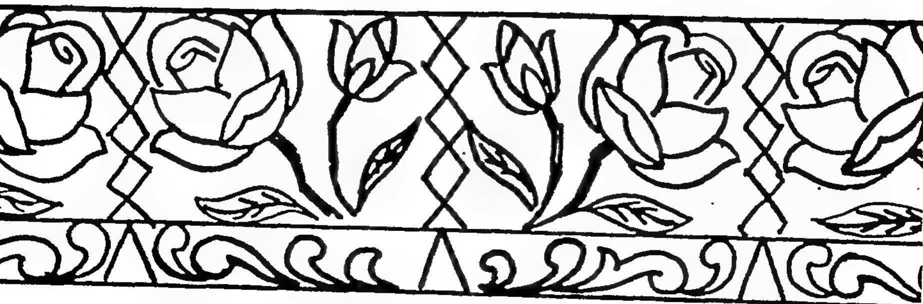
अनुप्रेरक !

पार्थिवरूप में आप आज भले ही नहीं पर आपके कार्य समाज को सर्वदा अनुप्रेरित करते रहेंगे। आपकी दीर्घकालीन बहुमुखी सेवाओं के लिए हम आभारी हैं एवं सादर नमन सहित 'समाज-भूषण' पदवी से सम्मानित कर हम गौरवान्वित हैं।

स्वर्ण जयन्ती समारोह	हम हैं
भीनासर (बीकानेर)	श्री जवाहर विद्यापीठ
दिनांक १ मई १९९४	भीनासर
वार : रविवार	के सदस्यगण

श्रद्धा-सुमन

संवेदना के स्वर





Lallgarh Palace,
Bikaner 334 001
(Rajasthan.)

8th April, 87.

I was deeply distressed to hear about the sudden demise of your Revered Father Shri Champalalji Banthia. We send you our heartfelt condolences. I know Shri Champalalji Banthia well and his loss will be a personal loss to me. May the Almighty grant the departed soul rest in peace in Heaven.

With regards,

Yours sincerely,

Karni Singh

(Dr. Karni Singh of Bikaner)



दैनिक युगपक्ष / ३ अप्रेल, १९८७

चम्पालाल बांठिया का समाधिमरण

बीकानेर। भीनासर के प्रमुख समाजसेवी चम्पालाल वांठिया का गुरुवार को निधन हो गया। वे ८५ वर्ष के थे। वांठिया ने जैन परम्परा के अनुरूप चौविहार संथारा ले लिया था। संथारे में ही उनका समाधिमरण हुआ। उनकी अन्तिम यात्रा वैकुण्ठी के रूप में निकाली गई। जिसमें समाज के व अनेक गणमान्य लोग सम्मिलित हुए।

भीनासर में जवाहर जैन विद्यापीठ, जवाहर उ.मा.वि. तथा स्थानक पौषध शाला जैसे अनेक धार्मिक व समाजसेवा कार्यों में स्व. बांठिया सदैव अग्रणी रहें। भारत जैन महामंडल के शाखा मंत्री जसकरन सुखानी ने उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुए उन्हें हर क्षेत्र में अग्रणी बताया।

वर्तमान/६ अप्रेल, १९८७

भीनासर के बांठियाजी का स्वर्गवास : सेठायी युग की आखिरी कड़ी भी समाप्त

बीकानेर-नगर की उपबस्ती भीनासर के सेठ चम्पालाल बांठिया का इसी १ अप्रेल, ८७ को लगभग ८६ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। स्व. बांठिया सेठायी युग की आखिरी कड़ी माने जाते थे, जो अब नहीं रहे हैं।

जैन श्वेताम्बर समाज में बांठियाजी प्रगतिशील माने जाते थे तथा आप साधु समाज में बाल दीक्षा के सख्त विरोधी माने जाते थे। आप पूर्व रियासत बीकानेर की असेम्बली के मनोनीत सदस्य रहे थे। आप ने महाराजा सार्दुलसिंहजी के जमाने में असेम्बली में बाल दीक्षा विरोधी बिल रखा था, जो भारत में बहुत चर्चित रहा था। कहा जाता है कि दिल्ली की हुकूमत के हस्तक्षेप से यह बिल बीकानेर रियासत की असेम्बली में पारित होने से रह गया था।

बांठिया जी भीनासर की अलग इकाई को बनाये रखने को कटिबद्ध रहे। अब भीनासर नगर पालिका जो नगर परिषद बीकानेर क्षेत्र में सम्मिलित कर ली गई है। भीनासर के नागरिकों की सुविधा के लिए यहाँ अलग से हायर सैकेण्डरी स्कूल, कन्या विद्यालय, डाकघर आदि आपके प्रयासों के ही फलस्वरूप कायम हो सके हैं।



बीकानेर एक्सप्रेस / १३ अप्रेल, १९८७

प्रमुख समाज सेवी श्री बांठिया को श्रद्धांजलि

बीकानेर। रियासती युगीन बीकानेर समाज को शिक्षा के क्षेत्र में तथा नगर विकास और पर्यावरण की दृष्टि से भीनासर के सेठ श्री चम्पालाल बांठिया के नाम से सभी परिचित हैं यह तत्कालीन राज्य में एम.एल.ए. रहे और व्यापार उद्योग मंडल के अध्यक्ष। इन्होंने बाल दीक्षा निषेद्ध बिल प्रस्तुत कर भारत में नाम कमाया है। ख्याति प्राप्त बांठिया जी एक अप्रेल, ८७ को यह आसार संसार छोड़ चल बसे। राज. साहित्य निकेतन द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें श्री धीरज बांठिया, श्री सुमति तथा अन्य इनके परिजन और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। डा. वी. डी. आचार्य ने बांठिया जी के जनहित के कार्यों पर प्रकाश डाला और उन्हें एक महान मानवतावादी राजनेता की संज्ञा दी।

अधिकार / १४ अप्रेल, १९८७

पूर्व विधायक बांठिया को श्रद्धांजलि

बीकानेर, १३ अप्रेल (वि)। सुधारक चम्पालाल बांठिया, भीनासर के निधन पर राजस्थान साहित्य निकेतन की ओर से आयोजित शोक सभा में उनके पुत्र धीरज बांठिया, सुमति तथा उनके अन्य परिजन एवं सहयोगी सहित अनेक समाजसेवियों ने उनके कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्हें भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री बांठिया का गत १ अप्रेल को निधन हो गया था।

डा. वी. डी. आचार्य ने बांठिया जी के शिक्षा प्रेम के अनुपम उदाहरण प्रस्तुत कर उनके द्वारा तत्कालीन ऐसेम्बली में एक एम. एल. ए. की हैसियत से बाल दीक्षा निषेध अर्थात अल्प व्यस्क बालक-बालिकाओं को साधु साध्वी बनाये जाने की कुप्रथा के विरुद्ध बिल लाये जाने का साहसिक कदम बताया जिसका तत्कालीन वृहत्तर भारत के विभिन्न प्रांतों के महान चिंतकों, समाज शास्त्रियों, राजनेताओं आदि ने तहेदिल से अनुमोदन करते हुए श्री बांठिया को अपने पत्रों में महान मानवतावादी राजनेता तथा एक साहसिक समाज सुधारक कहकर सम्बोधन किया है।

शोक सभा के अन्त में एक प्रस्ताव पारित कर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धा अर्पित करते हुए परमपिता से प्रार्थना की गई कि बांठिया जी के शोक संतप्त परिवार को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

श्री बांठिया जी अपने पीछे तीन पुत्र तथा भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं।



दैनिक युगपक्ष/१४ अप्रेल, १९८७

स्व. बांठिया ने अपना सारा जीवन शिक्षा, प्रेम व समाज सुधार में लगाया

बीकानेर (कासं)। राजस्थान साहित्य निकेतन की ओर से एक शोकसभा का आयोजन कर समाज सुधारक चम्पालाल बांठिया को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। डा. वी.डी. आचार्य ने बांठिया के शिक्षा प्रेम तथा समाज सुधार की चर्चा करते हुए बताया कि १९५४-५५ की टाइम्स ऑफ इण्डिया इयर वुक में स्व. वांठिया का उल्लेख था। बीकानेर रियासत के समय धारा सभा (एसेम्बली) के सदस्य रहते हुए उन्होंने बाल दीक्षा के विरोध के लिए साहसिक बिल रखा था उसकी सर्वत्र सराहना हुई।

शोकसभा में स्वर्गीय बांठिया के पुत्रों धीरज बांठिया, सुमति, परिजन एवं अन्य समाज सेवियों ने स्व. बांठिया के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए। एक शोक प्रस्ताव पारित कर संतप्त परिवार को दुःख सहन करने की क्षमता देने की प्रार्थना की गई।

राष्ट्रदूत/१४ अप्रेल १९८७

पूर्व विधायक बाँठिया को श्रद्धांजलि अर्पित

बीकानेर १३ अप्रेल। टाईम्स ऑफ इण्डिया १९५४-५५ की ईयर बुक में जिन समाज सुधारक श्री चम्पालाल जी बाँठिया भीनासर (बीकानेर) के सम्बन्ध में उनके साहसिक कार्यों का उल्लेख किया गया था उन बाँठिया जी का एक अप्रेल को निधन हो गया।

श्री बाँठिया जी के निधन पर राज. साहित्य निकेतन की ओर से आयोजित शोक सभा में उनके पुत्र श्री धीरज बाँठिया, श्री सुमति बाँठिया तथा उनके अन्य परिजन एवं सहयोगी सहित अनेक समाज सेवियों ने श्री बाँठिया जी के समाज सुधार के कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वी. डी. आचार्य ने उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।



दिशा-कल्प/ १५ अप्रेल, १९८७

प्रमुख समाज सेवी श्री बाँठिया को श्रद्धांजलि

बीकानेर। रियासती युगीन बीकानेर समाज को शिक्षा के क्षेत्र में तथा नगर विकास और पर्यावरण की दृष्टि से भीनासर के सेठ श्री चम्पालाल बाँठिया के नाम से सभी परिचित हैं। यह तत्कालीन राज्य में एम. एल. ए. रहे और व्यापार उद्योग मण्डल के अध्यक्ष। इन्होने बाल दीक्षा निषेध बिल प्रस्तुत कर भारत में नाम कमाया है। ख्याति प्राप्त बाँठिया जी एक अप्रेल ८७ को यह असार संसार छोड़ चल बसे। राज. साहित्य निकेतन द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें श्री धीरज बाँठिया, श्री सुमति तथा अन्य इनके परिजन और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। डा. वी.डी. आचार्य ने बाँठिया जी के जनहित के कार्यों पर प्रकाश डाला और उन्हें एक महान मानवतावादी राजनेता की संज्ञा दी।

देश और व्यापार/२० मई से ५ जून, १९८७

अब जिनकी स्मृति युगों-युगों तक पथ प्रदर्शन करती रहेगी

(प्रकाश पुगलिया द्वारा)

[भीनासर के भामाशाह, समाज के मूर्धन्य नेता, युग चेत्ता सेठ श्री चम्पालाल जी बाँठिया के स्वर्गवास का समाचार सुनकर मैं मर्माहत हो गया। जिनकी स्मृति मात्र से जनमानस का दिल श्रद्धा से नत-मस्तक हो जाता है, ऐसे कर्म पुरुष को मेरा हार्दिक नमन एवं श्रद्धांजलि]

भीनासर गाँव [अब बीकानेर शहर का एक भाग] के इतिहास से अगर सेठ श्री चम्पालाल जी के कार्यों को अलग कर दिया जाय तो वीरान सा नजर आयेगा, सचमुच इस गांव की कायाकल्प कर डाली थी सेठजी ने। ८५ वर्ष की आयु में इस नश्वर शरीर को छोड़कर स्वर्गलोक में सिधारे सेठ साहब का समूचा जीवन समाज, गांव एवं राष्ट्र को समर्पित था। आज से लगभग ३५ वर्ष पूर्व आपने भीनासर में जवाहर हाई स्कूल का निर्माण करवाया, गांव में पोस्ट ऑफिस का निर्माण, सड़कों का निर्माण, वाँठिया वालिका विद्यालय का निर्माण, जैन जवाहर विद्यापीठ का निर्माण, एवं मुरली मनोहर गौ-शाला के विकास एवं प्रगति में आपने तन, मन, धन से सव कुछ समर्पण किया। सेठ साहव हमेशा ही गाँववासियों को निष्पक्ष न्याय की प्रेरणा प्रदान करते रहते थे, यही वजह थी कि उनके पास जरूरत मंद लोगों का तांता लगा रहता था।



सेठ जी ने मीठे पानी के दो कुवे खुदवाकर भीनासर, गंगाशहर के निवासियों को पीने के पानी की कमी महसूस नहीं होने दी। नवम्बर १९८३ में आपने ट्रस्ट वनाकर एक और भवन समाज को समर्पित कर दिया, जिसमें जैन साधु-संत निवास करते हैं।

जैन समाज के अग्रणी सेठ श्री :

सेठजी समूचे जैन समाज के अग्रणीय रहे। आप अखिल भारतीय श्वे. स्था. जैन कांफ्रेंस के सादड़ी (मारवाड़) सम्मेलन में अध्यक्ष चुने गये। कांफ्रेंस का साधु सम्मेलन आपके ही अथक प्रयासों से भीनासर में सम्पन्न हो सका। इस सम्मेलन में सभी गुटों के जैन साधु-सन्त एक मंच पर एकत्रित हुवे। अनेकानेक जैन संस्थाओं ने आपका हार्दिक अभिनन्दन कर सम्मानित किया। इनमें निम्न प्रमुख थे :

१. अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

२. श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, बीकानेर-गंगाशहर भीनासर

३. श्री जैन जवाहर मण्डल, देशनोक एवं

४. श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, ब्यावर आदि

यहां तक कि बीकानेर के महाराजा स्व. श्री गंगासिंह जी ने आपकी सामाजिक सेवाओं से प्रभावित होकर आपको 'फर्स्ट क्लास पब्लिक सर्विस मंडल' प्रदान कर सम्मानित किया एवं बीकानेर जैन समाज ने आपको 'गोल्ड मेडल' प्रदान किया। आप बीकानेर रियासत के एसेम्बली मेम्बर थे। आपने बाल दीक्षा का व्यापक विरोध किया एवं एक बिल पास करवाने का प्रस्ताव भी किया जिस पर देश भर के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं उद्योगपतियों के समर्थन पत्र प्राप्त हुए। लेकिन बीकानेर महाराजा के अनुरोध पर आपने यह बिल वापिस ले लिया।

ऐसे कर्मठ महामानव श्री चम्पालालजी बांठिया ८५ वर्ष की आयु में गत १ अप्रेल को हमारे बीच से चल बसे। आपकी स्मृति आपकी कीर्ति का यशगान युगों-युगों तक करती रहेगी।

दूर-दूर तक से शोक संदेश :

सेठजी के स्वर्गवास का समाचार सुनकर समूचा जैन समाज शोक में डूब गया एवं उनकी कर्मठता एवं नेतृत्व शक्ति को नमन करने के लिए दूर दूर से सैकड़ों शोक सन्देश प्राप्त हो रहे हैं, उनमें से कुछेक निम्नलिखित हैं :

१. बीकानेर नरेश श्री करणीसिंहजी ने एक शोक सन्देश में कहा है कि



श्री बाँठिया जी का अभाव मेरी व्यक्तिगत क्षति है। भगवान आपकी स्वर्गात्मा को सुख-शान्ति प्रदान करें।

२. उद्योगपति श्री रामकृष्ण जी बजाज ने श्रद्धांजलि सन्देश में कहा कि आपके निधन का समाचार मुझे विदेश से वापस लौटने पर मिला। ईश्वर आपकी स्वर्गात्मा को शांति प्रदान करें।

३. अखिल भारतवर्षीय जैन संघ, बीकानेर के मन्त्री महोदय ने शोक सन्देश में कहा कि आप जैन समाज के मूर्धन्य नेता थे एवं शिक्षा स्वाध्याय, सामाजिक सुधार एवं राष्ट्रीय विकास में मुक्त हस्त से योगदान करते रहे।

४. अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, मद्रास तथा कलकत्ता से भी आपको श्रद्धान्जलि अर्पित की गई एवं शोक प्रस्ताव पास किये गये।

५. राजकीय जवाहर माध्यमिक विद्यालय ने एक शोक सन्देश में कहा है कि दानवीर एवं समाज सेवी स्व. सेठजी का शिक्षा जगत में सदा नाम अमर रहेगा। यह विद्यालय भवन सेठ साहब की अमर कीर्ति है और इसमें अध्ययनरत छात्र आपका हमेशा यश गान करते रहेंगे।

जीत की भेरी/अजमेर, मासिक पत्रिका/मई १९८७

महकते फूल, जो अब नहीं रहे

भीनासर (बीकानेर) १५ दिस. १९०२ को सेठ स्व. श्री हमीरमल जी बांठिया के घर जन्मे सेवाभावी, समाज रत्न, दानवीर एवं कई संस्थाओं के पोषक सेठ चम्पालाल जी बांठिया का १ अप्रेल १९८७ को स्वर्गवास हो गया है। आपने अपने जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्य जनता एवं समाज के लिए किए जिसके लिए आपको कई नगरों व गांवों में सम्मान पत्र भेंट किये गये एवं पुरस्कृत भी किया गया। आप द्वारा मिडिल स्कूल, हाई स्कूल, मीठे पानी के लिए कुएं, विद्यापीठ, पौषधशाला, गेस्ट हाऊस, धर्मार्थ ट्रस्ट, सड़कों एवं नालियों का निर्माण कराया गया। आप भू.पू. महाराजा गंगासिंहजी के एम.एल.ए. तथा मजिस्ट्रेट भी रहे। नगरपालिका के वर्षों तक चेयरमेन रहे। कई संस्थाओं के अध्यक्ष, मंत्री रहकर आपने समाज एवं जनता की खूब सेवा की। श्री जैनाचार्य जवाहरलाल जी म. का संवत् १९९८-९९ का चतुर्मास भी आप द्वारा कराया गया। भीनासर साधु सम्मेलन में आप की बहुमूल्य सेवायें रही। सादड़ी सम्मेलन में तो आप अध्यक्ष चुने गये। इन सबके साथ-साथ आपने समाज में व्याप्त कुरीतियों को भी



मिटाने का पूरा प्रयास किया। आप बाल दीक्षा के पूर्ण विरोधी रहे। आपके तीन सुपुत्र एवं सात सुपुत्रियां हैं। तीनों ही पुत्र अपने पिता के पद चिह्नों पर चल रहे हैं। आप बीकानेर ही नहीं समस्त राजस्थान के जाने-माने लब्ध प्रतिष्ठित श्रावक थे। आपको कई जगह पर शोक सभाएं आयोजित कर श्रद्धांजलियां अर्पित की गई।

शासनदेव आपकी आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे एवं परिवार को वियोग सहने की शक्ति प्रदान करें।

श्री जैन जवाहर मित्र मण्डल, ब्यावर (राज.)

बांठिया सा. के निधन की सूचना पाकर हार्दिक दुःख हुआ। प्रभु से प्रार्थना है कि परिजनों को यह विछोह सहन करने की शक्ति एवं दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करें।

—भंवरलाल बांठिया, प्रेसीडेंट

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर (राज.)

नियति के नियमों में परिवर्तन, परिवर्धन नहीं हो पाता, उनका आपके व हमारे साथ इतना ही सम्बन्ध था, ऐसा समझकर सन्तोष एवं धैर्य करना चाहिए। बांठिया सा. की आचार्य प्रवर, सन्त-सती मण्डल एवं संघ के प्रति जो अटूट श्रद्धा एवं आस्था थी, वह हम सभी के लिए अनुकरणीय है। आत्मा की अमरता, शाश्वतता, नित्यता एवं शरीर की क्षण भंगुरता, निस्सारता का चिन्तन करते हुए देव, गुरू, धर्म पर दृढ़ आस्था रखते हुए उनकी एवं वीतराग प्रभु की आज्ञा पालन में समय बिताना ही श्रेयस्कर है।

—चंचल मल चोरड़िया, सचिव

जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज.)

श्री चम्पालाल जी के स्वर्गवास के समाचार जानकर बड़ा दुःख हुआ। साथ ही उन्होंने संथारा पूर्वक समाधिपूर्ण मृत्यु का वरण किया-यह जान कर गौरवानुभूति हुई। जहां जन्म है वहां मृत्यु निश्चित है किन्तु इस प्रकार समाधि मरण को प्राप्त करने वाले वीर विरले ही होते हैं। आप सरल, शान्त प्रकृति वाले श्रमनिष्ठ एवं धुन के धनी थे एवं जैन धर्म के प्रति गहन निष्ठावान भी। अन्त समय में अनशन कर जिस समता व दृढ़ मनोबल का आपने परिचय दिया वह प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। आप सभी



पारिवारिकजनों के प्रति हमारी हार्दिक संवेदना स्वीकार करें। दिवंगत आत्मा आध्यात्मिक विकास के पथ पर उत्तरोत्तर अग्रसर होती हुई शीघ्र ही सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बनें - यही कामना करते हैं।

आप उनके जीवन की विशेषताओं को अपने जीवन में संजोते हुए उनकी कमी पूर्ति का प्रयास करेंगे - ऐसी आशा है। मूलचन्द घोसल, निदेशक

श्री मुरली मनोहर गौशाला, भीनासर (बीकानेर)

सेठ साहब श्री चम्पालालजी बांठिया के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर सभी सदस्यों को गहरा दुःख हुआ है। सदस्यगण ने दिवंगत आत्मा को अपनी शोक-श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमात्मा से यह प्रार्थना की कि वह उन्हें सदगति एवं शान्ति दे तथा परिवार जनों को यह दारूण दुःख सहने की असीम शक्ति प्रदान करे।

सेठ साहब की इस गौशाला के प्रति तथा गौ-हित में गोचर-भूखण्ड को सुरक्षित करवाने में की गई सेवाएं सदा अमर रहेंगी। —ईश्वरदास सारड़ा

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, मद्रास

स्व. श्रीमान चम्पालालजी बांठिया एक जाने माने धर्मनिष्ठ सुश्रावक थे। जवाहर किरणावलियों के प्रकाशन एवं स्वर्गीय आचार्य श्री जवाहिरलाल जी म.सा. जब भीनासर विराजते थे तब आपने जिस लगन और निष्ठा से सेवा की वह स्तुत्य ही नहीं अनुकरणीय है। स्थानकवासी जैन इतिहास में आपका नाम हमेशा अग्रणी के रूप में अंकित रहेगा। भीनासर सम्मेलन में भी आपका योगदान विशेष रहा। आपके निधन से समाज में एक वरिष्ठ नेता की क्षति हुई है जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में होनी कठिन है।

जिनेश्वर देव आपकी आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे एवं शोक संतप्त पारिवारिक जनों को इस आघात को सहने का संबल दे। —केशरीचन्द सेठिया, मंत्री

श्री श्वेताम्बर साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था, बीकानेर

श्री श्वे. साधुमार्गी जैन हितकारिणी संस्था, बीकानेर की यह आम सभा सुश्रावक श्रीमान चम्पालाल जी सा. बांठिया, भीनासर के स्वर्गवास पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

आपने श्री जवाहर विद्यापीठ की स्थापना में जो सहयोग दिया वह समाज के लिए आदर्श रूप है। आप समाज में व जन हितकारी कार्यों में हर समय अग्रणी रहते थे। सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में सक्रिय रहे। आप कला प्रेमी भी थे, उनका संग्रहालय कला प्रेमियों के लिए दर्शनीय है।

संस्था आपके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करती है और दिवंगत आत्मा को सद्गति प्राप्त हो यह कामना करती है। —सुन्दरलाल तांतेड़

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

जैन समाज के मूर्धन्य नेता सेठ सा. श्रीयुत चम्पालाल जी सा. बांठिया के निधन से समाज की गहरी क्षति हुई है।

स्व. सेठ सा. ने शिक्षा और स्वाध्याय, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय विकास कार्यक्रमों तथा धर्म और नीति के उन्नयन सम्बन्धी सभी आयोजनों में सदैव मुक्तहस्त से योगदान दिया और उससे भी बढ़कर सक्रिय नेतृत्व प्रदान किया।

स्व. आचार्य ज्योतिर्धर श्री जवाहरलालजी म. सा. री अनन्य सेवा और उनकी अमृतवाणी का जवाहर किरणावली के रूप में प्रकाशन उनके जीवन के ऐसे यशस्वी कार्य हैं जो युग युग तक समाज और राष्ट्र को सत्कार्यों की प्रेरणा देते रहेंगे।

उनसे अपने क्षेत्र के प्रत्येक प्रबुद्ध जन को सामाजिक-धार्मिक कार्यों में संयमित-सन्तुलित रीति से भाग लेने की प्रेरणा मिली है।

मैं स्वयं की तथा श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से प्रशस्त संघ सहयोगी, शासननिष्ठ स्व. सेठ सा. को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की चिर शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हुए कामना करता हूं कि हम सभी को इस असह्य दुःख को सहने की क्षमता व शक्ति प्रदान करें। —चम्पालाल डागा, मन्त्री

अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

श्री चम्पालाल जी सा. बांठिया आचार्य श्री जवाहरलाल जी म. सा. के अनन्य भक्त थे। उनका संथारे के साथ चैत्र शुक्ला ३ को निधन हो गया जानकर दुःख हुआ। जैन समाज के प्रति जागरूक, विचारक, कर्मठ सेवाभावी एवं विद्वान श्रावक की क्षति हो गई है। स्वर्गस्थ आत्मा की शान्ति के साथ स्थानीय श्रावक संघ उनके सुपुत्रों से आशा करता है कि वे बांठिया सा. के रिक्त स्थान को पूरा करेंगे।

—राजेन्द्र कुमार जैन



राजकीय जवाहर माध्यमिक विद्यालय, भीनासर (बीकानेर)

सेठ साहब श्री चम्पालाल जी बांठिया के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर विद्यालय-परिवार को अपार दुःख हुआ है।

विद्यालय-परिवार ने शोक-सभा आयोजित कर दिवंगत आत्मा को शोक-श्रद्धांजलि अर्पित की एवं शोक प्रस्ताव पारित किया।

१. विद्यालय-परिवार परम पिता परमात्मा से यह प्रार्थना करता है कि वह स्वर्गीय आत्मा को सद्गति एवं शांति प्रदान करे।

२. परमात्मा आपके परिवार को इस दारूण दुःख को सहन करने की असीम शक्ति दे।

३. दानवीर, समाज सेवी स्वर्गीय सेठ साहब का नाम शिक्षा-जगत में सदा अमर रहेगा और उनकी यश-कीर्ति सदा अमिट रहेगी।

४. यह विद्यालय-भवन सेठ साहब की अमर-कीर्ति है और इसमें अध्ययनरत छात्र आपका हमेशा यशगान करते रहेंगे। —मोहम्मद जफ़र, प्रधानाध्यापक

- दौरे से वापस आने पर आपके पिताश्री के देहावसान के बारे में मालूम हुआ एवं अत्यन्त दुःख हुआ। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि आपके पिताश्री की दिवंगत आत्मा को भगवान शान्ति प्रदान करें एवं आप सबको यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

शासन सचिव, —एस. आर. भंसाली
विधि एवं विधिक कार्य विभाग
१/१०, गांधीनगर, जयपुर

- विदेश से आने पर मिले समाचार से दुःख हुआ। मेरी तरफ से हार्दिक संवेदना स्वीकार करें। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह स्वर्गस्थ आत्मा को शांति प्रदान करे व आप सब लोगों को यह दुःख सहन करने के लिए धीरज दे।

बजाज भवन, —रामकृष्ण बजाज
जमनालाल बजाज मार्ग, २२६, नरीमन पॉइंट, बम्बई-४०००२१



- श्रीमान चम्पालाल जी साहब के स्वर्गवास के समाचार से बहुत दुःख हुआ। नाजोरी बात छै। काल चक्र अगाड़ी केरोइ जोर चले नहीं। आप लोग धैर्य रखावसी।

रामपुरिया चेम्बर्स, —कमलसिंह रामपुरिया
१०, क्लाइव रो, कलकत्ता-१

- बाबूजी से सम्पर्क होने पर कोई भी उनसे प्रभावित हुए विना नहीं रह सकता था। उनकी कमी से निश्चित ही पूरा बीकानेर प्रभावित है।

सवाई माधोपुर —माणक मोहता
जिला एवं सत्र न्यायाधीश

- श्री बांठिया जी ओसवाल एवं जैन समाज के एक स्तम्भ थे। अनेक गतिविधियों एवं संस्थानों से जुड़ा उनका व्यक्तित्व सदैव क्रियाशील एवं अद्वितीय रहा। हमारे क्षेत्र की वे एक प्रमुख हस्ती थे, जिनके जूझारूपन ने उन्हें विरल रखा। सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में अपने कर्मठ योगदान की जो लकीरें उन्होंने खींची है, उनकी समकक्षता करने हेतु किसी भी कार्यकर्ता को एक युग लगेगा।

दीर्घावधि तक प्रभावित करने वाले ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्तित्व को खोकर हम सभी अपने को अधिक कमजोर अनुभव कर रहे हैं। इस क्षति को अपूर्णीय कहना मात्र औपचारिकता नहीं होगी।

जिस स्वाभिमान से वे जीये, उसी स्वाभिमान व दृढ़ता से उन्होंने 'संथारा' कर मृत्यु को स्वीकारा। उनकी आत्मा को शांति मिले एवं वह नित्य विकास करती रहे।

The karanpur Ginning & —धर्मचन्द/सज्ञन चौपड़ा
Pressing Co. Pvt. Ltd, Sri Karanpur

- We are extremely sorry on this irreparable loss not only to you and your family but to his dear and near ones including those who have known him all these years.

We pray the Almighty God to give you all enough



strength to bear this great affliction. May the departed soul rest in peace.

R.Y. Durlabhji **—K.S. Durlabhji**
P.O. Box No. 78
Jaipur-302001

- I was shocked to get the news delivered through Mr. B. D. Banthia. I know how it affects a man, when he parts with a person who has been living all along in times of good and bad, to guide and to give a moral support in times of need.

  I wish I were with you to share the grief; but though I am not physically present, my thoughts are always wish you.

15-A, 3rd Cross Street (Extn) **—S. Rajaram**
VI th Lay. out
Coimbatore-641038

- I am much grieved to get this bad news. He was very intimate to me and we have spent together some time of our life. I found him very courageous and Straight-forward person. May God give you strength to bear this loss. May the departed soul rest in peace.

L. P. Agarwalla & Co. **—L. P. Agarwalla**
Advocates & Notary Public
1-B, old Post office Street, Calcutta-700001



- विधि के विधान के आगे मानव के सब प्रयत्न असफल हो जाते हैं। आप सब ज्ञान विचारें। कृपया आपके माताजी को इस दुःख की घड़ी में हमारे परिवार की तरफ से संवेदना अर्ज करावें।

Sah Agurchand Manmull Bankers, —सरदार मल चोरड़िया
342, Mint Street, Madras-600079

- बांठिया सा. जैन समाज के अग्रणी एवं धर्म परायण श्रावक थे। ऐसे धर्मानुरागी महानुभाव के देहांत से पूरा समाज शोकातुर है। जैन समाज में ऐसे व्यक्ति की पूर्ति होना कठिन है। इष्टदेव से प्रार्थना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को शांति प्रदान करे।

194 NARENDRA STATION ROAD —अभेराज बलदोटा,
WADALA, BOMBAY-31 नरेन्द्रकुमार बलदोटा एवं परिवार

- अचानक यह समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ परन्तु इसके आगे किसी का जोर नहीं चलता। तुम लोग हिम्मत रखना और दोनों भाभीजी को हमारी तरफ से हिम्मत बंधाना।

Pan Kavur Bai —**Panna Devi**
Financiers,
103, Mint Street, sowtcarpet, Madras-1

- विधि के विधान के आगे हम सब असमर्थ हैं। हमारी आपके साथ संवेदना है। भगवान आपको व परिवार को यह शोक बर्दाश्त करने की शक्ति दे।

पूना —हंसराज बोथरा

- बहुत खोटी हुई पण निजोरी बात छै। मायत रो विछोह दुखदायक है पण आप लोगां ने धीरज सूं काम लेणो पड़सी। आपणा इत्ता ही सीर संस्कार हा। आदरणीया सगी साहब ने अर बीनणी सुमन ने धीरज बंधाइज्यो।

Jiwanmal Dharmraj (Bharat) Pvt. Ltd. —डूंगरमल भूतोड़िया
3, Johuri Patty, Burdwan (W.B.)



- ईश्वर की लीला के आगे निरूपायता है। आप ज्ञान की दृष्टि में समझकर दिल में समाधान रखावें।

  M/s Kumarpal Uttamchand Samdadia
  Anand Bhavan, Marchar —उत्तमचंद भागचंद समदड़िया
  Pune-410503

- पढ़कर-दुख हुयो पर अपने हाथ की वात नहीं। समाज री पूरी खामी पड़ी इण री निकट भविष्य में पूर्ति होणी मुश्किल है। पंडित मरण मिलनो कठिन है, कोई पुण्यशाली ने ही मिले छै। इण समय में धर्म पर चित्त लगानो चाहिए ताकि शान्ति मिले।

  11, Nowroji Road, Chetpet —मोहनलाल सेठिया
  Madras-31

- कालचक्र के सामने सभी को विवश होना पड़ता है। श्री वीर प्रभु से प्रार्थना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को शांति एवं आपके परिवार को इस महान दुख को धैर्य सहित सहन करने की शक्ति प्रदान करावे।

  Mootha Finance Corporation —मदनराज विजयराज मूथा
  555, Bangali Bazar Road
  Alandun, Madras-600016

- पूज्य वहनोई सा. रे स्वर्गवास रा समाचार सूं मन में वहुत दुःख हुयो है। अन्त समय में उच्च विचार रहा तथा सर्व प्रकार त्याग पच्चक्खान कर संथारा लिया यह सौभाग्य की बात है। पू. तारावाई सा. ने भी हमारी तरफ सूं हिम्मत बंधासोजी।

  Mohanlal Punamchand **—Mohan Lal Kothari**
  39-A, Armanian St., Calcutta-700001

- मौत के आगे जोर है नहीं। धर्म पर दृष्टि रखावोगा।

  8, Bahu Bazar St. —शांतिलाल रामपुरिया
  Culcutta



- नियति के इस क्षण के आगे हम सभी निरूपाय हैं। उनकी स्मृति चिर स्मरणीय है। इस शोकमय बेला में हमारी सहानुभूति, सहृदयता आपके साथ है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को चिरस्थायी शांति मिले।

Dreamland, Ahmedabad-9 —गौतमचंद मेहता

- ईश्वर आपको एवं आपके परिवार को इस दुःख से संभलने की शक्ति दे। मृतात्मा की सद्‌गति के लिए प्रार्थना है।

Tarachand Motilal Lodha —ताराचंद लोढ़ा
'Mouktik' College Road
Malegaon Camp NASIK

- ऐसी जगह इन्सान हिम्मत हार जाता है और सब अरमान धरे ही रह जाते हैं। उस दिवंगत महान् आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

तेजपुर —शिखरचंद राजेन्द्रकुमार एवं समस्त परिवार

- आपके पूज्य पिताजी बहुत प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे। भगवान आप सबको इस असहनीय दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे।

करीमगंज —कन्हैयालाल पटवा

- इसके आगे किसी का जोर नहीं फिर भी आप धीरज रखें तथा सगी सा. को धीरज बंधायें।

सूरत —शान्ता

- दुखद समाचार से मेरे पिताजी को बहुत दुःख हुआ। वे अपने पुराने संबंधों की याद कर रहे थे। हम सभी दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं तथा आपके इस दुःख में सहभागी हैं।

Soni Investments & Consultants —सुरेन्द्र सोनी
1/8, Rivervict Apartments
Koregaon Park, Pune-411001



- यही संसार की नश्वरता है। मां जी को मेरी ओर से निवेदन करना कि उनके पीछे अधिक कर्मों का संचय न करें। वे स्वयं ही समझदार एवं धर्मनिष्ठ हैं। दुःख में धर्म ही एक आधार है।

Adhyatma Sadhna kendra —मोहनलाल कठोतिया
Chhatterpur, Mehrouli
New Delhi-110030

- उस पुण्यात्मा का अपने साथ रहने का इतना ही योग था। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

Arihant Metal Company —**Vimal Baid**
4403, Gali Lottan wali
Pahari Dhiraj, Delhi-110006

- बाबूजी के स्वर्गवास का समाचार जानकर बहुत दुःख हुआ, लेकिन मौत के आगे मनुष्य हार जाता है। भगवान् आपको इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

Dest Aur Vyapar —प्रकाश कुमार पूगलिया
76, Pt. Purushottam Roy st. Calcutta-700007

- साहजी श्री बांठिया साहब के अवसान का समाचार जानकर अत्यन्त खेद हुआ। विधि की विडम्बना के आगे किसी का चल नहीं सकता। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।

25, Meghdoot Flats, —**Mohanlal L. Metha**
Ashram Road, Navarangpura
Ahmedabad-380009

- स्वर्गीय बांठिया जी मेरे अभिन्न मित्र ही नहीं एक सजग समाज सुधारक और नेता थे। इनकी क्षति पूर्ति शीघ्र नहीं दिखती है। ईश्वर हमें इस आघात को सहने की शक्ति और दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

लोकमत कार्यालय, बीकानेर —अम्बालाल माथुर



- पूज्य मामासा श्री जी शरण हो गये सो सुनकर बहुत ही दुःख हुआ। होनी को कोई भी टाल नहीं सकता है। आप अपना पूरा ध्यान रखें।

चित्रा आईस फैक्ट्री
भीनासर

—चित्रा कांकरिया

- दुःखप्रद समाचार से मैं सपरिवार मर्माहत हो उठा। यह पारिवारिक क्षति के साथ ही सामाजिक, धार्मिक और व्यापार जगत की भी अपूरणीय क्षति हुई है। मुख्यतः मैं तो अपने आत्मीय एवं परम हितैषी आदरणीय साहजी सा. के अभाव में अपने आपको शोकाभिभूत ही पाता हूं परन्तु विधि विधान बड़ा ही प्रबल है—

'हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ'।

आ. सगीजी सा. ज्ञानी हैं और आप स्वयं सुविज्ञ हैं अतः धैर्य धारण करें।

४. मेरेडिथ स्ट्रीट
कलकत्ता-७०००७२

—माणकचन्द रामपुरिया सपरिवार

- पढ़कर बहुत दुःख हुआ, यहां आकर किसी का जोर नहीं चलता। तुम सभी मन में शान्ति रखोगा। पूज्य भजईजी सा. ने दिलासा दरावोगा। कोई तरह का आर्त्तध्यान नहीं करके शान्ति जाप करोगा, जिके सूं स्वर्गस्थ आत्मा ने शांति मिलेगा। आपां लोगां सूं इतनो ही संस्कार थो।

सापटग्राम

—मानिकचन्द रूपचन्द धाड़ीवाल

- दादासा. का समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ। दादीसा. को धीरज धराई जो।

कलकत्ता

—गोरधनदास बांठिया

- दादासा. के स्वर्गवास का पढ़कर बहुत दुःख हुआ। भगवान आपको यह दुःख सहन करने की शक्ति देवें। ताराबाई को हमारी ओर से धीरज बंधावे।

उज्जैन

—सुलतानचन्द बांठिया

- बांचकर बोत दुःख हुआ कि पूज्य दादासा. का स्वर्गवास हो गया। बहुत खोटा हुआ



है लेकिन नीजोर बात छै। इण आगै आपां लोगां रो कांई जोर चाले नहीं।

दिनहटा —जयचन्दलाल बैद

- ब्याही जी सा. के स्वर्गवास का समाचार सुनकर बहुत दुःख हुआ। ज्ञान विचारसी जी।

Manakchand Pukhraj —पुखराज मिट्ठालाल छल्लाणी
Vinayaga Mudali st.
Sowcarpet, Madras-1

- सुनकर बहुत दुःख हुयो, आपणें घर सूं इतनो ही सीर संस्कार थो। कालचक्र के आगे किण रो भी जोर चाले नहीं। आप सब समझदार छो, ज्ञान ऊपर दृष्टि दरावसी तथा घर में सबां ने हमां सब री तरफ सूं धीरज बंधावसी।

376, Mint Street —माणकचन्द कुसुमकुमार सेठिया
Madras-600079

- बड़ो दुःख होयो लेकिन निजोरी बात है इण बात आगे किसी रो जोर चाले नहीं। पू. मामीसा. ने हमारी तरफ से सांत्वना दिराइजो।

कलकत्ता —हेमराज खजांची

- इण दुःख आगे केरोई जोर चाले छे नहीं। सब निजोरी बात छे।

कलकत्ता —भंवरलाल दुलीचन्द

- श्रीमान् चम्पालाल जी सा. रो स्वर्गवास रो सुणकर मन बहुत उदास हो गयो। इण दुःखद वेला में हमारी हार्दिक संवेदना स्वीकार करसो।

कलकत्ता —जयचन्दलाल शरदकुमार रामपुरिया

- उनके संथारापूर्वक निधन पर किसी भी प्रकार का दुःख व शोक न रखकर धर्म प्रवृत्ति में रहें। उनकी आत्मा को शांति मिले इसी इच्छा के साथ।

—अभयराज धनेशकुमार



- शाहजी श्रीमान चम्पालाल जी साहब के स्वर्गवास से बहुत दुःख हुआ है। शरीर तो नाशवान है ही परन्तु धर्म क्रिया (संथारा) के साथ देहावसान होना बहुत कठिन है। आप लोगों ने व्यवस्थित ढंग से करके अपना जीवन सार्थक किया है।

  जन्म-मरण किसी के हाथ नहीं, आयुष्य के अनुकूल होता रहता है। आप सगीजी सा. को मेरी तरफ से सांत्वना दें। वे तो स्वयं पूर्ण समझदार हैं, उनको लिखने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है।

  Sudha Textiles, —मोहनलाल सिरोहिया
  1, Noormal Lohia Lane, Calcutta-700007

- प्रभु दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें तथा परिजनों को यह महान दुःख सहने की शक्ति प्रदान करे। मां साहब से हमारी ओर से धीरज बंधावें।

  रतलाम —सुन्दरसिंह चोरड़िया

- जिनेश्वर देव से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें। आप सब धैर्य रखें।

  कलकत्ता —सोहनलाल कुन्दनमल बैद

- बांठिया साहब बहुत ऊंचे विचारों के थे तथा आपकी सलाह ठोस व व्यावहारिक होती थी। विधि के निर्मम विधान के आगे मनुष्य का जीवन कितना बेबस है? हमारा धैर्य, हमारी आस्था और हमारी अन्तर्मुखी आध्यात्म शक्ति ही ऐसे समय में एक मात्र सम्बल है।

  बम्बई —धनपतराज भंडारी

- मन विश्वास नहीं करता परन्तु विधि की विडम्बना के आगे हमारा कोई वश नहीं, उसे धैर्यपूर्वक सहन करना ही आवश्यक है। पूज्य बाबूजी सदैव हमारे प्रेरणा स्रोत रहें। अब युगों युगों तक उनकी स्मृतियां हमें प्रेरणा देती रहे, यही कामना है। पूज्य मांसा व सम्पूर्ण परिवार को मेरी हार्दिक संवेदना।

  M.C. Bhandari & Co. Chartered Accountants —मेघराज जैन
  4, Synagolue Street, Calcutta-700001



- उन्होंने संघ के प्रति जो सेवाएं की, वे अविस्मरणीय हैं। जीवन भर की गई साधु सन्तों एवं समाज की सेवा-एक अनूठा आदर्श है, जो उन्हें महान बनाने वाला है। उनके निधन से समाज को एक क्षति पहुँची है, जिसकी पूर्ति होना अत्यन्त कठिन है।

  जयपुर —सरदारमल उमराव मल ढढ्ढा

- आचार्य श्री जवाहरलाल जी म. सा. के प्रति अनन्य श्रद्धा एवं जवाहर साहित्य के प्रकाशन में उनका योगदान अविस्मरणीय है। जब भी हम उनके सम्पर्क में आए उनकी उदारता, संघ निष्ठा, सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ता तथा सामयिक विचारधारा ने हमें प्रभावित किया। कृपया दुःख के इन क्षणों को साहस और धैर्य से सहन करें, हम आपके सहभागी हैं।

  चांदनी चौक, रतलाम —मगनलाल मेहता एवं शांता देवी मेहता

- समाचार जाणकर बहुत दुःख हुयो। इण दुखद वेला में हमां सारा री तरफ सूं संवेदना स्वीकार करसो। परमात्मा दिवंगत आत्मा ने शांति प्रदान करै। आप लोग धैर्य रखावजो।

  ५, फेन्सी लेन, —रतनलाल, अभयकुमार, राजेन्द्र कुमार रामपुरिया
  कलकत्ता-७००००१

- सुनकर मन बहुत उदास हुआ है। सेठ सा. बहुत ही संयमी एवं हिम्मती थे। धीरज रखावें एवं आपकी माताजी को हिम्मत बंधावें।

  44, Dewan Rama Iyengar Road, —तोलाराम मिन्नी
  Madras-600084

- मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा आप सबको इस हादसे को सहने की शक्ति प्रदान करे।

  50/7th Cross —शांतिलाल सांड
  Willson Garden, Bangalor-560027



- उनकी लायक़ी हमेशा याद रहेगी। आप समझदार हैं, ज्ञान विचारें।

Siremull Hirachand —प्रकाशचन्द चोरड़िया
48, General Muthia Mudali St.,
Madras-600079

- परम पिता उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे तथा आप सबको यह दुख सहने की शक्ति दे। हमारी संवेदना स्वीकार करें।

R.D. Mundhra —हरदास, रामदेव मूंधड़ा
Huigoram House,
Dr. Annie Besant Road, worli, Bombay-400018

- बहुत दुःख भया। इसके आगे किसी का जोर चलता नहीं।

—पदमचंद दूगड़ सपरिवार

- बांठिया सा. उदार हृदय, समाज सेवी तथा उच्च विचारों के धनी थे। उनके निधन से समाज में एक बहुत बड़ी कमी हुई है।

PRAVEER —प्रकाशचन्द छल्लानी
Ashoka Road, Mysore-570001

- शासनदेव से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को चिरशांति तथा शोकातुर परिवार को धैर्य प्रदान करावें।

सम्पादक 'तरूण जैन'
त्रिपोलिया, जोधपुर-३४२००२ —फतहसिंह जैन

- श्रीमान् चम्पालाल जी साहब ने समाज की अमूल्य सेवाएं कीं। आज समग्र जैन समाज आपके विना अनाथ हो गया।

Kankariya Bhawaan, —नेमीचन्द ज्ञानचन्द कांकरिया
12, Baphna Gali, BEAWAR-305901



- बांठिया साहब ने स्व. श्री जवाहिराचार्य की विशिष्ठ सेवाएं की हैं। आपके मंत्रित्व काल में प्रकाशित साहित्य आज भी अपनी विशिष्टता रखता है।

आपको संथारा आया यह प्रमोद का विषय है; अनगार भी कभी-कभी इससे वंचित रह जाते हैं।

जयपुर —गुमानमल चोरड़िया

- दुखद देहावसान के समाचार से मुझे आघात लगा है। मेरा उनसे वर्षों का स्नेह सम्बन्ध रहा है। सन् १९४८ में कांग्रेस अधिवेशन में स्व. हीरालाल जी शास्त्री, चीफ मिनिस्टर के बुलावे पर जयपुर आने पर मेरा पारिवारिक सा सम्बन्ध हो गया था। वे बड़े विलक्षण, कुशल संगठनकर्ता, मानव-पारखी एवं समाज सेवी थे। उनमें अपनों के प्रति अनुराग था। सन् १९५६ के भीनासर सम्मेलन में उन्होंने मुझे सपरिवार बुलाया था। सबसे प्राणवान यादगार आज भी आंखों में तैर रही है कि उन्होंने परम प्रतापी स्व. जवाहरलाल जी म. सा. की अंतिम वक्त प्राणपन से अनन्य सेवा की थी वह किसी प्रकार भुलाई नहीं जा सकती।

बाल दीक्षा के विषय में उन्होंने बीकानेर धारा सभा में बिल प्रस्तुत किया था। यह बड़ा साहसिक कदम और प्रयत्न था।

डेगाइच भवन, —प्रेमचंद लोढ़ा
नथमल जी का चौक

जौहरी बाजार, जयपुर-३

- इण समाचार सूं चिंता हुई। नाजोर बात है- कालचक्र रे आगे किणी रो जोर चले नहीं। आपरे घर में मोटी कसर पड़ी सो पड़ी मगर सारा स्थानकवासी समाज में एक प्रतिष्ठित अनुभवी धार्मिक जाणकारी वाला री मोटी कसर पड़ी इणरी पूर्ति निकट भविष्य में होनी असम्भव है।

Jeevraj Janwrilal —जीवराज मेहता
Cloth Merchants

Bhandi Bazar, Belgaum-590002



- I am deeply grieved to learn about the sad demise. Please accept my heartfelt condolences on this berevement. I know this being an indelible loss, mere words cannot console you in this hour of grief.

  I earnestly pray to almighty to give you and other members of the family enough strength and Courage to withstand the loss with fortitude.

  May the departed soul rest in eternal peace.

  —Arun Nahar

  M.Sc., D.R.P., LLB., CA IIB

- Personally, I had known Sh. Champalalji for the past five years. I still remember the excellent hospitality he extended to all of us during our visits. He also used to narate his past experiences, which reflected the amount of dynamism he had. Kindly accept our heartfelt condolences on this sad occasion.

  118, Broadway **—S. Harikrishna Jhaver**
  2nd Floor, Madras-600108.

- We convey our heartfelt condolences and pray to almighty God, the Great Architeet of the universe that the departed soul may rest in peace.

  Pannalal Sagarmal **—Chhater Singh Baid**
  Baid Bhawan,
  10, Canning St., Calcutta-700001

- Highly grieved to learn about the sad demise. Heartfelt sympathies. Pray the Almighty to provide strength to the



bereaved family to bear the heavy loss and to give eternal peace to the departed soul.

—**Ranjit Singh Bengani & family**

Minerva Industrial & Commercial Corp.

15, India Exchange Place, Calcutta-1

○ शोकाकुल पत्र पाने पर स्वयं को अत्यधिक असहाय सा अनुभव कर रहा हूँ। स्वयं को संभालने के साथ-साथ आदरणीय मा सा. को भी हिम्मत बंधाए। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

Meenakshi Enterprises, —वैकुण्ठ नाथ पाण्डे
207 SURYA CHAMBERS,
NEHRU BAZAR, JAIPUR-302003

○ पू. मासासा के देहावसान का समाचार पढ़कर बहुत दुख हुआ। यहां आकर मनुष्य के वश में कुछ नहीं है। पू. मासीसा एवं सर्व परिवार को आप धैर्य बंधाएँ।

Shiv Chand Brij Lal —विजयकुमार कोचर
Katra Ahluwala,
AMRITSAR-143006

○ श्री गुरूदेव महाराज इणा री आत्मा ने शान्ति प्रदान करे। आप सब ने दिलासा दिरावसी। नाजोरी बात है।

कलकत्ता —माणकचन्द बेंगाणी

○ विधि के विधान के आगे मानवीय प्रयास विफल हैं। शासनदेव से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें व आपको क्षमता प्रदान करें।

A. Manik Chand Bethala & Co. —माणकचंद बेताला
7, Veerappan St., Madras-600079



- भगवान स्वर्गस्थ आत्मा को चिरशांति प्रदान करे।

पाली —धनराज बच्छावत

- शाहजी साहब के स्वर्गवास हुणे री खवर सूं चिन्ता हुई। नाजोर की वात है सो आप ज्ञान विचारसी।

Khivraj Chordia —खीवराज देवराज चोरड़िया
Madras-1

- पूज्य नानासा का श्री सरण होने का समाचार देशनोक से मिला, बहुत दुःख हुआ। भगवान की मरजी के आगे कोई जोर नहीं है।

M/s Devi Enterprises —किरणचंद गुलगुलिया
C-2/334, GIDC Ind. Area,
Jamnagar-361004

- श्रीमान् ब्याहीजी सा. हमारे मध्य न रहे जानकर बहुत दुःख हुआ। वे बहुत समझदार एवं हंसमुख व्यक्तित्व थे। उनके निधन से बांठिया परिवार को ही नहीं सारे समाज को धक्का लगा है।

Galada Private Ltd. —गौतमचंद गैलड़ा
3, Peria Naiya Karan St. Madras-600079.

- सुरेश बाबू से यह दुःखद समाचार मिला। आप सभी धीरज से काम लें, धर्म ध्यान में समय बितावें। आदरणीय मांसा का पूर्ण ध्यान रखावें।

Burdwan **—S. S. Bhutoria**

- गंगाशहर के पत्र से समाचार पाकर शोकाकुल हुआ। वे मेरे भाई और पिता जैसे ही रहे। आपके शोक में मैं साथ हूँ। माताजी को दिलासा देवें।

दियातरा —भैरूदान छलानी



- मृत्यु के आगे किसका वश चला है? उनकी बताई हुई आदर्श बातों के साथ चलें यही उनके प्रति अपनी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

'अभिनन्दन'
Shirting & Suiting —भंवरलाल
Lalgate, Surat-3

- दादासा के अचानक हमारे बीच से चले जाने से बड़ा ही दुख हुआ। भगवान की इस क्रूर इच्छा के आगे सब विफल हैं। उनकी आत्मा को शांति प्राप्त हो।

5 G Mandevilla Appartment —कविता एवं आशीष
9 Mandevilla Gardens
Ballygunge, Calcutta-700019

- समाज में एक चमकता हुआ नक्षत्र अस्त हो गया। यह न केवल आपको ही क्षति हुई है वरन् समाज में भी एक अपूरणीय क्षति हुई है। काल धर्म की इस विचित्र लीला के आगे निरूपायता है। आप ज्ञान की दृष्टि से विचार कर दिल में समाधान रखावें।

K. Phoolchand —फूलचंद लूणिया
D. S. Lane, Chickpet Cross,
Bangalore-560053

- पूज्य दादाजी के स्वर्गवास का समाचार पढ़कर बहुत दुःख हुआ। मैं आज से ५०/५५ वर्ष पूर्व की बात याद करता हूँ तो उनका स्नेह याद आता है। कितने महान थे! ऐसे पुरूष हजारों वर्षों में तथा हजारों में एक ही होते हैं। इस निजोरी बात के आगे जोर चालै नहीं।

Mahavir Auto Parts —प्रतापसिंह वैद
Mahavir Bhawan, Siliguri-734401

- ईश्वर उनकी आत्मा को शांति व आप सभी को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

अजमेर —जय-सन्तोष
—ऋतु-मनीष



- सेठ साहब हम लोगों के बीच नहीं रहे, जानकर मन में वड़ी पीड़ा हुई। उनसे मुझे काफी प्रेरणा मिली। आप मिलनसार, कर्मठ एवं आत्मवल के धनी थे; उनका मनोबल बहुत ही ऊंचा था। वे हर समय मुस्कुराते रहते थे।

C/o Dalchand Bimal Kumar —सोहनलाल गुलगुलिया
35, Armenion St. Culcutta

- सम्माननीय बांठिया सा. स्थानकवासी समाज ही नहीं, देश की एक विरल विभूति थे। आपके निधन से अपूरणीय क्षति हुई है। आप ज्योर्तिधर श्रीमद् जवाहराचार्य के परम श्रद्धालु भक्तों में थे। भीनासर साधु सम्मेलन के अवसर पर की गई आपकी सेवाएं यादगार बनीं हैं। तन-मन-धन से जो सहयोग दिया वह प्रशंसनीय एवं अभिनन्दनीय है। आप योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं। उनके पदचिन्हों पर चलते हुए समाज एवं राष्ट्र को अपनी सेवाएं देते रहें।

छोटी सादड़ी —चांदमल बी. नाहर

- बाबासा. विषयक समाचार से अवर्णनीय दुःख हुआ। विधि के विधान पर किसी का जोर नहीं।

120 Wallajah Road —वर्धमान बैद
Opp. Anna Statoe कुसुम बैद
Madras-2

- जाणकर बड़ो ही दुःख हुयो। होणी रे आगे किणी रो जोर चाले नहीं। मामीसा ने इण दुःख री घड़ियां में खास कर धीरज बंधाणै री जरूरत है।

Sunderlal Shantilal —सुन्दरलाल धीरजकुमार कोठारी
233-A, Sheikh Memon St.
Zaveri Bazar, Bombay-400002

किसे दुःख न होगा!

- बांठिया सा. द्वारा समाधि मरण से आपके परिवार के संस्कारों की प्रतीति मिलती है। आप श्रेष्ठ श्रावक, विशाल हृदयी एवं अनुराग के अप्रतिम उदाहरण थे। आपने



अपरिग्रह को प्रचुर मात्रा में अपने जीवन में उतार लिया था। ऐसे व्यक्ति को खोकर किसे दुःख न होगा! उनके स्नेह से परिपूर्ण हमारा परिवार उनसे गौरवान्वित रहेगा।

अहमदाबाद —घीसीबाई मेहता

● पूज्य बाबूजी के निधन से अत्यन्त दुःख है। इस लीला के आगे किसी का वश नहीं। इस घड़ी में आप सभी से हार्दिक संवेदना। शांति धारण के सिवाय अन्य उपाय भी नहीं है।

B. Nirmal Kumar & Co. —लच्छीराम पूगलिया
76, Purushottam Raj. St.
Calcutta-7

● उनका निधन परिवार ही नहीं, समाज के लिए भी अपूरणीय क्षति है। समाज के प्रति उनका योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा। मेरे पितृश्री के साथ सेठ सा. का विशेष स्नेह संबंध था ही, मैं भी एतदर्थ कृपापात्र रहा हूं। धैर्य संदेश के साथ संवेदना।

Manohar Brothers, —शान्तिलाल धाकड़
90, Siyagnj, Indore-452007

मायतां री छत्रछाया री तुलना कांयनी

● मायतां री छत्र-छाया रै रूप अर लाभ री तुलना कांयनी। हमे अकेला-पण बेशी अर जुम्मेवारी ज्यादा बढ़'गी है।

10, Clive Row —प्रेमसिंह निर्मलकुमार बेगानी
6th Floor
Calcutta-700001

निजोरी बात है

● जाणकर हमानें बहोत गहरो दुःख हुओ। निजोरी बात है। ज्ञान विचार सी।

3117, Khadi Bazar —मुलतानमल हरकमल मेहता
Belgaum



वास्तविक सेठजी

● श्रीमान् बांठिया जी ने गंगाशहर, भीनासर व बीकानेर को जो राह दिखाई व जो कार्य किये, वे अविस्मरणीय हैं। आप त्रिवेणी-संघ के एक मात्र व वास्तविक सेठजी थे। उनकी सूझ-बूझ, दूरदर्शिता एवं धर्मनिष्ठा समाज के लिए अनूठा उदाहरण है।

K.L. Bothra & Co. —K. L. Bothra

Advocates & Taxation Consultants

35, Armenian Street, Calcutta-700001

विश्वास नहीं होता

● मासासा. के निधन का समाचार पढ़कर विश्वास नहीं होता पर संसार का यही हाल है। एक-एक को देखकर शांति रखनी पड़ती है। हमारी श्रद्धांजलि।

अनोपचन्द बच्छावत —विजयकुमार, जयकुमार आदि

४, ब्रज दुलाल स्ट्रीट, कलकत्ता-६

समाज में खामी

● इण पर कोई रो भी जोर चाले नहीं। समाज में बहुत बड़ी खामी हुई है। आंवती टैम में जल्दी पूर्ति हुणी संभव नीं लागै।

कलकत्ता-१६ —पारसमल कांकरिया

समाज सेवा में जीवन अर्पण

● पिताश्री का वरद हस्त जीवन का अनुपम संबल होता है, जो ज्योति प्रदान करता हुआ मार्ग प्रशस्त करता है। मन को आघात लगा कि समाज ने एक ऐसे समर्पित व्यक्तित्व को खो दिया है, जिसने पूर्ण निष्ठा, योग्यता एवं लगन से समाज सेवा में अपना जीवन अर्पण कर दिया। —उमरावमल चोरड़िया

13, Takht-E-Shahi Road, Jaipur-302004



अनन्य गुणों के धनी : समाज के पितृवत्

- श्री चम्पालाल सा. अनन्य गुणों के धनी थे। मृदु एवम् मित्त-भाषी होते हुए भी सदैव स्पष्ट बोलते थे, चाहे सामने वाले को कितना ही कटु क्यों न लगे। कोई भी उन्हें अपने उसूलों से विचलित नहीं कर सकता था। हर परिजन, सामाजिक-व्यक्ति या साधु-साध्वी उनकी सच्चाई का कायल था और इनमें से कोई भी उनके सामने अप्रमाणिक बात करने की हिम्मत तक नहीं कर सकता था।

उनका रहन-सहन, खान-पान, वाणी-वर्ताव सब कुछ नियमबद्ध था और अन्तिम समय तक इसी प्रकार रहा। वे आपके ही पिता नहीं, अपितु सारे समाज के पिता थे। आप लोगों के लिए कितने गौरव की बात है कि आप उनकी संतान हैं।

क्षति-पूर्ति तो असम्भव है, लेकिन उनके गुणों में से कुछ अपने जीवन में उतार कर उनकी आत्मा को शांति पहुँचा सकते हैं।

—उत्तमचन्द मेहता

U.L. Mehta
1 Cosmoville, Satyagraha Marg
Ahmedabad-380054

सर्व गुण सम्पन्न विराट व्यक्तित्व

- शाहजी श्री चम्पालाल जी के स्वर्गवास बाबत जानकर बहुत दुःख हुआ। कुदरत के सामने सभी नत-मस्तक हैं। समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं में अग्रणीय बांठिया सा. का अनुभव एवं मार्ग-दर्शन सदैव स्मरणीय रहेगा। सर्व गुण सम्पन्न उस विराट व्यक्तित्व की उदारता दानवीरता भी कभी भुलाई न जा सकेगी।

—तेजराज चोरड़िया

Hirachand Tejraj
11, Ayya Mudall St.
Sowcarpet, Madras-600079

- सुनकर सभी शोकाकुल हैं परन्तु मृत्यु के आगे किसी का जोर नहीं होने से विवश हैं। अपने साथ इतना ही संयोग मानते हुए श्री जिनेश्वर देव से प्रार्थना है कि उनकी



आत्मा को चिरशान्ति मिले।

Amar Industrial Corporation —सम्पतराय चौरड़िया
18, Sembudass St. Madras-600001

अपूरणीय क्षति

- मुझे व परिवार को अत्यन्त वेदना हुई; प्रकृति के आगे सब असहाय हैं।

Sekhawat Estate —हेमन्तकुमार शेखावत
Shanti Bhawan
87, Sitlamata Bazar, Indore-2

समर्पित जीवन आदर्श

- बांठिया सा. धर्मनिष्ठ, कर्तव्य परायण, कर्मठ सेवाभावी, स्वधर्मी वात्सल्य के समर्पित जीवन आदर्श थे। आचार्य श्री जवाहरलालजी के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा हम सबके लिए अनुकरणीय एवं अभिनन्दनीय है। स्वर्गस्थ आत्मा को चिरशान्ति प्राप्त हो।

मंत्री
सम्यग् ज्ञान प्रचारक मण्डल —चैतन्यमल ढढ्ढा
बापू बाजार, जयपुर-३

- I always remember the sincere affection of Seth Champalal ji.

Horticulturist. —Amilal J. Dhaky
Nagindas Mody Marg, Porbandar (Guj.)

- समाज के एक धर्मनिष्ठ सुश्रावक थे। महान क्षति हुई है जिसकी पूर्ति होना असंभव है। आपने सेवा का कर्तव्य पू. पिताजी पर न्यौछावर किया वो आशीर्वाद महान है।

वि- सर्जन आश्रम नवलखा —मानवमुनि
इंदौर-४५२००१

Telegrams

- Please accept our Heartfelt condolences.
  Calcutta —**Manak Chand Rampuria Familly**

- Accept our hearty condolence
  Calcutta —**Mohanlal Sirohia**

- Heartfelt Condolence on sad demise.
  Calcutta —**Dungarmal Surendra Bhutoria**

- Experiencing heartfelt condolence on sad demise of Sethji
  Calcutta —**H. M. Baid**

- Deeply shocked. May God bring peace to Departed soul.
  Muzaffarpur —**Ummaid Singh Bhutoria**

- My heartfelt sympathy live with you during agony.
  Bombay —**Chunnilal Mehta**

- Accept my heartfelt condolence on sudden Demise of your father.
  Jodhpur —**Suraj Raj Bhansali**

- Deeply shocked. Heartfelt Condolence to bereaved family
  Calcutta —**Bhoop Raj Jain**



श्री जवाहर विद्यापीठ की भावभीनी श्रद्धांजलि

दिनांक ५ अप्रेल १९८७ रविवार (तदनुसार मिति चैत्र शुक्ला ७ सं. २०४४) को अपराह्न तीन बजे श्री जवाहर विद्यापीठ की साधारण सभा का विशेष अधिवेशन श्रीमान् कालूरामजी डागा (संस्था के सभापति) की अध्यक्षता में आयोजित हुआ, जिसमें संस्था के संस्थापक सदस्य श्रीमान् चम्पालाल जी बांठिया का अचानक स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पावन स्मृति में एक शोक-सभा का आयोजन किया गया।

स्मृति-सभा में सर्वश्री छगनलाल जी बैद, जसकरण जी बोथरा, कालूराम जी डागा, नथमल जी डागा, सोहनलाल जी पटवा, रुघलाल जी सुराना, चम्पालाल जी डागा, नथमल जी सिंगी, गणेशमल जी धाड़ेवा, अमरचन्द जी लूणिया, खेमचन्दजी सेठिया, धीरजकुमार जी बांठिया, पूनमचन्दजी रामपुरिया, महेन्द्रकुमार जी मिन्नी, सुन्दरलाल जी तातेड़, उदयचन्द जी बैद, चेतन प्रकाश जी सेठिया, भंवरलाल जी कोठारी, चोरूलाल जी मालू, विमलकुमार जी पुगलिया, कमल चन्द जी पुगलिया, रामलालजी सेठिया, खेमचन्द जी छल्लाणी, डालचन्द जी मिन्नी, लहरचन्दजी सेठिया, रेवतमलजी सुराणा आदि अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

अनेक वक्ताओं ने बांठिया सा. के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डाला और अपनी भावाभिव्यक्तियों में उन्हें विरल विभूति निरूपित किया।

श्री सुन्दरलाल जी तातेड़ ने दिवंगत आत्मा को सादर नमन करते हुए बताया कि संसार में अपना काम सभी करते हैं परन्तु परोपकार में जीवन व्यतीत करने वालों का जीवन ही सार्थक है। गुरुनिष्ठा व सेवा के प्रतीक श्रीमान् बांठिया सा. इसी कारण वन्दनीय व स्मरणीय हैं।

इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए श्री भंवरलालजी कोठारी ने कहा कि सेठ सा. एक व्यक्ति नहीं वरन् एक संस्था थे। उन्होंने भीनासर में अपनी सूझबूझ व प्रतिभा से वृहद् साधु सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित करवाया। उनका नाम अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन समाज में चिर-स्मरणीय रहेगा। पूज्य स्वर्गीय आचार्य श्री जवाहर लाल जी म.सा. की आपने जिस लगन व निष्ठा के साथ सेवा की वह स्तुत्य व अनुकरणीय है। इसी प्रकार जवाहर किरणावलियों का प्रकाशन कार्य पूर्ण कर आपने कीर्तिमानीय कार्य किया है। उनका निधन समाज की एक अपूरणीय क्षति है।



श्री नथमल जी सिंगी के शब्दों में समाज बांठिया सा. के कार्यों के लिए सदैव उनका ऋणी रहेगा। साथ ही आपने उनके परिजनों द्वारा उनकी परम्परा का निर्वाह करते हुए संघ की सेवा हेतु अपेक्षा की। श्री लहरचन्दजी सेठिया ने ऐसी विभूति का पैदा होना भीनासर के लिए सौभाग्य बताया। आपने विद्यापीठ की स्थापना व साधु सम्मेलन की सफलता का स्मरण कराते हुए उनके कार्यों को पूरा करना ही सच्ची श्रद्धांजलि बताया।

श्रीमान् छगनलालजी बैद ने अपनी भावांजलि देते हुए कहा कि भीनासर में जो भी विकास कार्य हुए हैं, सेठ साहब की प्रेरणा से हुए हैं। भीनासर में आचार्य श्री नानेश का चातुर्मास कराने का मुख्य श्रेय भी आपको ही जाता है। गुरुदेव नोखा की तरफ विहार कर रहे थे। गंगाशहर-भीनासर संघ गुरुदेव से विनती करने रासीसर गये तो आपने विनम्रता पूर्वक निवेदन किया कि अस्वस्थता की स्थिति में आप द्वारा आगे विहार करने से हमारी नाक कट जायेगी। अतः स्वास्थ्य ठीक न होने तक आप भीनासर जैसे साताकारी स्थान पर ही विराजें। गुरुदेव को आग्रह मानना पड़ा और वापस भीनासर पधारे। भीनासर को चातुर्मास सहित ११ माह तक सेवा का अपूर्व लाभ मिला। उनकी बातचीत की शैली ही ऐसी थी कि अपनी बात मनवा लेते। उन्होंने अपनी कृतज्ञता पेश करते हुए कहा कि हम लोगों को भी खड़ा करने वाले वे ही शख्स थे। आज हम जो कुछ हैं, उन्हीं के पुण्य प्रताप से हैं।

तदनन्तर सर्व श्री चम्पालालजी डागा, खेमचन्दजी सेठिया, रेवतमलजी सुराणा, महेन्द्रजी मिन्नी, जसकरणजी बोथरा, चेतनप्रकाशजी सेठिया आदि ने भी बांठिया सा. का गुणानुवाद करते हुए उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की।

शोक प्रस्ताव पारित करने के पश्चात् श्री धीरज कुमार जी बांठिया ने सभासदों के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए अपने पितृश्री के पदचिह्नों पर चलने का आश्वासन दिया।

सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि सेठ सा. की स्मृति स्वरूप उनका एक फोटो वाचनालय के हॉल में लगाया जावे। अन्त में सभी उपस्थित जनों ने दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु ११-११ नवकार मंत्र का ध्यान किया व २ मिनट का मौन रखकर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।



स्व. सेठ श्री चम्पालालजी बाँठिया

जन्म—मार्गशीर्ष शुक्ला पूर्णिमा वि. भंवत् १९५९ दिनांक १५ दिसम्बर १९०२

स्वर्गवास—चैत्र शुक्ला तृतीया वि. संवत् २०४४ दिनांक १ अप्रेल १९८७.





आपके जीवन का इतिहास, करेगा जन-जन आत्म विकास ।

कर्ममय धर्म धर्ममय ज्ञान, सत्य उद्घाटक मनुज महान ।।